

प्रकाशक

आगम अनुयोग प्रकाशन

बगलतावरपुरा सांडेराव

जिला-याती (राजस्थान)

प्रेरक-यं रत्न मुनि श्री मिश्रीमलजी म० "मुमुक्षु"

मेवाभायी श्री चांदमलजी म०

मूल्य १०) रुपये

प्रकाशन वर्ष

वीर मवत् २५०३

मुद्रक :

नई दुनिया प्रेस

केशर बाग रोड

इंदौर (म प्र)

समर्पण

स्वाध्याय संघ

के

प्रथम सस्थापक

श्रमण संघ

के

प्रशस्त प्रवर्तक

मार्गोद

पद्म प्रतापी श्री पद्मानन्दजी स. मा

को

पावन स्मृति मे समर्पित

-जिनय मुनि "दागोन

प्रकाशकीय

अनुयोग प्रवर्तक मनि श्री कन्हैयालालजी म० “कमल” रोशनमुनिजी “शास्त्री” विनय मुनिजी “वागीश” का वीर सवत् २५०१ का चातुर्मास स्वाध्याय सघ के सस्थापक प्रवर्तक पन्नालालजी म० की निर्वाण भूमि विजयनगर में सम्पन्न हुआ। उस समय वहाँ दर्शनार्थ जाने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ।

स्वाध्याय सघ के अनेक सदस्य सम्पर्क में आये प्रायः सबकी भावना एक सी रही कि स्वाध्याय एव प्रवचन के उपयोगी आगम एव स्तोत्रों का एक लघु संस्करण का होना आवश्यक है। प्रस्तुत ‘स्वाध्याय सुधा’ का यह संस्करण उनकी भावना के अनुरूप ही है।

आशा है प्रत्येक स्वाध्यायशील महानुभाव इसे आध्यात्मिक जीवन का साक्षी मानकर आवश्यक धर्मोपकरण समझे और ‘जयणा पूर्वक’ वाचन एव चिंतन मनन करे।

श्री विजयनगर सघ के हार्दिक एव आर्थिक सहयोग से प्रस्तुत ‘स्वाध्याय सुधा’ का प्रकाशन आगम अनुयोग प्रकाशन द्वारा प्रकाशित करने का सुअवसर भी हमें प्राप्त हुआ है। इसके लिये भी हम विजयनगर सघ के नवयुवक कार्यकर्ताओं के विशेष आभारी हैं।

नई दुनिया प्रेस के व्यवस्थापक महोदय, कम्पोजमेन व प्रूफ रीडर भी धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने शुद्ध सुन्दर मुद्रण किया है। शीघ्र ही अनुयोग प्रकाशन की ओर से कथानुयोग एव कल्प सुत प्रकाशित हो रहे हैं।

मन्त्री

आगम अनुयोग प्रकाशन

अहम् पृष्ठिका

साधक सागर हो या अणगर—साधना काल में दोनों के लिए आगम-साहित्य का स्वाध्याय अत्यावश्यक कर्तव्य माना गया है।

“सञ्ज्ञाय जोगे पयतो भवेज्जा” साधक को स्वाध्याययोग में मदा प्रयत्नशील होना चाहिए। यदि हम शिवपुर के पथिक हैं तो सर्वज्ञ भगवान् का यह प्रेरक मन्देश हमारे लिए एक प्रबल आत्मबल-वर्धक पवित्र पाथेय है।

स्वाध्याय आभ्यन्तर तप है। यह ज्ञानावरण कर्म का समूलोन्मूलन कारक एक अमोघ अस्त्र है।

स्वाध्याय का एक अंग ‘परियट्टणा’ “परिवर्तना” भी है। अर्थात् आगमों के पुनरावर्तन से ज्ञान की वृद्धि और पदानुसारिणी लब्धि प्राप्त होती है। यह आगमोक्त फल-श्रुति है।

यदि कोई साधक स्वाध्याय-काल में ज्ञानातिचारों का परिहार करता हुआ प्रसन्न मन से सतत स्वाध्याय करता रहे तो तीर्थकर नाम कर्मोपार्जन भी कर सकता है। ‘णायधम्मकहा’ का यह अमर सन्देश सभी मुमुक्षु आत्माओं के लिए परमादरणीय है।

अवसर्पिणी काल से प्रभावित धारणा-शक्ति को लक्ष्य में रखकर जब आगम लिपिवद्ध किये गये तो पुस्तक-लिखना और रखना

सवेदनं विना । १४ सुपुस्तकसायान् । १५ दुःखम् । १६ दुःखाभावे सुखशब्दो न पारमार्थिकसुखस्य वाचक इति तेनोः । १७ सुखमहमस्वापमित्यसिन्वाक्ये । १८ आचारिकः । १९ दुःखस्य । २० दुःखदुःखान्नावादापर सुखमहम मत्वा-
नरम् । २१ स्वाभावस्थायां दानसद्भावसाधनविस्तरेण ।

प्र० ६० भा० २८

अपवाद मार्ग में स्वीकृत किया गया था, साथ ही प्रायश्चित्त विधान भी किया गया था, पर वर्तमान में पुस्तक रखना अपवाद जैसा प्रतीत नहीं हो रहा है । क्योंकि अपवाद का सतत उपयोग नहीं किया जाता है ।

वर्तमान में प्रत्येक साधक का एक मात्र कर्तव्य यह है कि स्वाध्याय काल में स्वाध्याय करे और स्वाध्याय काल में स्वाध्याय न करने पर जो प्रायश्चित्त आता है उसका पात्र न बने ।

स्वाध्यायान्माप्रमद

स्वाध्याय-प्रवचनाभ्या न प्रमदितव्यम् । तैत्ति०

ये उपनिषद् वाक्य भी उसी अमर-घोष की प्रेरणाप्रद अनुश्रुति हैं ।

आगमों के स्वाध्यायोपयोगी संस्करण कई स्थानों से प्रकाशित होते रहते हैं, किन्तु इस संस्करण में मूलपाठ का स्वाध्याय करते हुए स्वाध्याय-शील साधक को सामान्य अर्थावबोध भी प्रतिदिन होता रहे—इसके लिए उचित वाक्य-विन्यास आदि विशेषताओं का जो आयोजन किया गया है उनका अनुभव स्वाध्यायी को स्वतः हो जायेगा ।

सुज्ञेषु किमधिकम्

मुनि "कमल"

स्वाध्याय के लिये अनुपम ग्रन्थ रत्न

अनुयोग प्रवर्तक प रत्न मुनि श्री कन्हैयालाल जो म० संपादित

- १ मूलसुत्ताणि-गुटका साइज मूल्य १५) रुपए [१ दशवैकालिक,
२ उत्तराध्ययन सूत्र, ३ नन्दि सूत्र, ४ अनुयोगद्वार सूत्र]
- २ स्वाध्याय सुध्या-गुटका साइज मूल्य १०) रुपए [१ दशवैकालिक,
२ उत्तराध्ययन, ३ नन्दि सूत्र, तत्त्वार्थ सूत्र और भक्तामर
आदि अनेक स्तोत्र] ।
- ३ स्थानाग-सानुवाद मूल्य २५) रुपए ।
- ४ समवायाग-सानुवाद परिवर्धित मूल्य १०) रुपए ।
- ५ गणितानुयोग-सानुवाद परिवर्धित मूल्य ५०) रुपए ।
- ६ धर्मकथानुयोग-सानुवाद (प्रेस में) ।
७. द्रव्यानुयोग सानुवाद ।
- ८ चरणानुयोग सानुवाद ।
- ९ जैनागमनिर्देशिका हिन्दी परिवर्धित मूल्य ५०) रुपए ।
(४५ आगमो की विस्तृत विषय सूची)
- १० आचारदसा-सानुवाद मूल्य १५) रुपए ।
- ११ आचारदसा-मूल गुटका साइज मूल्य ५) रुपए ।
- १२ कप्पमुत्त-मानुवाद (प्रेस में) ।
- १३ कप्पसुत्त-मूल गुटका साइज (,,) ।
- १४ मोक्षमार्ग कहानियाँ-हिन्दी मूल्य ५) रुपए ।
- १५ तत्त्वार्थ सूत्र एव स्तोत्रादि ।
- १६ प्रतिक्रमण सूत्र (सचित्र) ।

प्राप्ति स्थल

ला० द० भारतीय संस्कृति विद्या मंदिर
नवरंग पुरा, अहमदाबाद-९

आगम अनुयोग प्रकाशन
बखतावरपुरा, साडेराव
(पाली, राज)

अनुक्रमणिका

	पृष्ठ
१ वीर-स्तुति	
२ दशवैकालिक सूत्र	१-८६
३. उत्तराध्ययन सूत्र	८७-३३६
४ नदी सूत्र	३३७-४१९
५ तत्त्वार्थ सूत्र	४२१-४४३
६ भक्तामर स्तोत्र	४४४-४५३
७ कल्याणमंदिर स्तोत्र	४५४-४६२
८ महावीराष्टक स्तोत्र	४६३-४६४
९ चिन्तामणी पार्श्वनाथ स्तोत्र	४६५-४६७
१० रत्नाकर पञ्चीसी	४६७-४६९
११ अमितगति सूरिकृत वत्सीसी	४७०-४७६
१२ सुभाषित गायार्थे	४७६-४७८
१३ तीर्थकर स्तोत्र	४७९
१४. सती स्तोत्र	४७९-४८०
१५ उवसगहर स्तोत्र	४८०

वीरत्युई

पुच्छिनु ण समणा माहणा य, अगारिणो य परितित्थिआ य ।
 से केइ णेगंतहिय धम्ममाहु, अणेत्तिस साहुसमिक्खयाए ॥१॥
 कह च णाण कह दसण से, सोल कह नायसुयस्स आमि ? ।
 जाणासि ण भिक्खु जहातहेणं, अहासुय बूहि जहा णिसत्त ॥२॥
 खेयन्नए से कुसले-महेसी, अणत्तनाणी य अणत्तदसी ।
 जसंसिणो चक्खुपहे ठियस्स, जाणाहि धम्मं च धिइ च पेहि ॥३॥
 उद्धं अहे य तिरियं दिसासु, तसा य जे थावरा जे य पाणा ।
 से णिच्चणिच्चेहि समिक्ख पत्ते, दीवे व धम्म समियं उदाहु ॥४॥
 से सव्वदसी अभिभूयनाणी, णिरामगघे धिइम ठियप्पा ।
 अणुत्तरे सव्वजगसि विज्ज, गथा अईए अमए अणाऊ ॥५॥
 से भूइपण्णे अणिए अचारी, ओहतरे धीरे अणत्तचक्ख ।
 अणुत्तर तप्पइ सूरिए वा, वइरोयणिन्दे व तम पगासे ॥६॥
 अणुत्तर धम्ममिण जिणाण, णेया मुणी कासव आसुपन्ने ।
 इंदेव देवाण महाणुभावे, सहस्सणेया दिवि ण विसिट्ठे ॥७॥
 से पत्तया अक्खयसागरे वा, महोद्धी वावि अणत्तपारे ।
 अणाइले वा अकसाइ मुक्के (भिक्खु), सक्के च देवाहि वई जुइम ॥८॥
 से वीरिएणं पडिपुन्नवीरिए, सुदसणे वा णगसव्वसेट्ठे ।
 सुरालए वा सि मुदागरे से, विरायए णेगगुणोववेए ॥९॥

सय सहस्साण उ जोयणां, तिकंडगे पंडगवेजयते ।
 से जोयणे णवणवइसहस्से, उड्डुस्सितो हेट्टु सहस्समेग ॥१०॥
 पुट्टे णमे चिट्ठइ भूमिवट्टिए, ज सूरिया अणुपरिवट्टयति ।
 से हेमवन्ने बहूनदणे य, जंसी रति वेदयंति महिदा ॥११॥
 से पव्वए सट्ठमहप्पगात्ते, विरायइ कचणमट्टवन्ने ।
 अणुत्तरे गिरिसु य पव्वडुग्गे, गिरीवरे से जल्लिए व भोमे ॥१२॥
 महीए मज्झमि ठिए णगिदे, पन्नायते सूरिए सुद्धलेसे ।
 एव सिरीए उ स भूरिवन्ने, मणोरमे जोयइ अच्चिमाली ॥१३॥
 सुद्धसणस्सेव जसो गिरिस्स, पव्वुच्चइ महतो पव्वयस्स ।
 एतोवमे समणे नायपुत्ते, जाडजसोदंसणनानसीले ॥१४॥
 गिरीवरे वा निसहाऽऽययाण, रुयए व सेट्टे वलयायताणं ।
 तओवमे से जगभूइपन्ने, मुणीण मज्जे तमुदाहु पन्ने ॥१५॥
 अणुत्तरं घम्ममुईरइत्ता, अणुत्तरं ज्ञाणवरं क्षियाइं ।
 सुसुक्कसुक्कं अपगंडसुक्क, सौत्थिद्वएगंतवदातसुक्क ॥१६॥
 अणुत्तरग परम महेसी, असेसकम्मं स विसोहइत्ता ।
 सिद्धि गए साइमणतपत्ते, नाणेण सीलेण य दंसणेण ॥१७॥
 वक्खेसु णाए जह सामली वा, जंसि रइ वेदयंती सुवन्ना ।
 वणेसु वा णदणमाहु सेट्टं, नाणेण सीलेण य भूइपन्ने ॥१८॥
 यणिय व सट्ठाण अणुत्तरे उ, चवो व ताराण महाणुमावे ।
 गंधेसु वा चंदणमाहु सेट्टं, एव मुणीण अपडिस्समाहु ॥१९॥

शिवेदेने विना । १४ अनुपावत्तावात् । १५ दुग्ग । १६ दुःसामाव सुसम्यग्दा
 न पारमाधिकमुत्तम्य माचक इति हेतोः । १७ सुसमहनत्तापनिलसिन्वाक्ये ।
 १८ औपचारिकः । १९ दुःश्रम्य । २० दुःसदृशनास्त्रावादपरं सुखंक्षणं भाव-
 न्तरम् । २१ स्वापावत्ताया शानमस्त्रावभाषनवित्तरेण ।

जहा सयभू उदहीण सेट्टे, नागेषु वा घर्णदमाहु सेट्टे ।
 खोओदए वा रस वेजयते, तवोवहाणे मुणिवेजयंते, ॥२०॥
 हत्थीसु एरावणमाहु णाए, तीहो मियाण सलिलाण गंगा ।
 पक्खीसु वा गरुले वेणुदेवे, निव्वाणवादीणिह नायपुत्ते ॥२१॥
 जोहेसु नाए जह वीससेणे, पुप्फेसु वा जह अरविदमाहु ।
 खत्तीण सेट्टे जह दत्तवक्के इसीण सेट्टे तह बद्धमाणे ॥२२॥
 बाणाग सेट्टु अभयप्पयाणं, सच्चेसु वा अणवज्जं वयंति ।
 तवेसु वा उत्तम बभचेरं, लोगुत्तमे समणे नायपुत्ते ॥२३॥
 ठिईण सेट्टा लवसत्तमा वा, समा सुहम्मा व समाण सेट्टा ।
 निव्वाणसेट्टा जह सव्वधम्मा, न नायपुत्ता परमत्थि नाणी ॥२४॥
 पुढोवमे धुणइ विगयगेहि, न सण्णिहि कुव्वइ आसुपत्ते ।
 तरित्तु समुद्धं च महाभवोद्धं, अपयंकरे वीर अणंतचक्खू ॥२५॥
 कोहं च माणं च तहेव मायं, लोभं चउत्थ अज्झत्थदोसा ।
 एयाणि वता अरहा महेसो, ण कुव्वई पाव ण कारवेइ ॥२६॥
 किरियाकिरिय वेणईयाणुवायं, अण्णाणियाण पडियच्च ठाणं ।
 से सव्ववायं इइ वेयइत्ता, उवट्ठिए संजमदीहराय ॥२७॥
 से वारिया इत्थी सराइभत्त, उवहाणव डुक्खखयट्ठयाए ।
 लोगं विदित्ता आरं पार च, सव्वं पभू वारिय सव्ववारं ॥२८॥
 सोच्चा य धम्मं अरिहंतभासिय, समाहियं अट्ठपओवसुद्धं ।
 तं सद्धाणा य जणा अणाऊ, इंदे व देवाहि व आगमिस्सति ॥२९॥

॥ मूल सुत्ताणि ॥

(१)

दसवेआलियसुत्तं

(उक्कालियं)

नामकरणं—

मणगं पडुच्च सेज्जंभवेण, निज्जुहिया दसज्जयणा ।
वेयालियाइ ठविया, तम्हा दसकालियं नाम ॥

उद्धरणं—

आयप्पवायपुब्बा, निज्जुहा होइ धम्म-पत्नत्ती ।
कम्मप्पवायपुब्बा, पिडस्स उ एसणा तिबिहा ॥
सत्त्वप्पवायपुब्बा, निज्जुद्धा होइ वक्कसुद्धीउ ।
अवसेसा निज्जुद्धा, नवमस्स उ तइयवत्थूओ ॥
बीओऽवि अ आएसो, गणिपिडगाओ दुवालसंगाओ ।
एयं किर निज्जुढं, मणगत्स अणुग्गहट्ठाए ॥

विसयनिद्देशो—

पढमे धम्म-पसमा, सो य इहेव जिणसासनम्मिस्ति ।
बिइए धिइए सक्का, काउ न एस धम्मोत्ति ॥
तडए आयार-कहाउ, छुट्टिया आयसंजमोवाओ ।
तह जीव-संजमोऽवि य, होइ चउत्थमि अज्जयणे ॥
भिव्ख-विसोही तव, संजमस्स गुणकारियाउ पच्चमए ।
छट्ठे आयार-कहा, महई जोगा महयणस्स ॥
वयण-विभत्ती पुण, सत्तमम्मि पणिहाण-मट्टमे भणियं ।
नवमे विणओ दसमे, समाणियं एस भिव्खुत्ति ॥
दो अज्जयणा चूलिय, विसीययंते थिरीकरणमेगं ।
बिइय विवित्त चरिया, असोयणगुणाइरेग फला ॥
—मद्दजाहु निर्युवित गाथा १५, १६, १७, १८, २०, २१, २२, २३, २४

विषय-संबंध-निर्देशः

प्रथमाध्ययने धर्मं प्रगसा-

सचात्रैव-जिनशासने धर्मो, नान्यत्र इहैव निर्वद्यवृत्तिसद्भावात् ।
धर्माभ्युपगमे च सत्यपि माम्दभिनवप्रव्रजितस्याधृतेः सम्मोह-
इत्यतस्तन्निराकरणार्थाधिकारवदेव द्वितीयाध्ययनम् ।

सा पुनर्धृतिराचारे कार्या न त्वनाचारे-इत्यतस्तदर्थधिकारवदेव-
तृतीयाध्ययनम् ।

स च आचारः षड्जीवनिकायगोचरः प्राय-इत्यतश्चतुर्थमध्ययनम् ।
स च देहे स्वस्थे सति सम्यक् पाल्यते, स चाहारमन्तरेण प्रायः स्वस्थो न
भवति, स च सावद्येतरभेद-इत्यनवद्यो ग्राह्य-इत्यतस्तदर्थधिकारवदेव
पञ्चममध्ययनम् ।

गोचरप्रविष्टेन च सता स्वाचारं पृष्टेन तद्विवापि न महाजनसमक्षं तत्रैव
विस्तरतः कथयितव्यं अपि तु आलये-गुरवो वा कथयन्तीति वक्तव्यम्
इत्यतस्तदर्थधिकारवदेव षष्ठमध्ययनम् ।

आलयगतेनाऽपि तेन, गुरुणा वा वचनदोषगुणाभिज्ञेन निरवद्यवचसा
कथयितव्यं इत्यतस्तदर्थधिकारवदेव सप्तममध्ययनम् ।
तच्च निरवद्यं वचः आचारे प्रणिहितस्य भवति इत्यतस्तदर्थधिकारव-
देवाष्टममध्ययनम् ।

आचारप्रणिहितश्च यथोचितविनयसपन्न एव भवतीत्यतस्तदर्थ-
धिकारवदेव नवममध्ययनम् ।

एतेषु एव नवस्वध्यायनार्थेषु यो व्यवस्थितः स सम्यग् भिक्षुरित्यनेन-
सम्बन्धेन दसमं सभिक्षवध्ययनम् ।

स एवं गुणयुक्तोऽपि भिक्षुः कदाचित् कर्मपरतन्त्रत्वात्कर्मणश्च
बलवत्त्वात्सीदेत् ततस्तस्य स्थिरीकरणं कर्तव्यमतस्तदर्थधिकारव-
देव चूडाद्वयम् ।

-श्री हरिभद्रसूरिः

❖ णमोऽयुण तस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स ❖

दसवेआलियसुत्तं

अहदुमपुप्फिया नामं पढममज्झयणं

घम्मो मंगलमुक्किदढं, अहिंसा संजमो तवो ।

देवा वि तं नमंसंति, जस्स घम्मे सया मणो ॥ १ ॥

जहा वुमस्स पुप्फेसु, भमरो आवियइ रसं ।

न य पुप्फ किलामेइ, सो य पीणेइ अप्पयं ॥ २ ॥

एमेए समणा मुत्ता, जे लोए संति साहुणो ।

विहंगमा व पुप्फेसु, दाणमत्तेसणे रया ॥ ३ ॥

वयं च विंत्ति जल्लामो, न य कोइ उवहम्मइ ।

अहागळेसु रीयते, पुप्फेसु भमरा जहा ॥ ४ ॥

महुगारसमा बुद्धा, जे भवन्ति अणिस्सिया ।

ताणार्पिडरया दत्ता, तेण वुच्चन्ति साहुणो ॥ ५ ॥ सि ब्वेमि ।

—

अहं सामण्णपुव्वयं नामं दुइअमज्झयणं

कहं नु कुज्जा सामण्णं, जो कामे न निवारए ।

पए पए विसीयंतो, संकप्पस्स वसं गओ ॥ १ ॥

वत्थगधमलंकारं, इत्थोओ सयणाणि य ।

अच्छंदा जे न भुजति, न से 'चाइ' ति वुच्चइ ॥ २ ॥

जे य कंते पिए भोए, लद्धे विपिट्ठि कुच्चइ ।

साहीणे चयइ भोए, से हु 'चाइ' ति वुच्चइ ॥ ३ ॥

समाए पेहाए परिब्बयतो,

सिया मणो निस्सरइ बहिद्धा ।

'न सा महं नोवि अहंपि तीसे'

इच्चेव ताओ विणएज्ज रागं ॥ ४ ॥

आयावयाही चय सोउमल्ल,

कामे कमाही कमियं खु दुक्खं ।

छिदाहि दोसं विणएज्ज रागं,

एवं सुही होहिसि संपराए ॥ ५ ॥

पक्खंदे जलिय जोइं, धूमकेउं दुरासयं ।

नेच्छंति वंतयं भोत्तुं, कुले जाया अगंधणे ॥ ६ ॥

धिरत्थु तेज्जसोकामी, जो तं जीवियकारणा ।

वंतं इच्छसि आवेउं, सेयं ते मरणं भवे ॥ ७ ॥

अहं च भोगरायस्स, तंचज्जि अंधगवण्हिणो ।

मा कुले गंधणा होमो, संजमं निहुओ चर ॥ ८ ॥

जइ त काहिसि भावं, जा जा विच्छसि नारिओ ।
 वायाविद्धो ज्व हडो, अट्टिअप्पा भविस्ससि ॥ ९ ॥
 तीसे सो वयणं सोच्चा, संजयाए सुभासियं ।
 अंकुसेण जहा नागो, धम्मो संपडिवाइओ ॥ १० ॥
 एवं करेत्ति संबुद्धा, पंडिया पबियक्खणा ।
 विणियद्वत्ति भोगेसु, जहा ते पुरिसुत्तमो ॥ ११ ॥ त्ति वेमि ॥

अहं खुड्डियायारकहा नामं तइयमज्झयणं

संजमे सुट्ठिअप्पाणं, विप्पमुक्काण ताइणं ।
 तेत्तिमेयमणाइणं, निर्मायाणं महेत्तिणं ॥ १ ॥
 उद्देत्तियं^१ कीयणदं^२, नियाणं^३ अमिहडाणि^४ य ।
 राइ-मत्ते^५ सिणाणे^६ य, गंछ^७ मत्ते^८ य वीयणे^९ ॥ २ ॥
 सन्निही^{१०} गिहि-मत्ते^{११} य, रायपिडे^{१२} किमिच्छए^{१३} ।
 संजाहणा^{१४} दंतपहोयणा^{१५} य,
 संपुच्छणा^{१६} देह-पलोयणा^{१७} य ॥ ३ ॥
 अट्ठावए^{१८} य नालीय^{१९}, छत्तस्स^{२०} य धारणट्ठाए ।
 तेगिच्छं^{२१} पाहणा^{२२} पाए, समारसं च जोइणो^{२३} ॥ ४ ॥
 सेज्जायर-पिण्डं^{२४} च, आसंदीपलियंकए^{२५} ।
 गिहंतर निसज्जा^{२६} य, गायस्सुक्खट्टाणि^{२७} य ॥ ५ ॥

गिहिणोवेभावडियं^{२८}, जा य आजीववसिया^{२९} ।
 सत्तानिवुडभोइत्तं^{३०}, आउरस्सरणाणि^{३१} य ॥ ६ ॥
 मूलए^{३२} सिगबेरे^{३३} य, उच्चुखंडे^{३४} अनिव्वुडे ।
 कंदे^{३५} मूले^{३६} य सच्चित्ते, फले^{३७} बीए^{३८} य आमए ॥ ७ ॥
 सोवच्चले^{३९} सिधवे^{४०} लोणे, रोमा-लोणे^{४१} य आमए ।
 सामुहे^{४२} पंसुखारे^{४३} य, काला-लोणे^{४४} य आमए ॥ ८ ॥
 धूवणेत्ति^{४५} वमणे^{४६} य, वत्थीकम्म^{४७} विरेयणे^{४८} ।
 अंजणे^{४९} दंतवणे^{५०} य, गायड्ढमंग^{५१} विमूसणे^{५२} ॥ ९ ॥
 सव्वमेयमणाइण्णं, निगंथाण महेसिणं ।
 सजमम्म अ जुत्ताणं, लहुभूयविहारिणं ॥ १० ॥
 पंचासवपरिण्णाया, तिगुत्ता छसु सजया ।
 पंचनिग्गहणा धीरा, निगंथा उज्जुदंसिणो ॥ ११ ॥
 आयावयति गिम्हेसु, हेमतेसु अवाउडा ।
 वासासु पडिसंलीणा, सजया सुसमाहिया ॥ १२ ॥
 परिसह-रिऊ-दंता, धूममोहा जिहंदिया ।
 सव्वदुवखप्पहीणट्ठा, पवकमंति महेसिणो ॥ १३ ॥
 धुक्कराइं करित्ताणं, दुस्सहाइं सहित्तु य ।
 केइत्थ देवलोएसु, केइ सिज्जति नीरया ॥ १४ ॥
 खवित्ता पुव्वकम्माइं, संजमेण तवेण य ।
 सिद्धिमग्गमणुप्पत्ता, ताइणो परिणिच्चुडा ॥ ति बेमि ॥ १५ ॥

अहं छज्जीवणिया नामं चउत्थमज्झयणं

सुयं मे आउसं ।

तेणं भगवया एवमक्खायं—

इह खलु छज्जीवणिया नामज्झयणं—

समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया—

सुअक्खाया सुपणत्ता ।

सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपणत्ती ।

कयरा खलु सा छज्जीवणिया नामज्झयणं—

समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया—

सुअक्खाया सुपणत्ता

सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपणत्ती ।

इमा खलु सा छज्जीवणिया नामज्झयणं—

समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया—

सुअक्खाया सुपणत्ता

सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपणत्ती ।

तं जहा—

पुढवि—काइया १, आउ—काइया २, तेउ—काइया ३,

वाउ—काइया ४, वणत्सइ—काइया ५, तस—काइया ६ ।

१ पुढवी चित्तमंतमक्खाया अणेग—जीवा पुढो—सत्ता अलत्थ

सत्थ—परिणएणं ।

- ૨ આઠ ચિત્તમંતમવ્હાયા અળેગ-જીવા પુઢો-સત્તા અન્નત્થ
સત્થ-પરિણેણં ।
- ૩ તેઠ્ઠ ચિત્તમંતમવ્હાયા અળેગ-જીવા પુઢો-સત્તા અન્નત્થ
સત્થ-પરિણેણં ।
- ૪ વાઠ ચિત્તમંતમવ્હાયા અળેગ-જીવા પુઢો-સત્તા અન્નત્થ
સત્થ-પરિણેણં ।
- ૫ વળસ્સદ્દં ચિત્તમંતમવ્હાયા અળેગ-જીવા પુઢો-સત્તા અન્નત્થ
સત્થ-પરિણેણં ।

તં જહા-

અગ્ગવીયા મૂલવીયા પોરવીયા હંધવીયા વીયરુહા-
સમ્મુચ્છિમા તળલયા-

વળસ્સદ્દકાદયા સબીયા ચિત્તમંતમવ્હાયા અળેગ-જીવા
પુઢો-સત્તા અન્નત્થ સત્થ-પરિણેણં ।

૬ સે જે પુણ હમે અળેગે મહવે તસા પાણા-

તં જહા-

અંડયા પોયયા જરાડયા રસયા-

સંસેદ્દમા સંમુચ્છિમા ડગ્ગિયા ડવ્વવાદયા

જોસિ કોસિ ચ પાણાણં-

અભિક્કંતં પઢિક્કંતં સંકુચિયં પસારિયં-

રુયં મંતં તસિયં પલાદિયં-

આગદ્દ-ગદ્દ-વિન્નાયા, જે ય કીડપયંગા- '

जा य कुंभुपिवीलिया-
 सव्वे वेइदिया सव्वे तेइदिया-
 सव्वे चउरिदिया सव्वे पंचिदिया-
 सव्वे तिरिक्ख-जोणिया सव्वे नेरइया-
 सव्वे मणुआ सव्वे देवा-
 सव्वे पाणा परमाहम्मिया ।
 एसो खलु छट्ठो जीवन्निक्काओ 'तसकाउ त्ति' पमुच्चइ ।

इच्छेसि छण्हं जीवन्निक्कायाणं-
 नेव सयं वंडं समारम्भज्जा-
 नेवन्नेहि वंडं समारम्भाविज्जा-
 वंडं समारंभते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा
 जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं-
 मणेणं वायाए काएणं-
 न करेमि, न कारखेमि-
 करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि-
 तस्स भंते !
 पडिक्कमामि निदामि गरिहामि-
 अप्पाणं वोत्तिरामि ।

पढमे भंते ! सहव्वए पाणाइवायाओ वेरमणं ।
 सव्वं भंते ! पाणाइवायं पच्चक्खामि-
 से सुहुमं वा, वायरं वा

तसं वा थावरं वा
 नेव सयं पाणे अइवाइज्जा-
 नेवऽज्ञोहि पाणे अइवायाविज्जा-
 पाणे अइवायते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा
 जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं-
 मणेणं दायाए काएणं-
 न करेमि न कारवेमि-
 करंत-पि अन्नं न समणुजाणामि-
 तस्स भंते !
 पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि-
 अप्पाणं वोसिरामि ।
 पढमे भंते ! महक्खए उवट्ठिओमि
 सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं ॥१॥

अहावरे दोज्जे भंते ! महक्खए मुसावायाओ वेरमणं
 सव्वं भंते ! मुसावायं पच्चक्खामि
 से कोहा वा लोहा वा
 भया वा हासा वा
 नेव सयं मुसं वएज्जा
 नेवऽज्ञोहि मुसं दायावेज्जा
 मुसं वयंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा
 जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं-

मणेण वायाए काएणं—
 न करेमि न कारवेमि—
 करतंपि अन्नं न समणुजाणामि—
 तस्स भते !
 पडिक्कमामि निदामि गरिहामि
 अप्पाणं वोसिरामि ।
 दोच्चे भते महव्वए उवट्ठिओमि ।
 सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं ॥ २ ॥

अहावरे तच्चे भते । महव्वए अदिस्सादाणाओ वेरमणं
 सव्व भते ! अदिस्सादाणं पच्चक्खामि
 से गामे वा नगरे वा रण्णे वा—
 अप्पं वा बह्वं वा अणुं वा थूलं वा—
 चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा—
 नेव सयं अदिस्सं गिण्हेज्जा—
 नेवऽन्नोहं अदिस्सं गिण्हावेज्जा—
 अदिस्सं गिण्हते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा
 जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं—
 मणेण वायाए काएणं—
 न करेमि न कारवेमि
 करतं पि अन्नं न समणुजाणामि—

तस्स भते !

पडिक्कमामि निदामि गरिहामि-

अप्पाण वोसिरामि ।

तच्च भते ! महव्वए उवट्ठिओमि

सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं ॥ ३ ॥

अहावरे चउत्थे भते ! महव्वए मेहुणाओ वेरमणं-

सव्व भते ! मेहुण पच्चवखामि

से दिव्व वा माणुस वा तिरिक्ख-जोणिय वा

नेव सयं मेहुण सेवेज्जा-

नेवभोहं मेहुणं सेवावेज्जा-

मेहुण सेवते वि अत्ते न समणुजाणेज्जा

जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं-

अणेणं वायाए काएणं

न करेमि न कारवेमि

करंत पि अत्तं न समणुजाणामि-

तस्स भते !

पडिक्कमामि निदामि गरिहामि-

अप्पाणं वोसिरामि ।

चउत्थे भते ! महव्वए उवट्ठिओमि-

सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं ।

अहावरे पंचमे भते ! महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं-

सत्त्वं भते । परिग्गह पच्चक्खामि—
 से अप्प वा ब्रह्मं वा अणु वा थूलं वा
 चित्तमतं वा अचित्तमतं वा
 नेव सयं परिग्गहं परिगिण्हेज्जा—
 नेवभ्रोहि परिग्गहं परिगिण्हावेज्जा—
 परिग्गह परिगिण्हते वि अस्से न समणुजाणेज्जा
 जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं
 मणेणं वायाए काएणं—
 न करेमि न कारवेमि—
 करंत पि अस्सं न समणुजाणामि
 तस्स भते ।
 पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि—
 अप्पाण बोसिरामि ।
 पच्चमे भते । महव्वए उवट्ठिओमि—
 सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमण ॥ ५ ॥
 अहावरे छट्ठे भते । वए राइ—भोयणाओ वेरमणं
 सत्त्वं भते । राइ—भोयण पच्चक्खामि ।
 से असणं वा पाण वा खाइमं वा साइमं वा—
 नेव सयं राइं भुंजेज्जा
 नेवभ्रोहि राइ भुजावेज्जा
 राइं भुजते वि अस्से न समणुजाणेज्जा

जावज्जीवाए तिविह तिविहेण—
 मणेण वायाए काएणं—
 न करेमि न कारवेमि
 करत-पि अन्नं न समणुजाणामि ।
 तस्म भते ।
 पडिक्कमामि निदामि गरिहामि
 अप्पाण वोसरामि ।
 छट्ठे भते । बए उवट्ठिओमि
 सच्चामो राइ-भोयणामो वेरमणं ।
 इच्चेयाइ पंच महव्वयाइ राइ-भोयण वेरमण-छट्ठाइं
 अत्त-हियट्ठयाए उवसपजित्ताणं विहरामि ॥ ६ ॥
 से भिक्खू वा भिक्खुणी वा—
 सजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे
 दिभा वा रामो वा
 एगमो वा परिसागमो वा
 सुत्ते वा जागरमाणे वा
 से पुढावि वा भित्ति वा सिलं वा लेलुं वा—
 स-सरक्ख वा कायं, स-सरक्ख वा वत्थं—
 हत्थेण वा पाएण वा कट्ठेण वा किलिचेण वा—
 मगुलियाए वा सलागाए वा सलाग हत्थेण वा—
 न आलिहेज्जा न विलिहेज्जा—

न घट्टेज्जा न भिदेज्जा—
 अनं न आलिहावेज्जा न विलिहावेज्जा
 न घट्टावेज्जा न भिदावेज्जा
 अन्नं आलिहत्तं वा विलिहत्तं वा
 घट्टत्तं वा भिदत्तं वा न समणुजाणेज्जा
 जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण
 मणेणं वायाए काएणं—
 न करेमि न कारवेमि—
 करत्तं पि अन्नं न समणुजाणामि—
 तत्स भते ।
 पडिक्कमामि निदामि गरिहामि
 अप्पाणं बोसिरामि ॥ १ ॥
 से भिक्खु वा भिक्खुणी वा—
 सजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय-पावक्कमे—
 दिआ वा राओ वा—
 एगओ वा परिता-गओ वा—
 सुत्ते वा जागरमाणे वा—
 से उदग वा ओसं वा हिमं वा महियं वा—
 करगं वा हरित्तणुग वा सुद्धोदगं वा—
 उदउल्लं वा काय उदउल्लं वा वत्थं—
 ससिणिद्धं वा कायं ससिणिद्ध वा वत्थ—

न आमुसेज्जा न संफुसेज्जा—
 न आवीलेज्जा न पवीलेज्जा—
 न अक्खोडेज्जा न पक्खोडेज्जा—
 न आयावेज्जा न पयावेज्जा ।

अन्नं न आमुसावेज्जा न संफुसावेज्जा—
 न आवीलावेज्जा न पवीलावेज्जा—
 न अक्खोडावेज्जा न पक्खोडावेज्जा—
 न आयावेज्जा न पयावेज्जा—

अन्नं आमुसत्तं वा संफुसत्तं वा
 आवीलत्तं वा पवीलत्तं वा
 अक्खोडत्तं वा पक्खोडत्तं वा
 आयावत्तं वा पयावत्तं वा न समणुजाणेज्जा

जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण
 मणेणं वायाए काएण
 न करेमि न कारवेमि
 करत्तं-पि अन्नं न समणुजाणामि
 तस्स भन्ते !
 पडिक्कमामि निवामि गरिहामि—
 अप्पाण वोसिरामि ॥२॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा—
 सजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय-पावकस्से

दिआ वा रामो वा
 एगओ वा परिसा-गओ वा
 मुत्ते वा जागरमाणे वा
 से अगणि वा इगलं वा मुमुरं वा अच्चि वा-

जाल वा अलाय वा सुद्धागणि वा उक्कं वा-
 न उजेज्जा न घट्टेजा न भिदेज्जा-
 न उज्जालेज्जा न पज्जालेज्जा न निव्वावेज्जा-
 अन्न न उंजावेज्जा न घट्टावेज्जा न भिदावेज्जा
 न उज्जालावेज्जा न पज्जालावेज्जा न निवावेज्जा
 अन्नं उज्जतं वा घट्टतं वा भिदत वा-

उज्जालंतं वा पज्जालंतं वा निव्वावंतं वा न समणुजाणेज्जा
 जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं
 मणेणं वायाए काएणं-
 न करेमि न कारवेमि
 करंतं-पि अन्नं न समणुजाणामि
 तत्स भंते !
 पडिक्कमामि निदामि गरिहामि
 अप्पाणं वोसरामि ॥३॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा
 संजय-विरय-पडिहय-यच्चक्खाय-पावक्कमे-
 बिआ वा रामो वा-

एगओ वा परिसा-गओ वा-
 सुत्ते वा जागरमाणे वा-
 से सिएण वा बिहुणेण वा तालियटेण वा-
 पत्तेण वा पत्तभगेण वा-
 साहाए वा साहा-भगेण वा-
 पिहुणेण वा पिहुण-हत्थेण वा-
 चेलेण वा चेल-कण्णेण वा-
 हत्थेण वा मुहेण वा-
 अप्पणो वा कायं बाहिर वा वि पोगतं

न फूमेज्जा न बोएज्जा-
 अन्नं न फूसावेज्जा न बोआवेज्जा-
 अन्नं फूमंतं वा बोयंतं वा न समणुजाणेज्जा-
 जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं
 मणेणं वायाए काएणं
 न करेमि न कारवेमि
 करंतं-पि अन्नं न समणुजाणामि ।
 तस्स भंते !
 पडिक्कमामि निदामि गरिहामि-
 अप्पाणं वोसिरामि ॥४॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा
 संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय पावकम्मे-

दिआ वा राओ वा
एगओ वा परिसा-गओ वा
सुत्ते वा जागरमाणे वा

से बीएसु वा बीय-पइदुंसे वा-
रुडेसु वा रुढ-पइदुंसे वा-
जाएसु वा जाय-पइदुंसे वा-
हरिएसु वा हरिय-पइदुंसे वा-
छिसेसु वा छिस-पइदुंसे वा-

सचित्तेसु वा सचित्त-कोल-पड़ि-निस्सिएसु वा

न गच्छेज्जा न चिट्ठेज्जा न निसीएज्जा न सुयट्ठेज्जा-

अन्नं न गच्छावेज्जा न चिट्ठावेज्जा-

न निसीयावेज्जा न सुयट्ठावेज्जा-

अन्नं गच्छत्तं वा चिट्ठत्तं वा-

निसीयत्तं वा सुयट्ठत्तं वा न समणुजाणेज्जा

जावज्जीवाए तिविहुं तिविहेणं-

मणेणं बाधाए काएणं-

न करेमि न कारवेमि-

करत्तं-पि अन्नं न समणुजाणामि-

तस्स भते !

पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि-

अप्पाणं वोत्तिरामि ॥५॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा-

संजय-विरय-पडिहिय-पच्चक्खाय-पावकम्मे-

दिआ वा राओ वा-

एगओ वा परिसा-गओ वा-

सुत्ते वा जागर माणे वा-

से कीड़ वा पयगं वा कुंथु वा पिवीलियं वा-

हृत्यंसि वा पायसि वा बाहुंसि वा-

उरंसि वा उदरंसि वा सीससि वा-

वत्थसि वा पडिग्गहसि वा कंबलगंसि वा

पाय-पुच्छगंसि वा रय-हरगंसि वा गुच्छगंसि वा

उड्डुगंसि वा दंडगंसि वा पीडगंसि वा

फलगंसि वा सेज्जसि वा संथारगंसि वा

अन्नयरंसि वा तहप्पगारे उवगरणजाए-

तओ संजयामेव-

पडिलेहिय पडिलेहिय पमज्जिय पमज्जिय-

एगंतमवणेज्जा-

नो ण संघायमावजेज्जा ॥६॥

अजयं चरमाणो उ, पाण-भूयाइं हिसई ।

बंधइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥ १ ॥

अजयं चिट्ठमाणो उ, पाण-भूयाइं हिसई ।

बंधइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥ २ ॥

अजय भासमाणो उ, पाण-भूयाईं हिसईं ।
 बंधइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥ ३ ॥
 अजय सयमाणो उ, पाण-भूयाईं हिसईं ।
 बंधइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥ ४ ॥
 अजयं भुजमाणो उ, पाण-भूयाईं हिसईं ।
 बंधइ पावयं कम्म, तं से होइ कडुयं फलं ॥ ५ ॥
 अजयं भासमाणो उ, पाण-भूयाईं हिसईं ।
 बंधइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥ ६ ॥
 कहं चरे? कहं चिट्ठे?, कहमासे? कहं सए?
 कहं भुजंतो भासंतो, पाव-कम्मं न बंधइ? ॥ ७ ॥
 जयं चरे, जयं चिट्ठे, जयमासे जयं सए ।
 जयं भुजंतो भासंतो, पाव-कम्मं न बंधइ ॥ ८ ॥
 सब्बभूयप्पभूयस्स, सम्मं भूयाईं पासओ ।
 पिहियासवस्स वंतस्स, पाव-कम्मं न बंधइ ॥ ९ ॥
 पढमं नाणं तओ दया, एवं चिट्ठइ सब्बसंजए ।
 अन्नाणी किं काही, किं वा नाहिइ सेय-पावणं ॥ १० ॥
 सोच्चा जाणइ कल्लणं, सोच्चा जाणइ पावणं ।
 उभयं पि जाणइ सोच्चा, जं सेयं तं समायरे ॥ ११ ॥
 जो जीवे वि न याणइ, अजीवे वि न याणइ ।
 जीवाजीवे अयाणंतो, कहं सो नाहीइ संजमं ॥ १२ ॥

जो जीवे वि वियाणइ, अजीवे वि वियाणइ ।
 जीवाजीवे वियाणतो, सो हु नाहीइ संजम ॥१३॥
 जया जीवमजीवे य, दो वि एए वियाणइ ।
 तया गइ बहुविह, सव्वजीवाण जाणइ ॥१४॥
 जया गइ बहुविहं, सव्वजीवाण जाणइ ।
 तया पुण्ण च पावं च, वधं मोक्ख च जाणइ ॥१५॥
 जया पुण्ण च पाव च, वध मोक्खं च जाणइ ।
 तया निव्विदए भोए, जे दिव्वे जे य भाणुसे ॥१६॥
 जया निव्विदए भोए, जो दिव्वे जे य भाणुसे ।
 तया चयइ सजोग, सन्निभतर-बाहिरं ॥१७॥
 तया चयइ संजोग, सन्निभतर-बाहिरं ।
 तया मुडे भवित्ताण, पव्वइए अणगारियं ॥१८॥
 जया मुडे भवित्ताणं, पव्वइए अणगारियं ।
 तया संवरमुक्किट्ठं, धम्मं फासे अणुत्तरं ॥१९॥
 जया संवरमुक्किट्ठ, धम्म फासे अणुत्तरं ।
 तया धुणइ कम्मरयं, अबोहिकलुसं कडं ॥२०॥
 जया धुणइ कम्मरयं, अबोहिकलुस कडं ।
 तया सव्वत्तगं नाणं, दंसणं चाभिगच्छइ ॥२१॥
 जया सव्वत्तगं नाणं, दंसणं चाभिगच्छइ ।
 तया लोगमलोग च, जिणो जाणइ केवली ॥२२॥

जया जोगमसोगं च, जिणो जाणइ केवली ।
 तथा जोगे निरुमिस्ता, सेलेसि पडिवज्जइ ॥२३॥
 जया जोगे निरुमिस्ता, सेलेसि पडिवज्जइ ।
 तथा कम्मं छविस्ताणं, सिद्धिं गच्छइ नीरओ ॥२४॥
 जया कम्मं छविस्ताणं, सिद्धिं गच्छइ नीरओ ।
 तथा जोगमत्ययत्यो, सिद्धो हवइ सासओ ॥२५॥
 सुहसायगस्स समणस्स, सायाउलगस्स निगामसाइस्स ।
 उच्छोलणापहोवस्स, 'इलहा सुगइ' तारिसगस्स ॥२६॥
 तवोगुण-यहाणस्स, उज्जुलइ-खति-संजमरयस्स ।
 परीसहे जिणंतस्स, 'सुलहा सुगइ' तारिसगस्स ॥२७॥
 पच्छा वि ते यथाया, खिप्पं गच्छति अमर-भवणाइ ।
 जेसि पियो तवो संजमो य, खंति य बंभवेरं च ॥२८॥
 इच्चेय छज्जीवणिय, सम्महिद्धी सया जए ।
 इत्तहं लहितु सामण्णं, कम्मणा न विराहिज्जाति ॥२९॥
 ॥त्ति वेमि ॥

अहं पिंडेसणा नामं पंचममज्झयणं

पढमो उद्देमो

संपत्ते भिक्खुकालम्मि, असंभंतो अमुच्छिओ ।
इमेण कमज्जोगेण, भत्तपाणं गवेमए ॥ १ ॥
ने गामे वा नयरे वा, गोयरगागओ मुणी ।
चरे मंदमणुव्विगो, अम्बक्खित्तेण चैयसा ॥ २ ॥
पुरओ जुगमायाए, पेहमाणो महिं चरे ।
वज्जंतो वीय-हरियाए, पाणे य दग्गम्मद्वियं ॥ ३ ॥
ओवायं विसमं छाणूं, विज्जलं परिवज्जए ।
संकमेण न गच्छेज्जा, विज्जमाणे परक्कमे ॥ ४ ॥
पवडंतो व ते तत्थ, पक्खलंतो व संजए ।
हिसेज्ज पाण-भूयाइं, तसे अट्ठव थावरे ॥ ५ ॥
तम्हा तेण न गच्छेज्जा, संजए सुसमाहिए ।
सइ अज्जेण मग्गेण, जयमेव परक्कमे ॥ ६ ॥
इंगलं छारियं रात्ति, तुसरारत्तिं च गोमयं ।
सत्तरक्खोहं पाएहि, संजओ तं नइक्कमे ॥ ७ ॥
न चरेज्ज वासे वासते, महियाए व पडंतिए ।
महावाए व वायते, तिरिच्छ-संपाइमेषु वा ॥ ८ ॥

न चरेज्ज वेस-सामते, वंभचेरवसाणए ।
 वमयारिस्स दंतस्स, होज्जा तत्थ विसोत्तिया ॥९॥
 अणायणे चरंतस्स, संसग्गीए अभिक्खणं ।
 होज्ज घयाणं पीत्ता, सामणम्मि य संसग्गी ॥१०॥
 तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं भुग्गइवइड्ढणं ।
 वज्जए वेस-सामंतं, मुणी एगंतमस्सिए ॥११॥
 साणं सुइयं गावि, दित्तं गोणं हयं गयं ।
 संडिब्भं कलहं जुद्धं, दूरग्गी परिवज्जए ॥१२॥
 अणुत्ताए नावणाए, अप्पहिड्डे अणाउत्ते ।
 इंदियाइ जहाभागं, वमइत्ता मुणी चरे ॥१३॥
 ववदवस्स न गच्छेज्जा, भासमाणो य गोयरे ।
 हुसंतो नाभिगच्छेज्जा, कुलं उच्चवायं सया ॥१४॥
 आलोय थिम्मलं दारं, सांघि वगभवणाणि य ।
 चरंतो न विनिज्जाए, सकट्ठाणं विवज्जए ॥१५॥
 रग्गी गिहवईणं च, रहस्सारक्खियाण य ।
 संकिलेसकरं ठाणं, दूरग्गी परिवज्जए ॥१६॥
 पडिक्कुट्ट-कुलं न पविसे, मामगं परिवज्जए ।
 अचियत्त-कुलं न पविसे, चियत्तं पविसे कुलं ॥१७॥
 साणीपावारपिहियं, अप्पणा नावपंगुरे ।
 कवाडं नो पणोल्लेज्जा, ओग्गहसि अजाइया ॥१८॥

गोयरगगपविट्ठो उ, वच्च-भुत्त न धारए ।
 ओगासं फासुयं नच्चा, अणुन्नविय बोसिरे ॥१९॥
 नीयं दुवारं तमस, कोट्ठगं परिवज्जए ।
 अचक्खुविसओ जत्थ, पाणा बुप्पडिलेहगा ॥२०॥
 जत्थ पुप्फाद् बीयाद्, विप्पडण्णाडं कोट्ठए ।
 अहुणोवलित्त उल्ल, दट्ठूण परिवज्जए ॥२१॥
 एलगं दारग साण, वच्छगं वावि कोट्ठए ।
 उल्लंघिया न पविसे, विऊहित्ताण व संजए ॥२२॥
 असंसत्त पलोएज्जा, नाइदूरावलोयए ।
 उप्फुल्लं न विनिज्जाए, नियट्ठिज्ज अयंपिरो ॥२३॥
 अइभूमिं न गच्छेज्जा, गोयरगगओ मुणी ।
 कुलस्स भूमिं जाणित्ता, मिथ-भूमिं परक्कमे ॥२४॥
 तत्थेव पडिलेहिज्जा, भूमिभागं वियक्खणो ।
 सिणाणस्स य वच्चस्स, सलोग परिवज्जए ॥२५॥
 दगमट्ठियआयाणं, बीयाणि हरियाणि य ।
 परिवज्जंतो चिट्ठेज्जा, सव्विदियसमाहिए ॥२६॥
 तत्थ से चिट्ठमाणस्स, आहरे पाणभोयणं ।
 अकप्पियं न गेण्हिज्जा, पडिगाहेज्ज कप्पियं ॥२७॥
 आहंतो सिया तत्थ, परिमाडेज्ज भोयणं ।
 दित्थिं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥२८॥

समद्वभाणी पाणाणि, बीयाणि हरियाणि य ।
 असज्जमकरि नच्चा, तारिसं परिवज्जए ॥२९॥
 साहट्टु निक्खित्तार्णं, सच्चित्तं घट्टियाणि य ।
 तद्देव समणट्ठाए, उदगं संपणोल्लिया ॥३०॥
 भोगाहट्ठा च्चलइत्ता, आहरे पाणभोयणं ।
 दित्थि पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥३१॥
 पुरेकम्भेण हत्थेण, दब्बीए भायणेण वा ।
 वित्थियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥३२॥
 एव उवउल्ले सत्तिणिढे, सत्तरक्खे मट्टियाऊसे ।
 हरियाले हिंमुलए, मणोसिला अजणे लोणे ॥३३॥
 गेवय-वणिणय-सेविय, सोरट्टिय-पिट्ठ-कुक्कुस-काय ।
 उक्किट्ठमससट्ठे, ससट्ठे चेव बोद्धव्वे ॥३४॥
 अममट्ठेण हत्थेण, दब्बीए भायणेण वा ।
 विज्जमाणं न इच्छिज्जा, पच्छा-कम्मं जहिं भवे ॥३५॥
 संसट्ठेण य हत्थेण, दब्बीए भायणेण वा ।
 विज्जमाणं पडिच्छिज्जा, जं तत्थेसणियं भवे ॥३६॥
 दोण्ह तु भुंजमाणार्णं, एगो तत्थ निमंतए ।
 विज्जमाण न इच्छेज्जा, छंदे ते पडिलेहए ॥३७॥
 दोण्ह तु भुंजमाणार्णं, दो वि तत्थ निमंतए ।
 विज्जमाणं पडिच्छेज्जा, जं तत्थेसणियं प्रवे ॥३८॥

गुब्बिणीए उवत्तत्थं, विविह पाणभोयणं ।
भुंजमाणं विवज्जेज्जा, भुत्तसेसं पडिच्छए ॥३९॥

सिया य समणट्ठाए, गुब्बिणी कालमासिणी ।
उट्ठिया वा निसीएज्जा, निसन्ना वा पुण्डुए ॥४०॥
तं भवे भत्तपाण तु, संजयाण अकप्पियं ।
दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥४१॥

थणग पिज्जमाणी, दारगं वा कुमारियं ।
तं निक्खविअ रोअंतं, आहरे पाणभोयणं ॥४२॥

तं भवे भत्तपाणं तु, सजयाण अकप्पिय ।
दितिय पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥४३॥

जं भवे भत्तपाण तु, कप्पाकप्पम्मि संकियं ।
दितिय पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥४४॥

दगवारएण पिहियं, नीसाए णीढएण वा ।
लोढेण वा वि लेवेण, सिलेसेण व केणइ ॥४५॥

तं च उअंभदिआ दिज्जा, समणट्ठाए व दावए ।
दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥४६॥

असण पाणगं वा वि, छाइमं साइमं तहा ।
जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा, दाणट्ठा पगडं इमं ॥४७॥

✓ तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं ।
दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥४८॥

असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा ।
 जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा, पुण्णट्ठा पगडं इमं ॥५९॥
 तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं ।
 दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥५०॥
 असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा ।
 जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा, वणिमट्ठा पगडं इमं ॥५१॥
 तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं ।
 दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥५२॥
 असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा ।
 जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा, समणट्ठा पगडं इमं ॥५३॥
 तं भवे भत्तपाणं, तु संजयाण अकप्पियं ।
 दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥५४॥
 उद्देसियं कीयगडं, पुईकम्मं च आहउं ।
 अज्झोयए पामिच्चं, भीतजायं च वज्जए ॥५५॥
 उगमंसे अ पुच्छेज्जा, कत्तसट्ठा केण वा कडं ।
 सोच्चा नित्संकिंयं सुउं, पडिगाहेज्ज संजए ॥५६॥
 असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा ।
 कुप्फेसु होज्ज उम्मीसं, बीएसु हरिएसु वा ॥५७॥
 तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं ।
 दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥५८॥

असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तथा ।

उदगंमि होज्ज निक्खित्तं उत्तिग-पणणेसु वा ॥५९॥

त भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं ।

दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥६०॥

असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तथा ।

तेउम्मि होज्ज निक्खित्तं, तं च संघट्टिया दए ॥६१॥

तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं ।

दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥६२॥

एवं उस्सविकया ओसविकया, उज्जालिया पज्जालिया निज्जाविया ।

उत्तिस्सचिया निस्तिस्सचिया, ओवत्तिया ओयारिया दए ॥६३॥

तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं ।

दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥६४॥

होज्ज कट्ठं सिलं वा वि, इट्ठालं वा वि एगया ।

ठवियं सकमट्ठाए, तं च होज्ज चलाचलं ॥६५॥

न तेण भिक्खू गच्छेज्जा, विट्ठो तत्थ असजमो ।

गंभीरं क्षुसिरं चेव, सन्विदिय समाहिए ॥६६॥

निस्सेणि फलगं पीढं, उस्सवित्ताणमारुहे ।

मंचं कीलं च पासायं, समणट्ठाए व दावए ॥६७॥

दुरूहमाणी पवडेज्जा, हत्थ पायं व लूसए ।

पुढविजीवे वि हिसेज्जा, जे य त निस्सिया जगा ॥६८॥

एयारिसे महादोसे, जाणिऊण महेसिणो ।
 तम्हा भालोहडं भिक्खं, न पडिगिण्हति संजया ॥६९॥
 कंद मूल पलव वा, आमं छिन्न च सन्निरं ।
 तुंवाण सिगवेरं च, आमगं परिवज्जए ॥७०॥
 तहेव सत्तु-चुण्णाइ, कोल-चुण्णाइ आवणे ।
 सक्कुलिं फाणियं पूय, अन्न वा वि तहाविह ॥७१॥
 विक्कायमाण पसढ, रएण परिफासिय ।
 वित्थियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥७२॥
 बहुअट्ठिय पुगल, अणिमिस वा बहुकटयं ।
 अत्थियं त्तिट्ठुय बिल्ल, उच्छुखंडं च सिर्वालि ॥७३॥
 अप्पे सिया भोयणजाए, बहुउज्झियघम्मिए ।
 वित्थियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥७४॥
 तहेवुच्चावय पाण, अडुवा वारघोअण ।
 ससेइमं चाडलोदग, अट्ठुणाघोय विवज्जए ॥७५॥
 जं जाणेज्ज चिराघोय, मईए दंसणेण वा ।
 पडिपुच्छिऊण सोच्चा वा, जं च निस्संकिंयं भवे ॥७६॥
 अजीवं परिणयं नच्चा, पडिगाहेज्ज संजए ।
 अह संकिंय भवेज्जा, आसाइत्ताण रोयए ॥७७॥
 थोबमासायणट्ठाए, हत्थगम्मि दत्ताहि मे ।
 मा मे अच्चं बिलं पूइ, नालं तण्हं विणित्तए ॥७८॥

त च अच्छविल पूइ, नाल तण्ह विणित्तए ।
 दितिय पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥७९॥
 त च होज्ज अकामेण, विमणेण पडिच्छिय ।
 त अप्पणा न पिवे, नो वि अन्नस्स दावए ॥८०॥
 एगतमवक्कमित्ता, अच्छित्त पडिलेहिया ।
 जय परिट्ठवेज्जा, परिट्ठप्प पडिक्कमे ॥८१॥
 सिया य गोयरग्गओ, इच्छेज्जा परिभोत्तुअ ।
 कोट्ठग भित्तिमूल वा, पडिलेहित्ताण फासुय ॥८२॥
 अणुन्नवित्तु मेहावी, पडिच्छन्नम्मि सवुडे ।
 हत्थग सपमज्जित्ता, तत्थ भुजेज्ज सजए ॥८३॥
 तत्थ से भुजमाणस्स, अट्ठिय कंटओ सिया ।
 तण-कट्ठ-सक्कर वा वि, अन्न वा वि तहाविह ॥८४॥
 त उक्खिवित्तु न निक्खिवे, आसएण न छट्ठए ।
 हत्थेण त गहेऊण, एगतमवक्कमे ॥८५॥
 एगतमवक्कमित्ता, अच्छित्त पडिलेहिया ।
 जय परिट्ठवेज्जा, परिट्ठप्प - पडिक्कमे ॥८६॥
 सिया य भिक्खू इच्छेज्जा, सेज्जमागम्म भोत्तुअ ।
 सपिण्डपायमागम्म, उट्ठुअ पडिलेहिया ॥८७॥
 विणएण पविसित्ता, सगासे गुरुणो मुणी ।
 इरियावहियमायाय, आगओ य पडिक्कमे ॥८८॥

आभोएत्ताण नीसेस, अइयारं जहवकम ।
गमणागमणे चेव, भत्तपाणे य सजए ॥८९॥

उज्जुप्पन्नो अणुद्विगो, अइविक्खत्तेण चेयसा ।
आलोए गुरुसगासे, ज जहा गहियं भवे ॥९०॥

न सम्ममालोइय होज्जा, पुब्बि पच्छा व ज कडं ।
पुणो पडिक्कमे तत्स, वोसिट्ठो चितए इमं ॥९१॥

अहो जिणेहिअसावज्जा, वित्ती साहूण देसिया ।
भोवखसाहूणहेउत्स, माहुदेहत्स धारणा ॥९२॥

नभोक्कारेण पारेत्ता, करेत्ता जिणसंयवं ।
सज्जायं पट्टवित्ताण, वीसमेज्ज खण भुणी ॥९३॥

वीसमतो इम चिते, हियमट्ठं लाभमट्ठिओ ।
जइ मे अणुग्गहं कुज्जा, साहू होज्जामि तारिओ ॥९४॥

साहूवो तो चियत्तेणं, निमतेज्ज जहवकमं ।
जइ तत्थ केइ इच्छेज्जा, तेहि सद्धि तु भुजए ॥९५॥

अह कोइ न इच्छेज्जा, तओ भुजेज्ज एकओ ।
आलोए भायणे साहू, जय अपरित्ताडिय ॥९६॥

तित्तणं व कडुयं व कसाय, अबिल व भहुरलवण वा ।
एयलद्धमन्नट्ठपत्त, नहु-घय व भुजेज्ज सजए ॥९७॥

अरस विरस वा वि, सुइय वा असुइय ।
उत्तं वा जइ वा सुक्क, मंथकुम्भामभोयणं ॥९८॥

उप्पन्नं नाइहीलेज्जा, अप्प पि बहु फासुयं ।
 मुहालद्धं मुहाजीवी, भुंजिज्जा दोसवज्जियं ॥१९॥
 दुल्लहा उ मुहादाई, मुहाजीवी वि दुल्लहा ।
 मुहादाई मुहाजीवी, दो वि गच्छंति सुग्गइ ॥१००॥
 ॥त्ति बेमि ॥

पंचममज्झयणे--बीओ उद्देसो

पडिग्गहं सलिहित्ताणं, लेवमायाए संजए ।
 डुग्गंधं वा सुग्गंधं वा, सत्वं भुंजे न छट्टए ॥ १ ॥
 सेज्जा निसीहियाए, समावन्नो य गोयरे ।
 अयावयट्ठा भोच्चाणं, जइ तेण न संथरे ॥ २ ॥
 तओ कारणसुप्पन्ने, भत्तपाणं गवेसए ।
 विहिणा पुव्वउत्तेण, इमेण उत्तरेण य ॥ ३ ॥
 कालेण निक्खमे भिक्खू, कालेण य पडिक्कमे ।
 अकालं च विवज्जित्ता, काले कालं समायरे ॥ ४ ॥
 अकाले चरसि भिक्खू, कालं न पडिलेहसि ।
 अप्पाणं च किलामेसि, सन्निवेसं च गरिहसि ॥ ५ ॥

सइ काले चरे भिक्खू, कुज्जा पुरिसकारियं ।
 अलामो त्ति न सोएज्जा, तवो त्ति अहियासए ॥ ६ ॥
 तहेवुच्चावया पाणा, भत्तट्ठाए समागया ।
 तं उज्जयं न गच्छेज्जा, जयमेव परक्कमे ॥ ७ ॥
 गोयरग्गपविट्ठो उ, न निसीयज्ज कत्थइ ।
 कहं च न पबंघेज्जा, चिट्ठित्ताण व संजए ॥ ८ ॥
 अग्गलं फलिहं दारं, कवाडं वा वि संजए ।
 अवत्तंबिया न चिट्ठेज्जा, गोयरग्गगमो मुणी ॥ ९ ॥
 समणं माहणं वा वि, किविणं वा वणीमगं ।
 उवसंक्रमंतं भत्तट्ठा, पाणट्ठाए व संजए ॥ १० ॥
 तं अइक्कमित्तु न पविसे, न चिट्ठे चक्खुगोयरे ।
 एगंतमवक्कमित्ता, तत्थ चिट्ठेज्ज संजए ॥ ११ ॥
 वणीमगस्स वा तस्स, दायगस्सुमयस्स वा ।
 अप्पत्तियं सिया होज्जा, लहुत्तं पवयणस्स वा ॥ १२ ॥
 पडिसेहिए व दिन्ने वा, तओ तम्मि नियत्तिए ।
 उवसंक्रमेज्ज भत्तट्ठा, पाणट्ठाए व संजए ॥ १३ ॥
 उप्पत्तं पडमं वा वि, कुमुयं वा मगदंतियं ।
 अन्न वा पुप्फसन्नित्तं, तं च संलुंचिया दए ॥ १४ ॥
 तं भवे भत्तपाणं तु, सजयाण अकप्पियं ।
 वित्तियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥ १५ ॥

उप्पलं पउमं वा वि, कुमुयं वा मगदंतियं ।
 अन्नं वा पुप्फसच्चित्तं, तं च संमद्दिया दए ॥१६॥
 तं भवे भत्तपाण तु, संजयाण अकप्पियं ।
 दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥१७॥
 सालुयं वा विरालिय, कुमुय उप्पलनालियं ।
 मुणालियं सासवनालियं, उच्छुखंडं अनिव्वुडं ॥१८॥
 तरुणं वा पवाल, रुक्खस्स तणगस्स वा ।
 अन्नस्स वा वि हरियस्स, आमगं परिवज्जए ॥१९॥
 तरुणियं वा छिवाडि, आमियं भज्जिय सइ ।
 दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥२०॥
 तहा कोलमणुस्सिन्नं, वेलुयं कासवनालियं ।
 तिलपप्पडगं नीम, आमगं परिवज्जए ॥२१॥
 तहेव चाउलं पिट्ठं, वियडं वा तत्तनिव्वुडं ।
 तिलपिट्ठ-पूइपिण्णागं, आमगं परिवज्जए ॥२२॥
 कविट्ठं भाउलिंगं च, मूलगं मूलगतियं ।
 आमं असत्थपरिणयं, मणसा वि न पत्थए ॥२३॥
 तहेव फलमंथूणि, वीयमंथूणि जाणिया ।
 बिहेलगं पियालं च, आमगं परिवज्जए ॥२४॥
 समुयाणं चरे भिक्खू, कुल उच्चावय सया ।
 नीयं कुलमइक्कम्म, ऊसडं नाभिधारए ॥२५॥

अदीणो वित्तिमेसेज्जा, न विसीएज्ज पंडि।
 अमुच्छिओ भोयणम्मि, भायन्ने एसणारए ॥२६॥
 बहु परघरे अत्थि, विविह् खाइमसाइमं।
 न तत्थ पडिओ कुप्पे, इच्छा देज्ज परो न वा ॥२७॥
 सयणासणवत्थं वा, भत्त-पाणं व संजए।
 अदित्तस्स न कुप्पेज्जा, पच्चक्खे वि य दीसओ ॥२८॥
 इत्थियं पुरिसं वा वि, डहरं वा महल्लगं।
 बंदमाणो न जाएज्जा, नो य णं फस्स वए ॥२९॥
 जे न बंदे न से कुप्पे, बंदिओ न समुक्कसे।
 एवमन्नेसमाणस्स, सामण्णमणुचिह्ह ॥३०॥
 सिया एगइओ लद्धं, लोभेण विणिगूहइ।
 मा मेयं दाइयं संतं, ददूणं सयमायए ॥३१॥
 अत्तट्ठं गुरुओ लुट्ठो, बहं पावं पकुव्वइ।
 सुत्तोसओ य से होइ, निव्वाणं च न गच्छइ ॥३२॥
 सिया एगइओ लद्धं, विविहं पाणभोयणं।
 भद्दं भद्दं भोच्चा, विवण्णं विरसमाहरे ॥३३॥
 जाणंतु ता इमे समणा, भाययट्ठी अयं मुणी।
 सत्तुट्ठो सेवए पंतं, लूहवित्ति सुत्तोसओ ॥३४॥
 पूयणट्ठी असोकामी, माण-संमाणकामए।
 बहं पसवइ पावं, मायासल्लं च कुव्वइ ॥३५॥

सुरं वा मेरगं वा वि, अन्नं वा मज्जगं रसं ।
 सप्तक्खं न पिवे भिक्खू, जसं सारक्खमप्पणो ॥३६॥
 पियइ एगओ तेणो, न मे कोई वियाणइ ।
 तस्स पस्सह दोसाइं, निर्याइ च सुणेह मे ॥३७॥
 वड्ढइ सोडिया तस्स, मायामोस च भिक्खुणो ।
 अयसो य अनिब्बाणं, सययं च असाहुया ॥३८॥
 निच्चुविग्गो जहा तेणो, अत्तकम्मोहिं दुम्मई ।
 तारिसो मरणते वि, नाराहेइ संवर ॥३९॥
 आयरिए नाराहेइ, समणे यावि तारिसे ।
 गिहत्था वि णं गरिहंति, जेण जाणंति तारिसं ॥४०॥
 एवं तु अगुणप्पेही, गुणाणं च विवज्जओ ।
 तारिसो मरणते वि, नाराहेइ संवरं ॥४१॥
 तव कुव्वइ मेहावी, पणीयं वज्जए रसं ।
 मज्ज-प्पमायविरओ, तवस्सी अइउक्कसो ॥४२॥
 तस्स पस्सह कल्लाण, अणेगसाहुप्पइयं ।
 विउलं अत्थसंजुत्तं, कित्तइस्सं सुणेह मे ॥४३॥
 एवं तु गुणप्पेही, अगुणाणं च विवज्जओ ।
 तारिसो मरणते वि, आराहेइ संवरं ॥४४॥
 आयरिए आराहेइ, समणे यावि तारिसे ।
 गिहत्था वि णं पूयंति, जेण जाणंति तारिसं ॥४५॥

तवतेणे वयतेणे, रुवतेणे य से नरे ।

आयारभावतेणे य, कुच्चइ देवकिण्विसं ॥४६॥

सद्धूण वि देवत्तं, उववन्नो देवकिण्विसं ।

तत्था वि से न याणाइ, कि मे किच्चा इमं फलं ॥४७॥

तत्तो वि से चइत्तार्णं, सन्निही एलमूअयं ।

नरयं तिरिक्खजोणं वा, बोही जत्थ सुदुत्तहा ॥४८॥

एयं च दोसं दद्धूणं, नायपुत्तेण भासियं ।

अणुमायं वि मेहावी, नायासोसं विवज्जए ॥४९॥

सिक्खिअण भिक्खेसणसोहि,

संजयाण बुद्धाण सगाते ।

तत्थ भिक्खु सुप्पणिहिइंदिए,

तिव्वलज्जगुणवं-विहरेज्जाति ॥५०॥ ति वेसि ॥

अहं महायार कहा नामं छट्ठमज्झयणं (धम्मत्यकाम)

नाण-दसण-संपन्नं संजमे य तवे रयं ।

गणिमागमसंपन्नं, उज्जाणम्मि समोसदं ॥ १ ॥

रायाणो रायमच्चा य, माहणा अदुव खत्तिया ।

पुच्छंति निह्वयप्पाणो, कहं मे आयारगोयरो ॥ २ ॥

तेसिं सो निहुओ दंतो, सव्वभूयसुहावहो ।
 सिक्खाए सुसमाउत्तो, आइक्खइ वियक्खणो ॥ ३ ॥
 हंदि धम्मत्यकामाणं, निगंथाणं सुणेह मे ।
 आयारगोयरं भीम, सयलं दुरहिद्वियं ॥ ४ ॥

नल्लत्थ एरिस वुत्त, ज लोए परमदुच्चरं ।
 विउलट्ठाणभाइस्स, न भूयं न भविस्सइ ॥ ५ ॥

सखुट्ठगवियत्ताण वाहियाणं च जे गुणा ।
 अखंडफुडिया कायत्वा तं सुणेह जहा तथा ॥ ६ ॥

दस अट्ठ य ठाणाइ, जाइ बालोऽवरज्झइ ।
 तत्थ अण्णयरे ठाणे, निगंयत्ताओ भस्सइ ॥ ७ ॥

वयछक्कं,^९ कायछक्कं,^{१२} अकप्पो^{१३} गिहिंभायणं^{१४} ।
 पलियंकं^{१५} निसेज्जा^{१६} य, सिणाणं^{१७} सोहवज्जणं^{१८} ॥ ८ ॥

(१) तत्थिमं पढम ठाण, महावीरेण देसियं ।
 अहिंसा निउण बिट्ठा, सव्वभूएसु संजमो ॥ ९ ॥

जावंति लोए पाणा, तसा अट्ठव थावरा ।
 ते जाणमजाणं वा, न हणे नो वि घायए ॥ १० ॥

सव्वे जीवा वि इच्छंति, जीविउं न मरिज्जिउं ।
 तम्हा पाणवहं धोरं, निगंथा वज्जयति णं ॥ ११ ॥

(२) अप्पणट्ठा परट्ठा वा, कोहा वा जइ वा भया ।
 हिंसणं न मुसं बूया, नो वि अन्नं वयावए ॥ १२ ॥

मुसावाओ य लोयमि, सव्वसाहूहिं गरहिओ ।
अविस्सासो य भूयाणं, तम्हा मोसं विवज्जए ॥१३॥

(३) चित्तमंतमचित्तं वा, अप्पं वा जइ वा वहुं ।
वंतसोहणमेत्तं पि, ओग्गहंसि अजाइया ॥१४॥

तं अप्पणा न गेण्हति, नो वि गिण्हामए परं ।
अअ वा गिण्हमाणं पि, नाणुजाणति संजया ॥१५॥

(४) अबंभवरिय धोरं, पमायं दुरहिद्वियं ।
नायरंति मुणी लोए, मेयाययणवज्जिणो ॥१६॥

मूलमेयमहम्मस्स, महादोससमुस्सयं ।
तम्हा मेहुणसंसग्ग, निग्गथा वज्जयति णं ॥१७॥

(५) विडमुग्गमेद्वमं लोणं, तेल्लं सप्पि च फाणियं ।
न ते सप्पिहिमिच्छति, नायपुत्त-वओरया ॥१८॥

लोहस्सेस अणुप्फासो, मत्ते असयरामवि ।
जे सिया सप्पिहीकामे, गिही पव्वइए न ते ॥१९॥

जं पि बत्थं व पाय वा, कवलं पायपुछणं ।
तं पि संजयलज्जट्ठा, धारंति परिहरति य ॥२०॥

न सो परिग्गहो वुत्तो, नायपुत्तेण साइणा ।
मुच्छा परिग्गहो वुत्तो, इइ वुत्तं महेसिणा ॥२१॥

सव्वापुवहिणा धुत्ता, संरक्खणपरिग्गहे ।
अवि अप्पणो वि वेहंमि, नायरंति ममाहयं ॥२२॥

(६) अहो निच्चं तवोकम्मं, सब्बदुद्धेहि वणिण्यं ।

जा य लज्जासमा वित्ती, एगभत्तं च भोयणं ॥२३॥

संतिमे सुहुमा पाणा, तसा अदुव थावरा ।

जाइं रामो अपासंतो, कहमेसणियं चरे ॥२४॥

उदउल्ल बीयसंसत्तं, पाणा निव्वडिया मंहि ।

दिआ ताइं विवज्जेज्जा, रामो तत्थ कहं चरे ॥२५॥

एयं च दोसं दट्ठूणं, नायपुत्तेण भासियं ।

सव्वाहारं न भुंजंति; निगंथा राइभोयणं ॥२६॥

(१) पुढकिकायं न हिंसंति, मणसा वयसा कायसा ।

तिविहेण करणजोएण, संजया सुसमाहिया ॥२७॥

पुढकिकायं विहिंसंतो, हिंसइ उ तयस्सिए ।

तसे य विविहे पाणे, चक्खुसे य अचक्खुसे ॥२८॥

तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दुग्गाइवड्ढणं ।

पुढविकायसमारंभं, जावज्जीवाए वज्जए ॥२९॥

(२) आउकायं न हिंसति, मणसा वयसा कायसा ।

तिविहेण करणजोएण, संजया सुसमाहिया ॥३०॥

आउकाय विहिंसंतो, हिंसइ उ तयस्सिए ।

तसे य विविहे पाणे, चक्खुसे य अचक्खुसे ॥३१॥

तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दुग्गाइवड्ढणं ।

आउकायसमारंभं, जावज्जीवाए वज्जए ॥३२॥

- (३) जायतेयं न इच्छति, पावगं जलइत्तए ।
 तिक्खमन्नयरं सत्थ, सम्बभो वि दुरासयं ॥३३॥
 पाईणं पडिणं वा वि, उड्ढं अणुदिसामवि ।
 अहे दाहिणभो वा वि, दहे उत्तरभो वि य ॥३४॥
 भूयाणमेसमाधाभो, हव्ववाहो न संसभो ।
 तं पईवपयावट्ठा, सजया किञ्चि नारभे ॥३५॥
 तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
 तेउकायसमारंभं, जावज्जीवाए वज्जए ॥३६॥
 अनिलस्स समारंभं, बुद्धा मन्नति तारिसं ।
 सावज्जबहुल चेयं, नेयं तार्हीह सेविमं ॥३७॥
 (४) तालियटेण पत्तेण साहाविहुयणेण वा ।
 न ते बीइउमिच्छति बीयावेऊण वा परं ॥३८॥
 जं पि वत्थ व पायं वा कवलं पायपुंछणं ।
 न ते वायमुईरंति, जयं परिहरंति य ॥३९॥
 तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
 वाउकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥४०॥
 (५) वणस्सइं न हिंसंति, मणसा वयस कायसा ।
 तिविहेण करणजोएण, संजया सुसमाहिया ॥४१॥
 वणस्सइं बिहिंसंतो हिंसइ उ तयस्सिए ।
 तत्ते य विविहे पाणे, चक्खुत्ते य अक्खुत्ते ॥४२॥

तम्हा एय वियाणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढण ।
वणस्सइ-समारंभ, जावज्जीवाए वज्जए ॥४३॥

(६-१२) तसकाय न हिंसति, मणसा वयस कायता ।
तिविहेण करणजोएण, सजया सुसमाहिंयां ॥४४॥

तसकाय विहिंसतो, हिंसइ उ तयस्सिए ।
तसे य विविहे पाणे, चक्खुसे य अचक्खुसे ॥४५॥

तम्हा एय वियाणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढण ।
तसकायसमारंभ, जावज्जीवाए वज्जए ॥४६॥

(१३) जाइ चत्तारिऽभोज्जाइ,इसिणाहारमाइणि ।
ताइं तु विवज्जतो, संजम अणुपालए ॥४७॥

पिंड^१ सेज्ज^२ च वत्थ^३ च, चउत्थ पायमेव^४ य ।
अकप्पिय न इच्छेज्जा, पडिगाहेज्ज कप्पिय ॥४८॥

जे नियाग ममायति, कीयमुद्देसियाहड ।
वह ते समणुजाणति, इइ वुत्त महेसिणा ॥४९॥

तम्हा असणपाणाइ, कीयमुद्देसियाहडं ।
वज्जयति ठियमप्पाणो, निग्गंथा धम्मजीविणो ॥५०॥

(१४) कसेसु कंसपाएसु, कुडमोएसु वा पुणो ।
भुंजंतो असणपाणाइं आयारा परिभस्सइ ॥५१॥

सीओदगसमारंभे, मत्तधोयणछट्ठणे ।
जाइं छंणंति नूयाइं, दिट्ठो तत्थ असंजंमो ॥५२॥

पच्छाकम्मं पुरेकम्म, सिया तत्थ न कप्पइ ।
एयमट्ठ न भुजंति, निग्गंथा गिहिभायणे ॥५३॥

(१५) आसदीपलियकेसु, भंचमासालएसु वा ।
अणायरियमज्जाणं, आसइत्तु सइत्तु वा ॥५४॥

नासंदीपलियकेसु, न निस्सेज्जा पीढए ।
निग्गंथाऽपडिलेहाए, बुद्धवुत्तमहिट्ठगा ॥५५॥

भभीरविजया एए, पाणा दुप्पडिलेहा ।
आसंदीपलियंको य, एयमट्ठं विवज्जिया ॥५६॥

(१६) गोयरगपविट्ठस्म, निस्सेज्जा जस्स कप्पइ ।
इमेरिसमणायारं, आवज्जइ अबोहियं ॥५७॥

विवत्ती वभचेरस्स, पाणाण च वहे बहो ।
वणीमगपडिग्घाओ, पडिकोहो अगारिणं ॥५८॥

अगुत्ती बंभचेरस्स, इत्थीओ वावि संकणं ।
कुसीलयद्धण ठाण, दूरओ परिवज्जए ॥५९॥

तिण्हमभयरगस्स, निस्सेज्जा जस्स कप्पइ ।
जराए अभिभूयस्स^१ वाहियस्स^२ तवस्सिणो^३ ॥६०॥

(१७) वाहिओ वा अरोगी वा, सिणाण जो उ पत्थए ।
बुधकंतो होइ मायारो, जढो हवइ सजमो ॥६१॥

सतिमे सुहुमा पाणा, घसासु मिलागासु य ।
जे उ भिक्खू सिणायंती, सीएण उसिणेण वा ॥६२॥

तम्हा ते न सिणार्यंति, सीएण उसिणेण वा ।
 जावज्जीवं वयं घोरं, असिणाणमहिट्ठगा ॥६३॥
 सिणाण अदुवा कक्कं, लोढं पउमगाणि य ।
 गायस्सुवट्ठणट्ठाए, नायरंति कयाइ वि ॥६४॥
 (१८) नगिणस्स वा वि मुंडस्स, दीहरोमनहंसिणो ।
 मेट्ठणा उवसंतस्स, किं विभूसाए कारियं ॥६५॥
 विभूसावत्तियं भिक्खू कम्मं वंधइ चिक्कण ।
 संसारसायरे घोरे, जेणं पढइ दुरुत्तरे ॥६६॥
 विभूसावत्तियं चेय, बुद्धा मत्तंति तारिस्स ।
 सावज्ज-बहुलं चेयं, नेयं ताईहिं सेवियं ॥६७॥

खवेति अप्पाणममोहदंसिणो,
 तवे रया संजमज्जवे गुणे ।
 धुणंति पावाइं पुरेकडाइं,
 नवाइ पावाइं न ते करेति ॥६८॥

सओवसंता अममा अकिचणा,
 सविज्जविज्जाणुगया जससिणो ।
 उउप्पसत्ते विमले व चंदिमा,
 सिद्धिं विमाणाइं उवेति ताइणो ॥६९॥
 ॥ ति वेमि ॥

अह वक्कसुद्धी नामं सत्तममज्झयणं

चउण्ह खलु भासाणं, परिसंखाय पण्णवं ।
बोण्ह तु विणयं सिक्खे, दो न भासेज्ज सव्वसो ॥ १ ॥
जा य सच्चा अवत्तव्वा, सच्चामोसा य जा मुसा ।
जा य बुद्धेहिणाइण्णा, न तं भासेज्ज पन्नवं ॥ २ ॥
असञ्चमोसं सच्चं च, अणवज्जमक्ककसं ।
समुप्पेहमसंदिद्धं, गिर भासेज्ज पन्नवं ॥ ३ ॥
एयं च अट्टमसं वा, जं तु नामेइ सासयं ।
स भासं सच्चमोसं पि, तं पि धीरो विवज्जए ॥ ४ ॥
वित्तह पि तहामुत्ति, जं गिरं भासए नरो ।
तम्हा सो पुट्ठो पावेणं, कि पुण जो मुसं वए ॥ ५ ॥
तम्हा गच्छामो वक्खामो, अमुग वा णे भविस्सइ ।
अह वा णं करिस्सामि, एसो वा णं करिस्सइ ॥ ६ ॥
एवमाइ उ जा भासा, एसकालम्मि संकिया ।
संपयाईयमट्ठे वा, त पि धीरो विवज्जए ॥ ७ ॥
अईयम्मि य कालम्मि, पच्चुप्पन्नमणागए ।
जमट्ठं तु न जाणेज्जा, एवमेयं ति नो वए ॥ ८ ॥
अईयम्मि य कालम्मि, पच्चुप्पन्नमणागए ।
जत्थ संका भवे जं तु, एवमेयं ति नो वए ॥ ९ ॥

अईयस्मि व कालस्मि, पञ्चुप्पन्नमणागए ।
 निस्संकिंय भवे ज तु, एवमेयं ति निहिंसे ॥१०॥
 तहेव फरुसा भासा, गुरुभूओवघाइणी ।
 सच्चा वि सा न वत्तव्वा, जओ पावस्स आगमो ॥११॥
 तहेव काणं काणे त्ति, पंडग पंडगे त्ति वा ।
 दाहियं वा वि रोगि त्ति, तेणं चोरे त्ति नो वए ॥१२॥
 एएणत्तेण अट्टेण, परो जेणुवहम्मइ ।
 आयारभावदोसल्लू, न त भासेज्ज पन्नवं ॥१३॥
 तहेव होले गोले त्ति, साणे वा वसुले त्ति य ।
 दमए दूहए वा वि, न त भासेज्ज पन्नवं ॥१४॥
 अज्जिए पज्जिए वा वि, अम्मो माउसिए त्ति य ।
 पिउसिए भाइणेज्ज त्ति, धुए नत्तुणिए त्ति य ॥१५॥
 हले हले त्ति अन्ने त्ति, भट्टेसामिणि गोमिणि ।
 होले गोले वसुले त्ति, इत्थियं नेवमालवे ॥१६॥
 नामधेज्जेण ण बूया, इत्थीगोत्तेण वा पुणो ।
 जहारिहमभिगिज्ज, आलवेज्ज लवेज्ज वा ॥१७॥
 अज्जए पज्जए वा वि, वप्पो चुल्लपिउ त्ति य ।
 माउलो भाइणेज्ज त्ति, पुत्ते नत्तुणिय त्ति य ॥१८॥
 हे हो हले त्ति अन्ने त्ति, भट्टे सामिय गोमिय ।
 होले गोले वसुले त्ति, पुरिसं नेवमालवे ॥१९॥

नामधेज्जेण णं बूया, पुरिसगोत्तेण वा पुणो ।
 जहारिहममिगिज्झ, आलवेज्ज लवेज्ज वा ॥२०॥
 पच्चिदियाणं पाणाणं, एस इत्थी अयं पुमं ।
 जाव णं न विजाणेज्जा, ताव जाइ त्ति आलवे ॥२१॥
 तहेव माणुसं पसु, पक्खि वा वि सरीसवं ।
 थूले पमेइले वज्झे, पायमिति व नो वए ॥२२॥
 परिवूढत्ति ण बूया, बूया उवचिए त्ति य ।
 संजाए पोणिए वा वि, महाकाए त्ति आलवे ॥२३॥
 तहेव गाओ दोज्झाओ, दम्मा गोरहण त्ति य ।
 बाहिमा रहजोग्गत्ति, नेवं भासेज्ज पन्नवं ॥२४॥
 जुव गवे त्ति णं बूया, धेणुं रसदय त्ति य ।
 रहस्से महल्लए वा वि, वए संवहणे त्ति य ॥२५॥
 तहेव गंतुमुज्जाणं, पव्वयाणि वणाणि य ।
 रुक्खा महल्ल पेहाए, नेवं भासेज्ज पन्नवं ॥२६॥
 अल पासायखभाण, तोरणाण गिहाण य ।
 फलिहगालनावाणं, अलं उवगदोणिणं ॥२७॥
 पीढए चंगवेरे य, नगले मइयं सिया ।
 जंतलट्ठरी य नाभी या, गंडिया व अलं सिया ॥२८॥
 आसणं सयणं नाणं, होज्जा वा किंचुवस्सए ।
 भूओवथाईणि भासं, नेव भामेज्ज पन्नव ॥२९॥

तहेव गतुमुज्जाणं, पब्बयाणि वणाणि य ।
 रुक्खा महल्ल पेहाए, एव भासेज्ज पन्नवं ॥३०॥
 जाइमंता इमे रुक्खा, दीहवट्टा महालया ।
 पयायसाला बिडिमा, बए दरिसणित्ति य ॥३१॥
 तहा फलाइ पक्काइं, पायखज्जाइं नो वए ।
 बेलोइयाइं टालाइं, वेहिमाइं ति नो वए ॥३२॥
 असंथडा इमे अंबा, बहुनिव्वडिमा फला ।
 वएज्ज बहुसंभूया, मूयखवत्ति वा पुणो ॥३३॥
 तहेवोसहीओ पक्काओ, नीलियाओ छवी इय ।
 लाइमा भज्जिमाओ त्ति, पिहुखज्जत्ति नो वए ॥३४॥
 रुढा बहुसंभूया, थिरा ऊसढा वि य ।
 गन्मियाओ पसूयाओ, ससाराओ त्ति आलवे ॥३५॥
 तहेव सखाडि नच्चा, किच्चं कज्ज त्ति नो वए ।
 तेणगं वा वि वज्जे त्ति, सुत्तित्थे त्ति य आवगा ॥३६॥
 संखाडि सखाडि वूया, पणियट्टत्ति तेणगं ।
 बहुसमाणि तित्थाणि आवगाण वियागरे ॥३७॥
 तहा नईओ पुण्णाओ, कायतिज्जत्ति नो वए ।
 नावाहिं तारिमाओ त्ति, पाणिपेज्जत्ति नो वए ॥३८॥
 बहुवाहडा अगाहा, बहुसलिलुप्पिलोदगा ।
 बहुवित्थडोदगा यावि, एव भासेज्ज पन्नवं ॥३९॥

तहेव सावज्जं जोग, परस्सट्ठाए निट्ठिय ।
कीरमाणं ति वा नच्चा, सावज्जं नालवे मणी ॥४०॥

सुकडे त्ति सुपक्के त्ति, सुच्छिन्ने सुहडे मडे ।
सुनिट्ठिए सुलट्ठे त्ति, मावज्ज वज्जए मणी ॥४१॥

पयत्तपक्कत्ति व पक्कमालवे,
पयत्तछिन्नत्ति व छिन्नमालवे ।
पयत्तलट्ठित्ति व कम्महेउयं,
पहारगाढत्ति व गाढमालवे ॥४२॥

सम्बुक्कसं परगघं वा, अडल नत्थि एरिसं ।
अविविकियमवत्तत्त्वं, अवियत्तं चेव नो वए ॥४३॥

सव्वमेयं बइस्सामि, सव्वमेयं ति नो वए ।
अणुवीइ सव्वं सव्वत्थ, एव भासेज्ज पन्नव ॥४४॥

सुक्कीयं वा सुविवक्कीय, अकिज्ज किज्जमेव वा ।
इमं गेण्ह इमं मुंच, पणियं नो वियागरे ॥४५॥

अप्पगघे वा महगघे वा, कए वा विक्कए वि वा ।
पणियट्ठे समुप्पन्ने, अणवज्जं वियागरे ॥४६॥

तहेवासंजय घोरो, आस एहि करेहि वा ।
सयं, चिट्ठ, वयाहि त्ति, नेव भासेज्ज पन्नव ॥४७॥

बहवे इमे असाह, लोए वुच्चंति साहुणो ।
न लवे असाहुं साहु त्ति, साहुं साहुत्ति आलवे ॥४८॥

नाण-दंसण-संपन्नं, संजमे य तवे रय ।
 एवं गुणसमाउत्तं, सजयं साहुमालवे ॥४९॥
 देवाण मणुयाण च तिरियाणं च वुग्गहे ।
 अमुयाणं जओ होउ, मा वा होउ त्ति नो वए ॥५०॥
 वाओ वुट्ठं व सीउण्ह, खेमं धायं सिबं ति वा ।
 कया णु होज्जा एयाणि, मा वा होउ त्ति नो वए ॥५१॥

तहेव मेहं व ण्हं व माणव,
 न देव देव त्ति गिरं वएज्जा ।
 संमुच्छिए उन्नए या पओए,
 वएज्ज वा वुट्ठ बलाहय त्ति ॥५२॥

अतलिवख त्ति ण वूया, गुज्झाणुचरिय त्ति य ।
 रिद्धिमंतं नरं दिस्स, रिद्धिमंतं त्ति आलवे ॥५३॥

तहेव सावज्जणुमोयणी गिरा,
 ओहारिणी जा य परोवघाइणी ।
 से कोह-लोह-मय-हास-माणओ,
 न हासमाणो वि गिरं वएज्जा ॥५४॥

सुवक्कसुद्धिं समुपेहिया मुणी,
 गिरं च वुट्ठं परिवज्जए सया ।
 मियं अबुट्ठं अणुवीए भासए,
 सयाण मज्जे लहइ पसंसणं ॥५५॥

भासाए दोसे य गुणे य जाणिया,
तीसे य दुद्धे परिवज्जए सया ।

छसु संजए सामणिए सया जए,
वएज्ज बुद्धे हियमाणूलोमियं ॥५६॥

परिक्खभासी सुसमाहिइंदिए,
चउक्कसायावगए अणिस्सिए ।

स निदुणे धुम्मलं पुरेकड,
आराहए लोगमिणं तहा परं ॥५७॥ त्ति वेमि ॥

अह आयारपणिहि नामं अट्टममउज्झयण

आयारपणिहि लद्ध, जहा कायव्व भिक्खुणा ।
तं भे उदाहरिस्सामि, आणुपूर्व्व सुणेह मे ॥ १ ॥

पुढवि-दग-अगणि-मारुअ, तणरुक्ख-सवीयणा ।
तसा य पाणा जीव त्ति, इइ वुत्त महेसिणा ॥ २ ॥

तेत्ति अच्छणजोएण, निच्चं होयव्वय सिया ।
मणसा काय-वक्केण, एव भवड सजए ॥ ३ ॥

पुढवि भित्ति सिलं लेलुं, नेव भिदे न सलिहे ।
तिविहेण करणजोएण, संजए सुसमाहिए ॥ ४ ॥

सुद्धपुढवीए न निसीए, ससरयखम्मि य आसणे ।
यमज्जिस्सु निसीएज्जा, जाइत्ता जस्स उगगहं ॥ ५ ॥

सीओदग न सेवेज्जा सिलावुद्धं हिमाणि य ।
 उसिणोदगं तत्तफासुयं, पडिगाहेज्ज संजए ॥ ६ ॥
 उदउल्लं अप्पणो काय नेव पुछे न सलिहे ।
 सम्मुप्पेह तहाभूय, नो ण सघट्टए गुणी ॥ ७ ॥
 इंगालं अगणि अच्चि, अलाय वा सजोइयं ।
 न उजेज्जा न घट्टेज्जा,, नो ण निव्वावए मुणी ॥ ८ ॥
 तालियंटेण पत्तेण, साहाए विहुणेण वा ।
 न वीएज्ज अप्पणो कायं, बाहिरं वा वि योग्गल ॥ ९ ॥
 तणरुक्खं न छिदेज्जा, फल मूलं व कत्तसइ ।
 आमगं विविहं बीयं, मणसा वि न पत्थए ॥ १० ॥
 गणहेसु न चिट्ठेज्जा, बीएसु हरिएसु वा ।
 उदगंमि तहा निच्च उत्तिग-पणगेसु वा ॥ ११ ॥
 तसे पाणे न हिसेज्जा, वाया अद्व कम्मुणा ।
 उवरओ सव्वमूएसु, पासेज्ज विविह जगं ॥ १२ ॥
 अट्ठ सुट्ठमाइं पेहाए, जाइं जाणित्तु संजए ।
 दयाहिगारी भूएसु, आस चिट्ठ सएहि वा ॥ १३ ॥
 कयराइं अट्ठ सुट्ठमाइ ? , जाइ पुच्छेज्ज सजए ।
 इमाइं ताइं मेहावी, आइक्खेज्ज वियक्खणे ॥ १४ ॥
 तिणेहं^१ पुप्फसुट्ठमं^२ च, पाणु^३ त्तिगं^४ तहेव य ।
 पणगं^५ बीयं^६ हरियं^७ च, अडसुट्ठम-च^८ अट्ठमं ॥ १५ ॥

एवमेयाणि जाणिता, सच्चभावेण संजए ।
 अपमत्ते जए निच्चं, सच्चिदियसमाहिए ॥१६॥
 धुवं च पडिलेहेज्जा, जोगसा पायकंबल ।
 सेज्जमुच्चारभूमि च, संथार अदुवासण ॥१७॥
 उच्चारं पासवण, खेल सिघाणजल्लिय ।
 फासुयं पडिलेहिता, परिठ्ठावेज्ज संज्जए ॥१८॥
 पविसित्तु परागारं, पाणट्ठा भोयणत्त वा ।
 जयं चिठ्ठे मियं भासे, न य रुवेसु मण करे ॥१९॥
 बहं सुणेइ कण्णेहि, बहु अच्छीहि पेच्छइ ।
 न य दिट्ठं सुय सव्वं, भिक्खू अक्खाउमरिहइ ॥२०॥
 सुयं वा जइ वा दिट्ठं, न लविज्जोवघाइय ।
 न य केण उवाएण, गिहिजोगं समायरे ॥२१॥
 निट्ठाणं रसनिज्जूढं, भद्दं पावगं ति वा ।
 पुट्ठो वा वि अपुट्ठो वा, लाभालाभं न निट्ठिसे ॥२२॥
 न य भोयणम्भि गिट्ठो, चरे उच्छं अयपिरो ।
 अफासुयं न भुंजेज्जा, कीयमुद्देसियाहडं ॥२३॥
 सन्निहि च न कुल्लेज्जा, अणुमायं पि सजए ।
 मुहाजीवी असबद्धे, हवेज्जा जगनिस्सिए ॥२४॥
 लहवित्ती सुसंतुद्धे, अप्पिच्छे सुहरे सिया ।
 आसुरत्तं न गच्छेज्जा, सोच्चा णं जिणसासणं ॥२५॥

कणसोक्खोहं सदेहिं, पेमं नाभिनिवेसए ।
 दाहणं कक्कसं फासं, काएण अहियासए ॥२६॥
 खुहं पिवास दुस्सेज्जं, सीउण्हं अरइ भय ।
 अहियासे अव्वहिओ, देह-दुक्खं महाफलं ॥२७॥
 अत्थंगयंमि आइच्चे, पुरत्या य अणुगए ।
 आहारमाइय सव्वं, मणसा वि न पत्थए ॥२८॥
 अत्तिणिणे अचचले, अप्पभासी मियासणे ।
 हवेज्ज उयरे बते, थोव लद्ध, न खिसए ॥२९॥
 न बाहिरं परिमवे, अत्ताण न समुक्कसे ।
 सुयत्तामे न मजेज्जा, जच्चा तवस्सिबुद्धिए ॥३०॥
 से जाणमजाण वा, कट्ठ आहम्मिय पर्यं ।
 सवरे खिप्पमप्पाण, वीय त न समायरे ॥३१॥
 अणायार परक्कम्म, नेव गूहे न निण्हेवे ।
 सुई सया वियड्ढभावे, अससत्ते जिइदिए ॥३२॥
 अमोह वयण कुज्जा, आयरियस्स महप्पणो ।
 त परिगिज्झ वायाए, कम्मणा उववायए ॥३३॥
 अधुव जीविय नच्चा, सिद्धिमगं वियाणिया ।
 विणिण्णद्वेज्ज भोगेसु, आउं परिमियमप्पणो ॥३४॥
 बलं थामं च पेहाए, सद्धामारोगमप्पणो ।
 खेतं काल च विस्साय, तहप्पाणं न जुंजए ॥३५॥

जरा जाव न पीलेइ, वाही जाव न वड्ढइ ।
 जाविंदिया न हायंति, ताव धम्मं समायरे ॥३६॥
 कोहं माणं च मायं च, लोभं च पाववड्ढणं ।
 वसे चत्तारि दोसे उ, इच्छंतो हियमप्पणो ॥३७॥
 कोहो पीइं पणासेइ, माणो विणयनासणो ।
 'माया मित्ताणि नासेइ, लोहो सव्वविणासणो ॥३८॥
 उवसमेण हणे कोहं, माणं मद्दवया जिणे ।
 मायं च उज्जुभावेण, लोभं संतोसओ जिणे ॥३९॥

कोहो य माणो य अणिग्गहीया,
 माया य लोभो य पवड्ढमाणा ।
 चत्तारि एए कसिणा कसाया,
 सिंचंति मूलाइं पुण्हमवस्स ॥४०॥
 राइणिएसु विणयं पउंजे,
 धुवसीलं सययं न हावइज्जा ।
 'कुम्मोद्व' अल्लीणपलीणगुत्तो,
 परवकमेज्जा तवसंजमम्मि ॥४१॥

निइं च न बहु मझेजा, सप्पहासं विवज्जए ।
 मिहो कहाहिं न रमे, सज्झायम्मि रओ सपा ॥४२॥
 जोगं घ समणधम्मम्मि, जुंजे अणलसो धुवं ।
 जुत्तो य समणधम्मम्मि, अट्ठं लहइ अणुत्तर ॥४३॥

इहलोग-पारत्त-हियं, जेण गच्छइ सोमाइं ।
 बहुस्सुय पज्जुवासेज्जा, पुच्छेज्जत्थविणिच्छयं ॥४४॥
 हत्थं पायं च कायं च, पणिहाय जिह्विण्णं ।
 अत्थलीणगुत्तो निसिण्णं, सगासे गुरुणो मुणी ॥४५॥
 न पक्खओ न पुरओ, नेव किञ्चाण पिट्ठओ ।
 न य ऋ समासेज्जा, चिद्धेज्जा गुरुणंतिण्णं ॥४६॥
 अपुच्छिओ न भासेज्जा, भासमाणस्स अंतरा ।
 पिट्ठिमंसं न छाएज्जा मायामोसं विवज्जणं ॥४७॥
 अप्पत्तिर्यं जेण सिया, आसु कुप्पेज्ज वा परो ।
 सव्वसो तं न भासेज्ज, भासं अहियगामिणिं ॥४८॥
 दिट्ठं मियं असंदिद्धं, पडिपुण्णं वियं जियं ।
 अयंपिरमणुव्वितां, भासं निसिर अत्तवं ॥४९॥
 आयाद-पन्नत्तिधरं, दिट्ठिवायमहिज्जगं ।
 वायविक्खलिय नच्चा, न तं उवहसे मुणी ॥५०॥
 भवत्तं सुमिणं जोगं, निमित्तं मत्तभेसजं ।
 गिहिणो तं न आइक्खे, भूयाहिगरणं पयं ॥५१॥
 अन्नदं पगडं लयणं, भएज्जा सयणासणं ।
 उच्चार-भूमिसंपन्नं, इत्थी-पसुविवज्जियं ॥५२॥
 विविता य भवे सेज्जा, नारिणं न लवे कहं ।
 गिहि-संथवं न कुज्जा, कुज्जा साह्वहि संथवं ॥५३॥

जहा कुक्कुड-पोयस्स, निच्चं कुललओ भयं ।
 एवं खु वंभयारिस्स, इत्यो-विग्गहओ भयं ॥५४॥
 चित्तभित्ति न निज्झाए, नारि वा सुअलंकियं ।
 भक्खरं पिव दट्ठूणं, दिट्ठ पडिसमाहरे ॥५५॥
 हत्थ-पाय-पडिच्छिन्नं, कण्ण-नास-विकप्पियं ।
 अवि वाससइ नारि, वंभयारी विवज्जए ॥५६॥
 विभूसा इत्थिसंसग्गो, पणीय-रस-भोयणं ।
 नरस्स-त्तगवेसिस्स, 'विस तालउडं जहा' ॥५७॥
 अंग-पच्चंग-संठाणं, चारुत्तवियपेहियं ।
 इत्थीणं तं न निज्झाए, कामरागविबड्ढणं ॥५८॥
 विसएसु मणुत्तेसु, पेम नाभिनिवेसए ।
 अणिच्चं तेसि विन्नाय, परिणाम पोग्गलाण य ॥५९॥
 पोग्गलाण परिणामं, तेसि नच्चा जहा तहा ।
 विणीय-तण्हो विहरे, सीईमूएण अप्पणा ॥६०॥
 जाए सद्धाए निक्खतो, परियायट्ठाणमुत्तमं ।
 तमेव अणुपालेज्जा, गुणे आयरियसम्मए ॥६१॥
 तवं चिय सजमजोगयं च,
 सज्जायजोगं च सया अहिट्ठए ।
 'सूरे व सेणाए' समत्तमाउहे
 अलमप्पणो होइ अलं परेसि ॥६२॥

सज्जाय-सज्जाणरयस्स ताइणो,
 अपावभावस्स तवे रयस्स ।
 विसुज्झई जसि मल पुरेकड,
 'समीरिय रुप्पमलं व जोइणा' ॥६३॥
 से तारिसे दुक्खसहे जिइदिए,
 सुएण जुत्ते अममे अकिचणे ।
 विरायई कम्मघणम्मि व अवगए,
 कसिणम्म-गुडावगमेव चंदिमे ॥६४॥
 ॥त्ति बेमि॥

अह विणयसमाही नामं णवमसज्झयणं (पढमो उद्देशो)

यभा व कोहा व मयप्पमाया,
 गुरुस्सगासे विणय न सिक्खे ।
 सो चेव उ तस्स अभूइभावो,
 'फलं व कीयस्स वहाय होइ' ॥ १ ॥
 जे यावि मंदित्ति गुरु विइत्ता,
 डहरे इमे अप्पसुए त्ति नच्चा ।

હીલતિ મિચ્છં પઢિવજ્જમાણા,
 કરતિ આસાયણ તે ગુરુણં ॥ ૨ ॥
 પગઈએ મંદા વિ ભવતિ એગે,
 ઢહરા વિ ય જે સુયદુદ્ધોવવેયા ।
 આયારમંતા ગુણસુદ્ધિયપ્પા,
 જે હીલિયા 'સિહિરિવ માસ કુજ્જા' ॥ ૩ ॥
 જે યાવિ 'નાગ ઢહરં તિ' નચ્ચા,
 આસાયએ તે અહિયાય હોઈ ।
 એવાયરિય પિ હુ હિલયંતો,
 નિયચ્છઈ જાઈપહં હુ મદે ॥ ૪ ॥
 'આસિવિસો વા વિ પર સુદ્ધો,'
 કિ જીવનાસાહ પરં નુ કુજ્જા ।
 આયરિયપાપા પુણ અપ્પસન્ના,
 અબોહિ-આમાયણ નત્થિ મોવ્છા ॥ ૫ ॥
 જો પાવગ જલિયમવવકમેજ્જા,
 અસીવિસ વા વિ હુ કોવએજ્જા ।
 જો વા વિસં ઘાયઈ જીવિયદ્ધો,
 એસોવમાડ્ડ સાયણયા ગુરુણં ॥ ૬ ॥
 સિયા હુ તે પાવય નો ઢહેજ્જા,
 આસિવિસો વા કુવિમો ન ભવણે ।

સિયા વિસં હાલહલં ન મારે,
ન યાવિ મોક્ષો ગુરુહીલણા ॥ ૭ ॥

જો પવ્વયં સિરસા મેત્તુમિચ્છે,
સુત્તં વ સીહં પઢિવોહુજ્જા ।

જો જા દે સત્તિઅગ્ગે પહારં,
એસોવમાસ સાયણયા ગુરુણં ॥ ૮ ॥

સિયા હુ સીસેણ ગિરિં પિ મિદે,
સિયા હુ સીહો કુવિઓ ન મક્ખે ।

સિયા ન મિદેજ્જ વ સત્તિઅગ્ગ,
ન યાવિ મોક્ષો ગુરુહીલણા ॥ ૯ ॥

આયરિયપાયા પુણ અપ્પસન્ના,
અવોહિ-આસાયણ નત્થિ મોક્ષો ।

તમ્હા અણાવાહ-સુહામિકંઘી,
ગુરુપ્પસાયામિમુહો રમેજ્જા ॥ ૧૦ ॥

જહાહિયત્તી જલણં નમસે,
નાણા-દુર્ઘ-મંત-પયામિસિત્ત ।

એવાયરિયં ઝવન્નિદ્ધુજ્જા,
અણંત-નાણોવગઓઘિ સંતો ॥ ૧૧ ॥

જત્સંતિએ ધમ્મપયાઈં સિક્ખે,
તત્સંતિએ વેણદ્વયં પડંજે ।

सक्कारए सिरसा पजलीओ,
 कायगिरा भो मणसा य निच्च ॥१२॥
 लज्जा—दया—सजम—वभचेर,
 कल्लाणभागिस्स विसोहिठाणं ।
 जे मे गुरू सययमणुसासयति,
 ते ह गुरू सयय पूययामि ॥१३॥
 'जहा निसते तवणच्चिमाली',
 पभासइ केवल-भारह तु ।
 एवायरिओ सुय-सील-वुद्धिए,
 विरायई 'सुर-मज्झे व इदो' ॥१४॥
 जहा ससी कोमुइजोगजुत्तो,
 नक्खत्त-तारागण-परिवुडप्पा ।
 खे सोहइ विमले अट्ठममुक्के,
 एव गणी सोहइ भिक्खुमज्झे ॥१५॥
 महागरा आयरिया महेसी,
 समाहिजोगे सुय-सील-वुद्धिए ।
 सपाविउकामे अणुत्तराइ,
 आराहए तोनए धम्मकामी ॥१६॥
 सोच्चान मेहावि सुभामियाइ,
 सुत्सुत्सए आयरियऽप्पमत्तो ।
 आराहइत्ताण गुणे अणेगे,
 सो पावई सिद्धिमणुत्तरं ॥१७॥

॥त्ति वेमि॥

णवममञ्जयणे

(बीओ उद्देशो)

‘मूलाओ खघप्पभवो दुमस्स,
खघाउ पच्छा समुवेति साहा।

साहप्पसाहा विरुहति पत्ता,
तओ से पुप्फ च फल रसो य’ ॥ १ ॥

एव धम्मस्स विणओ, मूल परमो से मोक्खो।
जेण किंति सुय मिग्घ, निस्सेसं चाभिगच्छह ॥ २ ॥

जे य चडे मिए थद्धे, दुच्चाई वियही सडे।
बुद्धइ से अविणीयप्पा, ‘कट्ट सोयगय जहा’ ॥ ३ ॥

विणय पि जो उवाएण, चोद्वओ कुप्पइ नरो।
दिब्ब सो सिरिमेज्जति, दडेण पडिसेहए ॥ ४ ॥

तहेव अविणीयप्पा, उववज्झा हया गया।
दीसंति दुहमेहंता, आभियोगमुबट्ठिया ॥ ५ ॥

तहेव सुविणीयप्पा, उववज्झा हया गया।
दीसति सुहमेहंता, ईडिह पत्ता महायसा ॥ ६ ॥

तहेव अविणीयप्पा, लोगसि नरनारिओ।
दीसंति दुहमेहता, छाया ते विगालिदिया ॥ ७ ॥

दंड-सत्थ-परिजुणा, असत्थ-वयणोहं य ।
 कलुणा विवन्नच्छंदा, छुप्पिवासाइपरिगया ॥ ८ ॥
 तहेव सुविणीयप्पा, लोग्गमि नरनारिओ ।
 दीसंति सुहमेहता, इड्ढि पत्ता महायसा ॥ ९ ॥
 तहेव अविणीयप्पा, देवा जक्खा य गुज्झगा ।
 दीसंति दुहमेहता, आभियोगमुवट्ठिया ॥ १० ॥
 तहेव सुविणीयप्पा, देवा जक्खा य गुज्झगा ।
 दीसति सुहमेहता, इड्ढि पत्ता महायसा ॥ ११ ॥
 जे आपरिय-उवज्झायाणं, सुत्थुसा वयणंकरा ।
 तेसिं सिक्खा पवड्ढति, 'जलसित्ता इव पायवा' ॥ १२ ॥
 अप्पणट्ठा परट्ठावा सिप्पा नेउणिमाणि य ।
 गिहिणो उवभोगट्ठा, इहलोगम्म कारणा ॥ १३ ॥
 जेण बंधं वहं घोर, परियावं च दारणं ।
 सिक्खमाणा नियच्छति, जुत्ता ते ललिडदिया ॥ १४ ॥
 ते वि तं गुरु पूयति, तस्म सिप्पस्म कारणा ।
 सक्कारति णमंसति, तुट्ठा निट्ठेस-वत्तिणो ॥ १५ ॥
 किं पुण जे सुयग्गाहो, अणंतहियकामए ।
 आयरिया जं वए भिक्खू, तम्हा त नाइवत्तए ॥ १६ ॥
 नीयं सेज्ज गइ ठाण, नीयं च आमणाणि य ।
 नीयं च पाए वदेज्जा, नीय कुज्जा य अजसि ॥ १७ ॥

संघट्टइत्ता काएणं, तहा उवहिणामवि ।
 खमेह अवराहं मे, वएज्ज न पुणो त्ति य ॥१८॥
 'दुग्गओ वा पओएणं, चोइओ वहइ रहं ।'
 एवं बुबुद्धि किच्चाणं, वुत्तो वुत्तो पकुब्बइ ॥१९॥
 आलवते लवते वा, न निसेज्जाए पडिस्सुणे ।
 मोत्तूण आसणं घीरो, सुस्सूसाए पडिस्सुणे ॥२०॥
 कालं छंदोवयारं च, पडिलेहिताण हेउहिं ।
 तेहिं तेहिं उवाएहिं, तं त सपडिवायए ॥२१॥
 विवत्ती अविणीयस्स, संपत्ती विणीयस्स य ।
 जस्सेय दुहओ नाय, सिक्ख से अभिगच्छइ ॥२२॥

जे यावि चडे मइ-इडिडि-गारबे,
 पिसुणे नरे साहसहीण-मेसणे ।
 अदिट्ठघम्मे विणए अकोविए,
 असंविभागी न हू तस्स मोक्खो ॥२३॥
 णिहेसवत्ती पुण जे गुरुणं,
 सुयत्यधम्मा विणयंमि कोविया ।
 तरित्तु ते ओहमिणं दुइत्तरं,
 खवित्तु कम्मं गइभुत्तमं गया ॥२४॥
 ॥त्ति वेमि॥

णवममज्झयणे (तइओ उहेसो)

आयरियत्तिमिवाहियग्गो,
 सुत्सुसमाणो पडिजागरिज्जा ।
 आत्तोइय इगियमेव नच्चा,
 जो छदमाराहयई स पुज्जो ॥ १ ॥
 आयारमट्ठा विणयं पउंजे,
 सुत्सुसमाणो परिगिज्ज वक्कं ।
 जहोवइट्ठं अभिक्खमाणो,
 गुहं त नामाययई स पुज्जो ॥ २ ॥
 राइणिएसु विणयं पउंजे,
 डहरा वि य जे परियाय जिट्ठा ।
 नीयत्तणे वट्ठइ मच्चवाई,
 ओवायवं वक्ककरे स पुज्जो ॥ ३ ॥
 अस्सायउंछं चरई विसुद्धं,
 जवणट्ठया समुयारणं च निच्चं ।
 अलद्धयं नो परिदेवएज्जा,
 लद्धं न विकत्थई स पुज्जो ॥ ४ ॥
 संयार-सेज्जाऽऽ नण-भत्त-पाणे,
 अप्पिच्छया अइत्ताभे वि संते ।

जो एवमप्पाणभित्तोसएज्जा,
सतोस—पाहन्न-रए स पुज्जो ॥ ५ ॥

सक्का सहेउ आसाइ कंटया,
अओमया उच्छहया नरेणं ।

अणासए जो उ सहेज्ज कंटए,
वईमए कणसरे स पुज्जो ॥ ६ ॥

मुहुत्तदुक्खा उ हवति कंटया,
अओमया ते वि तओ सुउद्धरा ।

वायादुस्तानि दुसद्धराणि,
वेराणुबंघीणि महम्मया ण ॥ ७ ॥

समावयन्ता वयणाभिघाया,
कणं गया दुम्मणियं जणंति ।

धम्मो त्ति किच्चा परमगसूरे,
जिइदिए जो सहई स पुज्जो ॥ ८ ॥

अवण्णवायं च परंमुहस्स,
पच्चक्खओ पडिणीयं च भासं ।

ओहारिणि अप्पियकारिणि च,
भासं न भासेज्ज सया स पुज्जो ॥ ९ ॥

अलोलुए अक्कुहए अमाई
अपिसुणे यावि अदीणवित्ती ।

नो भावए नो वि य भावियप्पा,
अकोउहल्ले य सया स पुज्जो ॥१०॥

गुणेहि साहू, अगुणेहिऽसाहू,
गिण्हाहि साहू गुण भुच साहू ।
वियाणिया अप्पगमप्पाएणं,
नो राग-दोसेहि समो स पुज्जो ॥११॥

तहेव उहरं व महल्लग वा,
इत्थो पुमं पव्वइयं गिहि वा ।
नो हीलए नो वि य विसएज्जा,
यमं च कोहं च चए स पुज्जो ॥१२॥

जे माणिया सयय माणयति,
'जत्तेण कल्ल व निवेसयति' ।
ते माणए माणरिहे तवस्सी,
जिइदिए सच्चरए स पुज्जो ॥१३॥

तेसि गुरुणं गुणसागराण,
सोच्चाण मेहावि सुभासियाइं ।
घरे मुणी पंच-रए तिगुत्तो,
चउक्कसायावगए स पुज्जो ॥१४॥

गुरुमिह सययं पडियरिय मुणी,
जिणवयनिउणे अभिगम-कुत्तले ।
घुणिय रय-मत्तं पुरेकडं,
भासुरमउत्तं गइ गए ॥१५॥

॥ति वेनि ॥

णवममज्झयणे

(चउत्थो उहेसो)

सुयं मे आउसं !

तेणं भगवया एवमक्खाय-

इह खलु थेरेहिं भगवतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पन्नता-
कयरे खलु ते थेरेहिं भगवतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पन्नता?
इमे खलु ते थेरेहिं भगवतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पन्नता-
तंजहा-

१ विणयसमाही २ सुयसमाही ३ तवसमाही ४ आयारसमाही

विणए सुए तवे य, आयारे निच्च पडिया ।

अभिरामयति अप्पाणं, जे भवति जिइदिया ॥ १ ॥

चउत्तिहा खलु विणयसमाही भवइ-

त जहा-

१ अणुसासिज्जतो सुस्ससइ, २ सम्मसंपडिवज्जइ,

३ वेयमाराहयइ, ४ न य भवइ अत्तसपग्गहिए ।

चउत्थं पयं भवइ-भवइ य एत्थ सिलोगो-

पेहेइ हियाणुसासण, सुस्ससइ तं च पुणो अहिट्ठए ।

न य माणमएण मज्जइ, विणयसमाही आययट्ठिए ॥ २ ॥

चउत्तिहा खलु सुयसमाही भवइ-

तंजहा—

- १ सुयं मे भविस्सइ त्ति अज्झाइयव्वं भवइ ।
 - २ एगगच्चित्तो भविस्सामि त्ति अज्झाइयव्वं भवइ ।
 - ३ अप्पाणं ठावइस्सामि त्ति अज्झाइयव्वं भवइ ।
 - ४ ठिओ परं ठावइस्सामि त्ति अज्झाइयव्वं भवइ ।
- अउत्थ परं भवइ । भवइ य एत्थ सिलोगो—

नाणमेगगच्चित्तो य, ठिओ य ठावइ पर ।

सुयाणि म अहिज्झित्ता, रओ सुयसमाहिए ॥ ३ ॥

अउत्थिहा खलु तवसमाही भवइ ।

तं जहा—

- १ नो इहलोगद्वयाए तवमहिद्वेज्जा ।
- २ नो परलोगद्वयाए तवमहिद्वेज्जा ।
- ३ नो कित्ति-वन्न-सद्-सिलोगद्वयाए तवमहिद्वेज्जा ।
- ४ मन्नत्थ निज्जरद्वयाए तवमहिद्वेज्जा ।

अउत्थं परं भवइ—भवइ य एत्थ सिलोगो ।

बिबिहगुणतवोरए य निच्चं, भवइ निरासए निज्जरद्विए ।

तवसा धुणइ पुराणपावग, जुत्तो सया तवसमाहिए ॥ ४ ॥

अउत्थिहा खलु आपारसमाही भवइ ।

तंजहा—

- १ नो इहलोगद्वयाए आपारमहिद्वेज्जा ।

- २ नो परलोगद्वयाए आयारमहिङ्गेज्जा ।
 ३ नो कित्ति-वत्त-सद्द-तिलोगद्वयाए आयारमहिङ्गेज्जा ।'
 ४ नत्तत्थ आरहंतेहि हेउहि आयारमहिङ्गेज्जा ।
 चउत्थं पयं भवइ-भवइ य रत्थ तिलोगो-

जिणवयण-रए अतित्तणे,
 पडिपुण्णाययमायट्ठिए ।
 आयार-समाहि-संवुडे,
 भवइ व इत्ते भावसंघए ॥ ५ ॥

अभिगम चउरो समाहिओ,
 सुविसुद्धो सुसमाहियप्पओ ।
 चिउल-हियं सुहावहं पुणो,
 कुब्बइ सो पयखेममप्पणो ॥ ६ ॥

जाइ-मरणाउ मुच्चइ,
 इत्थत्थं व वएइ सव्वसो ।
 सिद्धे वा भवइ सासए,
 वेवो वा अप्परए महिङ्गिए ॥ ७ ॥

॥त्ति वेमि ॥

अहं सभिवखू नामं दसममज्झयणं

निक्खम्ममाणाइ अ बुद्धवयणे,
णिच्चं चित्तसमाहिओ हवेज्जा ।
इत्थीण वसं न यावि गच्छे,
वंतं नो पडियायइ, जे न भिवखू ॥ १ ॥

पुढवि न खणे न पणावए,
सीओवर्गं न पिए न पियावए ।
अगणिसत्थं जहा सुनिसिथ,
त न जले न जलावए जे स भिवखू ॥ २ ॥

अनिलेण न बीए न बीयावए,
हरियाणि न छिदे न छिदावए ।
बीयाणि सया विवज्जयंतो,
सच्चित्तं नाहारए जे स भिवखू ॥ ३ ॥

बहणं तस-थावराण होइ,
पुढवी-तण-कट्ट-निस्तियाण ।
तम्हा उद्देसियं न भुजे,
नो वि पए न पयावए जे स भिवखू ॥ ४ ॥

रोइय- नायपुत्त-वयणे,
अप्पसमे मन्नेज्ज छप्पि काए ।

પંચ ય ફાસે મહુવ્વયાહ,
 પંચાસવ-સંવરણે જે સ ભિક્ખૂ ॥ ૫ ॥
 ચત્તારિ વમે સયા કસાણ,
 ધુવજોગી ય હવેજ્જ વુદ્ધવયણે ।
 મહણે નિજ્જાયરુવરણે,
 ગિહિજોગં પરિવજ્જણે જે સ ભિક્ખૂ ॥ ૬ ॥
 સમ્મદિટ્ઠી સયા અમૂઢે,
 અત્થિ ટ્ઠ નાણે તવ-સજમે ય ।
 તવસા ધુણહ પુરાણપાવણ,
 મણ-વય-કાયસુસંવુઢે જે સ ભિક્ખૂ ॥ ૭ ॥
 તહેવ અસણ પાણગ વા,
 વિવિહુ છાહમ-સાહમં લભિત્તા ।
 હોહી અટ્ઠો સુણ પરે વા,
 તં ન નિહે ન નિહાવણે જે સ ભિક્ખૂ ॥ ૮ ॥
 તહેવ અસણ પાણગ વા,
 વિવિહુ-છાહમ-સાહમ લભિત્તા ।
 ઇંદિય સાહમ્મિયાણ ભુજે,
 ભોચ્ચા સજ્જાયરણે ય જે સ ભિક્ખૂ ॥ ૯ ॥
 ન ય વુગ્ગહિયં કહં કહિજ્જા,
 ન ય કુપ્પે નિહુઈંદિયે પસંતે ।

संजम-धुव-जोग-जुत्ते,
उवसते अविहेडए जे स भिक्खू ॥१०॥

जो सहइ हु गामकटए,
अक्कोस-पहार-तज्जणाओ य ।

भय-भेरव-सद्-सप्पहासे,
समसुहुद्धुक्खसहे य जे स भिक्खू ॥११॥

पडिभं पडिवज्जिया मसाणे,
नो भीयए भय-भेरवाइं दिस्स ।

विविहगुण-तवोरए य निच्चं,
न सरीर चाभिकंखए जे स भिक्खू ॥१२॥

असइ वोसट्ट-वत्त-देहे,
अक्कुट्ठे व हए लूसिए वा ।

पुढविसमे मुणी हवेज्जा,
अनियाणे अकोउहल्ले य जे स भिक्खू ॥१३॥

अभिभूय कारण परीसहाइं,
समुद्धरे जाइ-पहाउ अप्पय ।

विइत्तु जाइ-मरण महत्तभयं,
तरे राए सामणिए जे स भिक्खू ॥१४॥

हत्थसंजए पायसंजए,
वायसंजए संजईदिए ।

અજ્ઞપ્પરણ સુસમાહિયપ્પા,
 સુત્તત્યં ચ વિયાણહ જો સ ભિક્ખૂ ॥૧૫॥
 ઉવહિમ્મિ અમુચ્છિણ અગિદ્ધે,
 અન્નાયરુચ્છં પુલનિપ્પુલાણે ।
 કય-વિક્કયસન્નિહિઓ વિરણે,
 સન્નવસંગાવગણે ય જો સ ભિક્ખૂ ॥૧૬॥
 અલોલ-ભિક્ખૂ ન રસેસુ ગિદ્ધે,
 રુચ્છં ચરે જીવિય નાભિકંઘે ।
 હિંદિદ્ધ ચ સવકારણ-પૂયણં ચ,
 ચયહ ઠિયપ્પા અણિહે જો સ ભિક્ખૂ ॥૧૭॥
 ન પરં વણ્ણજ્ઞાસિ અયં કુસીલે,
 જેણહ્મો કુપ્પેજ્જ ન તં વણ્ણજ્ઞા ।
 જાણિય પત્તેયં પુણ્ણ-પાવં,
 અત્તાણં ન સમુક્કસે જો સ ભિક્ખૂ ॥૧૮॥
 ન જાહમત્તે ન ય રુચ્ચમત્તે,
 ન લાભમત્તે ન સુણ્ણ મત્તે ।
 મયાણિ સરૂવાણિ વિવરુજ્જયંતો,
 ઘમ્મજ્ઞાણરણે ય જો સ ભિક્ખૂ ॥૧૯॥
 પવેયણે અરુજ્જ-પયં મહામુણી,
 ઘમ્મે ઠિમ્મો ઠાવયહ પરં પિ ।

निक्खम्म यज्जेज्ज कुसीलत्तिगं,
 न याचि हास कुहए जे स भिक्खू ॥२०॥
 त वेहवास असुइ असासय,
 समा चए निच्चहिय-द्वियप्पा ।
 छिदित्तु जाइ-भरणरस वधण,
 उवेइ भिक्खू अपुणागम गइ ॥२१॥
 ॥त्ति वेमि ॥

रइवक्का णामा पढमा चूलिया

इह खलु भो !

पण्वइएणं उप्पन्नदुक्खेण सजमे अरइममावन्नचित्तेणं
 ओहाणुप्पेहिणा अणोहाइएण चेव—
 हयरस्सि-गयकुसवंपोयपटागा-भूमाइ—
 इमाइ अट्टारम ठाणाइ सम्मं मपटिलेहियच्चाइ भवति ।
 त जहा—

ह भो ! दुस्तमाए दुप्पजीवी ॥ १ ॥

तहृस्तगा इत्तरिया गिहोण कामभोगा ॥ २ ॥

भुज्जो असाय-वहुता मणुस्सा ॥ ३ ॥

इम च मे दुक्खं न चिरकालोवट्ठाइ भविस्मइ ॥ ४ ॥

ओमजणपुरक्कारे ॥ ५ ॥

वंतस्स य पडिआयणं ॥ ६ ॥

अहरगइ-वासोवसंपया ॥ ७ ॥

दुल्लहे खलु भो ! गिहीणं घम्मे गिहिवासमज्जे वसंताणं ॥ ८ ॥

आयंके से बहाय होइ ॥ ९ ॥

संकप्पे से बहाय होइ ॥ १० ॥

सोवक्केसे गिहिवासे निरुवक्केसे परियाए ॥ ११ ॥

बंधे गिहिवासे सोक्खे परियाए ॥ १२ ॥

सावज्जे गिहिवासे अणवज्जे परियाए ॥ १३ ॥

बहुसाहारण गिहीण कामभोगा ॥ १४ ॥

पत्तेयं पुण्णपाव ॥ १५ ॥

अणिच्चे खलु भो !

मणुयाण जीविए कुसग्गजलबिदुच्चले ॥ १६ ॥

बहुं च खलु भो ! पाव कम्मं पगड ॥ १७ ॥

पावाण च खलु भो !

कडाणं कम्माण पुन्नि दुच्चिण्णाण दुप्पडिक्कंताणं-

वेयइत्ता सोक्खो, नत्थि अवेइयत्ता, तवसा वा सोसइत्ता ।

अठारसम पयं भवइ ॥ १८ ॥ भवइ य एत्थ सिलोगो-

जया य चयइ घम्म, अणज्जो भोगकारणा ।

छे तत्थ मुच्छिए बाले, आयइं नाववुज्झइ ॥ १९ ॥

जया ओहाविओ होइ, इंदो वा पडिओ छमं ।
सत्त्व-धम्म-परिचमट्ठो, म पच्छा परितप्पइ ॥ २ ॥
जया य बदिमो होइ, पच्छा होइ अबंदिमो ।
देवया व चुआ ठाणा, स पच्छा परितप्पइ ॥ ३ ॥
जया य पूइमो होइ, पच्छा होइ अपूइमो ।
राया व रज्जपव्वमट्ठो, म पच्छा परितप्पइ ॥ ४ ॥
जया य माणिमो होइ, पच्छा होइ अमाणिमो ।
सेट्ठिच्च कच्चटे छट्ठो, म पच्छा परितप्पइ ॥ ५ ॥
जया य येरओ होइ, ममइयकत-जोव्वणो ।
मच्छोव्व गल गिलिन्ना, म पच्छा परितप्पइ ॥ ६ ॥
जया य कुण्डवम्म, कुत्तत्तोहि विहम्मइ ।
हत्थो व बंधणे यट्ठो, म पच्छा परितप्पइ ॥ ७ ॥
पुत्त-दार-परिकिण्णो, मोहनताण-संतओ ।
पकोमन्नो जहा नागो, म पच्छा परितप्पइ ॥ ८ ॥
अज्ज याह गणी हानो, भावियप्पा बहस्सुओ ।
जइह रमतो परियाए, नामणो त्रिणदेसिए ॥ ९ ॥
देवलोगगमाणो उ, परियाजो महेसिण ।
रयाणं अरयाण च, महानरय-भारिसो ॥ १० ॥
अमरोवम जाणिय मोक्खमुत्तमं,
रयाण परियाए हारयाण ।

निरयोवमं जाणिय दुक्खमुत्तमं,
 रमेज्ज तम्हा परियाए पडिए ॥११॥
 धम्माउ भट्ट सिरिओववेय,
 जन्नगि विज्जायमिवप्पतेयं ।
 हीलंति ण दुव्विहियं कुसीला,
 दाढुद्धिय घोरविस व नाग ॥१२॥
 इहेवधम्मो अयसो अकित्ती,
 दुन्नामधेज्ज च पिहुज्जणम्मि ।
 चुयस्स धम्माओ अहम्मसेविणो,
 संभित्त-वित्तस्स य हेट्ठओ गर्ह ॥१३॥
 भुजित्तु भोगाइं पसज्ज चेयसा,
 तहाविह कट्ठ असंजम वहं ।
 गइ च गच्छे अणहिज्जिय दुहं,
 वोही य से नो सुलभा पुणो पुणो ॥१४॥
 इमस्स ता नेरइयस्स जंतुणो,
 दुहोवणीयस्स किलेसवत्तिणो ।
 पलिओवम सिज्जइ सागरोवम,
 किमंग पुण मज्ज इम मणोदुहं ? ॥१५॥
 न मे चिर दुक्खमिण भविस्सइ,
 असासया भोगपिवास जंतुणो ।

न चे सरीरेण इमेणऽवस्सइ,
 अवस्सइ जीविय-पज्जवेण मे ॥१६॥
 जस्सेवमप्पा उ हवेज्ज निच्छिओ,
 चएज्ज देह न उ धम्मसासणं ।
 तं तारिसं नो पयलेंति इदिया,
 उवतवाया व सुदंसणं गिरिं ॥१७॥
 इच्चेव सपस्सिय बुद्धिमं नरो,
 आयं उवायं विविह वियाणिया ।
 काएण वाया अडु माणसेणं,
 तिगुत्तिगुत्तो जिणवयणमहिट्ठिज्जासि ॥१८॥
 ॥ त्ति बेमि ॥

विवित्त-चरिआ णामा बीया चूलिया

चूलियं तु पवक्खामि, सुय केवल्लिभासियं ।
 जं सुणित्तु सपुज्जाणं, धम्मे उप्पज्जए मई ॥ १ ॥
 अणुसोयपट्ठिए बह्वजणम्मि, पडिसोय-लद्धलक्खेणं ।
 पडिसोयमेव अप्पा, वायव्यो होउ कामेणं ॥ २ ॥
 अणुसोयसुहो लोगो, पडिसोओ आत्तवो सुविहियाणं ।
 अणुसोओ संसारो, पडिसोओ तस्स उत्तारो ॥ ३ ॥

तम्हा आयारपरक्कमेण, संवरसमाहि-बहुलेणं ।
चरिया गुणा य नियमा य, होति साहूण दट्टब्बा ॥ ४ ॥

अणियए-वासो समुयाणचरिया,
अन्नायउंछ पइरिक्कया य ।
अप्पोवही कलहविवज्जणा य,
विहारचरिया इसिण पसत्था ॥ ५ ॥

आइण्ण-ओमाणविवज्जणा य,
ओसन्न-दिट्ठाहड-भत्तपाणे ।
संसट्ठकप्पेण चरेज्ज भिक्खू,
तज्जायसंसट्ठ जई जएज्जा ॥ ६ ॥

अमज्जमसासि अमज्जरीया,
अभिकखणं निव्विगइं गया य ।
अभिकखण काउस्सगाकारी,
सज्जायजोगे पयओ हवेज्जा ॥ ७ ॥

न पडिअवेज्जा सयणासणाइं,
सेज्ज निसेज्ज तह भत्तपाण ।
गामे कुले वा नगरे व देसे,
ममत्तभावं न कहिं चि कुज्जा ॥ ८ ॥

गिहिणो वेयावडियं न कुज्जा,
अभिवायणं वंदण-पूयणं वा ।

असंकलिद्धोहि सम वसेज्जा,
मुणी चरित्तस्स जओ न हाणी ॥९॥

न वा लभेज्जा निउण सहायं,
गुणाहियं वा गुणओ समं वा ।
एक्को वि पावाइं विवज्जयंतो,
विहरेज्ज कामेसु असज्जमाणो ॥१०॥

सवच्छर वावि पर पमाणं,
वीयं च वासं न तहि वसेज्जा ।
सुत्तस्स मग्गेण चरेज्ज भिक्खू,
सुत्तस्स अत्थो जह आणवेइ ॥११॥

ओ पुव्वरत्तावरत्तकाले,
सपेहइ अप्पगमप्पएणं ।
किं मे कइ किं च मे किञ्चसेसं,
किं सक्कणिज्जं न समायरामि ॥१२॥

किं मे परो पासइ किं च अप्पा,
किं वाहं खलिय न विवज्जयामि ।
इच्छेव सम्मं अणुपासमाणो,
अणसगयं नो पडिबंघं कुज्जा ॥१३॥

जत्थेव पासे कइ दुप्पउत्तं,
काएण वाया अदु माणसेणं ।

तत्थेव धीरो पडिसाहरेज्जा,
आजण्णओ खिप्पमिव क्खलीणं ॥१४॥

जस्सेरिसा जोग जिइदियस्स
धिइमओ सपुुरिसस्स निच्चं ।
तमाहु लोए पडिबुद्धजीवी,
सो जीवइ संजमजीघिएण ॥१५॥

अप्पा खलु सयय रक्खियम्भो,
सन्विदिएहि सुसमाहिएहि ।
अरक्खिओ जाइपहं उवेइ,
सुरक्खिओ सन्ववुहाण मुच्चइ ॥१६॥

॥ ति वेमि ॥

॥ मूल सुत्ताणि ॥

(२)

उत्तरज्झयणसुत्तं

(कालियं)

उत्तरज्ज्ञायण-महत्तं

जे किर भव-सिद्धीया, परित्त-ससारिआय भविआय ।
ते किर पढति धोरा, छत्तीस उत्तरज्ज्ञायणे ॥

जे हुति अभव-सिद्धीया, गयिअ-सत्ता अणत-सतारा ।
ते संकिलिहु-कम्मा, अभविय उत्तरज्ज्ञाए ॥

—‘जोग-विहीए वहिया, एए जो लहइ सुत्तमत्थं वा ।
भासेइ भविय-जणो, सो पावेइ निज्जरा बहुआ ॥

जस्सारद्धा एए, कहवि समत्तंति विग्घरहियस्स ।
सो लखिज्जइ भव्वो, पुण्वरिसी एव भासंति ॥

तम्हा जिण-पणत्ते, अणंत-गम-पज्जवेहि संजुत्ते ।
अज्झाए जहाजोगं, गुरुपसाया अहिज्झाया ॥

श्री भद्रबाहु निर्युक्ति—५५७, ५५८, (दीपिका १-२) ५५९ ।

नामककर्ण-

कमउत्तरेण पगयं, आयारस्सेव उवरिमाइ तु ।
तम्हा उ उत्तरा खलु, अज्झयणा हुति णायन्वा ॥

उद्धरण-

अंगप्पमवा जिण, भासिया य पत्तेयबुद्धसंवाया ।
बंघे मुक्खे य कया, छत्तीस उत्तरज्झयणा ॥

विसयनिहसो-

पढमे विणओ बीए, परीसहा दुल्लहगया तइए ।
अहिगारो य चउत्थे, होइ पमायप्पमाएत्ति ॥
मरणविभत्ती पुण पचमम्मि, विज्जाचरणं च छट्ठ अज्झयणे ।
रसगेही-परिच्चाओ, सत्तमे अट्ठम्मि अलाभे ॥
निक्कंपया य नवमे, दसमे अणुसासणोवमा भणिया ।
इक्कारसमे पूया, तवरिद्धी चेव बारसमे ॥
तेरसमे य नियाण, अनियाणं चेव होइ चउदसमे ।
भिक्खुगुणा पन्नरसे, सोलसमे बंभगुत्तीओ ॥
पावाण-वज्जणा खलु, सत्तरसे भोगिद्धिद्विजहणऽद्वारे ।
एगुणि अप्परिकम्मे, अणाहया चेव बीसइमे ॥
चरिया य विचित्ता इक्कवीसि, बावीसिमे थिरं चरणं ।
तेवीसइमे धम्मो, चउवीसइमे य समिइओ ॥
बंभगुण पन्नवीसे, सामायारी य होइ छव्वीसे ।
सत्तावीसे असढया, अट्ठावीसे य मुक्खगइं ॥
एगुणतीसे आवस्सगप्पमाओ, तवो अ होइ तीसइमे ।
चरणं च इक्कतीसे, बत्तीसि पमायठानाई ॥
तेत्तीसइमे कम्मं, चउतीसइमे य हुंति लेसाओ ।
भिक्खुगुणा पणतीसे, जीवाजीवा य छत्तीसे ॥
श्री भद्रबाहु निर्युक्ति—३, ४, १८, १९, २०, २१, २२
२३, २४, २५, २६ ।

विषय-संबंध-निर्देशः—

प्रथमेऽध्ययने विनयस्य वर्णनम् । 'विनयो हि परीषह-महासैन्य-समर-समा-कुलितमनोभिरपि कदाऽपि नोत्लङ्घनीयः' इत्यनेन सम्बन्धे-नायातं— द्वितीयं परीषहाध्ययनम् ।

द्वितीयेऽध्ययने परीषह-सहन-वर्णनम् । परीषह-सहनं च मानुषत्वादि-चतुरंग-कुलंभत्वं विज्ञायैव भवतीति सम्बन्धेनाऽऽयातं तृतीयं चतु-रंगीयमध्ययनम् ।

तृतीयेऽध्ययने मानुषत्वादि चतुरंगकुलंभत्वस्य वर्णनम् । 'कुलंभानि मानुषत्वादि चतुरंगानि प्राप्य धीधनैः प्रमादो हेयोऽप्रमादश्चोपादेयः' इत्यनेन सम्बन्धेनायातं— चतुर्थं प्रमादाप्रमादनामकमध्ययनम् ।

चतुर्थेऽध्ययने प्रमादाप्रमादहेयोपादेयवर्णनम् । प्रमादः सर्वदा सर्वथा हेयः, अप्रमादश्च मरणकालेऽपि विधेयः स च मरणविभागपरिज्ञानत एव भवति, ततो हि बालमरणादि हेयं हीयते पंडितमरणादि ओपादेय-मुपादीयते, तथा च तत्त्वतोऽप्रमत्तता जायते इत्यनेन सम्बन्धेनायातं— पंचममकाममरणीयमध्ययनम् ।

पंचमेऽध्ययने बालमरणपरित्यागस्य पंडितमरणस्वीकृतेरच वर्णनम् । पंडितमरणं च विरक्तानामेव । न चैते विद्याचरणविकला इति तत् स्वरूपमनेनोच्यते—इत्यनेन सम्बन्धेनायातं—षष्ठं क्षुल्लकनिर्ग्रन्थी-यमध्ययनम् ।

षष्ठेऽध्ययने निर्ग्रन्थत्वस्य वर्णनम् ।

निर्ग्रन्थत्वं च रसगूढिपरिहारादेव जायते—स च विपक्षेऽपायदर्शनात् तच्च दृष्टान्तोपन्यासद्वारेणैव परिस्फुटं भवतीति रसगूढिदोषदर्शको-रर्थाद्विदृष्टान्तप्रतिपादकं सप्तममुरात्रीयमध्ययनम् ।

सप्तमेऽध्ययने रसगृद्धेरपापबहुलत्वमभिधाय तत्त्यागस्य वर्णनम् ।
स च निर्लोभस्यैव भवतीति इह निर्लोभत्वमुच्यते, इत्यनेन सम्बन्धे-
नायातमष्टमं कापिलीयमध्ययनम् ।

अष्टमेऽध्ययने निर्लोभत्वस्य वर्णनम् । निर्लोभिनश्च, इहैव देवेन्द्रादि-
पूजोपजायत इत्यनेन सम्बन्धेनायातं—नमिप्रस्रज्येति नवममध्ययनम् ।
नवमेऽध्ययने धर्मचरणं प्रति निष्कम्पत्वस्य वर्णनम् । तच्चानुशासना-
देव प्रायो भवति, न च तदुपमा विना स्पष्टमिति प्रथमतः उपमाद्वारे-
णानुशासनाभिधायकं—द्रुमपत्रकाभिधानं दशममध्ययनम् ।

दशमेऽध्ययने, अप्रमादार्थमनुशासनस्य वर्णनम्, तच्च विवेकिनं व
भावयितुं शक्यं विवेकश्च बहुश्रुत-पूजात उपजायत इति बहुश्रुत-
पूजोच्यते—इत्यनेन सम्बन्धेनायातमेकादशमध्ययनम् ।

एकादशेऽध्ययने बहुश्रुत-पूजाया वर्णनम् । बहुश्रुतेनापि तपसि यत्नो
विधेय इति ख्यापनार्थं तपःसमृद्धिरूपवर्णयत इत्यनेन सम्बन्धेनायातं—
हरिकेशीय द्वादशमध्ययनम् ।

द्वादशेऽध्ययने तपसः समृद्धेर्वर्णनम् ।

तपःसमृद्धिं प्राप्तावपि निदानं परिहृतं न्यमिति दर्शयितुं यथा तन्महा-
पायहेतुस्तथा चित्तसंभूतोदाहरणेन निदर्शयत इत्यनेन सम्बन्धेनायात
चित्तसंभूतीयं त्रयोदशमध्ययनम् ।

त्रयोदशेऽध्ययने निदानदोषस्य वर्णनम् । प्रसङ्गतो निर्निदानता-
गुणस्यापि, अत्र तु मुख्यतः व एवोच्यते इत्यनेन सम्बन्धेनायातं
चतुर्दशमिषुकारीयमध्ययनम् ।

चतुर्दशेऽध्ययने निर्निदानतागुणवर्णना, सा च मुख्यतो भिक्षोरेव,

भिक्षुश्च गुणत इति तद्गुणा अनेनोच्यन्ते—इत्यनेन सम्बन्धेनायातं पंचदशं सभिक्षुकमध्ययनम् ।

पंचदशोऽध्ययने भिक्षुगुणानां वर्णनम् ।

भिक्षुगुणाश्च तत्त्वतो ब्रह्मचर्यव्यवस्थितस्यैव भवन्ति ब्रह्मचर्यं च ब्रह्मगुप्तिपरिज्ञानत् इति ब्रह्मचर्यसमाधय इहाभिधीयन्ते इत्यनेन सम्बन्धेनायातं षोडश ब्रह्मचर्यसमाधिनामकमध्ययनम् ।

षोडशोऽध्ययने ब्रह्मचर्यगुप्तीनां वर्णनम् ।

ब्रह्मचर्यगुप्तयश्च पापस्थानवर्जनादेवासेवितुं शक्यन्ते इति पापश्रमण-स्वरूपाभिधानतस्तदेवात्र कावकोच्यत इत्यनेन सम्बन्धेनायातं सप्तदशं पापश्रमणीयमध्ययनम् ।

सप्तदशोऽध्ययने पापवर्जनस्य वर्णनम् ।

तच्च संयतस्यैव, स च भोगद्वित्यागत एवेति स एव संयतेरुदाहरणत इहोच्यत इत्यनेन सम्बन्धेनायातमष्टादशं संयतीयाख्यमध्ययनम् ।

अष्टादशोऽध्ययने भोगद्वित्यागवर्णनम् ।

भोगद्वित्यागाच्च श्रामण्यमुपजायते तच्चाप्रतिकर्मतया प्रशस्यतरं भवतीत्यप्रतिकर्मतोच्यते—इत्यनेन सम्बन्धेनायातमेकोनविंशं मृगा-पुत्रीयमध्ययनम् ।

एकोनविंशोऽध्ययने निष्प्रतिकर्मताया वर्णनम् ।

निष्प्रतिकर्मता च अनाथत्वपरिभावेनैव पालयितुं शक्येति महा-निर्ग्रन्थहितमभिघातुमनाथतैवानेकधाऽनेनोच्यत इत्यनेन सम्बन्धेनायातं विंशतितमं-महानिर्ग्रन्थीयमध्ययनम् ।

विंशतितमेऽध्ययनेऽनाथत्व-वर्णनम् ।

अनाथत्वं च-आलोचनाद्विविक्तचर्ययव चरितव्यमित्यभिप्रायेण
संबोध्यत इत्यनेनाभिसम्बन्धेनायातमेकाविंश समुद्रपालीयमध्ययनम् ।
एकाविंशोऽध्ययने विविक्तचर्यावर्णनम् ।

विविक्तचर्या च चरणसहितेन धृतिमता चरण एव शक्यते कर्तुमतो
रथनेमिवचरण तत्र च कथचिदुत्पन्नविश्रोतसिकेनापि धृतिश्चाधेया
इत्यनेन सम्बन्धेनायात द्वाविंश रथनेमीयमध्ययनम् ।

द्वाविंशोऽध्ययने कथचिदुत्पन्नविश्रोतसिकेनापि रथनेमिविद् धृतिश्चरणे
विधेयेतिवर्णनम् इह तु परेषामपि चित्तविल्पुतिमुपलभ्य केशिगौतम-
वत्तदपनयनाय यतितव्यमित्यभिप्रायेण यथा शिष्यसशयोत्पत्तौ
केशिपृष्ठेन गौतमेन धर्मस्तदुपयोगि च लिगादि वर्णितं तथा अनेना-
भिधीयत इत्यमुना सम्बन्धेनायातं—

त्रयोविंशं केशिगौतमीयमध्ययनम् ।

त्रयोविंशोऽध्ययने परेषामपि चित्तविल्पुतिमुपलभ्य तदपनयनाय
केशिगौतमवद्यतितव्यमितिवर्णनम् । इह तु तदपनयनं सम्यग्-
वाग्योगत एव, स च प्रवचन-भातृस्वरूपपरिज्ञानत इति तत्स्वरूप-
मुच्यत इत्यनेन सम्बन्धेनायातं—

चतुर्विंशतितममध्ययनम् ।

चतुर्विंशोऽध्ययने प्रवचनमातृणा वर्णनम् । प्रवचनमातरश्च ब्रह्मगुण-
स्थितस्यैव तत्त्वतो भवन्तीति जयघोषचरितवर्णनाद्वारेण ब्रह्मगुणा
उच्यन्त इत्यनेनाभिसम्बन्धेनायातं पञ्चविंशतितमं यज्ञीयाद्य-
मध्ययनम् ।

पञ्चविंशतितमेऽध्ययने ब्रह्मगुणानां वर्णनम् । ब्रह्मगुणवांश्च यतिरेव

तेन चावश्य समाचारी विधेयेति, साऽस्मिन्नभिधीयते-इत्यनेन सम्बन्धेनायातं-

षड्विंशतितम समाचारीतिनामकमध्ययनम् ।

षड्विंशतितमेऽध्ययने समाचारीवर्णनम् ।

समाचारी च अशठतयैव पालयितुं शक्या, तद्विपक्षभूतशठता-अज्ञान एव च तद्विवेकेनासौ जायत इत्याशयेन दृष्टान्ततः शठतास्वरूपनिरूपणद्वारेणाशठतैवानेनाभिधीयत इत्यनेन सम्बन्धेनायातं सप्तविंश खलुङ्कोयमध्ययनम् ।

सप्तविंशेऽध्ययने अशठतयैव समाचारी परिपालयितुं शक्यत-इति वर्णनम् । समाचारी व्यवस्थितस्य न्यायप्राप्तैव मोक्षमार्गगति-प्राप्तिरिति तदभिधायक-

मष्टाविंशतितमं मोक्षमार्गगत्याख्यमध्ययनम् ।

अष्टाविंशतितमेऽध्ययने ज्ञानादीनां मुक्तिमार्गत्वेन वर्णनम् ।

ज्ञानादीनि च संवेगादिमूलान्यकर्मताऽवसानानि च तथा भवन्तीति तानीहोच्यते यद्वा मोक्षमार्गगतेर्वर्णनम् ।

इस पुनरप्रमाद एव तत् प्रधानोपायो ज्ञानादीनामपि तत् पूर्वकत्वादिति, स एव वर्ण्यते ।

अथवा मुक्तिमार्गगतेर्वर्णनम् ।

सा च बीतरागपूर्विकेति यथा तद् भवति तथाऽनेनाभिधीयत इत्यनेन सम्बन्धेनायातमेकोनविंशं सम्यक्त्वं पराक्रममध्ययनम् ।

एकोनविंशेऽध्ययने-अप्रमादवर्णनम् ।

अप्रमादवृत्ता तपोविधेयमिति तत्स्वरूपमुच्यते इत्यनेन सम्बन्धेनायात

त्रिंशं तपोमार्गगत्यध्ययनम् ।

त्रिंशोऽध्ययने तपसो वर्णनम् ।

तच्चरणवत एव सम्यग् भवतीति चरणमुच्यत इत्यनेन सम्बन्धेनायात-
मेकत्रिंशत्तमंचरणाख्यमध्ययनम् ।

एकत्रिंशत्तमेऽध्ययने चरणस्य वर्णनम् ।

चरणं च प्रमादस्थानपरिहारत एवासेवितुं शक्यं, तत्-परिहारश्च-
तत्परिज्ञानपूर्वकमित्यनेन सम्बन्धेनायातं द्वात्रिंशं प्रमादस्थाननाम-
कमध्ययनम् ।

द्वात्रिंशोऽध्ययने प्रमादस्थानानां वर्णनम् ।

प्रमादस्थानश्च मिथ्यात्वाविरतिप्रमादकषाययोगावधहेतवः' (तत्त्वा०
अ० ८-सू० १) इति वचनात् कर्म वध्यते, तस्य च का प्रकृतयः,
कियती वा स्थितिः ? इत्यादि सन्देहापनोदाय त्रयस्त्रिंशत्तमं कर्म-
प्रकृतिरित्यध्ययनम् ।

त्रयस्त्रिंशत्तमेऽध्ययने कर्मप्रकृतौना वर्णनम् ।

कर्मस्थितिश्च लेश्यावशत इत्यतस्तदभिधानार्थं चतुस्त्रिंशं लेश्या-
ख्यमध्ययनम् ।

चतुस्त्रिंशत्तमेऽध्ययने लेश्यावर्णनम् ।

लेश्याभिधानेचायमाशयः-अशुभानुभावलेश्या.परित्यज्याः शुभानु-
भावा एव लेश्या अधिष्ठातव्या । एतच्च भिक्षुगुणव्यवस्थितेन
रश्मिग्विघातुं शक्यं, तद् व्यवस्थानं च तत् परिज्ञानत इति तदर्थ-
मिदमारभ्यते, एतत्सम्बन्धागतं-

पञ्चत्रिंशत्तममनगारमार्गगतिरित्यध्ययनम् ।

पञ्चत्रिंशत्तमेऽध्ययने हिंसापरिवर्जनादिभिक्षुगुणानां वर्णनम् ।

भिक्षुगुणाश्च जीवाजीवस्वरूपपरिज्ञानत एवासेवितुं शक्यन्त इति
तज्ज्ञापनार्थं षट्त्रिंशत्तमं जीवाजीवविभक्तिरित्यध्ययनम् ।

-श्री शान्तिसूरिकृतटीकाया आधारेण-सम्पादकः

॥ णमोऽत्थुणं तस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स ॥

उत्तरज्झयण-सुत्तं

अहं विणयसुयं नामं पढममज्झयणं

सज्जोगा विप्पमुक्कस्स, अणगारस्स भिक्खूणो ।
विणयं पाउकरिस्सामि, आणुपुण्वि सुणेह मे ॥ १ ॥

आणानिद्वेसकरे, गुरुणमुववायकारए ।
इगियागारसंपन्ने, से 'विणीए' त्ति वुच्चइ ॥ २ ॥

आणाऽनिद्वेसकरे, गुरुणमणुववायकारए ।
पडिणीए असंबुद्धे 'अवीणीए' त्ति वुच्चइ ॥ ३ ॥

जहा सुणी^१ पूइकणी, निक्कसिज्जइ सव्वसो ।
एवं दुस्सीलपडिणीए, मुहुरी निक्कसिज्जइ ॥ ४ ॥

कणकुण्डग चइत्ताण, विट्ठ भुजइ सुयरे^२ ।
एवं सील चइत्ताणं, दुस्सीले^३ रमइ मिए ॥ ५ ॥

सुणिया भाव साणस्स,^१ सुयरस्स^२ नरस्स^३ य ।
विणए ठवेज्ज अप्पाणं, इच्छतो हियमप्पणो ॥ ६ ॥

तम्हा विणयमेसिज्जा, सील पडिलभे जओ ।
बुद्धपुत्ते नियागट्ठी, न निक्कसिज्जइ कण्हुई ॥ ७ ॥

निस्सते सियाऽमुहरी, बुद्धाण अतिए सया ।
 अट्टजुत्ताणि सिक्खिज्जा, निरट्टाणि उ वज्जए ॥ ८ ॥
 अणुसासिओ न कुप्पिज्जा, खति सेविज्ज पंडिए ।
 खुड्ढेह सह संसग्गि, हास कीड च वज्जए ॥ ९ ॥
 मा य चडालिय कासी, बहुय मा य आलवे ।
 कालेण य अहिज्जिता, तओ झाइज्ज एगगो ॥ १० ॥
 आहच्च चडालिय कट्टु, न निण्हविज्ज कयाइ वि ।
 कड कडे ति भासेज्जा, अकड नो कडे ति य ॥ ११ ॥
 मा 'गलियस्सेव कस', वयणमिच्छे पुणो पुणो ।
 'कस व दट्ठुमाइण्णे' पावगं परिवज्जए ॥ १२ ॥

अणासवा धूलवया कुसीला,
 मिज्जपि चड पकरति सीसा ।
 चित्ताणुया लहु दक्खोववेया,
 पसायए ते हु दुरासयपि ॥ १३ ॥

नापुट्ठो वागरे किच्चि, पुट्ठो वा नालिय वए ।
 कोह असच्च कुवेज्जा, धारेज्जा पियमप्पिय ॥ १४ ॥
 अप्पा चेव दमेयच्चो, अप्पा हु खलुहुइमो ।
 अप्पा दतो सुही होइ, अस्सि लोए परत्थ य ॥ १५ ॥
 वर मे अप्पा दतो, सज्जमेण तवेण य ।
 माह परेहि दम्मतो, बध्धणोह-वहेहि य ॥ १६ ॥

पडिणीयं च बुद्धाणं, चाया अदुव कम्मणा ।
 आविवा जइ वा रहस्से, नेव कुज्जा कयाइ वि ॥१७॥
 न पक्खओ न पुरओ, नेव किच्चण पिट्ठओ ।
 न जुंजे ऊरुणा ऊरुं, सयणे नो पडिस्सुणे ॥१८॥
 नेव पल्हत्थियं कुज्जा, पक्खापिड च संजए ।
 पाए पसारिए चावि, न चिट्ठे गुरुणंतिए ॥१९॥
 आयरिएहि वाहित्तो, तुप्पिणीओ न कयाइवि ।
 पसायपेही नियागट्ठी, उवचिट्ठे गुरुं सया ॥२०॥
 आलवंते लवते वा, न निसीएज्ज कयाइ वि ।
 चइऊणमासणं धीरो, जओ जत्तं पडिस्सुणे ॥२१॥
 आसणगओ न पुच्छेज्जा, नेव सेज्जागओ कयाइवि ।
 आगम्मक्कड्डओ संतो, पुच्छेज्जा पंजलीउडो ॥२२॥
 एवं विणयजुत्तस्म, सुत्त अत्थं च तदुभय ।
 पुच्छमाणस्स सीसस्स, वागरिज्ज जहासुय ॥२३॥
 मुत्तं परिहरे भिक्खू, न य ओहारिणं वए ।
 भासादोसं परिहरे, मायं च वज्जए सया ॥२४॥
 न लवेज्ज पुट्ठो सावज्जं, न निरट्ठ न मम्मयं ।
 अप्पणट्ठा परट्ठा वा, उभयरत्तरेण वा ॥२५॥
 समरेणु अगारेणु, संघीसु य महापहे ।
 एगो एगित्थीए सट्ठि, नेव चिट्ठे न संलवे ॥२६॥

जं मे बुद्धाऽणुसासंति, सीएण फरुसेण वा ।
 मम लाहो त्ति पेहाए, पयओ त पडिस्सुणे ॥२७॥
 अणुसासणमोवाय, दुक्कडस्स य चोयणं ।
 हिय त मण्णइ पण्णो, वेस होइ असाहुणो ॥२८॥
 हिय विगयभया बुद्धा, फरुसंपि अणुसासणं ।
 वेसं तं होइ मूढाण, खतिसोहिकरं पयं ॥२९॥
 आसणे उवचिट्ठेज्जा, अणुच्चेऽकुक्कुए थि रे ।
 अप्पुठ्ठाई निरुद्धाई, निसीएज्जप्पकुक्कुए ॥३०॥
 कालेण निक्खमे भिक्खू, कालेण य पडिक्कमे ।
 अकाल च विवज्जित्ता, काले काल समायरे ॥३१॥
 परिवाडीए नचिट्ठेज्जा, भिक्खू दत्तेसण चरे ।
 पडिरुवेण एसित्ता, मियं कालेण भक्खए ॥३२॥
 नाइदूरमणासन्ने, नऽन्नेसि चक्खुफासओ ।
 एगो चिट्ठेज्ज भत्तद्धा, लघित्ता तं नऽइक्कमे ॥३३॥
 नाइउच्चेव नीए वा, नासन्ने नाइदूरओ ।
 फासुय परकड पिड, पडिगाहेज्ज संजए ॥३४॥
 अप्पपाणेऽप्पत्तीयम्मि, पडिच्छन्नम्मि संवुडे ।
 समयं सजए भुजे, जयं अपरिसाडियं ॥३५॥
 सुकडित्ति सुपक्कित्ति, सुच्छिन्ने सुहडे मडे ।
 सुणिट्ठिए सुलट्ठित्ति, सावज्ज वज्जए मुणी ॥३६॥

रमए पडिए सास, 'हयं भइं व वाहए' ।
 बालं सम्मइ सासंतो, 'गलियस्सं व वाहए' ॥३७॥
 छइहुया मे चवेडा मे, अक्कोसा य वहा य मे ।
 कल्लाणमणुसासंतो, पावविट्ठित्ति मन्नई ॥३८॥
 पुत्तो मे भाय नाइ त्ति, साहू कल्लाण मन्नई ।
 पावविट्ठिउ अप्पाणं, सासं दासि त्ति मन्नई ॥३९॥
 न कोवए आयरियं, अप्पाणंपि न कोवए ।
 बुद्धोवघाई न सिया, न सिया तोत्त-गवेसए ॥४०॥
 आयरिय कुवियं नच्चा, पत्तिएण पसायए ।
 विज्झवेज्ज पंजलीउडो, वएज्ज न पुणो त्ति थ ॥४१॥
 धम्मज्जियं च ववहार, बुद्धेहायरियं सया ।
 तमायरंतो ववहारं, गरह नाभिगच्छइ ॥४२॥
 मणोगय वक्कगयं, जाणित्तायरियस्स उ ।
 तं परिगिज्झ वायाए, कम्मणा उववायए ॥४३॥
 वित्ते अचोइए निच्चं, खिप्प हवइ सुचोइए ।
 जहोवइहुं सुकयं, किच्चाइं कुव्वई सया ॥४४॥
 नच्चा नमइ मेहावी, लोए कित्ती से जाइए ।
 हवई किच्चाणं सरणं 'भूयाणं जगई जहा' ॥४५॥
 पुज्जा जस्स पसीयति, सबुद्धा पुव्वसंयुआ ।
 पसन्ना लाभइस्संति, विउलं अट्ठियं सुयं ॥४६॥

स पुज्जसत्थे सु' विणीयसंसए
मणोरुई चिट्ठई कम्मसंपया ।
तवो-समायारि-समाहिसंवुडे,
महज्जुई पंच वयाइं पालिया ॥४७॥

स देव-गघब्ब-मणुस्सपूइए, ।
चइत्तु देह मलपकपुब्बयं ।
सिद्धे वा हवइ सासए,
देवे वा अप्परए महिब्बदीए ॥४८॥
॥ त्ति वेमि ॥

अह परिसह नामं दुइअमज्झयणं

सुयं मे आउसं !
तेणं भगवया एवमक्खायं—
इह खलु बावीसं परिसहा—
समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया ।
जे भिक्खू सोच्चा नच्चा जिच्चा अभिभूय—
भिक्खायरियाए परिब्बयंतो पुट्ठो नो विनिहसेज्जा ।
कयरे खलु ते बावीसं परीसहा—
समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया—

जे भिक्खू सोच्चा नच्चा जिच्चा अभिभूय—
 भिक्खायरियाए परिब्बयंतो पुट्ठो नो विनिहन्नेज्जा ?
 इमे खलु ते बाबीस परीसहा—
 समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेण पवेइया—
 जे भिक्खू सोच्चा नच्चा जिच्चा अभिभूय—
 भिक्खायरियाए परिब्बयतो पुट्ठो नो विनिहन्नेज्जा
 त जहा—

दिगिंछापरीसहे १ पिवासापरीसहे २ सीयपरीसहे ३
 उसिणपरीसहे ४ दसमसयपरीसहे ५ अचेलपरीसहे ६
 अरइपरीसहे ७ इत्थीपरीसहे ८ चरियापरीसहे ९
 निसीहिया परीसहे १० सेज्जापरीसहे ११ अक्कोसपरिसहे १२
 बहपरीसहे १३ जायणापरीसहे १४ अलाभपरीसहे १५
 रोगपरीसहे १६ तणफासपरीसहे १७ जल्लपरीसहे १८
 सबकारपुरवकारपरीसहे १९ पन्नापरीसहे २०
 अन्नाणपरीसहे २१ वंसणपरीसहे २२ ।

परीसहाणं पविमत्ती, कासवेण पवेइया ।
 तं मे उदाहरिस्सामि, आणुपुट्ठि सुणेह मे ॥ १ ॥

(१) दिगिंछापरिगए देहे, तवस्सी भिक्खू थामवं ।
 न छिंदे न छिंदावए, न पए न पयावए ॥ २ ॥

कालीपब्बंग—संकासे, किंसे घमणिस्तए ।
 मायन्ने असण-पाणस्स, अदीण-मणसो चरे ॥ ३ ॥
 (२) तओ पुट्ठो पिवासाए, दोगुच्छी लज्जसजए ।
 सीओदग न सेविज्जा, वियडस्सेसणं चरे ॥ ४ ॥
 छिन्नावाएसु पंथेसु, आउरे सुपिवासिए ।
 परिसुक्कमुहाऽदीणे, त तित्तिक्खे परिसहं ॥ ५ ॥
 (३) चरंतं विरय लूह, सीय फुसइ एगया ।
 नाइवेलं मुणी गच्छे, सोच्चण जिणसासणं ॥ ६ ॥
 न मे निवारणं अत्थि, छवित्ताण न विज्जइ ।
 अहं तु अग्गि सेवामि, इह भिक्खू न चित्तए ॥ ७ ॥
 (४) उसिणं परियावेण, परिवाहेण तज्जिए ।
 धिसु वा परियावेण, साय नो परिदेवए ॥ ८ ॥
 उण्हाहित्तो मेहावी, सिणाण नो वि पत्थए ।
 गाय नो परिसिचेज्जा, न वीएज्जा य अप्पयं ॥ ९ ॥
 (५) पुट्ठो य दसमसएहि, समरे व महामुणी ।
 नागो संगामसीसे वा, सूरुओ अभिहणे पर ॥ १० ॥
 न संतसे न वारेज्जा, मणं पि न पओसए ।
 उव्वेहे न हणे पाणे, भुज्जते संससीणिय ॥ ११ ॥
 (६) परिजुण्णेहि वत्थेहि, होक्खामि त्ति अचेलए ।
 अबुवा सचेले होक्खामि, इइ भिक्खू न चित्तए ॥ १२ ॥

एगयाऽचेलए होइ, सचेले आवि एगया ।

एयं धम्मं हियं नच्चा, नाणी नो परिदेवए ॥१३॥

(७) गामाणुगाम रीयत्त, अणगार अकिच्चणं ।

अरई अणुप्पवेसेज्जा, त तित्तिक्खे परीसहं ॥१४॥

अरइं पिट्ठओ किच्चा, विरए आयरक्खिए ।

धम्मारामे निरारम्भे, उवसंते मुणो चरे ॥१५॥

(८) संगो एस मणूसाण, जाओ लोगम्मि इत्थिओ ।

जस्स एया परिभाया, सुकडं तस्स सामण्णं ॥१६॥

एवमादाय मेहावी, पंक भूया उ इत्थिओ ।

नो ताहिं विणिहस्सेज्जा, चरेज्जसगवेसए ॥१७॥

(९) एग एव चरे लाढे, अभिभूय परीसहे ।

गामे वा नगरे वावि, निगमे वा रायहाणिए ॥१८॥

असमाणे चरे भिक्खू, नेव कुज्जा परिगहं ।

अससत्तो गिहत्थेहिं, अणिएओ परिब्बए ॥१९॥

(१०) सुसाणे सुभगारे वा, रुक्खमूले व एगओ ।

अकुक्कुओ निसीएज्जा, न य वित्तासए परं ॥२०॥

तत्थ से चिट्ठमाणस्स, उवसग्गामिधारए ।

सकामीओ न गच्छेज्जा, उट्ठित्ता अन्नमासणं ॥२१॥

(११) उच्चावयाहिं सेज्जाहिं, तवस्सी भिक्खू थामवं ।

नाइवेलं विहग्गिज्जा, पावदिट्ठी विहसई ॥२२॥

पइरिक्कुवस्सयं लद्धं, कल्लाणमडुवा पावयं ।
 किमेगराईं करिस्सइ, एवं तत्थऽहियासए ॥२३॥
 (१२) अक्कोसेज्जा परे भिक्खु, न तेसि पडिसंजले ।
 सरिसो होइ बालाणं, तम्हा भिक्खू न संजले ॥२४॥
 सोच्चाणं फरसा भासा, दारुणा गामकंटगा ।
 तुसिणीओ उवेहिज्जा, न ताओ मणसीकरे ॥२५॥
 (१३) हओ न संजले भिक्खू मणंपि न पओसए ।
 तित्तिक्खं परमं नच्चा, भिक्खू धम्मं विच्चितए ॥२६॥
 समणं संजयं दंतं, हणिज्जा कोइ कत्थई ।
 नत्थि जीवस्स नासुत्ति, एवं पेहेज्ज, संजए ॥२७॥
 (१४) दुक्करं खलु भो निच्च, अणगरस्स भिक्खूणी ।
 सत्थं से जाइयं होइ, नत्थि किंचि अजाइयं ॥२८॥
 गोयरगापविट्ठस्स पाणी नो सुप्पसारए ।
 सेओ अगारवासुत्ति, इइ भिक्खू न चित्तए ॥२९॥
 (१५) परेसु घासमेसेज्जा, भोयणे परिणिट्ठिए ।
 लद्धे पिंडे अलद्धे वा, नाणुतप्पेज्ज पंडिए ॥३०॥
 अज्जेवाहं न लब्भामि, अवि लाभो सुए सिया ।
 जो एवं पडिसच्चिक्खे, अलाभो त न तज्जए ॥३१॥
 (१६) नच्चा उप्पइय दुक्खं, वेयणाए दुहट्ठिए ।
 अवीणो यावए पत्त, पुट्ठो तत्थऽहियासए ॥३२॥

तेइच्छं नाभिनदेज्जा, संचिक्खत्तगवेसए ।
 एवं खु तस्स सामण्ण, जं न कुज्जा न कारवे ॥३३॥
 (१७) अचेलगस्स लूहस्स, सजयस्स तवस्सिणो ।
 तण्णेषु सयमाणस्स, हुज्जा गायधिराहणा ॥३४॥
 आयवस्स निबाएण, अउला हवइ वेयणा ।
 एव नच्चा न सेसंति, तंतुजं तणतज्जिया ॥३५॥
 (१८) किलिन्नगाए मेहावी, पंकेण व रएण वा ।
 धिंसु वा परियावेण, सायं नो परिदेवए ॥३६॥
 वेएज्ज निज्जरापेही, आरिय धम्मणुत्तर ।
 जाव सरीरभेउत्ति, जल्ल काएण धारए ॥३७॥
 (१९) अभिवायणमब्भुट्ठाणं, सामो कुज्जा निमंतणं ।
 जे ताई पडिसेवंति, न तेसिं पीहए मुणी ॥३८॥
 अणुक्कसाई अप्पिच्छे अन्नाएसी अलोलुए ।
 रसेसु नाणुगिज्जेज्जा, नाणुत्तप्येज्ज पन्नव ॥३९॥
 (२०) से नूणं मए पुत्वं, कम्माऽणाणफला कडा ।
 जेणाह नाभिजाणामि, पुट्ठो केणइ कण्ठुई ॥४०॥
 अह पच्छा उइज्जंति, कम्माणाणफला कडा ।
 एवमस्सासि अप्पाणं, नच्चा कम्मविवागयं ॥४१॥
 (२१) निरट्ठगम्मि विरओ, मेट्ठुणाओ सुसंवुडो ।
 ओ सवखं नाभिजाणामि, धम्मं कल्लाणपावगं ॥४२॥

तवोवहाणमादाय, पडिम पडिवज्जओ ।
 एवं पि विहरओ मे, छउम न नियट्ठइ ॥४३॥
 (२२) नत्थि नूणं परे लोए, इड्ढी वा वितवस्सिणो ।
 अबुवा वचिओमिस्सि, इइ भिक्खू न चितए ॥४४॥
 अभू जिणा अत्थि जिणा, अबुवा वि भविस्सइ ।
 मुस ते एवमाहसु, इइ भिक्खू न चितए ॥४५॥
 एए परीसहा सव्वे, कासवेण पवेइया ।
 जे भिक्खू न विहसेज्जा, पुट्ठो केणइ कण्हइ ॥४६॥
 ॥ त्ति बेमि ॥

अह चाउरंगिज्जं नामं तइयमज्झयणं

चत्तारि परमगाणि दुल्लहाणीह जंतुणो ।
 माणुसत्त^१ सुई^२ सद्धा,^३ सजमम्मि य बोरियं^४ ॥ १ ॥
 समावन्नाण ससारे, नाणागोत्तासु जाइसु ।
 कम्मा नाणाविहा कट्टु, पुट्ठो विस्समिया पया ॥ २ ॥
 एगया देवलोएसु, नरएसु चि एगया ।
 एगया आसुरं काय, अहाकम्मेहि गच्छइ ॥ ३ ॥
 एगया खत्तिओ होइ, तओ चंडाल-बुक्कसो ।
 तओ कौड-पर्यगो य, तओ कुंभु-पिबीलिया ॥ ४ ॥

एवमावट्टजोणीसु, पाणिणो कम्मकिन्विता ।
 न निव्विज्जति संसारे, सन्वट्ठेसु व खत्तिया ॥ ५ ॥
 कम्मसंगोहिं समूढा, दुक्खिया बहुवेयणा ।
 अमाणुसासु जोणीसु, विणिहम्मति पाणिणो ॥ ६ ॥
 कम्माण तु पहाणाए, आणुपूव्वी कयाइ उ ।
 जीवा सोहिमणुप्पत्ता, आययंति मणुस्सयं ॥ ७ ॥
 माणुस्स विग्गहं लद्धं, सुई धम्मस्स दुल्लहा ।
 जं सोच्चा पडिवज्जति, तवं खंतिमहिंसयं ॥ ८ ॥
 आहच्च सवण लद्धं, सद्धा परमदुल्लहा ।
 सोच्चा नेआउयं मगां, बहुवे परिमस्सइ ॥ ९ ॥
 सुइं च लद्धं, सद्ध च, वीरिय पुण दुल्लहं ।
 बहुवे रोयमाणावि, नो य ण पडिवज्जए ॥ १० ॥
 माणुसत्तंमि आयाओ, जो धम्म सोच्चा सद्धे ।
 तवस्सी वीरिय लद्धं, सबुद्धे निद्धुणे रयं ॥ ११ ॥
 सोही उज्जुयभूयस्स, धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई ।
 निव्वाण परम जाइ, 'धयसित्तिव्व पावए' ॥ १२ ॥
 विगिच कम्मुणो हेउ, जस सचिणु खंतिए ।
 सरीर पाढव हिच्चा, उद्ध पक्कमए दिस ॥ १३ ॥
 विसालसेहिं सीलेहिं, जक्खा उत्तरउत्तरा ।
 'महासुक्का व दिप्पंता', मत्तंता अपुणच्चय ॥ १४ ॥

अप्पिया देवकामाण, कामरुवविउज्ज्विणो ।
 उड्ढ कप्पेसु चिट्ठ ति, पुच्चावाससया बहु ॥१५॥
 तत्थ ठिच्चा जहाठाण, जक्खा आउक्खये चुया ।
 उर्वेति माणुस जोणिं, से दसगेऽभिजायए ॥१६॥
 (१) खेत्त-वत्थु^१ हिरण्ण^२ च, पसवो,^३ दास-पोरुस^४ ।
 'चत्तारि कामखघाणि' तत्थ से उववज्जइ ॥१७॥
 मित्तव^५ नाइव^६ होइ, उच्चागोए^१ य वण्णव^६ ।
 अप्पायके^६ महापत्ते,^७ अभिजाए^८ जसो^९ बेले^{१०} ॥१८॥
 भुच्चा माणुस्सए भोए, अप्पडिरुवे अहाउय ।
 पुच्च विसुद्धसद्धम्मे, केवल बोहि वुज्झिया ॥१९॥
 चउरग दुल्लह नच्चा, सजम पडिवज्झिया ।
 तवसा धुयकम्मसे, सिद्धे हवइ सासए ॥२०॥ ति बेमि ॥

अह असंखयं नामं चउत्थमज्झयणं

असखय जीविय मा पमायए,
 जरोवणीयस्स हु नत्थि ताणं ।
 एव वियाणाही जणे पमत्ते,
 कि नु विहिंसा अजया गहिंति ॥ १ ॥

जे पावकम्मोहिं घण मणुसा,
समाययंती अमइं गहाय ।
पहाय ते पासपट्टिए नरे,
वेराणुबद्धा नरय उर्विति ॥ २ ॥

'तेणे जहा' सधिसुहे गहोए,
सकम्मुणा किच्चइ पावकारी ।
एव पया पेच्च इह च लोए,
कडाण कम्पाण न मोक्ख अत्थि ॥ ३ ॥

ससारमावन्न परस्स अट्ठा,
साहारणं ज च करेइ कम्म ।
कम्मस्स ते तस्स उ वेयकाले,
न बधवा बधवय उर्विति ॥ ४ ॥

वित्तेण ताण न लभे पमत्ते,
इममि लोए अदुवा णरत्था ।
'दीवप्पणट्ठे'च, अणतमोहे,
नेयाडय दट्ठुमदट्ठुमेव ॥ ५ ॥

सुत्तेसु यावि पडिवुद्धजीवी,
न वीससे पडिय आसुपण्णे ।
घोरा मुहुत्ता अवल सरीर,
'भारुडपक्खीव' चरेप्पमत्ते ॥ ६ ॥

चरे पयाइं परिसकमाणो,
ज किञ्चि पासं इह मन्नमाणो ।
लाभतरे जीविय वूहइत्ता,
पच्छा परिन्नाय मलावधंसी ॥ ७ ॥

छंदंनिरोहेण उवेइ मोक्ख,
'आसे जहा सिक्खिय-वम्मधारी ।'
पुब्बाइ वासाइ चरेऽप्पमत्तो,
तम्हा मुणी खिप्प मुवेई मुक्ख ॥ ८ ॥

स पुब्बमेव न तभेज्ज पच्छा,
एसोवमा सासयवाइयाण ।
विसीयई सिद्धिले आउयस्मि,
कालोवणीए सरीरस्स भेए ॥ ९ ॥

खिप्प न सक्केड विवेगमेउ,
तम्हा समुट्ठाय पहाय कामे ।
समिच्च लोय समया महेत्ती,
अप्पाणरक्खी चरमप्पमत्तो ॥ १० ॥

मुहुं मुहुं मोहगुणे जयंत,
अणेगरूवा समण चरंतं ।
फासा फुसंति असमंजसं च,
न तेसि भिक्खू मणसा पडस्से ॥ ११ ॥

मदा य फासा बहुलोहणिज्जा,
 तहप्पगारेसु मणं न कुज्जा ।
 रक्खिज्ज कोहं विणएज्ज माणं,
 मायं न सेवेज्ज पहेज्ज लोहं ॥१२॥

जे ऽसंखया तुच्छपरप्पवाई,
 ते पिज्जदोसाणुगया परज्झा ।
 एए अहम्मे त्ति दुगुंछमाणो,
 कखे गुणे जाव सरीर भेउ ॥१३॥

॥त्ति वेमि ॥

अह अकाममरणिज्जं नामं पंचममज्झयणं

अणवसि महोर्हास, एगे तिण्णे दुस्सरे ।
 तत्थ एगे महापप्पे, इम पण्हमुदाहरे ॥ १ ॥
 सतिमे य दुवे ठाणा, अक्खाया मरणतिया ।
 अकाममरण^१ चेव, सकाममरण^२ तहा ॥ २ ॥
 वालाणं अकाम तु, मरणं असइ भवे ।
 पडियाण सकामं तु, उक्कोसेण सइं भवे ॥ ३ ॥
 तत्थिमं पढमं ठाणं, महावीरेण देसियं ।
 कामगिद्धे जहा वाले, भिसं कूराइं कुब्बई ॥ ४ ॥

जे गिद्धे कामभोगेसु, एगे कूडाय गच्छई ।
 न मे दिट्ठे परे लोए, चक्खुदिट्ठा इमा रई ॥ ५ ॥
 हत्थागया इमे कामा, कालिया जे अणागया ।
 को जाणइ परे लोए, अत्थि वा नत्थि वा पुणो ॥ ६ ॥
 जणेण सद्धि होक्खामि, इइ वाले पगम्भई ।
 कामभोगाणुराएणं, केसं संपडिक्खजई ॥ ७ ॥
 तओ से दडं समारभई, तसेसु थावरेसु य ।
 अट्ठाए य अणट्ठाए, भूयगामं विहिंसई ॥ ८ ॥
 हिंसे वाले सुसावाई माइल्ले पिसुणे सडे ।
 भुजमाणे सुर मस, तेयमेयं ति मन्नई ॥ ९ ॥
 कायसा वयसा मत्ते, वित्ते गिद्धे य इत्थिसु ।
 दुहओ मल सचिणइ, 'सिसुणागुच्च' मट्ठियं ॥ १० ॥
 तओ पुट्ठो आयकेणं, गिलाणो परितप्पई ।
 पभीओ परलोगस्स, कम्माणुप्पेहि अप्पणो ॥ ११ ॥
 सुया मे नरए ठाणा, असीलाण च जा गई ।
 बालाणं कूरकम्माण, पगाढा जत्थ बेयणा ॥ १२ ॥
 तत्थोववाइय ठाणं, जहा मेयमणुत्सुयं ।
 अहा कम्मेहिं गच्छंतो, सो पच्छा परितप्पइ ॥ १३ ॥
 'जहासागडिओ' जाण, सम हिच्चा महापहं ।
 विसम मग्गमोइण्णो, अक्खे भग्गम्मि सोयई ॥ १४ ॥

एवं धम्मं विउक्कम्मं, अहम्म पडिवज्जिया ।
 बाले मच्चुमुह पत्ते, अक्खे भग्गे व सोयई ॥१५॥
 तओ से मरणतम्मि, बाले सतसई भया ।
 अकाममरणं मरइ, घुत्ते व कलिणा जिए ॥१६॥
 एयं अकाममरणं, बालाण तु पवेइय ।
 इत्तो सकाममरण, पडियाणं सुणेह मे ॥१७॥
 मरण पि सपुण्णाण, जहा मेयमणुत्सुयं ।
 विप्पसण्णमणाघायं, सजयाण वुसीमओ ॥१८॥
 न इम सन्वेसु भिक्खूसु, न इम सन्वेसुज्जारिसु ।
 नाणासीला अगारत्था, विसमसीला य भिक्खुणो ॥१९॥
 सति एगेहिं भिक्खूहिं, गारत्था सजमुत्तरा ।
 गारत्थेहिं य सन्वेहिं, साहवो संजमुत्तरा ॥२०॥
 चीराजिण नगिणिणं, जड्ढी सघाडि मुंडिणं ।
 एयाणि वि न तायंति, दुस्सीलं परियागय ॥२१॥
 पिंडोलएक्ख दुस्सीले, नरगाओ न मुच्चइ ।
 भिक्खाए वा गिहत्ये वा, सुव्वए कम्मइ दिवं ॥२२॥
 अगारिसामाहयंगाणि, सद्दढी काएण फासए ।
 पोसहं द्रुहओ पक्खं, एगरायं न हावए ॥२३॥
 एवं सिक्खासमावज्जे, गिहीवासे वि सुव्वए ।
 मुच्चइ छविपट्ठाओ, गच्छे जक्खसलीगयं ॥२४॥

अह जे संवुडे भिक्खू, दोण्हं अन्नयरे सिया ।
 सब्बदुक्खपहीणे वा, देवे वावि महिद्धीए ॥२५॥
 उत्तराइ विमोहाइं जुईमताणुपुव्वसो ।
 समाइण्णाइं जक्खोहं, आवासाइ जससिणो ॥२६॥
 दीहाउया इड्ढिमता, समिद्धा कामरुविणो ।
 अहुणोववन्नसंकासा, भुज्जो अच्चिमालिप्पभा ॥२७॥
 ताणि ठाणाणि गच्छति, सिक्खित्ता संजमं तवं ।
 भिक्खाए वा गिहत्ये वा, जे सति परिनिव्वुडा ॥२८॥
 तेसि सोच्चा सपुज्जाण, संजयाण वुसीमओ ।
 न सतसति मरणंते, सीलवंता बहुस्सुया ॥२९॥
 तुलिया विसेसमादाय, दयाधम्मस्स खतिए ।
 विप्पसीएज्ज मेहावी, तहामूएण अप्पणा ॥३०॥
 तओ काले अभिप्पेए, सड्ढी तालिसमतिए ।
 विणएज्ज लोमहरिस, मेय देहस्स कखए ॥३१॥
 अह कालम्मि सपत्ते, आघायाय समुत्सय ।
 सकाममरण मरइ, तिण्हमन्नयर मुणी ॥३२॥
 ॥त्ति. बेमि॥

अहं खुडागनियंठिज्जं नामं छठ्ठममज्झयणं

जावतऽविज्जापुरिसा, सब्बे ते दुक्खसमवा ।
लुप्पंति बहुसो भूढा, संसारंमि अणंतए ॥ १ ॥
समिक्ख पडिंए तम्हा, पास -जाइ-पहे बहू ।
अप्पणा सच्चमेसेज्जा, मिंति भूएसु कप्पए ॥ २ ॥
माया पिया णूसा भाया, भज्जा पुत्ताय ओरसा ।
नालं ते मम ताणाए, लुप्पतस्स सकम्मुणा ॥ ३ ॥
एयमट्ठ सपेहाए, पासे समियदसणे ।
छिंद गिंदि सिणेहं च, न कखे पुव्वसथव ॥ ४ ॥
गवासं मणि-कुडल, पसवो दास-पोरुसं ।
सव्वमेय चइत्ताणं, कामरूवी भविस्सति ॥ ५ ॥
(थावर जंगम चेव, घण धन्न उवक्खर ।
पच्चमाणस्स कम्मेहि, नालं दुक्खाड मोयणे ॥)
अज्झत्थ सव्वओ सव्व, दिस्स पाणे पियाडए ।
न हणे पाणिणो पाणे, भयवेराओ उवरए ॥ ६ ॥
आयाणं नरय दिस्स, नायएज्ज तणामवि ।
दोगुंछी अप्पणो पाए, दिन्नं भुजेज्ज भोयणं ॥ ७ ॥
इहमेगे उ मन्नति, अपच्चक्खाय पावग ।
आयरियं विदिता णं, सव्वदुक्खा विमुच्चए ॥ ८ ॥

भणता अकरेता य, बध-मोक्खपइण्णिणो ।
 वायावीरियमत्तेण, समासारिंति अप्पय ॥ ९ ॥
 न चित्ता तायए भासा, कुओ विज्जाणुसासणं ।
 विसन्ना पावकम्मोहि, वाला पडियमाणिणो ॥ १० ॥
 जे केइ सरीरे सत्ता, वण्णे रुवे य सव्वसो ।
 मणसा काय-वक्केण, सव्वे ते दुक्खसमवा ॥ ११ ॥
 आवन्ना बीहमद्वाण, संसारमि अणतए ।
 तम्हा सव्वदित्तं पस्स, अप्पमत्तो परिव्वए ॥ १२ ॥
 बहिया उड्ढमादाय, नावकखे कयाइ वि ।
 पुव्व-कम्म-क्खयद्वाए, इम देह समुद्धरे ॥ १३ ॥
 विगिच्च कम्मणो हेउं, कालकंखी परिव्वए ।
 माय पिडस्स पाणस्स, कड लद्धूण भक्खए ॥ १४ ॥
 सन्निहिं च न कुव्वेज्जा, लेवमायाए संजए ।
 'पक्खी-पत्तं समायाय' निरवेक्खो परिव्वए ॥ १५ ॥
 एसणासमिओ लज्जू, गामे अणियओ चरे ।
 अप्पमत्तो पमत्तेहि, पिडवाय गवेसए ॥ १६ ॥

एव से उदाहु अणुत्तरनाणी,
 अणुत्तरदंसी अणुत्तरनाणदंसणधरे-
 भरहा नायपुत्ते भगवं,
 वेसालिए विद्याहिए ॥ १७ ॥
 ॥ सि बेमि ॥

अह एलइज्ज नामं सत्तममज्झयणं

* (१) जहाएस समुद्दिस, कोइ पोसेज्ज एलयं ।
 ओयण जवस देज्जा, पोसेज्जावि सयंगणे ॥ १ ॥
 तओ से पुट्ठे परिवूढे, जायमेए महोदरे ।
 पीणिए विउले देहे, आएस परिकखए ॥ २ ॥
 जाव न एइ आएसे, ताव जीवइ से ऽदुही ।
 अह पत्तम्मि आएसे, सीसं छेत्तूण भुज्जई ॥ ३ ॥
 जहा से खलु उरब्भे, आएसाए समीहिए ।
 एव वाले अहम्मिद्दे, ईहई नरयाउय ॥ ४ ॥
 हिंसे वाले मुसावाई, अट्ठाणमि विलोवए ।
 अन्नदत्तहरे तेणे, माई कं नु हरे सढे ॥ ५ ॥
 द्वित्थी-विसयगिद्धे य, महारंभपरिग्गहे ।
 भुज्जमाणे सुर मस, परिवूढे परदमे ॥ ६ ॥
 अयकक्करमोई य, तुंदिल्ले चियलोहिए ।
 आउय नरए कखे, 'जहाएसं व एलए' ॥ ७ ॥
 आसणं सयण जाण, वित्त कामे य भुजिया ।
 वुस्साहंडं धणं हिच्चा, बहु सच्चिणिया रय ॥ ८ ॥

*ओरब्भे अ कागिणी, अवए अ ववहारे भागरे चैव ।

पचेए दिट्ठुता, उरद्धिज्जमि अज्झयणे ॥

तओ कम्मगुरु जतु, पच्चुप्पन्नपरायणे ।
'अएव्व' आगधाएसे, मरणंतम्मि सोयइ ॥ ९ ॥

तओ आउपरिक्खीणे, चुयदेहा विहिंसगा ।
आसुरिय दिसं बाला, गच्छति अवसा तम ॥ १० ॥

(२) जहा कागिणिह हेउ, सहस्स हारए नरो ।
(३) अपत्थ अबगं भोच्चा, राया रज्ज तु हारए ॥ ११ ॥

एव मणुस्सगा कामा, देवकामाण अतिह ।
सहस्सगुणिया मुज्जो, आउ कामा य दिब्बिया ॥ १२ ॥

अणेगवासानउया, जा ता पन्नवओ ठिई ।
जाणि जीयंति दुस्सेहा, ऊणे वाससयाउए ॥ १३ ॥

(४) जहा य तिन्नि वाणिया, मूल घेतूण निग्गया ।
एगोऽत्थ लहए लाभ, एगो मूलेण आगओ ॥ १४ ॥

एगो मूलं पि हारित्ता, आगओ तत्थ वाणिओ ।
ववहारे उवमा एसा, एव धम्मे विद्याणह ॥ १५ ॥

माणुसत्तं भवे मूल, लाभो देवगई भवे ।
मूलच्छेएण जीवाण नरग-तिरिक्खत्तणं धुवं ॥ १६ ॥

दुहओ गई बालस्स, आबईवहमूलिया ।
देवत्त माणुसत्त च, जं जिए लोलयासढे ॥ १७ ॥

तओ जिए सइं होइ, दुविहं दुग्गइ गए ।
दुल्लहा तस्स उम्मगा, अट्ठाए सुच्चिराववि ॥ १८ ॥

एव जिय सपेहाए, तुलिया बाल च पडियं ।
 मूलिय ते पवेसति, माणुस जोणिमेति जे ॥१९॥
 वेमायाहिं सिक्खाहिं, जे नरा गिहिसुब्बया ।
 उर्वेति माणुस जोणि, कम्मसच्चा हु पाणिणो ॥२०॥
 जे सिं तु विउला सिक्खा, मूलियं ते अइच्छिया ।
 सीलवता सविसेसा, अदीणा जति देवयं ॥२१॥
 एवमदीणव भिक्खू, अगारिं च वियाणिया ।
 कहण्णु जिच्चमेलिक्ख, जिच्चमाणे न सविदे ॥२२॥
 (५) जहा कुसग्गे उदगं, समुद्देण सम मिणे ।
 एव माणुस्सगा कामा, देवकामाण अंतिए ॥२३॥
 कुसग्गमेत्ता इमे कामा, सन्निरुद्धम्मि आउए ।
 कस्स हेउ पुराकाउ, जोगक्खेम न सविदे ॥२४॥
 इह कामाणियट्टस्स, अत्तट्ठे अवरज्झइ ।
 सोच्चा नेयाउय मग्ग, ज भुज्जो परिभस्सइ ॥२५॥
 इह कामाणियट्टस्स, अत्तट्ठे नावरज्झई ।
 पुईदेहनिरौहण, भवे देवित्ति मे सुय ॥२६॥
 इइढी जुई जसो वण्णो, आउ सुहमणुत्तर ।
 भुज्जो जत्थ मणुस्सेसु, तत्थ से उववज्जइ ॥२७॥
 बालस्स पस्स बालत्तं, अहम्म पडिवज्जिया ।
 चिच्चा धम्मं अहम्मिट्ठे, नरासुववज्जइ ॥२८॥

धीरस्स पस्स धीरत्त, सब्बधम्माणुवत्तिणो ।
 चिच्चा अधम्मं धम्मिहे, देवेषु उववज्जइ ॥२९॥
 तुत्तियाण बालभाव, अवाल चेव पडिह ।
 चइऊण बालभाव, अवाल सेवए मुणी ॥३०॥
 ॥ त्ति वेमि ॥

अह काविलियं नामं अट्ठममज्ज्ञयणं

अधुवे असासयम्मि, ससारमि दुक्खपडराए ।
 कि नाम होज्ज त कम्मय ? जेणाह दुग्गइ न गच्छेज्जा ॥ १ ॥
 विजहित्तु पुव्वसजोय, न सिणेह कीहचि कुच्चेज्जा ।
 असिणेह-सिणेहकरोहि, दोस-पओसेहि मुच्चए भिक्खू ॥ २ ॥
 तो नाण-दंसण-समग्गो, हियनिस्सेसाए सब्बजीवाणं ।
 तेसि विमोक्खणट्ठाए, भासइ मुणिवरो विगयमोहो ॥ ३ ॥
 सब्ब गंध कलह च, विप्पजहे तहाविह भिक्खू ।
 सब्बेषु कामजाएसु, पासमाणो न लिप्पई ताई ॥ ४ ॥
 भोगामिस-दोस-विसस्से, हिय-निस्सेयस-बुद्धि-वोच्चत्थे ।
 बाले व मदिह मूढे, बज्जइ 'मच्छिया व खेलम्मि' ॥ ५ ॥
 दुप्परिच्चया इमे कामा, नो सुजहा अधीरपुरिसेहि ।
 अह सति सुव्वया साह, जे तरति अतरं 'वणिग्या वा' ॥ ६ ॥

समणा सु एगे वयमाणा, पाणवह मिया अयाणता ।
 मंदा निरयं गच्छति, बाला पावियाहिं दिट्ठीहिं ॥ ७ ॥
 न हु पाणवह अणुजाणे, मुच्चेज्ज कयाइ सव्वदुक्खाण ।
 एवमारिएहिं अक्खायं, जेहिं इमो साहुधम्मो पन्नतो ॥ ८ ॥
 पाणे य नाइवाएज्जा, से समीइ ति वुच्चइ ताई ।
 तओ से पावय कम्म, निज्जाइ 'उदग व थलाओ' ॥ ९ ॥
 जगनिस्सिएहिं भूएहिं, तसनामेहिं थावरोहिं च ।
 नो तेसिमारमे दंडं, मणसा वयसा कायसा चेव ॥ १० ॥

सुद्धेसणाओ नच्चाणं, तत्थ ठवेज्ज भिक्खू अप्पाणं ।
 जायाए घासमेसेज्जा, रसगिद्धे न सिया भिक्खाए ॥ ११ ॥
 पंताणि चेव सेवेज्जा, सीय पिड पुराण-कुम्मासं ।
 अद्दु वक्कस पुलागं वा, जवणट्ठाए न सेवए मयुं ॥ १२ ॥
 जे लक्खण च सुविण च, अगविज्ज च जे पउजंति ।
 न हु ते समणा वुच्चति, एवं आयरिएहिं अक्खायं ॥ १३ ॥
 इह जीविय अणियमेत्ता, पभट्ठा समाहिजोएहिं ।
 ते काम-भोग-रस-गिद्धा, उववज्जंति आसुरे काए ॥ १४ ॥
 तत्तो वि य उव्वट्ठित्ता, ससार बहु अणुपरियडंति ।
 बहु-कम्म-लेव-लित्ताण, बोही होइ सुदुल्लहा तेसि ॥ १५ ॥
 कसिणपि जो इमं लोयं, पडिपुण्णं दलेज्ज एगस्स ।
 तेणावि से न संतुस्से, इइ दुप्परए इमे आया ॥ १६ ॥

जहा लाहो तहा लोहो, लाहा लोहो पवड्डइ ।
 दोमासकयं कज्ज, कोडीए वि न निद्धिय ॥१७॥
 नो रक्खसीसु गिज्जेज्जा, गडवच्छासुऽणेगचित्तासु ।
 जाओ पुरिस पलोभित्ता, खेल्लति जहा व दासेहि ॥१८॥
 नारीसु नो पगिज्जेज्जा, इत्थी विप्पजहे अणगारे ।
 धम्म च पेसत्तं नच्चा, तत्थ ठवेज्ज भिक्खू अप्पाणं ॥१९॥
 इअ एस धम्मे अक्खाए, कविलेण च विसुद्धपन्नेण ।
 तरिहिहि जे उ काहिहि, तेहि आराहिया दुवे लोणा ॥२०॥
 ॥ त्ति बेमि ॥

अह नमि-पव्वज्जा नामं नवममज्झयणं

चइअण देवलोगाओ, उववन्नो माणुसमि लोगमि ।
 उवसत्त-मोहणिज्जो, सरइ पोराणिय जाइं ॥ १ ॥
 जाइ सरित्तु भयव, सय-सबुद्धो अणुत्तरे धम्मे ।
 पुत्त ठवित्तु रज्जे, अभिणिक्खमइ नमी राया ॥ २ ॥
 सो देवलोगसरिसे अतेउर-वरगओ वरे भोए ।
 भुंजित्तु नमी राया, बुद्धो भोगे परिच्चवइ ॥ ३ ॥
 मिहिल सपुर-जणवय, बलमोरोह च परियण सव्व ।
 चिच्चा अभिनिक्खतो, एगंतमहिद्धिओ भयव ॥ ४ ॥

कोलाहलग-भूयं, आसी मिहिलाए पव्वयतमि ।
 तइया रायरिसिमि, नमिमि अभिणिक्खमंतमि ॥ ५ ॥
 अब्भुट्ठियं रायरिसि, पवज्जाट्ठाणमुत्तमं ।
 सक्को माहणरुवेण, इमं वयणमब्बवी ॥ ६ ॥

(१) कित्तु मो अज्ज मिहिलाए, कोलाहलगसकुला ।
 सुव्वन्ति-दारुणा सट्ठा, पासाएसु गिहेसु य ॥ ७ ॥
 एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
 तओ नमी रायरिसी, देविदं इणमब्बवी ॥ ८ ॥

मिहिलाए चेइए वच्छे, सीयच्छाए मणोरमे ।
 पत्त-पुप्फ-फलोवेए, बहूणं बहुगुणे सथा ॥ ९ ॥
 वाएण हीरमाणम्मि, चेइयम्मि मणोरमे ।
 इड्हिया असरणा अत्ता, एए कंदति भो ! खगा ॥ १० ॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
 तओ नमि रायरिसि, देविदो एणमब्बवी ॥ ११ ॥
 (२) एस अग्गीय वाऊ य, एयं डज्झइ मंदिरं ।

भयव अंतोउर तेणं, कीस ण नावपेक्खह ॥ १२ ॥
 एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
 तओ नमी रायरिसी, देविद इणमब्बवी ॥ १३ ॥
 सुहं वसामो जीवामो, जेत्ति मो नत्थि किच्चण ।
 मिहिलाए डज्झमाणोए, न मे डज्झइ किच्चण ॥ १४ ॥

चत्त पुत्त-कलत्तस्स, निब्बावारस्स भिक्खुणो ।
पियं न विज्जइ किंचि, अप्पियं पि न विज्जइ ॥१५॥

बहुं खु मुणिणो भद्दं, अणगारस्स भिक्खुणो ।
सब्बओ विप्पमुक्कस्स, एगंतमणुपस्सओ ॥१६॥

एयमट्ठ निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमी रायरिसि, देविदो इणमब्बवी ॥१७॥

(३) पागारं कारइत्ताणं, गोपुरहालगाणि य ।
उत्सूलग-सयग्घीओ, तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥१८॥

एयमट्ठ निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविद इणमब्बवी ॥१९॥

सद्धं नगर किच्चा, तव-सवरमगल ।
खाति निउणपागार, तिगुत्तं दुप्पघसय ॥२०॥

धणु परक्कमं किच्चा, जीव च ईरियं सया ।
घिहं च केयणं किच्चा, सच्चेणं पलिमंथए ॥२१॥

तव-नाराय-जुत्तेणं, भित्तूण कम्म-कच्चुयं ।
मुणी विगय-सगाओ, भवाओ परिमुच्चई ॥२२॥

एयमट्ठ निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमि रायरिसि, देविदो इणमब्बवी ॥२३॥

(४) पासाए कारइत्ताणं, चड्ढमाणगिहाणि य ।
बालगपोइयाओ य, तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥२४॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेअ-कारण-चोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविद इणमच्चवी ॥२५॥

ससयं खलु सी कुणइ, जो मगो कुणइ घर ।
जत्येव गतुमिच्छेज्जा, तत्थ कुच्चिज्ज सासय ॥२६॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेअ-कारण-चोइओ ।
तओ नमी रायरिसि, देविदो इणमच्चवी ॥२७॥

(५) आमोसे लोमहारे य, गठिभेए य तक्करे ।
नगरस्स खेम काळणं, तओ गच्छसि खत्तिया । ॥२८॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेअ-कारण-चोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविदं इणमच्चवी ॥२९॥

असइ तु मणुस्सेहि, मिच्छा दडो पउंजए ।
अकारिणोऽत्थ वज्झति, मुच्चए कारओ जणो ॥३०॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेअ-कारण-चोइओ ।
तओ नमि रायरिसि, देविदो इणमच्चवी ॥३१॥

(६) जे केइ पत्थिवा तुज्झ, नानमंति नराहिवा !
वसे ते ठावइत्ताण, तओ गच्छसि खत्तिया । ॥३२॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेअ-कारण-चोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविदं इणमच्चवी ॥३३॥

जो सहस्स सहस्साणं, सगामे दुज्जए जिणे ।
एग जिणेज्ज अप्पाणं, एस से परमो जओ ॥३४॥

अप्पाणमेव जुज्झाहि, किं ते जुज्झेण वज्झओ ।
 अप्पणा चेव अप्पाणं, जइत्ता सुहमेहए ॥३५॥
 पच्चिदियाणि कोह, माणं साय तहेव लोहं च ।
 दुज्जयं चेव अप्पण, सन्वमप्ये जिए जियं ॥३६॥
 एयमट्ठं निसामित्ता, हेअ-कारण-चोइओ ।
 तओ नमि रायरिसि, देविदो इणमब्बवी ॥३७॥
 (७) जइत्ता विउले जन्ने, भोइत्ता समण-माहणे ।
 वच्चा भोच्चा य जिट्ठा य, तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥३८॥
 एयमट्ठं निसामित्ता, हेअ-कारण-चोइओ ।
 तओ नमी रायरिसी, देविद इणमब्बवी ॥३९॥
 जो सहस्स सहस्साण, मासे मासे गव दए ।
 तस्स वि सजमो सेओ, अदितस्स वि किंचण ॥४०॥
 एयमट्ठं निसामित्ता, हेअ-कारण-चोइओ ।
 तओ नमि रायरिसि, देविदो इणमब्बवी ॥४१॥
 (८) घोरासमं चइत्ताण, अन्न पत्थेसि आसमं ।
 इहेव पोसह-रओ, भवाहि मणुयाहिवा । ॥४२॥
 एयमट्ठं निसामित्ता, हेअ-कारण-चोइओ ।
 तओ नमी रायरिसी, देविद इणमब्बवी ॥४३॥
 मासे मासे तु जो बालो, कुसग्गेणं तु भुंजए ।
 न सो सुअक्खाय-धम्मस्स, कलं अग्घइ सोलासि ॥४४॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।

तओ नमि रायरिसि, देविदो इणमव्ववी ॥४५॥

(९) हिरण्णं सुवण्णं मणि-भुत्त, कंसं वूसं च वाहणं ।

कोसं वड्ढावइत्ताण, तओ गच्छसि खत्तिया । ॥४६॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।

तओ नमी रायरिसी, देविदं इणमव्ववी ॥४७॥

सुवण्ण-रुप्पस्स उ पव्वया भवे,

सिया वु केलास-समा असंखया ।

नरस्स लुद्धस्स न तेहि किञ्चि,

इच्छा वु आगास-समा अणत्तिया ॥४८॥

पुढवी साली जवा चेव, हिरण्णं पसुभिस्सह ।

पडिपुण्णं नालमेगस्स, इइ विज्जा तव चरे ॥४९॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।

तओ नमि रायरिसि, देविदो इणमव्ववी ॥५०॥

(१०) अच्छेरयमव्वभुदए, भोए चयसि पत्थिवा ।

असंते कामे पत्थेसि, संकप्पेण विह्वसि ॥५१॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।

तओ नमी रायरिसी, देविदं इणमव्ववी ॥५२॥

सत्तलं कामा विसं कामा, कामा आसी-विसोवमा ।

कामे पत्थेमाणा, अकामा जंति दुग्गाइं ॥५३॥

अहे वयइ कोहेण, माणेण अहमा गई।
 माया गइ पडिग्याओ, लोहाओ दुहाओ भयं ॥५४॥
 अवउज्झिऊण माहणरूव, विउच्चिऊण इदत्त।
 वदइ अभित्थुणतो, इमाहिं महराहिं वग्गूहिं ॥५५॥
 अहो ते निज्जिओ कोहो, अहो माणो पराजिओ।
 अहो ते निरक्किया माया, अहो लोहो वसीकओ ॥५६॥
 अहो ते अज्जव साहु। अहो ते साहु। मद्दवं।
 अहो ते उत्तमा खती, अहो ते मुत्ति उत्तमा ॥५७॥
 इह सि उत्तमो भंते, पेच्चा होहिसि उत्तमो।
 लोगुत्तमुत्तमं ठाण, सिद्धिं गच्छसि नीरओ ॥५८॥
 एवं अभित्थुणतो, रायरिसि उत्तमाए सद्धाए।
 पयाहिणं करंतो, पुणो पुणो वदए सक्को ॥५९॥
 तो वदिऊण पाए, चक्क-कुस-लक्खणे मुणिवरस्स।
 आगासेणुप्पइओ, ललिय-चवल-कुंडल-तिरीढी ॥६०॥
 नमी नमेइ अप्पाण, सक्ख सक्केण चोइओ।
 चइऊण गेह वइदेही, सामण्णे पज्जुवट्ठिओ ॥६१॥
 एवं करंति सबुद्धा, - पडिया पवियक्खणा।
 विणियट्ठंति भोगेसु, जहा से नमी रायरिसि ॥६२॥
 ॥ ति बेमि ॥

अहं दुमपत्तय नामं दसममज्झयणं

‘दुमपत्तए पंडुरए जहा,’
निवडइ राइगणाण अच्चए ।
एव मणुयाण जीवियं,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥ १ ॥

कुस्सगो जह ओसविट्ठए’
‘थोवं चिट्ठइ लंबमाणाए ।
एव मणुयाण जीविय,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥ २ ॥

इइ इत्तरियम्मि भाउए,
जीवियए बहुपच्चवायए ।
विट्ठणाहि रयं पुरे कड,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥ ३ ॥

दुल्लहे खलु भाणुसे भवे,
चिरकालेण वि सव्वपाणिणं ।
गाढा य विवाग कम्मणो,
समय गोयम ! मा पमायए ॥ ४ ॥

पुढविक्कायमइगओ, उक्कोस जीवो उ सबसे ।
काल सखाईयं, समयं गोयम ! मा पमायए ॥ ५ ॥

आउक्कायमइगओ, उक्कोस जीवो उ संवसे ।
 कालं संखाईयं, समयं गोयम ! मा पमायए ॥ ६ ॥
 तेउक्कायमइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
 कालं संखाईयं, समयं गोयम ! मा पमायए ॥ ७ ॥
 वाउक्कायमइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
 कालं संखाईयं, समय गोयम ! मा पमायए ॥ ८ ॥
 वणस्सइक्कायमइगओ, उक्कोस जीवो उ संवसे ।
 कालमणतदुरतय, समय गोयम ! मा पमायए ॥ ९ ॥
 वेइदियकायमइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
 कालं संखिज्जसन्नियं, समय गोयम ! मा पमायए ॥ १० ॥
 तेइदियकायमइगओ, उक्कोस जीवो उ संवसे ।
 कालं संखिज्जसन्नियं, समय गोयम ! मा पमायए ॥ ११ ॥
 चउरिदियकायमइगओ, उक्कोस जीवो उ संवसे ।
 कालं संखिज्जसन्नियं, समयं गोयम ! मा पमायए ॥ १२ ॥
 पंचिदियकायमइगओ, उक्कोस जीवो उ संवसे ।
 सत्त-दु-भव-गहणे, समय गोयम ! मा पमायए ॥ १३ ॥
 देवे नेरइए य अइगओ, उक्कोस जीवो उ संवसे ।
 इक्के-क्क-भवग्गहणे, समयं गोयम ! मा पमायए ॥ १४ ॥
 एवं भवसंसारे, संसरई सुहासुहेहि कम्मेहि ।
 जीवो पमायबहुलो, समय गोयम ! मा पमायए ॥ १५ ॥

लद्धूण वि माणुसत्तणं,
 आरिअत्त पुणरवि दुल्लहं ।
 वहवे दसुया मिलवडुया,
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥१६॥

लद्धूण वि आरियत्तणं,
 अहीण-पंचेदियया हु दुल्लहा ।
 विगल्लियया हु दीसई,
 समय गोयम ! मा पमायए ॥१७॥

अहीण-पंचेदियत्तं पि से लहे,
 उत्तम-धम्म-सुई हु दुल्लहा ।
 कुतित्थि-निसेवए जणे,
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥१८॥

लद्धूण वि उत्तमं सुई,
 सद्दहणा पुणरावि दुल्लहा ।
 मिच्छत्त-निसेवए जणे,
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥१९॥

धम्मं पि हु सद्दहतया,
 दुल्लहया काएण फासया ।
 इह-काम-गुणेहि मुच्छिया,
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥२०॥

परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पंडुरया हवंति ते ।
से सोयबले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए ॥२१॥

परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पंडुरया हवंति ते ।
से चक्खुबले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए ॥२२॥

परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पंडुरया हवंति ते
से घाणबले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए ॥२३॥

परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पंडुरया हवंति ते ।
से जिम्भबले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए ॥२४॥

परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पंडुरया हवंति ते ।
से फासबले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए ॥२५॥

परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पंडुरया हवंति ते ।
से सच्चबले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए ॥२६॥

अरई गंड विसूइया,
आयंका विविहा फुसंति ते ।
विहडइ विद्धसइ ते सरीरयं,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥२७॥

वोञ्छइ सिणेहमप्पणो,
'कुमुयं सारइयं व पाणियं' ।
से सच्चसिणेहवज्जिए,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥२८॥

चिच्छाण धणं च भारियं,
 पव्वइओहिसि भणगारियं ।
 मा वंतं पुणो वि आविए,
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥२९॥

अवउल्लिय मित्त-वंधवं,
 विउलं चैव धणोहसंचयं ।
 मा तं विइयं गवेसए,
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥३०॥

न ह ज्जिणे अज्ज दिस्सई,
 वहुमए दिस्सइ मग्ग-वेसिए ।
 संपइ नेयाउए पहे,
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥३१॥

‘अवसोहिय कंटगापहं,’
 ओइण्णो सि पहं महालयं ।
 गच्छसि मग्ग विसोहिया,
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥३२॥

‘अवले जह भार-वाहए,’
 मा मग्गे विसमेज्जगाहिया ।
 पच्छा पच्छाणुतावए,
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥३३॥

‘तिण्णो हु सि अण्णवं मह’,
 किं पुण चिट्ठसि तीरमागओ ।
 अभितुर पार गमित्तए,
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥३४॥

अकलेवरसेणि उस्सिया,
 सिट्ठि गोयम ! लोय गच्छसि ।
 खेमं च सिव अणुत्तर,
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥३५॥

बुद्धे परिनिव्वुडे चरे,
 गामगए नगरे व सज्जए ।
 संतिमगं च बूहए,
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥३६॥

बुद्धस्स निसम्म भासिय,
 सुकहिय मट्ठप ओवसोहिय ।
 राग दोस चं छिदिया,
 सिद्धिगइ गए गोयमे ॥३७॥

॥ त्ति वेमि ॥

अह बहुस्सुयपुज्जा-णामं एगारसमज्झयणं

सजोगा विप्यमुक्कस्स, अणगारस्स भिक्खुणो ।
आयारं पाउकरिस्सामि, आणुपुच्चि सुणेह मे ॥ १ ॥

जे यावि होइ निव्विज्जे, थद्वे लुद्धे अणिग्गहे ।
अभिक्खणं उत्तवइ 'अविणीय' अवहुस्सुए ॥ २ ॥

अह पंचहिं ठाणेहिं, जेहिं सिक्खा न लब्भइ ।
थम्मा^१ कोहा^२ पमाएण,^३ रोगेणा^४ लस्सएण^५ य ॥ ३ ॥

अह ऋद्धिं ठाणेहिं, 'सिक्खासीलि' ति वुच्चइ ।
अहुस्सिरे^१ सया बंते,^२ न य मम्ममुदाहरे^३ ॥ ४ ॥

नासीले^४ न विसीले,^५ न सिया अइलोलुए^६ ।
अकोहणे^७ सच्चरए,^८ 'सिक्खासीलि' ति वुच्चइ ॥ ५ ॥

अह चोइसहिं ठाणेहिं, वट्टमाणे उ सजए ।
अविणीए वुच्चई सो उ, निव्वानं च न गच्छई ॥ ६ ॥

अभिक्खण कोही हवइ,^१ पवंधं च पकुच्चई^२ ।
मेत्तिज्जमाणो वमई,^३ सुय लद्धूण मज्जई^४ ॥ ७ ॥

अवि पावपरिक्खेवी,^५ अविमित्तसु कुप्पइ^६ ।
सुप्पियत्तावि मित्तस्स, रहे मात्तइ पावयं^७ ॥ ८ ॥

पइण्णवाइ^६ बुहिले,^९ थढे,^{१०} लुढे^{११} अणिग्गहे^{१२} ।
असंविभागी^{१३} अवियत्ते,^{१४} 'अविणीए' ति वुच्चई ॥ ९ ॥

अह पन्नरसहि ठाणेहि 'सुविणीए' ति वुच्चई ।
नीयावित्ती^१ अचवले,^२ अमाई^३ अकुअहले^४ ॥ १० ॥

अप्पं च अहिक्खिचई,^५ पबंघं च न कुव्वई^६ ।
मेत्तिज्जमाणे मयइ,^७ सुयं लढं न मज्जई^८ ॥ ११ ॥

न य पावपरिक्खेवी,^९ न य मित्तेसु कुप्पई^{१०} ।
अप्पियस्सा वि मित्तस्स, रहे कल्लाण भासई^{११} ॥ १२ ॥

कलह-इमरवज्जिए,^{१२} बुढे अभिजाइए^{१३} ।
हिरिमं पडिसंलीणे,^{१४} 'सुविणीए' ति, वुच्चई ॥ १३ ॥

वसे गुरुकुले निच्च, जोगव उवहाणवं ।
पियंकरे पियंवाई, से सिक्खं लढुमरिहई ॥ १४ ॥

(१) जहा संखंमि पय, निहिय बुहओ वि विरायई ।
एवं बहुस्सुए भिक्खू, घम्मो कित्ती तहा सुयं ॥ १५ ॥

(२) जहा से कंबोयाणं, आइण्णे कथए सिया ।
आसे जवेण पवरे, एवं हवई बहुस्सुए ॥ १६ ॥

(३) जहाइण्णसमारुढे, सूरे दढपरक्कमे ।
उभओ नदिघोसेणं, एवं हवई बहुस्सुए ॥ १७ ॥

(४) जहा करेणुपरिकिण्णे, कुंजरे सट्ठिहायणे ।
बलवंते अप्पडिहए, एव हवई बहुस्सुए ॥ १८ ॥

- (५) जहा से तिकखसिगे, जायखंघे बिरायई ।
बसहे जूहाहिवई, एव हवइ बहुस्तुए ॥१९॥
- (६) जहा से तिकखदाहे, उदमो बुप्पहंसए ।
सीहे मियाण पवरे, एवं हवइ बहुस्तुए ॥२०॥
- (७) जहा से बासुदेवे, संख-बक्क-गयाधरे ।
अप्पडिहय-बले जोहे, एवं हवइ बहुस्तुए ॥२१॥
- (८) जहा से चाउरते, बक्कवट्टी-महिडिहए ।
चौहस-रयणाहिवई, एवं हवइ बहुस्तुए ॥२२॥
- (९) जहा से सहस्सखे, बज्जपाणी पुरंदरे ।
सक्के देवाहिवई, एवं हवइ बहुस्तुए ॥२३॥
- (१०) जहा से तिमिरविद्धसे, जन्जिट्टे दिवाधरे ।
जलते इव तेएण एवं हवइ बहुस्तुए ॥२४॥
- (११) जहा से उडुवई बवे, नक्खत्त-परिवारिए ।
पडिपुण्णे पुण्णमासिए, एव हवइ बहुस्तुए ॥२५॥
- (१२) जहा से सामाइयाण, कोट्टाणारे सुरक्खिए ।
नाणा-यत्त-पडिपुण्णे, एवं हवइ बहुस्तुए ॥२६॥
- (१३) जहा सा बुमाण पवरा, जंबू नाम सुवंसणा ।
अणाडियस्स देवस्स, एवं हवइ बहुस्तुए ॥२७॥
- (१४) जहा सा नईण पवरा, सलिला सागरंगमा ।
सीया नीलवंतपवहा, एवं हवइ बहुस्तुए ॥२८॥

(१५) जहा से नगाण पवरे, सुमह मंदरे गिरी ।
नाणोसहि-पज्जलिए, एव हवइ बहुस्सुए ॥२९॥

(१६) जहा से सयंभुरमणे, उदही अक्खओदए ।
नाणा-रयण-पडिपुण्णे, एवं हवइ बहुस्सुए ॥३०॥

समुद्द-गंभीरसमा दुरासया,
अचक्किया केणइ दुप्पहंसया ।
सुयस्स पुण्णा विउलस्स ताइणी,
खवित्तु कम्मं गइमुत्तमं गथा ॥३१॥

तम्हा सुयमहिद्विज्जा, उत्तमद्वगवेसए ।
जेणप्पाण पर चेव, सिद्धि संपाडणेज्जासि ॥३२॥
॥ ति बेमि ॥

अह हरिएसिज्जं नामं दुवालसममज्झयणं

सोवागकुलसंभूओ, गुणुत्तरघरो मुणी ।]
"हरिएसवलो" नाम, आसी भिक्खू जिइदिओ ॥ १ ॥
इरि-एसण-भासाए, उच्चारसमिईसु यं ।
जओ आयाण-निवखेवे, सज्जओ सु-समाहिओ ॥ २ ॥
मणगुत्तो-वयगुत्तो, कायगुत्तो जिइदिओ ।
भिक्खट्ठा बंभइज्जम्मि, जन्नवाडमुवद्विओ ॥ ३ ॥

त पासिऊणमेज्जंतं, तवेण परिसोसिय ।
 पंतोवहि-उवगरणं, उवहसति अणारिया ॥ ४ ॥
 जाइमय-पडिथद्धा, हिसगा अजिइंदिया ।
 अबंमचारिणो वाता, इमं वयणमव्ववो ॥ ५ ॥

ब्राह्मणा :-

कयरे आगच्छइ दित्तरुवे ?
 काले विकराले फोक्कनासे ।
 ओमचेत्तए पसुपिसायभूए,
 संकरदूसं परिहरिय कठे ॥ ६ ॥
 कयरे तुमं इय अदसणिज्जे ?
 काए व आसा इहमागओसि ?
 ओम-चेत्तया पंसु-पीसायभूया,
 गच्छक्खलाहि किमिहं ठिओसि ॥ ७ ॥
 जक्खे तहिं तिडुय रुक्खवासी,
 अणुकंपओ तस्स महामुणिस्स ।
 पच्छायइत्ता नियग सरीरं,
 इमाइ वयणाइभुदाहरित्था ॥ ८ ॥

यक्ष :-

समणो अहं संजओ वंनयारी,
 विरओ धण-पयण-परिग्गहाओ ।

परप्पवित्तस्स उ भिक्खकाले,
अन्नस्स अट्ठा इहमागओमि ॥ ९ ॥

वियरिज्जइ खज्जइ भुज्जइ य,
अन्न पभूय भवयाणमेयं ।
जाणाहि मे जायण-जीविणु त्ति,
सेसावसेसं लहउ तवस्सी ॥ १० ॥

ब्राह्मणा :-

उवक्खइ भोयण माहणाण,
अत्तट्ठियं सिद्धमिहेगपक्खं ।
न उ वयं एरिसमन्नपाणं,
वाहामु तुज्झं किमिहं ठिओ सि ? ॥ ११ ॥

यक्ष :-

"थलेसु बीयाइ ववन्ति कासगा,"
तहेव निज्जेसु य आससाए ।
एयाए सद्धाए दलाह मज्झ,
आराहए पुण्णमिणं खु खित्तं ॥ १२ ॥

ब्राह्मणा -

खेत्ताणि अम्हं बिइयाणि लोए,
जहिं पकिण्णा विरुहन्ति पुण्णा ।

जे माहणा जाइ-विज्जोववेया,
ताइं तु खेत्ताइं सुपेसलाइ ॥१३॥

यक्ष :-

कोहो य माणो य वहो य जेमि,
मोस अदत्त च परिग्गह च ।
ते माहणा जाइ-विज्जा-विहीणा,
ताइं तु खेत्ताइं सुपावयाइं ॥१४॥
तुम्भेत्य भो भारधरा गिराण,
अद्वं न जाणाह अहिज्ज वेए ।
उच्चावयाइ मुणियो चरति,
ताइ तु खेत्ताइ सुपेसलाइ ॥१५॥

ब्राह्मण :-

अज्झावयाण पडिकूलभासी,
पभाससे किं नु सगासि अम्ह ?
अवि एयं विणस्सज्ज अन्नपाणं,
न य णं दाहामु तुमं नियंठा ॥१६॥

यक्ष :-

समिईहि मज्झं सुसमाहियस्स,
गुत्तीही गुत्तस्स जिइदियस्स ।
जइ मे न दाहित्य अहेसणिज्जं,
किमज्ज जत्ताण सहित्य साह ॥१७॥

सोमदेव :-

के इत्थ खत्ता उवजोडया वा,
अज्झावया वा सह खंडिएहि ।
एय खु दढेण फलएण हंता,
कंठमि घेत्तूण खलेज्ज जो णं ॥१८॥

अज्झावयाण वयण सुणेत्ता,
उद्धाडया तत्थ बहू कुमारा ।
दंढेहि वित्तेहि कसेहि चेव,
समागया त इंसि तालयंति ॥१९॥

भद्रा .-

रत्तो तहि 'कोसलियस्स' धूया,
'भदत्ति' नामेण अणिदिद्यंती ।
तं पासिया सजय-हम्ममाणं,
कुद्धे कुमारे परिनिज्ववेइ ॥२०॥

देवाभिओगेण निओइएणं,
दिस्सामु रत्ता मणसा न ज्ञाया ।
नरिंद-देविंद-मिबंदिएणं,
जेणम्हि वंता इसिणा स एसो ॥२१॥

एसो वु सो उग्गतवो महप्पा,
जिइंविओ संजओ बंभयारी ।

जो मे तया नेच्छइ दिज्जमाणि,
पिउणा सयं कोसलिएण रत्ना ॥२२॥

महाजसो एस महाणुभांगो,
घोरव्वओ घोरपरक्कमो य ।
मा एयं हीलेह महीलणिज्ज,
मा सव्वे तेएण भे निद्देहज्जा ॥२३॥

एयाइं तीसे वयणाइं सोच्चा,
पत्तीइ भद्दाइ सुभासियाइ ।
इ सिस्स वेयाव डियट्टया ए,
जक्खा कुमारे विणिवारयंति ॥२४॥

ते घोररुवा टिय अत्तलिक्खे,
असुरा तहिं त जणं तालयति ।
ते भिन्नदेहे रुहिर वसते,
पासित्तु भद्दा इणमाहु भुज्जो ॥२५॥

गिरिं नहेहिं खणह, अयं दंतेहिं खायह ।
जायतेयं पाएहि हणह, जे भिक्खु अवमन्नह ॥२६॥

आसीविसो उगतवो महेसी,
घोरव्वओ घोरपरक्कमो य ।
'अगणि व पक्खंद पयंगसेणा,'
जे भिक्खुयं भत्तकाले वहेह ॥२७॥

सीसेण एयं सरण उवेह,
समागया सव्वजणेण तुग्गे ।
जइ इच्छह जीवियं वा धणं वा,
लोगंपि एसो कुविओ ढहेज्जा ॥२८॥

अवहेडिय-पिट्ठि-सउत्तमगे,
पसारिया बाहु अकम्मचेद्ढे ।
निग्गेरियच्छे रुहिरं वमंते,
उदंमुहे निगय-जीह-नेत्ते ॥२९॥

ते पासिया खडियकट्ठभूए,
विमणो विसण्णो अह माहणो सो ।
इसि पसाएइ सभारियाओ,
हीलं च निद च खमाह भते ! ॥३०॥

सोमदेव :-

बालेहिं मूढेहिं अयाणएहिं,
ज हीलिया तस्स खमाह भते !
महप्पसाया इसिणो हवति,
न हु मुणी कोवपरा हवति ॥३१॥

मुनि :-

पुत्विं च इण्ह च अणागयं च,
मणप्पओसो न मे अत्थि कोइ ।

जक्खा हु वेयावडियं करेति,
तम्हा हु एए निहया कुमारा ॥३२॥

सोमवेव :-

अत्यं च धम्म च वियाणभाणा,
तुव्वमे न वि कुप्पह भूइपप्पा ।
तुव्वमं तु पाए सरणं उवेमो,
समागया सव्वजणेण अम्हे ॥३३॥

अच्चेमु ते महाभाग !, न ते किञ्चन अच्चिमो ।
भुंजाहि सालिमं कूर, नाणा-चंजण-सज्जयं ॥३४॥

इमं च मे अत्थि पभूयमन्न,
त भुंजसु अम्ह अणुग्गहट्ठा ।
वाढं-ति-पडिच्छइ भत्तपाणं,
मासस्स ऊ पारणए महप्पा ॥३५॥

त हि य ग धो दय-पु फ्फ वा सं,
दिब्बा तहि वसुहारा य वुट्ठा ।
पहयाओ वुंठुहीओ सुरेहि,
आगासे अहो दाणं च घुट्ठं ॥३६॥

माहाणा :-

सक्खं छु दीसइ तवोविसेसो,
न दीसइ जाइविसेस कोई ।

सो वा ग पु त्तं हरि ए स साहुं,
जस्सेरिस्सा इडिढ महाणुभागा ॥३७॥

मुनि :-

कि माहणा ! जोइसमारभंता,
उदएण सोहि बहिया विमग्गहा ?
जं मग्गहा बाहिरिय विसोहि,
न त सुविट्ठ कुसला वयंति ॥३८॥
कुसं च जूव तणकट्टमणि,
सायं च पायं उदग फुसंता ।
पाणाइ भूयाइ विहेडयंता,
भुज्जो वि मंदा ! पगरेह पाव ॥३९॥

सोमदेवादय :-

कह चरे मिक्खू ? वय जयामो,
पावाइ कम्माइ पणुल्लयामो ।
अक्खाहि णे संजय ! जक्खपूइया,
कह सुजट्ठ कुसला वयंति ? ॥४०॥

मुनि :-

छ ज्जी व का ए अ स मा र भ ता,
मोसं अबत्तं च असेवमाणा ।
परिग्गहं इत्थिओ माणमाय,
एवं परिस्साय चरंति दत्ता ॥४१॥

सुसंचुडा पचहि सवरेहि,
 इह जीवियं अणवकंखमाणा ।
 वो सट्ठ काया ? सुइ च त्त देहा,
 महाजयं जयइ जन्नसिद्ध ॥४२॥

सोमदेवादयः—

के ते जोई ? के च ते जोइठाणो ?
 का ते सुया ? किं च ते कारिसंगं ?
 एहा य ते कयरा सत्ति भिक्खु ?
 कयरेण होमेण हुणासि जोइ ? ॥४३॥

मुनि .—

तवो जोई जीवो जोइठाण,
 जोगा सुया सरीरं कारिसंगं ।
 कम्मेहा संजमजोग सत्ती,
 होमं हुणामि इसिण पसत्थ ॥४४॥

सोमदेवादयः—

के ते हरए के य ते संतितित्थे ?
 कहिं सिणाओ व रयं जहासि ?
 भाइक्ख ने संजय ! जक्खपूइया,
 इच्छामो नावं भवओ सगासे ॥४५॥

मुनि :-

धम्मे हराए बंभे संतितित्थे,
 अणावित्ते अत्तपसन्नत्ते से ।
 जहिंसि ण्हाओ विमलो विसुद्धो,
 सुसीइभूओ पजहामि दोसं ॥४६॥
 एयं सिणाण कुसलेहि विट्ठं,
 महासिणाणं इसिणं पसत्थं ।
 जहिंसि ण्हाया विमला विसुद्धा,
 महारिसी उत्तमं ठाणं पत्ता ॥४७॥
 ॥ त्ति वेमि ॥

अह चित्तसंभूइज्ज नाम तेरसममज्झयण

जाईपराजिओ खलु, कासि नियाणं तु 'हत्थिणपुरम्मि' ।
 'चुलणीए बंभदत्तो' उववत्तो 'पडमगुम्माओ' ॥१॥
 'कंपिल्ले' संभूओ, 'चित्तो' पुण जाओ 'पुरिमतालम्मि' ।
 सेट्ठिकुलम्मि विसाले, धम्मं सोळण पेब्बइओ ॥२॥
 कंपिलम्मि य नयरे, समागया दो वि चित्तसंभूया ।
 सुह-बुक्ख-फलविवागं, कहँति ते एकमेवकस्स ॥३॥

धक्कवट्ठी महिड्ढीओ, वंभदत्तो महायसो ।
 भायरं बहुमाणेणं, इमं वयणमवब्बी ॥ ४ ॥
 आसीमु भायरा दोवि, अन्नमन्नवसाणुगा ।
 अन्नमन्नमणुरत्ता, अन्नमन्न-हिएसिणो ॥ ५ ॥
 दासा "दसण्णे" आसी, मिया "कालिजरे नगे" ।
 हसा 'मयगतीराए', सोवागा 'कासिभूमिए' ॥ ६ ॥
 देवा य देवलोगम्मि, आसि अम्हे महिड्ढिया ।
 इमा णो छट्ठिया जाई, अन्नमन्नेण जा विणा ॥ ७ ॥

चित्तमुनि :-

कम्मा नियाणपयडा, तुमे राय ! विचित्तिया ।
 तेसि फलविवागेण, बिप्पओगमुवागया ॥ ८ ॥

ब्रह्मदत्त .-

सत्त्व-सोय-प्पगडा, कम्मा मए पुरा कडा ।
 ते अज्ज परिभुंजामो, किं नु चित्तेवि से तहा ? ॥ ९ ॥

चित्तमुनि -

सत्त्वं सुचिण्णं सफलं नराणं,
 कडाण कम्माण न मोक्ख अत्थि ।
 अत्थेहि कामेहि य उत्तमेहि,
 आया 'मम' पुण्णफलोववेए ॥ १० ॥

जाणाहि संभूय ! महाणुभागं,
 महिद्धियं पुण्णफलोववेयं ।
 चित्तं पि जाणाहि तहेव राय !
 इद्धी जुई तस्स वि य प्पभूया ॥११॥
 म ह त्थ रु वा व य ण प्प भू या,
 गाहाणुगीया नरसंघमज्जे ।
 जं भिक्खुणो सीलगुणोववेया,
 इहज्जयते समणो मि जाओ ॥१२॥

ब्रह्मवत्त :-

उच्चोयए मह कक्के य बभे,
 पवेइया आवस्सहा य रम्मा ।
 इमं गिह चित्तधणप्पभूय,
 पप्साहि पवालगुणोववेयं ॥१३॥
 नट्टेहि गीएहि य वाइएहि,
 नारीजणाहि परिवारयंतो ।
 भुजाहि भोगाइ इमाइ भिक्खू ।
 मम रोयई पव्वज्जा हु दुक्खं ॥१४॥

चित्तमुनि :-

त पुव्वनेहेण कयाणुराग,
 नराहिं व कामगुणेषु पिद्धं ।

घम्मस्सिओ तस्स हियाणुपेही,
चित्तो इम वयणमुदाहरित्था ॥१५॥
सव्वं विलवियं गीय, सव्वं नट्ट विडविय ।
सव्वे आभरणा भारा, सव्वे कामा दुहावहा ॥१६॥

बा ला मि रा मे सु दु हा व हे सु,
न तं सुहं कामगुणेषु रायं !
वि र त्त का मा ण तवोघणाण,
जं मिक्खुण सीलगुणे रयाणं ॥१७॥
नरिद ! जाई अहमा नराणं,
सोवागजाई दुहओ गयाण ।
जहिं वय सव्वजणस्स वेसा,
व सी य सो वा ग नि वे स णे सु ॥१८॥

तोसे अ जाईइ उ पावियाए,
वुच्छामु सोवागनिवेसणेसु ।
सव्वस्स लोगस्स दुगच्छणिज्जा,
इहं तु कम्माइं पुरे कडाई ॥१९॥

सो दाणिस्स राय । महाणुभागो,
महिइदओ पुण्णफलोववेओ ।
चइत्तु भोगाइं असासयाइं,
आदाणहेउ अभिणिक्खमाहि ॥२०॥

इह जीविए राय ! असासयम्मि,
 धणियं तु पुण्णाइ अकुव्वमाणो ।
 से सोयइ मच्चुमुहोवणीए,
 धम्मं अकाळण परसि लोए ॥२१॥

‘जहेह सीहो व मिय गहाय’,
 मच्चू नरं नेइ हु अंतकाले ।
 न तस्स माया व पिया व भाया,
 कालम्मि तम्मसहरा भवन्ति ॥२२॥-

न तस्स दुक्खं विभयति नाइओ,
 न मित्तवग्गा न सुया न बंधवा ।
 एक्को सय पच्चणुहोइ दुक्खं,
 कत्तारमेवं अणुजाइ कम्म ॥२३॥

चिच्चा वुप्पय च चउपयं च,
 खेत्त गिहं धणधन्नं च सव्व ।
 सकम्मबीओ अवसो पयाइ,
 पर भव सुंदरपावग वा ॥२४॥

त एक्का तुच्छसरीरं से,
 चिईगय दहिय उ पावगेणं ।
 भज्जा य पुत्तावि य नायओ य,
 दायारमन्नं अणुसंकमन्ति ॥२५॥

उवणिज्जई जीवियमप्पमायं,
 वण्णं जरा हरइ नरस्स रायं !
 पंचालराया ! वयणं सुणाहि,
 मा कासि कम्माइ महालयाइं ॥२६॥

ब्रह्मवत्त :-

अहं पि जाणामि जहेह साह,
 ज मे तुम साहसि वक्कमेयं ।
 भोगा इमे संगकरा हवति,
 जे दुज्जया अज्ज ? अम्हारिसेहिं ॥२७॥

हत्थिणपुरम्मि चित्ता ! दट्ठूणं नरवइं महिद्धयं ।
 कामभोगेसु गिद्धेणं, नियाणमसुहं कडं ॥२८॥
 तस्स मे अप्पडिकतस्स, इमं एयारिसं फलं ।
 जाणमाणो वि जं धम्मं, कामभोगेसु मुच्छिओ ॥२९॥

“नागो जहा” पंकजलावसत्तो,
 दट्ठु यत्तं नाभिसमेइ तीरं ।
 एवं वयं कामभुणेसु गिद्धा,
 न भिक्खुणो मग्गमणुज्वयामो ॥३०॥

चित्तमुनि :-

अच्चेइ कालो तूरंति राइओ,
 न यावि भोगा पुरिसाण निच्चा ।

उविच्च भोगा पुरिस जयति,
दुमं जहा खीणफल व पक्खी ॥३१॥

जई सि भोगे चइउ असत्तो,
अज्जाइ कम्माइ करेहि राय !
धम्मे ठिओ सब्व-पयाणुकंपी,
तो होहिसि देवो इओ विउब्बी ॥३२॥

न तुज्झ भोगे चइऊण बुद्धी,
गिद्धोसि आरभ-परिगहेसु ।
मोह कओ एत्तिउ विप्पलावो,
गच्छामि राय ! आमंतिओसि ॥३३॥

पंचालराया वि य बभदत्तो,
साहुस्स तस्स वयण अकाउं ।
अणुत्तरे भुंजिय कामभोगे,
अणुत्तरे सो नरए पविट्ठो ॥३४॥

चित्तो वि कामेहि विरत्तकामो,
उदग्ग च रि त्त त वो महेसी ।
अणुत्तरं सज्जम पालइत्ता,
अणुत्तरं सिद्धिगइ गओ ॥३५॥
॥ त्ति जेमि ॥

अहं उसुयारिज्ज नामं चउदसममज्झयणं

देवा भवित्ताण पुरे भवस्मि,
केइ चुया एगविमाणवासी ।
पुरे पुराणे 'उसुयारनामे',
खाए समिद्धे सुरलोगरस्मे ॥ १ ॥

स कम्म से से ण पु रा क ए णं,
कुलेसुदग्गोसु य ते पसुया ।
निव्विण्ण-संसारभया जहाय,
जिण्णदमगं सरणं पवन्ना ॥ २ ॥

पुमत्तमागम्म कुमार दो वि,
पुरोहिओ तस्स जसा य पत्ती ।
विसालकित्ती य तहे "सुयारो",
रायत्थ देवी "कमलावाई" य ॥ ३ ॥

जाई-जरा-मच्चु-भयाभिभूया,
वहिं विहारामिनिविट्ठ-चित्ता ।
संसार-चक्कस्स विमोक्खणट्ठा,
दट्ठण ते कामगुणे विरता ॥ ४ ॥

पियपुत्तगा दुस्सि वि माहणस्स,
सकम्मसीलस्स पुरोहिप्पस्स ।

सरित्तु पोराणिय तत्थ जाइं,
तहा सुचिण्णं तवसंजमं च ॥ ५ ॥

कुमारी :-

ते कामभोगेसु असज्जमाणा,
माणुस्सएसु जे यावि विज्वा ।
मोक्खाभिकखी अभिजायसड्ढा,
ताय उवागम्म इम उदाहु ॥ ६ ॥

असासयं दट्ठु इमं विहारं,
बहुमंतरायं न य दीहमाउं ।
तम्हा गिहंसि न रइं सहामो,
आमंतयामो चरिस्सासु मोणं ॥ ७ ॥

भृगु :-

अह तायगो तत्थ मुणीण तेंसि,
तवस्स वाघायकरं वयासी ।
इमं वयं वेयविओ वयंति,
जहा न होई असुयाण लोगो ॥ ८ ॥
अहिज्ज वेए परिविस्स विप्पे,
पुत्ते परिट्ठप्प गिहंसि जाया ! ।
भोच्चा ण भोए सह इत्थियाहिं,
आरण्णा होइ मुणी पसत्था ॥ ९ ॥

कुमारौ :-

मोहाणिला आयगुणिधणेण,
 मोहाणिला पज्जलणाहिणं ।
 लालप्पमाण प रि त प्प मा णं,
 लालप्पमाण बहुहा बहुं च ॥१०॥
 पुरोहिंयं तं कमसोऽणुणंतं,
 निमंतयंतं च सुए धणेण ।
 जहक्कमं कामगुणेहि चेव,
 कुमारगा ते पसमिक्ख वक्कं ॥११॥
 वेया अहिया न भवंति ताण,
 भुत्ता दिया निति तम तमेण ।
 जाया य पुत्ता न हवति ताणं,
 को णाम ते अणुमझेज्ज एयं ॥१२॥
 खणमित्तसुक्खा बहुकालदुक्खा,
 पगामदुक्खा अणिगामसुक्खा ।
 संसार-मोक्खस्स विपक्खभूया,
 खाणी अणत्याण उ कामभोगा ॥१३॥
 प रि व्व यं ते अणि य त्त का मे,
 अहो य रामो परितप्पमाणे ।
 अ स प्प म स्ते ध ण मे स मा णे,
 पप्पोति मच्च पुरिसे जरं च ॥१४॥

इमं च मे अत्थि इमं च नत्थि,
 इमं च मे किञ्च इमं अकिञ्चं ।
 त एवमेवं लालप्पमा ण,
 हरा हरति त्ति कह पमाओ ॥१५॥

भृगु :-

धण पभूय सह इत्थियाहि,
 सयणा तहा कामगुणा पगामा ।
 तव कए तप्पइ जस्स लोगो,
 तं सब्बसाहीणमिहेव तुब्भं ॥१६॥

कुमारो :-

धणेण कि धम्मधुराहिगारे,
 सयणेण वा कामगुणेहि चेव ।
 समणा भविस्सामु गुणोहधारी,
 बहि विहारा अभिगम्म भिक्ख ॥१७॥

भृगु :-

‘जहा य अग्गी अरणी असंतो’,
 ‘खीरे धयं तेल्लमहातिलेसु ।’
 एमेव जाया सरीरंसि सत्ता,
 संमुच्छइ नास्स नावचिट्ठे ॥१८॥

कुमारी -

न इंदियगोळा अमुत्तभावा,
 अमुत्तभावा वि य होइ निच्चो ।
 अज्जात्थहेउं निययस्स वंधो,
 संसारहेउं च वयति वंधं ॥१९॥
 जहा वय घम्ममजाणमाणा,
 पाव पुरा कम्ममकासि मोहा ।
 ओरज्जाभाणा परिरक्खियंता,
 तं नेव मुज्जो वि समायरामो ॥२०॥

अब्भाहयम्मि लोगम्मि, सब्बओ परिवारिण्ण ।
 अमोहाहि पडंतीहि, गिहसि न रइं लभे ॥२१॥

भृगु:-

केण अब्भाहओ लोगो ? केण वा परिवारिओ ?
 का वा अमोहा वुत्ता ? जाया चिंतावरो हुमि ॥२२॥

कुमारी -

मच्चुणाऽब्भाहओ लोगो, जराए परिवारिओ ।
 अमोहा रयणी वुत्ता, एवं ताय विजाणह ॥२३॥
 जा जा वच्चइ रयणी, न सा पडिनियत्तइ ।
 अहम्मं कुणमाणस्स, अफला जंति राइओ ॥२४॥

जा जा वच्चइ रयणी, ना सा पडिनियत्तइ ।
धम्मं च कुणमाणस्स, सफला जंति राइओ ॥२५॥

भृगुः—

एगओ सवसित्ताण, दुहओ सम्मतसंजुया ।
पच्छा जाय ! गमिस्सामो, भिक्खमाणा कुले कुले ॥२६॥

कुमारोः—

जस्सत्थि मच्चुणा सक्खं, जस्स वऽत्थि पलायणं ।
जो जाणे न मरिस्सामि, सो हु कंखे सुए सिया ॥२७॥
अज्जेव धम्म पडिवज्जयामो,
जहि पवन्ना न पुण्णवामो ।
अणागय नेव य अत्थि किंची,
सद्धाखम णे विणइत्तु रागं ॥२८॥

भार्या प्रति भृगुः—

पहीणपुत्तस्स हु नत्थि वासो,
वासिट्ठि ! भिक्खायरियाइ कालो ।
“साहाहि स्खओ लहए समाहि,
छिन्नाहि साहाहि तमेव खाणु” ॥२९॥
“पखाविहूणो व्व जहेव पक्खी”,
“भिच्चव्विहूणो व्व रणे नरिंदो ।”
“विवन्नसारो वणिओ व्व पोए,”
पहीणपुत्तो मि तहा अहंपि ॥३०॥

भृगुं प्रति जसाः—

सुसंभिया कामगुणे इमे ते,
 संपिडिया अगारसम्भूया ।
 भुजाम् ता कामगुणे पगामं,
 पच्छा गमिस्साम् पहाणमगं ॥३१॥

भार्या प्रति भृगुः—

मुत्ता रसा भोइ ! जहाइ णे वओ,
 न जीवियट्ठा पजहामि भोए ।
 लामं अलामं च सुहं च दुक्खं,
 संचिक्खमाणो चरिस्सामि मोणं ॥३२॥

भृगुं प्रति जसाः—

मा ह तुमं सोयरियाण संमरे,
 "जुण्णो व हसो पडिसोत्तगामी ।"
 भुंजाहि भोगाहि मए समाणं,
 दुक्खं खु भिक्खायरियाबिहारो ॥३३॥

भार्या प्रतिभृगुः—

'जहा य भोई तणुयं भुयंगो,
 निम्भोर्याणि हिच्च पलेइ मुत्तो ।'
 एमेए जाया पयहंति भोए,
 ते हं क्हं नाणुगमिस्समेक्को ? ॥३४॥

‘छिदित्तु जालं अबलं व रोहिणा,
 मच्छा जहा कामगुणे पहाए ।’
 धोरे य सीला तवसा उदारा,
 धीरा हु भिक्खायरियं चरंति ॥३५॥

जसाया स्वगतम्:-

‘नेहेव कुंचा समइक्कामंता,
 तथाणि जालाणि दलित्तु हंसा ।’
 पलित्ति पुत्ता य पई य मज्झं,
 ते हं कहं नाणुगमिस्समेक्का ? ॥३६॥

कमलावती:-

पुरोहितं तं ससुयं सदारं,
 सोच्चाऽभिनिक्खम्म पहाय भोए ।
 कुडुंब सारं विडलुत्तमं च,
 रायं अभिक्खं समुवाय देवी ॥३७॥

वंतात्ती पुरिसो रायं । न सो होई पसंसिओ ।
 माहणेण परिच्चत्तं, धण आयाउमिच्छसि ॥३८॥
 सव्व जग जइ तुहं, सव्वं वावि धणं भवे ।
 सव्व पि ते अपज्जत्तं, नेव ताणाय तं तव ॥३९॥

सरिहिसि रायं । जया तथा वा,
 मणोरमे कामगुणे पहाय ।

एषको हृ घम्मो नरदेव ! तार्ण,
 न विज्जई अन्नमिहेह किञ्चि ॥४०॥
 “नाहं रमे पक्खिणि पंजरे वा,”
 संताणछिन्ना चरिस्सामि मोणं ।

अकिञ्चना उज्जुकडा निरामिसा,
 प रि मा हा रं म नि ष स दो सा ॥४१॥

इवग्गिणा जहा रण्णे, उज्जमाणेसु जंतुसु ।
 अस्से सत्ता पमोर्यति, रागद्वोसवसं गया” ॥४२॥

एवमेव वयं मूढा, काम—भोगेसु मुच्छिन्ना ।
 उज्जमाणं न बुज्जामो, रागद्वोसग्गिणा जगं ॥४३॥

भोगे भोच्चा वमिस्सा य, लहुमूयविहारिणो ।
 आमोयमाणा गच्छंति, ‘दिया कामकमा इव’ ॥४४॥

इमे य बद्धा फंदंति, मम हत्थउज्जमागया ।
 वयं च सत्ता कामेसु, भविस्सामो जहा इमे ॥४५॥

‘सामिसं कुललं दिस्स, बज्जमाणं निरामिसं ।’
 आमिसं सग्गमुज्जिस्सा, विहरिस्सामि निरामिसा ॥४६॥

‘गिद्वोवमा’ उ नज्जाणं, कामे संसारवद्धणे ।
 ‘उरगो सुवण्णपासेब्ब,’ संकमाणो तणुं चरे ॥४७॥

‘नागोब्ब’ बंधणं छित्ता, अप्पणो वसंहि वए ।
 एषं पत्वं महारायं, उत्सुयारि ति मे सुयं ॥४८॥

चइत्ता विउलं रज्जं, कामभोगे य दुच्चए ।
 निव्विसया निरामिसा, निझेहा निप्परिग्गहा ॥४९॥
 सम्मं धम्मं वियाणित्ता, विच्चा कामगुणे वरे ।
 तवं पगिज्झहक्खायं, घोरं घोरपरक्कमा ॥५०॥
 एवं ते कमसो बुद्धा, सब्बे धम्मपरायणा ।
 जम्म-मच्चु-भउव्विग्गा, दुक्खस्संतगवेसिणो ॥५१॥
 सासणे विगयमोहाणं, पुव्वि भावणभाविया ।
 अचिरेणेव कालेणं, दुक्खस्संतमुवागया ॥५२॥
 राया सह देवीए, माहणो य पुरोहिओ ।
 माहणी दारणा चेव, सब्बे ते परिनिव्वुडा ॥५३॥
 ॥ त्ति वेमि ॥

अह सभिव्खू नामं पंचदसममज्झयणं

मोणं चरिस्तामि सभिच्च धम्मं,
 सहिए उज्जुकडे नियाणछिन्ने ।
 संयवं जहिज्ज अकामकामे,
 अन्नायएसी परिव्वए स भिव्खू ॥१॥
 रामो वरयं चरेज्ज लाढे,
 विरए वेयवियाऽऽयरक्खिए ।
 पन्नं अभिभूय सत्त्वदंसी,
 जे कम्हि-वि न मुच्छिए स भिव्खू ॥२॥

अक्कोस-वहं विवत्तु धीरे,
 मुणी चरे लाढे निच्चमायगुत्ते ।
 अन्वगमणे असंपहिद्दुठे,
 जे कसिणं अहियासए स भिक्खू ॥३॥
 पत्तं सयणासणं भइत्ता,
 सीउण्हं विविहं च दंस-मसगं ।
 अन्वगमणे असंपहिद्दुठे,
 जे कसिणं अहियासए स भिक्खू ॥४॥
 नो सक्कियमिच्छई न पूयं,
 नो वि य वंदणं कुओ पसंसं ?
 से संजए सुव्वए तवस्सी,
 सहिए मायगवेसए स भिक्खू ॥५॥
 जेण पुण जहाइ जीवियं,
 मोहं वा कसिणं नियच्छइ ।
 नरनारि पजहे सया तवस्सी,
 न य कोऊहलं उवेइ स भिक्खू ॥६॥
 छिन्नं सर भोमं अंतलिक्वं,
 सुमिणं लक्खण-वंड-वत्थुविज्जं ।
 मंगवियारं सरस्स विजयं,
 जे विज्जाहि न जीवइ स भिक्खू ॥७॥

मंसं मूल विविहं वेज्जचितं,
 वमणचिरेयण-धूम-णेत-सिणाण ।
 आउरे सरणं तिगिञ्छिअ च,
 तं परिभाय परिव्वए स भिक्खू ॥८॥

खत्तियगण—उग—रायपुत्ता,
 माहण-भोई य विविहा य सिप्पिणो ।
 नो तेसि वयइ सिलोणपूय,
 तं परिभाय परिव्वए स भिक्खू ॥९॥

गिहिणो जो पव्वइएण बिट्ठ,
 अप्पव्वइएण व सथुया हविज्जा ।
 तेसि इहलोइय-फलट्ठा,
 जो सयव न करेइ स भिक्खू ॥१०॥

सयणासण पाण-भोयणं,
 विविहं खाइम साइमं परेसि
 अवए पडिसेहिए नियंठे,
 जे तत्थ न पजस्सइ स भिक्खू ॥११॥

जं किञ्चि माहार-पाणगं,
 विविहं खाइम-साइमं परेसि लद्धं ।

जो तं तिविहेण नाणुकपे,
मण-वय-काय-सुसंबुडे स भिक्खू ॥१२॥

आयामगं चेव जवोदणं च,
सीयं सोवीर-जवोदणं च ।
नो हीलए पिडं नौरसं तु,
पंतकुलाइं परिच्चए स भिक्खू ॥१३॥

सहा विविहा भवति लोए,
दिक्खा माणुस्सगा तहा तिरिच्छा,
मीमा मयभेरवा उराला,
जो सोच्चा न विहिज्जइ स भिक्खू ॥१४॥

बावं विविहं समिच्च लोए,
सहिए खेपाणुगए य कोवियप्पा ।
पप्पे अभिप्पय सज्जहंसी,
उवसंते अविहेडए स भिक्खू ॥१५॥

असिप्पजीवी अगिहे अमित्ते,
जिडंदिए सव्वओ विप्पमुक्के ।
अणुक्कसाई लहु-अप्प-भक्खी,
चिच्छा गिहं एगचरे स भिक्खू ॥१६॥
॥ त्ति वेमि ॥

अहं बंभचेरसमाहिठाणा णामं सोलसममज्झयणं

सुयं मे आजसं !

तेणं भगवया एवमक्खायं-

इह खलु थेरोहिं भगवन्तेहिं दस बंभचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता ।

जे भिक्खू सोच्चा निसम्म संजमबहुले, संवरबहुले, समाहिबहुले,

गुत्ते गुत्तिदिए गुत्त-बंभयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा ।

कयरे खलु ते थेरोहिं भगवन्तेहिं दस बंभचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता ?

जे भिक्खू सोच्चा निसम्म संजमबहुले, संवरबहुले, समाहिबहुले,

गुत्ते गुत्तिदिए गुत्त बंभयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा ?

इमे खलु ते थेरोहिं भगवन्तेहिं दस बंभचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता ?

जे भिक्खू सोच्चा निसम्म संजमबहुले, संवरबहुले, समाहिबहुले,

गुत्ते गुत्तिदिए गुत्त बंभयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा ।

तं जहा-

विवित्ताइं सयणासणाइं सेविज्जा से निगंथे ।

नो इत्थी-पसु-पंडग-संसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता हवइ से निगंथे ।

तं कहमिति चे-

आयरियाह-

निगंथस्स खलु इत्थि-पसु-पंडग-संसत्ताइं सयणासणाइं-

सेवमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे-

संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा-

भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा,
 दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा,
 केवलपन्नताओ वा घम्माओ भंसेज्जा ।
 तम्हा नो इत्थि-पसु-पंडग-संसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता हवइ से
 निगंथे ॥१॥

नो इत्थीणं कहं कहित्ता हवइ से निगंथे ।
 तं कहमिति चे ?
 आयरियाह-

निगंथस्स खलु इत्थीणं कहं कहेमाणस्स वंभयारिस्स वंभचेरे-
 संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा-
 भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा-
 दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा-
 केवलपन्नताओ वा घम्माओ भंसेज्जा-
 तम्हा खलु नो इत्थीणं कहं कहेज्जा ॥२॥

नो इत्थीणं सद्धि सन्निसेज्जागए विहरित्ता हवइ से निगंथे ।
 तं कहमिति चे ?
 आयरियाह-

निगंथस्स खलु इत्थीणं सद्धि सन्निसेज्जागयस्स वंभयारिस्स वंभचेरे-
 संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा-
 भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा-
 दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा-

केवलपन्नत्ताओ वा धम्माओ भसेज्जा-

तम्हा खलु नो निगंथे इत्थीहि सद्धिं सन्निसेज्जाणए

विहरेज्जा ॥३॥

नो इत्थीणं इंदियाइं मणोहराइं, मणोरमाइ,

आलोइत्ता निज्जाइत्ता हवइ से निगंथे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह-

निगंथस्स खलु इत्थीणं इंदियाइं मणोहराइ, मणोरमाइं

आलोएमाणस्स निज्जायमाणस्स बभयाररिस्स बंभचेरे-

संका वा, कंखा वा, विद्वांसेज्जा वा समुप्पज्जिज्जा-

भेदं वा लभेज्जा, उस्मायं या पाउणिज्जा,

दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा,

केवलपन्नत्ताओ वा धम्माओ भसेज्जा,

तम्हा खलु निगंथे नो इत्थीणं इंदियाइं मणोहराइं, मणोरमाइं,

आलोएज्जा निज्जाएज्जा ॥४॥

नो इत्थीणं कुहुंतरंसि वा, दूसंतरंसि वा, मित्तंतरंसि वा,

कूइयसहं वा, रुइयसहं वा, गीयसहं वा, हसियसहं वा,

थणियसहं वा, कवियसहं वा विलवियसहं वा-

सुणिता हवइ से निगंथे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह-

निगंथस्स खलु इत्थीण-

कुड्डंतरंसि वा, दूसंतरंसि वा, भित्तंतरंसि वा,
कूड्यसहं वा, रुड्यसहं वा, गीयसहं वा, हसियसहं वा,
थणियसहं वा, कवियसहं वा, विलवियसहं वा,
सुणेमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे-

सका वा, कंखा वा, विद्दिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा
मेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा,
दीहकालियं वा रागायकं हवेज्जा,
केवलपभत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा

तम्हा खलु निगंथे नो इत्थीण-

कुड्डंतरंसि वा, दूसंतरंसि वा, भित्तंतरंसि वा,
कूड्यसहं वा, रुड्यसहं वा, गीयसहं वा, हसियसहं वा,
थणियसहं वा, कवियसहं वा, विलवियसहं वा,
सुणेमाणे विहरेज्जा ॥५॥

नो इत्थीणं पुब्बरयं पुब्बकीलियं अणुसरित्ता हवइ से निगंथे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह-

निगंथस्स खलु पुब्बरयं पुब्बकीलियं अणुसरमाणस्स
बंभयारिस्स बंभचेरे-

संका वा, कंखा वा, विद्दिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा-
मेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा-

दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा-

केवलपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा-

तम्हा खलु नो निगंथे पुच्चरयं पुच्चकीलियं अणुसरेज्जा ॥६॥

नो पणीयं आहारं आहरित्ता हवइ से निगंथे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह-

निगंथस्स खलु पणीयं आहारं आहारेमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे-

संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा-

भेवं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा-

दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा,

केवलपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा

तम्हा खलु नो निगंथे पणीयं आहारं आहरेज्जा ॥७॥

नो अइमायाए पाणभोयणं आहारेत्ता हवइ से निगंथे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह-

निगंथस्स खलु अइमायाए पाणभोयणं-

आहारेमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे-

संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा-

भेवं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा-

दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा,

केवलपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा

तम्हा खलु नो निगंथे अइमायाए पाणभोयणं आहारेज्जा ॥८॥

नो विभूसाणुवाई हवइ से निगंथे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह-

निगंथस्स खलु विभूसावत्तिए विभूसियसरीरे-

इत्थिजणस्स अभिलसणिज्जे हवइ-

तओ णं इत्थिजणेणं अभिलसिज्जमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे-

संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा-

भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा-

दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा,

केवलपन्नत्ताओ वा धम्माओ भसेज्जा

तम्हा खलु नो निगंथे विभूसाणुवाई हवेज्जा ॥९॥

नो सद्-रुव-रस-गंध-फासाणुवाई हवई से निगंथे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह-

निगंथस्स खलु सद्-रस-रुव-गंध-फासाणुवाईस्स

बंभयारिस्स बंभचेरे-

संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा-

भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा-

दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा,

केवलपन्नत्ताओ वा धम्माओ भसेज्जा

तम्हा खलु नो निगंथे सद्-रुव-रस-गंध-फासाणुवाई हवेज्जा ।

दत्तमे बंभचेरसमाहिठाणे हवइ ॥१०॥

भवन्ति इत्थ सिलोगा ।

तं जहा-

अं विवित्तमणाइण्णं, रहियं इत्थिजणेण य ।

बंभचेरस्स रक्खट्ठा, आत्तयं तु निसेवए ॥ १ ॥

मणपल्हायजण्णि, कामरागविवड्ढण्णि ।

बंभचेररओ भिक्खू, थीकहं तु विवज्जए ॥ २ ॥

समं च संथवं थीहि, संकहं च अभिक्खणं ।

बंभचेररओ भिक्खू, निच्चसो परिवज्जए ॥ ३ ॥

अं ग प च्चं ग संठाणं, चा हल्ल वि य पे हियं ।

बंभचेररओ थीणं, चक्खुगिज्झं विवज्जए ॥ ४ ॥

कूइयं इइयं गीयं, हसियं थणिय-कंदिंयं ।

बंभचेररओ थीण, सोयगिज्झ विवज्जए ॥ ५ ॥

हासं किहुं रइ दप्पं, सहसावित्तासियाणि य ।

बंभचेररओ थीण, नाणुचित्ते कयाइ वि ॥ ६ ॥

पणीयं भत्तपाण तु, खिप्प मयचिवड्ढणं ।

बंभचेररओ भिक्खू, निच्चसो पविज्जए ॥ ७ ॥

धम्मलद्धं मिथं काले, जत्तत्थं परिणहाणवं ।

नाइमत्तं तु मुंजेज्जा, बंभचेररओ सया ॥ ८ ॥

विभूस परिवज्जेज्जा, सरीर-परिमंडणं ।

बंभचेररओ भिक्खू, सिंगारत्थं न धारए ॥ ९ ॥

सहे रुवे य गंधे य, रसे फासे तहेव य ।
 पंचविहे कामगुणे, निच्चसो परिवज्जए ॥१०॥
 मालो^१ थीजणाइणो,^२ थीकहा य मणोरमा^३ ।
 संथवो चेव नारीणं,^४ तांसि इंदियदरिसणं^५ ॥११॥
 कूइयं रुइयं गीयं, हसियं भुत्ताऽऽसियाणि^६ य ।
 पणीयं मत्तपाणं च, अइमायं पाणभोयणं^७ ॥१२॥
 गत्तभूसणमिट्ठं^८ च, कामभोगा य दुज्जया^{१०} ।
 नरस्सऽत्तगवेसिस्स, “विसं तालउडं जहा” ॥१३॥
 दुज्जए कामभोगे य, निच्चसो परिवज्जए ।
 सकट्ठाणाणि सव्वाणि, वज्जेज्जा पणिहाणवं ॥१४॥
 धम्मारामे चरे भिक्खू, धिइमं धम्मसारही ।
 धम्मारामए दंते, बंभचेर-समाहिए ॥१५॥
 देव-दाणव-गाधच्चा, जक्ख-रक्खस-किन्नरा ।
 बंभयारिं नमंसति, दुक्करं जे करंति तं ॥१६॥
 एस धम्मे धुवे निच्चे, सासए जिणवेसिए ।
 सिद्धा सिज्जसति चाणेण, सिज्जिस्संति तहावरे ॥१७॥
 ॥ ति वेमि ॥

अह पावसमणिज्जं नाम सत्तदसममज्झयणं

जे केइ उ पच्चइए नियंठे,
घम्मं सुणित्ता विणओववन्ने ।
सुडुल्लहं लह्मिं बोहिलाभं,
विहरेज्ज पच्छा य जहासुहं तु ॥ १ ॥
सेज्जा दढा पाउरणं मि अत्थि,
उप्पज्जई भोत्तुं तहेव पाउं ।
जाणामि जं बट्ठइ आउसु त्ति,
किं नाम काहामि सुएण भन्ते ! ॥ २ ॥

जे केइ उ पच्चइए, निद्दासीले पगामसो ।
भोच्चा पिच्चा सुहं सुवइ, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥ ३ ॥
आयरिय-उवज्झाएहिं, सुयं विणयं च गाहिए ।
ते चेव खिसई वाले, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥ ४ ॥
आयरिय-उवज्झायाणं, सम्मं न पडितप्पइ ।
अप्पडिपूयए थद्धे, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥ ५ ॥
सम्मइमाणे पाणाणि, वीयाणि हरियाणि य ।
असंजए संजयमन्नमाणे, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥ ६ ॥
संथारं फलगं पीढं, निसेज्जं पायकंबलं ।
अपमज्जियमारुहइ, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥ ७ ॥

दव-दवस्स चरई, पमत्ते य अभिक्खणं ।
 उल्लंघणे य चंडेय, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥ ८ ॥
 पडिलेहेइ पमत्ते, अव उज्झइ पायकंबलं ।
 पडिलेहा-अणाउत्ते, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥ ९ ॥
 पडिलेहेइ पमत्ते, से किंचि ह निसामिया ।
 गुरुं परिभावए निच्चं, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥ १० ॥
 बहुमाई पमुहरी, थढे लुढे अणिगहे ।
 असंविभागी अचियत्ते, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥ ११ ॥
 विवावं च उदीरेइ, अहस्मे अत्तपन्नहा ।
 वुगहे कलहे रत्ते, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥ १२ ॥
 अथिरासणे कुक्कुइए, जत्थ तत्थ निसीयइ ।
 आसणम्मि अणाउत्ते, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥ १३ ॥
 तत्तरक्खपाए सुवइ, सेज्जं न पडिलेहइ ।
 संथारए अणाउत्ते, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥ १४ ॥
 बुद्धवही-विगईओ, आहारेइ अभिक्खणं ।
 अरए य तवोक्खे, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥ १५ ॥
 अत्थंतम्मि य सूरम्मि, आहारेइ अभिक्खणं ।
 ओइओ पडिचोएइ, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥ १६ ॥
 आयरियपरिच्छाई, परपासंडसेवए ।
 गाणंगणिए दुब्भूए पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥ १७ ॥

सयं गेहं परिच्छज्ज, परगेहंसि वाधरे ।
 निमित्तेण य ववहरइ, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥१८॥
 सन्नाइपिडे जेमेइ, नेच्छई सामुदाणिय ।
 गिहिनिसेज्ज च वाहेइ, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥१९॥
 एयारिसे पंचकुसीलसंबुडे,
 रुवंधरे मुणिपवराण हेट्ठिमे ।
 अयंसि लोए विसमेवगरहिए,
 न से इहं नेव परत्य लोए ॥२०॥
 जे वज्जए एए सया उ बोसे,
 से मुच्चए होइ मुणीण मज्जे ।
 अयंसि लोए 'अमयं व पूइए'
 आराहुए लोगमिण तहा परं ॥२१॥
 ॥ त्ति वेमि ॥

अह संजइज्ज नामं अठारसममज्जयणं

'कंपिल्ले नयरे' राया, उदिण्णबलवाहणे ।
 नामेण 'संजए' नाम, मिगब्बं उवणिग्गए ॥१॥
 हयाणीए^१ गयाणीए^२, रहाणीए^३ तहेव य ।
 पायत्ताणीए^४ महुया, सव्वओ परिचारिए ॥२॥

मिए छुहिता ह्यगओ कयित्तुज्जाणकेसरे ।
 मोए सते मिए तत्थ, वहेई रसमुच्छिए ॥ ३ ॥
 अह 'केसरम्मि' उज्जाणे, अणगारे तवोधणे ।
 सज्जायज्ज्ञाणसंजुत्ते, धम्मज्ज्ञाणं मियायइ ॥ ४ ॥
 अप्फोवमंडवमि, ज्ञायइ खवियासवे ।
 तत्सागए मिए पासं, वहेई से नराहिबे ॥ ५ ॥
 अह आसगओ राधा, खिप्पमागम्म सो तहिं ।
 हए मिए उ पासित्ता, अणगारं तत्थ पासई ॥ ६ ॥
 अह राधा तत्थ संभंतो, अणगारो मणाहुओ ।
 मए उ मंडपुण्णेणं, रसगिद्धेण घंतुणा ॥ ७ ॥
 आसं विसज्जइत्ताणं, अणगारस्स सो निवो ।
 बिणएण बंदए पाए, भगवं ! एत्थ मे खमे ॥ ८ ॥
 अह मोणेण सो भगवं, अणगारे ज्ञाणमस्सिए ।
 रायाणं न पडिमंतेइ, तओ राधा भयद्दुओ ॥ ९ ॥

संजयः—

संजओ अहमम्मोति, भगवं ! वाहराहि मे ।
 कुद्धे तेएण अणगारे, डहेज्ज नरकोडिओ ॥ १० ॥

गर्भभातिमुनिः—

अभओ पत्तिवो ! तुभं, अभयदाया भवाहि य ।
 अणिच्चे जीवलोगंमि, किं हिंसाए पसज्जसि ? ॥ ११ ॥

जया रज्जं परिच्चज्ज, गंतव्वमवसस्स ते ।
 अणिच्चे जीवलोगंमि, किं रज्जंमि पसज्जसि ? ॥१२॥
 जीवियं चेव रुवं च, विज्जुसंपायच्चंचलं ।
 जत्थ तं मुज्झसि रायं ! पेच्चत्थं नावबुज्झसे ॥१३॥
 दाराणि य सुया चेव, मित्ता य तह बंधवा ।
 जी वं त म णु जी वं ति, मयं नाणुवर्यंति य ॥१४॥
 नीहरंति मयं पुत्ता, पियरं परमदुक्खिया ।
 पियरो वि तहा पुत्ते, बंधू रायं ! तवं चरे ॥१५॥
 तमो तेणऽज्जिए दब्बे, दारे य परिरक्खिए ।
 कीलंतिऽन्ने नरा रायं ! हट्ठुत्तुमलंकिया ॥१६॥
 तेणावि जं कयं कम्मं, सुहं वा जइ वा दुहं ।
 कम्मुणा तेण संजुत्तो, गच्छई उ परं भवं ॥१७॥

संजयः—

सोऊण तस्स सो घम्मं, अणगारस्स अंतिए ।
 महया सव्वेगनिच्चेयं, समावत्तो नराहिवो ॥१८॥
 संजओ चइउं रज्जं, निवखंतो जिणसासणे ।
 गद्वभालिस्स भगवओ, अणगारस्स अंतिए ॥१९॥
 चिच्चा रट्ठं पच्चइए,

क्षत्रियमुनिः—

खत्तिए परिभासइ ।

जहा ते दीसइं रुवं, पसन्नं ते तहा मणो ॥२०॥

किं नामे किं गोत्ते कस्सट्ठाए व माहणे ।

कहं पडियरसि बुद्धे, कहं विणीए त्ति वुच्चसि ? ॥२१॥

संजयमुनिः—

संजओ नाम नामेणं, तहा गोत्तेण गोयमी ?

गट्ठमाली ममायरिया, विज्जाचरणपारगा ॥२२॥

क्षत्रियमुनिः क्रियावादादि मिथ्याभिमतानामनात्मनीनतां प्रदर्शयति

किरिय^१ अकिरियं^२ विणयं,^३ अन्नाणं^४ च महामुणी ।

एएहिं चजहिं ठाणोहिं, मेयन्ने कि पमासइ ॥२३॥

इइं पाउकरे बुद्धे, नायए परिणिब्बुए ।

विज्जा-चरण-संपन्ने, सच्चे सच्चपरक्कमे ॥२४॥

पडंति नरए घोरे, जे नरा पावकारिणो ।

दिम्बं च गइं गच्छंति, चरित्ता धम्ममारियं ॥२५॥

मायावुइयमेयं तु, मुसा मासा निरत्थिया ।

संजममाणो वि अहं, वसामि इरियामि य ॥२६॥

सच्चे ते विइया भज्जं, मिच्छादिट्ठी अणारिया ।

विज्जमाणे परे लोए, सम्मं जाणामि अप्पयं ॥२७॥

क्षत्रियमुनिः स्वपूर्वभव वर्णयति

अहमासि महापाणे, जुइमं वरिससओवमे ।

जा सा पालि-महापाली, दिज्वा चरिससओवमा ॥२८॥

से चुए, 'बंभलोगाओ', भाणुत्तं भवमागए ।

अप्पणो य परेसि च, आउं जाणे जहा तहा ॥२९॥

नाणारुहं च छंदं च, परिवज्जेज्ज संजाए ।
 अणट्ठा जे य सव्वत्था, इइ विज्जामणुसंचरे ॥३०॥
 पडिक्कमामि पसिणाणं, परमतेहिं वा पुणो ।
 महो उट्ठिए महोरायं, इइ विज्जा तवं चरे ॥३१॥
 जं च मे पुच्छसी काले, समं सुद्धेण जेयसा ।
 ताहं पाउकरे बुद्धे, तं नाणं जिणसाणणे ॥३२॥
 किरियं च रोयइ धीरे, अकिरियं परिवज्जाए ।
 बिट्ठीए दिट्ठिसंपन्ने, धम्मं चरसु दुच्चरं ॥३३॥
 क्षत्रियभुनिः प्रव्रजितान् चक्रवर्त्यादीन् वर्णयति
 एयं पुण्णपयं सोच्चा, अत्थ-धम्मोवसोहियं ।
 “भरहो” वि भारहं वासं, चिच्चा कामाई पव्वए ॥३४॥
 “सगरो” वि सागरंतं, भरहवासं नराहिवो ।
 इत्सरियं केवलं हिच्चा, दयाए परिनिब्बुद्धे ॥३५॥
 चइत्ता भारहं वास, चक्कवट्ठी महिड्ढिओ ।
 पव्वज्जमग्गभुवगओ, “मघव” नाम महाजसो ॥३६॥
 “सणकुमारो” मणुत्तिवो, चक्कवट्ठी महिड्ढिओ ।
 पुत्तं रज्जे ठवेऊणं, सो वि राया तवं चरे ॥३७॥
 चइत्ता भारहं वासं चक्कवट्ठी महिड्ढिओ ।
 “संति” संतिकरे लोए, पत्तो गइमणुत्तरं ॥३८॥

इक्कागरायवसभो, 'कुंयू' नाम नरीसरो ।
 बिक्खायकित्ती भगवं, पत्तो गइमणुत्तरं ॥३९॥
 सागरंतं चइत्ताणं, भरहुवासं नरिसरो ।
 'अरो' य अरयं पत्तो, पत्तो गइमणुत्तरं ॥४०॥
 चइत्ता भारहं वासं, चइत्ता बलवाहणं ।
 चइत्ता उत्तमे भोए, 'महापउमे' तवं चरे ॥४१॥
 एगच्छत्तं पसाहिता, भाहि माण-निसूरणो ।
 'हरिसेणो' मणुस्सिद्धो, पत्तो गइमणुत्तर ॥४२॥
 अग्निभो रायसहस्सेहि, सुपरिच्चाई दमं चरे ।
 'जयनाभो' जिणक्खायं, पत्तो गइमणुत्तर ॥४३॥
 'दसण्णरज्ज' मुदियं चइत्ताणं मुणी चरे ।
 'दसण्णमद्दो' निक्खंतो, सक्खं सक्केण चोइओ ॥४४॥
 'नमी' नमेइ अप्पाणं, सक्खं सक्केण चोइओ ।
 चइऊण गेहं 'बइदेही', सामण्णे पज्जुवट्ठिओ ॥४५॥
 'करकंडू' कलिगेसु, पंचालेसु य 'डुम्महो' ।
 नमी राया बिदेहेसु गंधारेसु य 'नगाई' ॥४६॥
 एए नरिदवसभा, निक्खंता जिणसासणे ।
 पुत्ते रज्जे ठवेऊण, सामण्णे पज्जुवट्ठिया ॥४७॥
 'सोवीररायवसभो', चइत्ताण मुणी चरे ।
 'उदायणो' पट्ठइओ, पत्तो गइमणुत्तर ॥४८॥

तहेव 'कासिराया' वि, सेओ सच्चपरक्कमे ।
 काममोगे परिच्चज्ज, पहणे कम्ममहावणं ॥४९॥
 तहेव 'विजओ राया', अणट्ठाकित्ति पच्चए ।
 रज्जं तु गुणसमिद्धं, पयहित्तु महाजसो ॥५०॥
 तहेवुगं तवं किञ्चा, अच्चक्खित्तेण चैयसा ।
 'महब्बलो' रायरिसी, आदाय सिरसा तिरिं ॥५१॥ --
 कहं धीरो अहेऊहिं, उम्मत्तो व माहिं चरे ?
 एए विसेसमादाय, सूरा दढपरक्कमा ॥५२॥
 अच्चंतनियाणखमा, सच्चा मे मासिया वई ।
 अतरिंसु तरत्तेगे, तरिस्संति अणागया ॥५३॥
 कहि धीरे अहेऊहिं, अत्ताणं परियावसे ।
 सच्चसंग-विनिमुक्के, सिद्धे भवइ नीरए ॥५४॥ -
 ॥ त्ति वेमि ॥

अह मियापुत्तीयं नामं एगूणवीसइमं अज्झयणं

'सुग्गीवे' नयरे रंमे, काणणुज्जाणसोहिए ।
 राया 'बलभदित्ति', 'मिया' तत्सगमहिंसी ॥ १ ॥
 तैत्ति पुत्ते 'बलसिरी', 'मियापुत्ते' ति विस्सुए ।
 अम्मापिऊण दइए, जुवराया दमीसरे ॥ २ ॥

नंदणे सो उ पासाए, कीलए सह इत्थिहि ।
 देवो दोगुंदगो चेव, निच्चं मुइय-माणसो ॥ ३ ॥
 मणि-रयण-कोट्टिमतले, पासायालोयणट्ठिओ ।
 आलोएइ नगरस्स, चउक्क-तिय-चच्चरे ॥ ४ ॥
 अह तत्थ अइच्छंतं, पासई समण-संजयं ।
 तव-नियम-संजमधरं, सीलड्ढं गुणभागरं ॥ ५ ॥
 तं पेहई मियापुत्ते, दिट्ठीए अणिमिसाए उ ।
 कहिं मभैरिसं रुवं, दिट्ठपुज्वं मए पुरा ॥ ६ ॥
 साहुस्स दरिसणे तस्स, अज्झवसाणम्मि सोहणे ।
 मोहं गयस्स संतस्स, जाईसरणं समुप्पन्नं ॥ ७ ॥
 देवलोगचुओ संतो, माणुसं भवमागओ ।
 सन्नि-नाण-समुप्पन्ने, जाइं सरइ पुराणियं ॥
 जाईसरणे समुप्पन्ने, मियापुत्ते महिड्ढिए ।
 सरई पोरानियं जाइं, सामण्णं च पुरा कयं ॥ ८ ॥

मृगापुत्रः-

विसएहि अरज्जंतो, रज्जंतो संजमंमि य ।
 अम्मा-पियरमुवागम्म, इमं वयणमत्त्ववी ॥ ९ ॥
 सुयाणि मे पंच महव्वयाणि,
 नरएसु दुक्खं च तिरिक्ख-जोणिसु ।
 निव्विण्णकामो मि महण्णवाओ,
 अणुजाणह पव्वइस्सामि अम्मो ! ॥ १० ॥

अम्मताय । मए भोगा, भुत्ता विसफलोवमा ।
 पच्छा कडुयविवागा, अणुबंध दुहावहा ॥११॥
 इमं सरीरं अणिच्चं, असुइं असुइसंभवं ।
 असासयावासमिणं, दुक्खकेसाण भायणं ॥१२॥
 असासए सरीरंमि, रइं नोवलभामहं ।
 पच्छा पुरा व चइयव्वे, “फेणवुब्बुयसस्मिमे” ॥१३॥
 माणुसत्ते असारंमि, बाहीरोगाण आलए ।
 जरा-मरणघत्थमि, खणं पि न रमामहं ॥१४॥

दु खवर्णनम् -

जम्मं दुक्खं जरा दुक्खं, रोगा य मरणाणि य ।
 अहो दुक्खो ह ससारो, जत्थ कीसंति जंतुणो ॥१५॥
 खेतं वत्थुं हिरणं च, पुत्तदारं च बंधवा ।
 चइत्ताणं इमं देहं, गंतव्वमवसस्स मे ॥१६॥
 “जहा किपागफलाणं”, परिणामो न सुंदरो ।
 एवं भुत्ताण भोगाणं, परिणामो न सुंदरो ॥१७॥

धर्मवर्णनम् -

“अट्ठारं जो महंतं तु, अप्पाहेओ पवज्जइ ।
 गच्छंतो सो ‘डुही होइ,’ छुहा-त्तण्हाए पीडिओ ॥१८॥
 एवं धम्मं अकाळणं, जो गच्छइ परं भवं ।
 गच्छंतो सो ‘डुही होई’ बाहीरोगेहिं पीडिओ ॥१९॥

“अद्धानं जो महंतं तु, सपाहेओ पवज्जइ ॥”
 गच्छंतो सो ‘सुही होइ’, छुहातण्हाविवज्जिओ ॥२०॥
 एवं धम्मं पि काळणं, जो गच्छइ परं भवं ।
 गच्छतो सो ‘सुही होइ’, अप्पकम्मे अबेयणे ॥२१॥

प्रदीप्त गृहोदाहरणम्—

‘जहा गेहे पलित्तम्मि’, तस्स गेहस्स जो पट्ठ ।
 सारभंडाणि वीणेइ, असार अबउज्जइ ॥२२॥
 एवं लोए पलित्तम्मि, जराए मरणेण य ।
 अप्पाणं तारइस्सामि, तुम्मेहिं अणुमन्निओ ॥२३॥

पितरौ—

तं त्रितम्मापियरो, सामणं पुत्तं ! दुच्चरं ।
 गुणाणं तु सहस्साइं, धारेयव्वाइं भिक्खुणा ॥२४॥

महाव्रत वर्णनम्—

- (१) समया सज्जभूएसु, सत्तुमित्तेसु वा जगे ।
 पाणाइवाय-विरई, जावज्जीवाए दुक्करं ॥२५॥
- (२) निच्चकालऽप्पमत्तेणं, मुसावायविवज्जणं ।
 भासियववं हियं सच्च, निच्चाउत्तेण दुक्करं ॥२६॥
- (३) दंतसोहणमाइस्स, अदत्तस्स विवज्जणं ।
 अणवज्जेमणिज्जस्स, गेण्हुणा अवि दुक्करं ॥२७॥

- (४) विरई अबंभचेस्स, कामभोगरससुणा ।
 उगं महव्वयं बंभं, धारेयव्वं सुदुक्करं ॥२८॥
- (५) घण-घन्न-पेसव्वगोसु, परिग्गह-विवज्जणं ।
 सव्वारंभ-परिच्चाओ, निम्ममत्तं सुदुक्करं ॥२९॥
- (६) चउव्विहे वि आहारे, राईभोयणवज्जणा ।
 सभिही-संचओ चेव, वज्जेयव्वो सुदुक्करं ॥३०॥

दुष्करं आमण्यम्—

- छुहा तण्हा ए सीउण्हं, बंस-मसअवेयणा ।
 अक्कोसा दुक्खसेज्जा य, तणफासा जल्लमेव य ॥३१॥
- तालणा तज्जणा चेव, वह-बंधपरीसहा ।
 दुक्खं भिक्खायरिया, जायणा य अलाभया ॥३२॥
- ‘कावोया’ जा इमा वित्ती, केसलोओ य दारुणो ।
 दुक्खं बंभच्चयं घोरं, धारेउं य महप्पणो ॥३३॥
- ‘कावोया’ जा इमा वित्ती, केसलोओ य दारुणो ।
 दुक्खं बंभच्चयं घोर, धारेउ य महप्पणो ॥३३॥
- सुहोइओ तुमं पुत्ता, ! सुउमालो सुमज्जिओ ।
 न ह्वसि पभू तुमं पुत्ता, सामण्णमणुपालियं ॥३४॥
- जावज्जीवमविस्सामो, गुणाणं तु महम्मरो ।
 ‘गुरुओ लोहमारुज्ज’, जो पुत्ता ! होइ वुव्वहो ॥३५॥
- ‘आगासे गंगसोउव्व’, पडिसोउव्व वुत्तरो ।
 बाहाहिं सागरो चेव, तरियव्वो गुणेदही ॥३६॥

“बालुया कवले” चेव, निरस्ताए उ संजमे ।
 ‘असिघारागमणं’ चेव, दुक्करं चरिउं तवो ॥३७॥
 ‘अहीवेगंतदिठोए’, चरित्ते पुत्त ! दुक्करे ।
 ‘जवा लोहमया चेव’, चावेयव्वा सुदुक्करं ॥३८॥
 ‘जहा अग्निसिहा दित्ता’, पाउं होइ सुदुक्करा ।
 तहा दुक्कर करेउं जे, तारुण्णे समणत्तणं ॥३९॥
 ‘जहा दुक्खं भरेउं जे, होइ वायस्स कोत्थलो ।’
 तहा दुक्खं करेउं जे, कीवेणं समणत्तणं ॥४०॥
 ‘जहा तुलाए तोलेउं, दुक्करो मंदरो गिरी ।’
 तहा निहुयनीसकं, दुक्कर समणत्तणं ॥४१॥
 ‘जहा भुयाहिं तरिउं, दुक्करं रयणायरो ।
 तहा अणुवसंतेणं, दुक्करं दमसागरो ॥४२॥
 भुंज माणुस्सए भोए, पचलक्खणए तुमं ।
 भुत्तमोगो तमो जाया ! पच्छा धम्मं चरिस्ससि ॥४३॥

भुगापुत्रः—

सो बेइ अम्मापियरो, एवमेयं जहा फुडं ।
 इह लोए निप्पिवासस्स, नत्थि किञ्चिच्चि दुक्करं ॥४४॥
 सारीर-भाणसा चेव, वेयणाओ अनंतसो ।
 मए सोढाओ भीमाओ, असइ दुक्कमयाणि य ॥४५॥
 जराभरणकंतारे, चाउरंते भयागरे ।
 मया सोढाणि भीमाणि, जम्माणि मरणाणि य ॥४६॥

नरक वर्णनम्—

जहा इहं अगणी उण्हो, एत्तोऽणंतगुणो तहिं ।

नरएसु बेयणा उण्हा, असाया वेइया मए ॥४७॥

जहा इहं इमं सीयं, एत्तोऽणंतगुणो तहिं ।

नरएसु बेयणा सीया, असाया वेइया मए ॥४८॥

कंदंतो कंदुकुंभीसु, उड्ढपाओ अहोसिरो ।

हुयासणे जलतस्मि, पक्कपुच्चो अणंतसो ॥४९॥

महादवगिसंकासे, मरंमि वइरबालुए ।

कलंबबालुयाए य, दड्ढपुच्चो अणंतसो ॥५०॥

रसंतो कंदुकुंभीसु, उड्ढं बढो अबंधवो ।

करवत्त—करकयाईहि, छिन्नपुच्चो अणंतसो ॥५१॥

अइतिक्खकंटगाइणो, तुंगे सिबलिपायवे ।

खेविमं पासबद्धेण, कड्ढोकड्ढाहिं डुक्करं ॥५२॥

महाजंतसु उच्छू वा, आरसंतो सुभेरवं ।

पीलिओ मि सकम्मोहिं, पावकम्मो अणंतसो ॥५३॥

कूवतो कोलसुणएहिं, सामोहिं सबलेहि य ।

पाडिओ फालिओ छिन्नो, विप्फुरंतो अणेगसो ॥५४॥

असीहिं अयसिवण्णाहिं, भल्लोहिं पट्टिसेहि य ।

छिन्नो भिन्नो विभिन्नोय, ओइणो पावकम्मणा ॥५५॥

अबसो लोहरहे जुत्तो, जलते समिलाजुए ।

ओइओ तोत्तजुत्तोहिं, 'रोक्खो' वा जह पाडिओ ॥५६॥

हुयासणे जलंतम्मि, चियासु 'महिसो' विव ।
 दद्धो पक्को य अवसो, पावफम्मोहि पाविओ ॥५७॥
 बला संदासतुडोह, लोहतुंडोह पक्खिह ।
 विलुत्तो विलवंतोऽह, ढकगिद्धोहिऽणंतसो ॥५८॥
 तण्हाकिलतो घावंतो, पत्तो वेयरणि नइ ।
 जलं पाहि ति चिततो, खुरधारोहि विवाइओ ॥५९॥
 उण्हामित्तो सपत्तो, असिपत्त महावण ।
 असिपत्तोहि पढतोहि, छिन्नपुब्बो अणेगसो ॥६०॥
 मुगरोहि मुसढोहि, सूलेहि मुसलेहि य ।
 गया-संभग्ग-नात्तोहि, पत्तं दुक्ख अणतसो ॥६१॥
 खुरोहि तिक्खधारोहि, छुरियाहि कप्पणीहि य ।
 कप्पिओ फालिओ छिन्नो, उविकत्तो य अणेगसो ॥६२॥
 पासेहि कूडजालेहि, मिओ वा अवसो अह ।
 वाहिओ वद्धरुद्धो य, बहसो चेव विवाइओ ॥६३॥
 गलेहि भगरजालेहि, मच्छो वा अवसो अहं ।
 उल्लिओ फालिओ गहिओ, मारिओ य अणंतसो ॥६४॥
 विवंसएहि जालेहि, लेप्पाहि सउणो विव ।
 गहिओ लगो य बद्धो य, मारिओ य अणंतसो ॥६५॥
 कुहाड-फरसु-माईहि, वद्धईहि दुओ विव ।
 कुट्टिओ फालिओ छिन्नो, तच्छिओ य अणंतसो ॥६६॥

चवेड-मुट्ठिमाईहि कुमारोहि, अयं पिव ।
 ताडिओ कुट्ठिओ मिन्नो, चुण्णिओ य अणतसो ॥६७॥
 तत्ताइं तंबलोहाइं, तउयाइं सीसयाणि य ।
 पाइओ कलकलंताइं, आरसंतो सुमेरवं ॥६८॥
 तुहं पियाइं मंसाइं, खंडाइं सोल्लगाणि य ।
 खाविओ मि स-मसाइं, अग्निवण्णाइंऽण्णेगसो ॥६९॥
 तुहं पिया सुरा सोहू, मेरओ य मल्लणि य ।
 पाइओ मि जलंतीओ, वसाओ रहिराणि य ॥७०॥
 निच्चं भोएण तत्थेण, दुहिएण बहिएण य ।
 परमा दुहसंबद्धा, वेयणा वेइया मए ॥७१॥
 तिच्चचंडप्पगाढाओ, घोराओ अद्दुस्सहा ।
 महम्मयाओ भीमाओ, नरएसु वेइया मए ॥७२॥
 जारिसा माणुसे लोए, ताया ! दीसंति वेयणा ।
 एत्तो अणंतगुणिया, नरएसु दुक्खवेयणा ॥७३॥
 सच्चभवेसु असाया, वेयणा वेइया मए ॥
 निमैसंतरमित्तं पि, जं साता नत्थि वेयणा ॥७४॥

पितरौ -

तं बित्तं मापियरो, छंदेणं पुत्त ! पच्चया ।
 नवरं पुण सामण्णे, दुक्खं निप्पडिक्कमया ॥७५॥

मृगापुत्रः—

सो वित्तस्मापियरो ! एवमेयं जहा फुडं ।

पडिकम्मं को कुणइ, अरण्णे मियपक्खिणं ? ॥७६॥

एगम्मूओ अरण्णे वा, जहा उ चरइ मिगो ।

एवं धम्मं चरिस्सामि, संजमेण तवेण य ॥७७॥

जहा मिगस्स आयंको, महारण्णंमि जायई ।

अच्छंतं रुक्खमूलंमि, को णं ताहे चिगिच्छई ॥७८॥

को वा से ओसहं देई, को वा से पुच्छइ सुहं ?

को से भत्त च पाणं च, आहरित्तु पणामए ? ॥७९॥

जया य से सुही होइ, तया गच्छइ गोयरं ।

भत्तपाणस्स अट्ठाए, बल्लराणि सराणि य ॥८०॥

खाइता पाणियं पाउं, बल्लरेहिं सरेहि य ।

मिगचारियं चरित्ताण, गच्छइ मिगचारियं ॥८१॥

एवं समुट्ठिओ भिक्खू, एवमेव अणेगए ।

मिगचारियं चरित्ताण, उइदं पक्कमई दिसं ॥८२॥

जहा मिए एग अणेगचारी,

अणेगवासे धुवगोयेरे य ।

एवं मुणी गोयरियं पयिट्ठे,

नो हीलए नो वि य खिसएज्जा ॥८३॥

मृगापुत्रस्यदीक्षाग्रहणम्—

मिगचारियं चरिस्सामि, एवं पुत्ता ! जहासुहं ।

अम्मापिक्कहिऽणुत्ताओ, जहाइ उवहि तओ ॥८४॥

मियचारियं चरिस्सामि, सज्जदुक्खविमोक्खणि ।

तुभौहं अंब ! ऽणुत्ताओ, गच्छ पुत्त ! जहासुहं ॥८५॥

एवं सो अम्मापियरो, अणुमाणित्ताण बहुविहं ।

ममत्त छिदइ ताहे, 'महानागो एव कंचुय ॥८६॥

इद्धो वित्तं च मित्ते य, पुत्तदारं च नायओ ।

'रेणुयं व पढे लग्ग', निद्धुणित्ताण निग्गओ ॥८७॥

पंचमहज्जयजुत्तो, पंचसमिओ तिगुत्तिगुत्तो य ।

सन्धिंतरवाहिरए, तवोक्कम्ममि उज्जओ ॥८८॥

निम्भमो निरहकारो, निस्संगो चत्तगारवो ।

समो य सज्जभूएसु, तसेसु थावरेसु य ॥८९॥

लामालामे सुहे दुक्खे, जीविए मरणे तहा ।

समो निदा-पसंसासु, तहा माणावमाणओ ॥९०॥

गारवेसु कसाएसु, दंड-सल्ल-भएसु य ।

नियत्तो हाससोगाओ, अनियाणो अबंघणो ॥९१॥

अणिस्सिओ इहं लोए, परलोए अणिस्सिओ ।

बासीचंदणकप्पो य, असणे अणसणे तहा ॥९२॥

अप्पसन्थेहिं दारेहिं सज्जओ पिहियासवे ।

अज्जप्प-ज्जाणजोगेहिं, पसत्थ-दमसासणे ॥९३॥

एवं नाणेण चरणेण, दंसणेण तवेण य ।
भावणाहिं य सुद्धाहिं, सम्मं भावित्तु अप्पयं ॥९४॥

बहुयाणि उ वासाणि, सामण्णमणुपालिया ।
मासिएण उ भत्तेण, सिद्धिं पत्तो अणुत्तरं ॥९५॥

एवं करति सबुद्धा, पडिया पवियक्खणा ।
विणिमट्टंति भोगेसु, मियापुत्ते जहारिस्सो ॥९६॥

महप्पभावस्स महाजसस्स,
मियाइपुत्तस्स निसम्म भासिय ।
तवप्पहाणं चरित्तं च उत्तमं,
गइप्पहाणं च तिलोगविस्सुयं ॥९७॥

त्रियाणिया दुक्ख-विवइद्धणं धणं,
ममत्तवंधं च महाभयावहं ।
सुहावहं धम्मघुरं अणुत्तरं,
घारेहं निब्बाण-गुणावहं मह ॥९८॥ त्ति वेमि ॥

अह महानियंठिज्ज-नामं वीसइमं अज्झयणं

सिद्धाणं नमो किच्चा, संजयाणं च भावओ ।

अत्थ-धम्म-गइं तच्चं अणुसिद्धिं सुणेह मे ॥ १ ॥

पभूयरयणो राया, 'सिणिओ' मगहाहिवो ।

विहारजत्तं निज्जाओ, 'भंडिकुंछसि चेइए' ॥ २ ॥

नाणा-दुम-लयाइण्णं, नाणा-पक्खि-निसेवियं ।

नाणाकुसुम-संछन्नं, उज्जाणं नंदणोवमं ॥ ३ ॥

तत्थ सो पासइ साहुं संजयं सुसमाहियं ।

निसन्नं रुक्खमूलम्मि, सुकुमालं सुहोइयं ॥ ४ ॥

तस्स रुवं तु पासित्ता, राइणो तम्मि संजए ।

अच्चंतपरमो आसी, अउलो रुवविम्हओ ॥ ५ ॥

अहो वण्णो अहो रुवं, अहो अज्जस्स सोमया ।

अहो खंती अहो मुत्ती, अहो भोगे असंगया ॥ ६ ॥

तस्स पाए उ वंदित्ता, काळण य पयाहियं ।

नाइदूरमणासत्ते, पंजली पडिपुच्छइ ॥ ७ ॥

श्रेणिकः—

तरुणो सि अज्जो ! पक्वइओ, भोगकालम्मि संजया ।

उवड्ढिओ सि सामण्णे, एयमदुठं सुणेमि ता ॥ ८ ॥

अनाथो मुनिः—

अणाहोमि महाराय !, नाहो मज्झ न विज्जई ।

अणुकंपयं सुहिं वावि, कंचिं, नाभिसमेमहं ॥ ९ ॥

श्रेणिकः—

तओ सो पहसिओ राया, सेणिओ मगहाहिवा ।

एवं ते इदिमंतस्स, कहं नाहो न विज्जई ? ॥ १० ॥

होमि नाहो भयंताणं ! भोगे भुंजाहि संजया !

मित्त--नाइ--परिवुडो, माणुस्सं खु सुदुल्लहं ॥ ११ ॥

अनाथो मुनिः—

अप्पणा वि अणाहो सि, सेणिया ! मगहाहिवा !

अप्पणा अणाहो संतो, कहं नाहो मच्चिस्ससि ! ॥ १२ ॥

श्रेणिकः—

एवं वुत्तो नरिंदो सो, सुसभंतो सुविम्हिओ ।

वयणं अत्सुयपुब्बं, साहुणा विम्हयन्निओ ॥ १३ ॥

अस्सा हत्थो मणुस्सा मे, पुरं अतेउरं च मे ।

भुंजामि माणुसे मोए, आणा इस्सरियं च मे ॥ १४ ॥

एरिसै संपयगग्गम्मि, सव्वकामसमप्पिए ।

कहं अणाहो भवइ, ? मा ह भते ! मुसं चए ॥ १५ ॥

अनाथो मुनिः—

न तुभं जाणे अणाहस्स, अत्थं पोत्थ च पत्थिवा !

जहा अणाहो भवइ, सणाहो वा नराहिवा ! ॥ १६ ॥

सुणेह मे महाराय । अज्जक्खित्तेण चेयसा ।
 जहा अणाहो भवई, जहा मेयं पवत्तियं ॥१७॥
 'कोसंबी' नाम नयरी, पुराणपुरभेयणी ।
 तत्थ आसी पिया मज्झ, पभूय-धण-संचओ ॥१८॥
 पढमे वए महाराय !, अउला मे अच्छिवेयणा ।
 अहोत्था विउलो दाहो, सब्बगत्तेसु पत्थिवा । ॥१९॥
 सत्थं जहा परमत्तिवख, सरीर-विवरंतरे ।
 'पविसिज्ज अरो कुद्धो', एवं मे अच्छिवेयणा ॥२०॥
 तियं मे अंतरिच्छं च, उत्तमंगं च पीडई ।
 'इंदासणिसमा' घोरा, वेयणा परमदारुणा ॥२१॥
 उवट्ठिया मे आयरिया, विज्जा-भत-तिगिच्छया ।
 अबीया सत्थकुसला, मतमूलविसारया ॥२२॥
 ते मे तिगिच्छं कुब्बंति, चाउप्पायं जहाहियं ।
 न य दुक्खा विमोयति, एसा मज्झ अणाहया ॥२३॥
 पिया मे सब्बसारं पि, विज्जाहि मम कारणा ।
 न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ॥२४॥
 माया वि मे महाराय ! पुत्तसोगदुहट्ठिया ।
 न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ॥२५॥
 भायरा मे महाराय ! सगा जेट्ठ-कणिट्ठगा ।
 न य दुक्खा विमोयति, एसा मज्झ अणाहया ॥२६॥

भङ्गीओ मे महाराय ! सगा जेदु-कणिदुगा ।
 न या दुक्खा विमोयंति, एसा मज्झ अणाहया ॥२७॥
 भारिया मे महाराय ! अणुरत्ता अणुव्वया ।
 अंसुपुण्णोहि नयणोहि, उरं मे परिसिचइ ॥२८॥
 अन्नं पाणं च प्हाणं च, गंध-मल्लविलेवणं ।
 मए नायमणायं वा, सा बाला नोवभुंजइ ॥२९॥
 खणं पि मे महाराय ! पासाओ वि न फिट्ठइ ।
 न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ॥३०॥
 तओ हं एवमाहंसु, दुक्खमाहु पुणो पुणो ।
 वेयणा अणुमविडं जे, संसारम्मि अणंतए ॥३१॥
 सइं च जइ मुंच्चिज्जा, वेयणा विउला इओ ।
 खंतो बंतो निरारंभो, पव्वइए अणगारियं ॥३२॥
 एवं च चितइत्ताणं, पसुत्तो मि नराहिवा ।
 परियत्तंतीए राईए, वेयणा मे खयं गया ॥३३॥
 तओ कल्ले पमायंमि, आपुच्छित्ताण बंधवे ।
 खंतो बंतो निरारंभो, पव्वइओऽणगारियं ॥३४॥
 तो हं नाहो जाओ, अप्पणो य परस्स य ।
 सम्बोसि चैव भूयाणं, तसाण यावराण य ॥३५॥
 अप्पा नईं वेयरणी, अप्पा मे कूडसामली ।
 अप्पा कामदुहा घेणू, अप्पा मे नंदणं वणं ॥३६॥

अप्या कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य ।

अप्या मित्तममित्तं च, दुप्पट्ठिय सुपट्ठिओ ॥३७॥

इमा ह्नु अस्मा वि अणाहया निवा !

तमेगच्चित्तो निहुओ सुणेहि ।

नियंठघम्मं लहियाण वि जहा,

सीर्यंति एगे बहुकायरा नरा ॥३८॥

जो पव्वइत्ताण महव्वयाइ,

सम्मं च नो फासयइ पमाया ।

अनिग्गहप्या य रसेसु गिद्धे,

न मूलओ छिन्नइ वंघणं से ॥३९॥

आउत्तया जस्स न अत्थि काइ,

इरियाए मासाए तहेसणाए ।

आयाण-निक्खेव-दु गं छणा ए,

न वीरजायं अणुजाइ मग्गं ॥४०॥

चिरं पि से मुंडरई भवित्ता,

अथिरव्वए तवनियमेहि मट्ठे ।

चिरं पि अप्पाण किलेसइत्ता,

न पारए होइ ह्नु संपराए ॥४१॥

‘पोल्ले व मट्ठो जह से असारं,’

‘अयंतिए कूड-कहावणे वा ।’

‘राढामणी घे रु लि यप्प गा ते,’
अमहग्घए होइ ठु जाणएसु ॥४२॥

कु सो ल लि ग इह धा र इ सा,
इसिज्झय जीविय बूहइत्ता ।
असंज ए स ज य ल प्प मा णो,
विणिघायमागच्छइ से चिरपि ॥४३॥

‘विस तु पीयं जह फालफूडं,’
‘हणाइ सत्थं जह फुग्गहीय ।’
एसो वि धम्मो विसभोववन्नो,
हणाइ ‘वेयाल इयाविवन्नो’ ॥४४॥

जे तयत्तण सुविण पउंजमाणे,
नि मि त्त को ऊ ह ल सं प गा ढे ।
कु हे ढ विज्जा स व दा र जी वी,
न गच्छइ सरण तम्मि काले ॥४५॥

तमंतमेणेव उ से असीले,
सया बूही विप्परियासुवेइ ।
संधावई नरगतिरिक्खजोणि,
भोण विराहित्तु असाहुरुवे ॥४६॥

उद्देसिय फीयगडं नियागं,
न मुंचई किंचि अणेसणिज्जं ।

‘अग्गी विव सव्वभवखी’ भवित्ता,
इत्तो जुए गच्छइ कट्ठु पावं ॥४७॥

न तं अरी कंठछेत्ता करेइ,
जं से करे अप्पणिआ दुरप्पा ।
से नाहिइ मच्चुमुहं तु पत्ते,
पच्छाणुतावेण दयाविहूणो ॥४८॥

निरट्ठिया नगखुई उ तस्स,
जे उत्तमट्ठे विवज्जा स मे इ ।
इमे वि से नत्थि परे वि लोए,
दुहिओ वि से क्षिज्झइ तत्थ लोए ॥४९॥

ए मे वऽहा छव कू सीलरू वे,
मग्ग विराहेत्तु जिणुत्तमाणं ।
कूकरी विवा भोगरसाणुगिद्धा,
नि रट्ठसो या परि ता व मे इ ॥५०॥

सोच्चाण मेहावी । सुभासिय इम,
अणुसासणं नाणगुणोववेय ।
मग्गं कुसीलाण जहाय सव्वं,
महानियंठाण वए पहेण ॥५१॥

चरित्तमायारगुणस्सिए तओ,
अणुत्तर संजम पालियाणं ।

निरासये सपयिषाण कम्म,
 उवेइ छाणं यिउलुत्तम धुव ॥५२॥
 एवुग्गदत्ते वि महात्तवोघणे,
 महामुणी महापइन्ने महापसे ।
 म हा नि य ठि ज्ज मि ण महासुय,
 ते षाहए महया वित्थरेण ॥५३॥

श्लेषिक — सुट्ठो य सेणिओ राया, इणमुदाहु कयंजली ।
 अणाहत्त जहाभूय, सुट्ठ मे उवदन्नियं ॥५४॥
 तुज्ज सुत्तद ए मणुस्मजम्मं,
 ताभा सुत्तदा य तुमे महेत्ती !
 तुम्भे सणाहा य सवधया य,
 जं मे ठिया मग्गे जिणुत्तमाणं ॥५५॥

त मि नाहो अणाहाणं, सव्वभूयाण मंजया ।
 एामेमि ते महाभाग, इच्छामि अणुमासिउं ॥५६॥
 पुच्छिऊण मए तुम्भं, षाणविण्णो उ जो कओ ।
 निमंतिओ य भोगेहि, तं सव्व मरित्तेहि मे ॥५७॥
 एवं युणित्ताण त रायसीहो,
 अणगारसीहं परमाइ भत्तिए ।
 सओरोहो सपरियणो सवंधवो,
 धम्माणुरत्तो विमत्तेण चेयसा ॥५८॥

ऊससियरोमकूबो, काऊण य पयाहिणं ।
 अभिर्वदिऊण सिरसा, अइयाओ नराहिबो ॥५९॥
 इयरो वि गुणसमिद्धो, तिगुत्तिगुत्तो तिवंडविरओ य ।
 "विहग इव" विप्पमुक्को, विहरइ वसुहं विगयमोहो ॥६०॥
 ॥ त्ति बेमि ॥

अह समुद्पालीय-नामं एगविसइमं अज्झयणं

चंपाए 'पालिए' नाम, सावए आसि वाणिए ।
 'महावीरस्स' भगवओ, सीसे सो उ महप्पणो ॥१॥
 निम्मांथे पावयणे, सावए से वि कोविए ।
 पोएण ववहरंते, "पिहुंड" नगरमागए ॥२॥
 पिहुंडे ववहरंतस्स, वाणिओ देइ धूरं ।
 तं ससत्तं पइगिज्झ, सदेसमह पत्थिओ ॥३॥
 अह पालियस्स घरिणि, समुद्धम्मि पसवई ।
 अह बालए तर्हि जाए, 'समुद्पालि त्ति नामए' ॥४॥
 खेमेण आगए चंप, सावए वाणिए घरं ।
 संवड्ढई तस्स घरे, दारए से सुहोइए ॥५॥

बावत्तरो कलाओ य, सिबखए नीडकोविए ।

जुव्वणेण य सपप्पे, सुखे पिपदंसणे ॥६॥

तस्स रुववइं भज्ज, पिया आणेइ रुविणि ।

पासाए कीलए रम्मे, 'देवो दोगुंदओ जहा' ॥७॥

अह भग्नया कयाई, पासायालोयणे ठिओ ।

वज्जमंडणसोभागं, वज्जं पामइ वज्जसग ॥८॥

त पासिउण संविगो, समुद्पालो इणमन्ववी ।

अहोऽसुहाण कम्माणं, निज्जाणं पावणं इमं ॥९॥

संबुद्धो सो तहिं भयवं, परमसंवेगमागओ ।

आपुच्छऽम्मापियरो, पट्टए अणगारियं ॥१०॥

जहित्तु सगं च महाकिलेसं,

महतमोहं कसिणं भयावहं ।

परियायधम्मं चऽमि रो य ए ज्जा,

वयाणि सीलाणि परोसहे य ॥११॥

अहिंस-सच्च च अतेणग च,

तत्तो य बंभं अपरिग्गहं च ।

पडि वज्जि या पंच महव्व या णि,

चरिज्ज धम्मं जिणवेसियं विळं ॥१२॥

सर्वोहि भूएहि दयाणुकंपी,
 खंतिकखमे संजयवं भयारी ।
 सावज्जजोगं परिवज्जयंतो,
 चरिज्ज भिक्खू सुसमाहिइंदिए ॥१३॥

कालेण कालं विहरेज्ज रट्ठे,
 बलाबलं जाणिय अप्पणो य ।
 सीहो व सट्ठेण न संतसेज्जा,
 वयजोग सुच्चा न असब्बमाहु ॥१४॥

उवेहमाणो उ परिच्चएज्जा,
 पियमप्पियं सव्व तितिकखएज्जा ।
 न सव्व सव्वत्थमिरोयएज्जा,
 न यावि पूयं गरहं च संजए ॥१५॥

अणेगछंदा इह माणवेहि,
 जे भावओ से पगरेइ भिक्खू ।
 भयभेरवा तत्थ उइंति भीमा,
 दिव्वा मणुत्सा अदुवा तिरिच्छा ॥१६॥

परीसहा दुव्विसहा अणेगे,
 सीयंति जत्था बहुकायरा नरा ।
 से तत्थ पत्ते न वहिज्ज भिक्खू,
 'संगामसीसे इव नागराया' ॥१७॥

सीओसिणा दंस—मसा य फासा,
 आयका विविहा फुसति देहं ।
 मकुपकुओ तत्यऽहियासहेज्जा,
 रयाइं खवेज्ज पुराकयाइं ॥१८॥

पहाय रागं च तहेव दोसं,
 मोहं चं भिक्खू सयय वियफखणो ।
 'भेरुल्ल' वाएण अकंपमाणो,
 परीसहे आयगुत्ते सहेज्जा ॥१९॥

अणुन्नए नावणए महेसी,
 न यावि पूय गरहं च सजए ।
 से उज्जुभावं पडिबज्ज सजए,
 निव्वाणमग विरए उवेइ ॥२०॥

अ र इ—र इ स हे प ही ण सं थ वे,
 विरए आयहिए पहाणवं ।
 प र म ढु प ए हि चि ढु ई,
 छिन्नतोए अममे अकिंचणे ॥२१॥

विवित्तसयणाइ मएज्ज ताई,
 नि रो व ले वा इ अ सं थ डा इं ।
 इसीहि चिण्णाइं महायसेहि,
 काएण फासेज्ज परीसहाइं ॥२२॥

स ज्ञा ण ना णो व ग ए महेसी,
 अणुत्तरं चरिअं धम्मसंचय ।
 अणुत्तरे नाणधरे जससी,
 ओभासई सूरिए वंजतलिकखे ॥२३॥

दुविह खवेऊण य पुण्णपावं,
 निरंगणे सव्वओ विप्पमुक्के ।
 तरित्ता "समुद्द व" महासवोहं,
 समुद्दपाले अपुणागमं गए ॥२४॥
 ॥ त्ति वेमि ॥

अह रहनेमिज्ज-नामं बाइसमं अज्झयणं

'सोरियपुरम्मि नयरे', आसि राया महिड्डिए ।
 'वसुदेव त्ति' नामेणं रायलक्खणसंजुए ॥१॥
 तस्स भज्जा दुवे आसी, 'रोहिणी-देवई' तहा ।
 तासि वोण्हं दुवे पुत्ता, इट्ठा 'राम-केसवा ॥२॥
 सोरियपुरम्मि नयरे, आसी राया महिड्डिए ।
 'समुद्दविजय नाम', रायलक्खणसंजुए ॥३॥

तस्स भज्जा 'मिया' नाम, तीसे पुत्तो महायसो ।
 भगवं 'अरिद्धनेमि ति' लोचनाहे दमोत्तरे ॥४॥
 सोऽरिद्धनेमिनामो उ, लपण-स्सर-सज्जुओ ।
 अट्ठसहस्स-नपणधरो, गोयमो फालगच्छवो ॥५॥
 वज्जरितह-संधयणो, समचउरसो शसोदरो ।
 तस्स 'रायमङ्किअं,' भज्जं जायइ केसवो ॥६॥
 अह सा रायवरफप्पा,' सुसोला चारुपेहणी ।
 सट्ठ-लपण-सपप्पा, विज्जुसोपामणिप्पमा ॥७॥
 अहाह जणओ तीने, वासुदेवं महिइड्यं ।
 इहागच्छुमारो, जा से फअं ददामिऽहं ॥८॥
 सट्ठोत्तहोहि ण्हियओ, कह-फोउय-मंगलो ।
 विट्ठजुयत्त-परिहिओ, आमरणोहि विमूत्तिओ ॥९॥
 मत्तं च गंधहत्थि च, वासुदेवस्स जेट्ठग ।
 आरुढो सोहए अहियं, तिरे घूढामणि जहा ॥१०॥
 अह ऊत्तिएण उत्तेण, घामराहि य सोहिओ ।
 दमारचक्केण य सो, सट्ठओ परिवारिओ ॥११॥
 चउरंगिणीए सेणाए, रइयाए जहफकम ।
 तुरियाण सप्पिनाएणं, विट्ठेणं गगणं फुत्ते ॥१२॥
 एयारिस्तीए इइढीए, जुइए उत्तमाइ य ।
 नियगाओ भवणाओ, निज्जाओ वण्हिपुंगवो ॥१३॥

અહ સો તત્થ નિજ્જંતો, દિસ્સ પાણે ભયવ્હુએ ।
 વાર્હેહિ પંજરેહિ ચ, સંનિરુદ્ધે સુદુષ્ણિએ ॥૧૪॥
 જીવિયતં તુ સંપત્તે, મંસદ્ધા ભવિષ્ણિએ ।
 પાસિત્તા સે મહાપન્ને, સારાહિ ઇળમન્નવવી ॥૧૫॥

મ૦ અરિષ્ઠનેમિ -

કસ્સ અદ્ધા ઇમે પાણા, એ સવ્વે સુહેસિણો ।
 વાર્હેહિ પંજરેહિ ચ, સન્નિરુદ્ધા ય અચ્છાહિ ? ॥૧૬॥

સારથિ:-

અહ સારહી તઓ મળહ, એ મદ્ધા ડ પાણિણો ।
 તુજ્ઞં વિવાહકજ્ઞમ્મિ, મોયાવેડ' બહું જળં ॥૧૭॥

મ૦ અરિષ્ઠનેમિ -

સોઠ્ઠણ તસ્સ વયણં, વહુપાણિ-વિણાસણં । -
 ચિત્તેહ સે મહાપન્નો, સાણુક્કોસે જિએ હિઓ ॥૧૮॥
 જહ મજ્ઞ કારણા એ, હમ્મંતિ સુવહૂ જિયા ।
 ન મે એયં તુ નિસ્સેસં, પરલોગે ભવિસ્સઈ ॥૧૯॥
 સો કુંડલાણ જુયલં, સુત્તગં ચ મહાયસો । -
 આમરણાણિ ય સઘ્વાણિ, સારહિસ્સ પણામએ ॥૨૦॥
 મળપરિણામો ય કઓ, દેવા ય જહોદ્ધયં સમોદ્ધણા ।
 સઘ્વિહ્હોએ સપરિસા, નિક્કમણં તસ્સ કાઠં જે ॥૨૧॥

देव-मणुस्सपरिवुडो, सीविया-रयणं तओ समारुडो ।
 निक्खमिय 'वारगाओ, रेवययम्मि' ठिओ भगवं ॥२२॥
 उज्जाणं संपत्तो, ओइण्णो उत्तमाउ सीयाओ ।
 साहस्सीए परिवुडो, अह निक्खमई उ चित्ताहि ॥२३॥
 अह से सुगंधगंधीए, तुरियं भउअकुचिए ।
 सयमेव लुंचई केसे, पचमुट्ठीहि समाहिओ ॥२४॥
 वासुदेवो य ण भणइ, लुत्तकेसं जिइंदियं ।
 इच्छियमणोरहं तुरियं, पावसु तं दमोसरा । ॥२५॥
 नाणेण दंसणेण च, चरित्तेण तहेव य ।
 छतीए मुत्तोए, वड्ढमाणो भवाहि य ॥२६॥
 एवं ते राम-केसवा, दसारा य वहु जणा ।
 अरिट्ठणेमि वदिता, अइगया वारगापुरि ॥२७॥
 सोऊण रायकन्ना, पच्चज्जं सा जिणस्स उ ।
 नीहासा य निराणंदा, सोणेण उ समुच्छिया ॥२८॥
 राईमई विचितेइ, धिरत्थु मम जीवियं ।
 जाअहं तेण परिच्चत्ता, सेय पच्चइउ मम ॥२९॥
 अह सा भमरसन्निमे, कुच्च-फणग-साहिए ।
 सयमेव लुंचई केसे, धिइमंता ववस्सिया ॥३०॥
 वासुदेवो य णं भणइ, लुत्तकेसं जिइंदियं ।
 संसारसागरं घोरं, तर कन्ने ! लहुं लहुं ॥३१॥

सा पव्वइया संती, पव्वावेसी तहिं बहं ।
 सयणं परियणं चेव, सीलवंता बहुस्सुया ॥३२॥
 गिरिरेवययं जंती, वासेणुल्ला उ अंतरा ।
 वासंते अंधयारंमि, अंतो लयणस्स सा ठिया ॥३३॥
 चीवराइं विसारंती, जहा जायत्ति पासिया ।
 रहनेमि भग्गचित्तो, पच्छा दिट्ठो य तीइ वि ॥३४॥
 भीया य सा तहिं दट्ठं, एगंते संजयं तयं ।
 बाहाहिं काउं संगोप्फं, वेवमाणी निसीयई ॥३५॥

रथनेमि -

अह सो वि रायपुत्तो, समुद्दविजयंगओ
 भीयं पवेवियं दट्ठं, इमं वक्कमुदाहरे ॥३६॥
 रहनेमी' अहं भद्दे !, सुरुवे ! चारुभासिणी ।
 ममं भयाहिं सुयणु, न ते पीला भविस्सइ ॥३७॥
 एहि ता भुजिमो भोए, माणुस्सं खु सुदुल्लहं ।
 भुत्तभोगा तओ पच्छा, जिणमग्ग चरिस्सिमो ॥३८॥

राजीमती:-

दट्ठण रहनेमि तं, भग्गजोयं-पराजियं ।
 राईमई असंभंता, अप्पाणं संवरे ताहिं ॥३९॥
 अह सा रायवरकन्ना, सुद्धिया नियमव्वए ।
 जाई कुलं च सीलं च ! रक्खमाणी तयं वए ॥४०॥

जइऽसि खवेण वेसमणो, ललिएण नल-कूबरो ।
 तहा वि ते न इच्छामि, जइऽसि सक्खं पुरंदरो ॥४१॥
 पक्खंदे जलिमं जोइं, धूमकेउं दुरासयं ।
 नेच्छंति वंतयं भोत्तुं, कुले जाया अगंधणे ॥
 धिरत्थु तेऽजसोकामी ! जो तं जीवियकारणा ।
 घंतं इच्छसि आवेउं, सेयं ते मरणं भवे ॥४२॥
 अहं च भोगरायस्स, तं च सि अंधगवण्हिणो ।
 मा कुले गंधणा होमो, संजमं निहुओ घर ॥४३॥
 जइ तं काहिसि भावं, जा जा दिच्छसि नारिओ ।
 वायाइद्धो व्व हूओ, अट्ठिअप्पा भविस्ससि ॥४४॥
 गोवालो मंडवालो वा, जहा तद्दव्वऽणिस्सरो ।
 एवं अणिस्सरो तं पि, सामण्णस्स भविस्ससि ॥४५॥
 कोहं माणं निगिण्हित्ता, मायं लोभं च सव्वसो ।
 इंदियाइं वसे काउं, अप्पाणं उव्वसंहरे ॥

रथनेमि -

तीसे सो वयणं सोच्चा, संजयाए सुभासियं ।
 अंकुसेण जहा नागो, धम्मे संपडिवाइओ ॥४६॥
 मणगुत्तो वयगुत्तो, कायगुत्तो जिहंदिए ।
 सामण्णं निच्चलं फासे, जावज्जीवं दट्ठव्वओ ॥४७॥

उगां तवं चरित्ताणं, जाया दुण्णि वि केवली ।
 सब्बं कम्मं खवित्ताणं, सिद्धिं पत्ता अणुत्तरं ॥४८॥
 एवं करेति संबुद्धा, पंडिया पवियवखणा ।
 विणियट्ठंति भोगेसु, जहा सो पुरिसोत्तमो ॥४९॥
 ॥ ति बेमि ॥

अह केसिगोयमिज्ज-नामं तेवीसइमं अज्झयणं

जिणे पासित्ति नामेण, अरहा लोगपूइओ ।
 संबुद्धप्पा य सब्बसू, धम्मतित्थयरे जिणे ॥१॥
 तस्स लोगपईवस्स, आसि सीसे महायसे ।
 केसी कुमारसमणे, विज्जाचरणपारए ॥२॥
 ओहिताणसुए बुद्धे, सीससंघ-समाउले ।
 गामाणुगामं रीयते, सार्वत्थि पुरमाणए ॥३॥
 तिदुयं नाम उज्जाणं, तंमि नगरमंडले ।
 फासुए सिज्जसंथारे, तत्थ वासमुवाणए ॥४॥
 अह तेणेव कालेणं धम्मतित्थयरे जिणे ।
 भगवं बद्धमाणि त्ति, सब्बलोगंमि विस्सुए ॥५॥

तस्स लोणपईवस्स, आसि 'सीसे महायसे ।
 भगव गोयमे नामं, विज्जाचरणपारए ॥६॥
 वारसंगविऊ बुद्धे, सीससघ-समाउले ।
 गामाणुगामं रोयते, सो वि सावत्थिमागए ॥७॥
 "कोट्ठगं" नाम उज्जाणं, तम्मि नगरमंडले ।
 फासुए सिज्जसंथारे, तत्थ वासमुवागए ॥८॥
 केसी कुमारसमणे, गोयमे य महायसे ।
 उभओ वि तत्थ विहरिसु, अल्लीणा सुसमाहिया ॥९॥
 उभओ सीससंघाण, संजयाणं तवस्तिणं ।
 तत्थ चित्ता समुप्पन्ना, गुणवंताण ताइण ॥१०॥
 केरिसो वा इमो धम्मो ? इमो धम्मो व केरिसो ?
 आयारधम्मपणिही, इमा वा सा व केरिसी ? ॥११॥
 चाउज्जामो य जो धम्मो, जो इमो पंचसिक्खिओ ।
 देसिओ वद्धमाणेण, पासेण य महामुणी ॥१२॥
 अचेलओ य जो धम्मो, जो इमो संतरुत्तरो ।
 एग कज्ज-पवन्नाणं, विसेसे किं नु कारणं ? ॥१३॥
 अह ते तत्थ सीसाणं, विन्नाय पवितक्कियं ।
 समागमे कयमई, उभओ केसि-गोयमा ॥१४॥
 गोयमे पडिखवन्नू, सीससंघ-समाउले ।
 जेट्ठं कुलमवेषखंतो, "तिट्ठयं" वणमागओ ॥१५॥

केसी कुमारसमणे, गोयमं दिस्समागयं ।
 पडिरुवं पडिर्वत्ति, सम्मं संपडिवज्जइ ॥१६॥
 पलालं फासुयं तत्थ, पंचमं कुसतणाणि य ।
 गोयमस्स निसेज्जाए, खिप्पं संपणामए ॥१७॥
 केसी कुमारसमणे, गोयमे य महायसे ।
 उभयो निसण्णा सोहंति, चद-सूरसमप्यभा ॥१८॥
 समागया बहु तत्थ, पासंडा कोउगा मिया ।
 गिहत्थाणं अणेगाओ, साहस्सीओ समागया ॥१९॥
 देव-दाणव-गंधच्चा, जक्ख-रक्खस-किन्नरा ।
 अदिस्साणं च भूयाणं, आसी तत्थ समागमो ॥२०॥
 पुच्छामि ते महाभाग । केसी गोयममब्बवी ।
 तओ केसिं बुवंतं तु गोयमो - इणमब्बवी ॥२१॥
 पुच्छ भंते । जहिच्छं ते, केसिं गोयममब्बवी ।
 तओ केसिं अणुप्पाए, गोयमं इणमब्बवी ॥२२॥
 (१) चाउज्जामो य जो धम्मो, जो इमो पंचसिक्खिओ ।
 देसिओ वद्धमाणेण, पासेण य महामुणी ! ॥२३॥
 एगकज्जपवन्नाणं विसेसे किं नु कारणं ?
 धम्मे दुविहे मेहावी, कहं विप्पच्चओ न ते ? ॥२४॥
 तओ केसिं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ।
 पप्पा समिक्खए धम्मं, तत्तं तत्तविणिच्छियं ॥२५॥

पुरिमा उज्जुजडा उ, वंजडा य पच्छिमा ।
 मज्झिमा उज्जुपत्ता उ, तेण धम्मो बुहा कए ॥२६॥
 पुरिमाणं दुव्विसुज्झो उ, चरिमाणं दुरणुपालओ ।
 कप्पो मज्झिमगाणं तु, सुविसुज्झो सुपालओ ॥२७॥
 साहु गोयम । पत्ता ते, छिन्नो मे ससओ इमो ।
 अन्नो वि संमओ मज्झं, त मे कहसु गोयमा । ॥२८॥
 (२) अचेलगो य जो धम्मो, जो इमो सतरत्तरो ।
 वेसिओ वट्ठमाणेण, पासेण य महामुणी ! ॥२९॥
 एगकज्जपवस्साणं, विसेसे किं नु कारणं ।
 लिंगे दुविहे मेहावी, कहं विप्पच्चओ न ते ? ॥३०॥
 केसिमेवं वुवंतं तु, गोयमो इणमव्ववी ।
 विस्त्राणेण समागम्म, धम्मसाहणमिच्छियं ॥३१॥
 पच्चयत्थं च लोगस्स, नाणाविहविगप्पणं ।
 जत्तत्थं गहणत्थं च, लोगे लिंगपओयणं ॥३२॥
 अहं भवे पइत्ता उ, मोक्खसङ्गमयसाहणा ।
 नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं चेव निच्छए ॥३३॥
 साहु गोयम । पत्ता ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
 अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा । ॥३४॥
 (३) अणेगाण सहस्साणं, मज्झे चिट्ठसि गोयमा !
 ते य ते अभिगच्छन्ति, कहं ते निज्जया तुमे ? ॥३५॥

एगे जिए जिया पच, पंच जिए जिया दस ।
 दसहा उ जिणित्ताण, सव्वसत्तु जिणामहं ॥३६॥
 सत्तु य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
 तओ केसि वुवत्तं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥३७॥
 एगप्पाअजिए सत्तु, कसाया इदियाणि य ।
 ते जिणित्तु जहानाय, विहरामि अहं मुणी ॥३८॥
 साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमे ।
 अन्नो वि संसओ मज्झं, त मे कहसु गोयमा ! ॥३९॥
 (४) दीसति बहवे लोए, पासवद्धा सरीरिणो ।
 मुक्कपासो लहुब्भूओ, कहं तं विहरसि ? मुणी ! ॥४०॥
 ते पासे सव्वसो छित्ता, निहंतूण उवायओ ।
 मुक्कपासो लहुब्भूओ, विहरामि अहं मुणी ! ॥४१॥
 पासाय इइ के वुत्ता ? केसी गोयममब्बवी ।
 केसिमेवं वुवत्तं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥४२॥
 रागहोसादओ तिब्बा, नेहपासा भयंकरा ।
 ते छिदित्तु जहानाय, विहरामि जहक्कम ॥४३॥
 साहु गोयम ! ते, पन्ना छिन्नो मे संसओ इमो ।
 अन्नो वि संसओ मज्झं, त मे कहसु गोयमा ! ॥४४॥
 (५) अंतोहिययसंभूया, लया चिट्ठइ गोयमा ।
 फलेइ विसभक्खीणी, सा उ उद्धरिया कहं ? ॥४५॥

त लय सज्जसो छित्ता, उद्धरित्ता समूलियं ।
 विहरामि जहानायं, मुक्कोमि विसमवखणं ॥४६॥
 लया य इदं का वुत्ता ? केसी गोयममज्जवी ।
 केसिमेवं वुवतं तु, गोयमो इणमज्जवी ॥४७॥
 भवतण्हा लया वुत्ता, भीमा भीमफलोदया ।
 तमुच्छित्ता जहानायं, विहरामि जहासुहं ॥४८॥
 साहु गोयम । पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
 अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ॥४९॥
 (६) संपज्जलिया घोरा, अग्गी चिट्ठइ गोयमा ।
 जे डहंति सरीरत्था, कहं विज्झाविद्या तुमे ? ॥५०॥
 महामेहप्पसूयाओ, गिज्झ वारि जलुत्तमं ।
 सिचामि सययं तेज्जं, सित्ता नो व डहति मे ॥५१॥
 अग्गी य इदं के वुत्ता ? केसी गोयममज्जवी ।
 केसिमेव वुवतं तु, गोयमो इणमज्जवी ॥५२॥
 कसाया अग्गिणो वुत्ता, सुय-सील-तवो-जलं ।
 सुयधारामिहया संता, मिन्ना हु न डहति मे ॥५३॥
 साहु गोयम । पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
 अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा । ॥५४॥
 (७) अयं साहसिओ भीमो, दुट्ठस्सो परिघावई ।
 जंति गोयम । आरुद्धो, कहं तेण न हीरसि ? ॥५५॥

पधावंतं निगिण्हामि, सुयरस्सीसमाहियं ।

न मे गच्छइ उम्मगां, मगां च पडिवज्जइ ॥५६॥

आसे य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।

केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥५७॥

मणो साहसिओ मीमो, दुट्ठस्सो परिघावइ ।

तं सम्मं तु निगिण्हामि, धम्मसिक्खाइ कंयगं ॥५८॥

साहु गोयम ! पत्ता ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।

अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा । ॥५९॥

(८) कुप्पहा बहवो लोए, जेहि नासंति जंतुणो ।

अट्ठाणे कह वट्ठंतो, तं न नाससि ? गोयमा । ॥६०॥

जे य मग्गेण गच्छंति, जे य उम्मगपट्ठिया ।

ते सव्वे वेइया मज्झं, तं न नस्सामहं सुणी ! ॥६१॥

मग्गे य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।

केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥६२॥

कुप्पवयणपासंडी, सव्वे उम्मगपट्ठिया ।

सम्मगां तु जिणक्खायं, एस मग्गे हि उत्तमे ॥६३॥

साहु गोयम ! पत्ता ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।

अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा । ॥६४॥

(९) महाउदगवेगेण, बुज्झमाणाण पाणिणं ।

सरणं गइ पइट्ठा य, दीवं कं मज्झसि ? सुणी ! ॥६५॥

अत्थि एणो महादीवो, वारिमज्झे महासओ ।

महाउदवेगस्स, गई तत्थ न विज्जइ ॥६६॥

दीवे य इइ के वुत्तो ? केसी गोयमव्ववी ।

केसिमेवं वुवत्तं तु, गोयमो इणमव्ववी ॥६७॥

जरा-मरणवेगेणं, बुज्झमाणाण पाणिणं ।

घम्मो दीवो पइट्ठा य, गई सरणमुत्तमं ॥६८॥

साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे ससओ इमो ।

अओ वि ससओ मज्झं, त मे कहसु गोयमा ! ॥६९॥

(१०) अणवसि महोहसी, नावा विपरिधावइ ।

जंसि गोयम ! आरुढो, कहं पारं गमिस्ससि ? ॥७०॥

जा उ अत्साविणी नावा, न सा पारस्स गामिणी ।

जा निरत्साविणी नावा, सा उ पारस्स गामिणी ॥७१॥

नावा य इइ का वुत्तो ? केसी गोयमव्ववी ।

केसिमेवं वुवत्तं तु, गोयमो इणमव्ववी ॥७२॥

सरीरमाहु नाव त्ति, जीवो वुच्चइ नाविओ ।

संसारो अणवो वुत्तो, जं तरति महेसिणो ॥७३॥

साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।

अन्नो वि ससओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ॥७४॥

(११) अधयारे तमे घोरे, चिट्ठंति पाणिणो बहू ।

को करिस्सइ उज्जीयं ? सब्बलोयम्मि पणिणं ॥७५॥

उग्गओ विमलो भाणू, सब्वलोयपभंकारो ।
 सो करिस्सइ उज्जोयं, सब्वलोयमि पाणिण ॥७६॥
 भाणू य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
 केसिमेवि बुवंत तु, गोयमो इणमब्बवी ॥७७॥
 उग्गओ खीणसंसारो, सब्वन्नू जिणभक्खरो ।
 सो करिस्सइ उज्जोयं, सब्वलोयमि पाणिणं ॥७८॥
 साहु गोयम ! पत्ता ते, छिन्नो मे संसओ इसो ।
 अत्तो वि संसओ मज्झं, त मे कहसु गोयमा ! ॥७९॥
 (१२) सारीरमाणसे दुक्खे, वज्झमाणाण पाणिणं ।
 खेमं सिवमणावाहं, ठाणं किं मज्झसे मुणी ? ॥८०॥
 अत्थि एगं धुवं ठाणं, लोगगंमि दुरारुहं ।
 जत्थ नत्थि जरा मच्चू, वाहिणो वैयाणा तहा ॥८१॥
 ठाणे य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
 केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥८२॥
 निब्बाणं ति अवाहं ति, सिद्धी लोगगमेव य ।
 खेम सिवं अणावाहं, जं चरंति महेसिणो ॥८३॥
 तं ठाणं सासयं वासं, लोयगंमि दुरारुहं ।
 जं संपत्ता न सोयंति, भवोहंतकरा मुणी ! ॥८४॥
 साहु गोयम ! पत्ता ते, छिन्नो मे संसओ इसो ।
 न मो ते संसयातीत ! सब्वसुत्तमहोदही ॥८५॥

एव तु ससए छिन्ने ! केसी घोरपरक्कमे ।
 अभिवदित्ता सिरसा, गोयम तु महायसं ॥८६॥
 पंचमहव्वयधम्म, पडिवज्जइ भावओ ।
 पुरिमस्स पच्छिममि, मग्गे तत्थ सुहावहे ॥८७॥
 केसीगोयमओ निच्च, तमि आसि समागमे ।
 सुयसीलसमुबकरिसो, महत्थत्थविणिच्छओ ॥८८॥
 तोसिया परिसा सव्वा, समग्ग समुवट्ठिया ।
 सयुया ते पसीयतु, भयव केसिगोयमे ॥८९॥
 ॥ त्ति वेमि ॥

अह पवयणमाया नाअं चउविसइमं अज्झयणं

अट्ठ पवयणमायाओ, समिई गुत्ती तहेव य ।
 पंचेव य समिईओ, तओ गुत्ती उ आहिया ॥१॥
 इरिया^१ भासे^२ सणा^३ दाणे^४, उच्चारे^५ समिई इय ।
 मणगुत्ती^६ वयगुत्ती^७, कायगुत्ती^८ य अट्ठमा ॥२॥
 एयाओ अट्ठ समिईओ, समासेण वियाहिया ।
 डुवालसगं जिणक्खायं, माय जत्थ उ पवयण ॥३॥

(१) आलंबणेण^१ कालेण^२, मग्गेण^३ जयणाइ^४ य ।

चउकारणपरिसुद्धं, सजए इरिय रिए ॥४॥

तत्थ आलंबणं नाणं^१, दसणं^२ चरणं^३ तथा ।

काले य दिवसे वुत्ते, मग्गे उप्पहवज्जिए ॥५॥

दव्वओ^१ खेत्तओ^२ चेव, कालओ^३ भावओ^४ तथा ।

जयणा चउन्विहा वुत्ता, तं मे कित्तयओ सुण ॥६॥

दव्वओ चक्खुसा पेहे, जुगमित्तं च खित्तओ ।

कालओ जाव रीइज्जा, उवउत्ते य भावओ ॥७॥

इंदियत्थे विवज्जित्ता, सज्झायं चेव पंचहा ।

तम्मूत्ती तप्पुरक्कारे, उवउत्ते रिय रिए ॥८॥

(२) कोहे^१ माणे^२ य मायाए^३, लोभे^४ य उवउत्तया ।

हासे^५ भए^६ मोहरिए^७, विकहासु^८ तहेव य ॥९॥

एयाइं अट्ठठाणाइं, परिवज्जित्तु संजए ।

असावज्जं भिय काले, भासं भासिज्ज पन्नवं ॥१०॥

(३) गवेसणाए^१ गहणे^२ य, परिभोगेसणा^३ य जा ।

आहारो^१ वहि^२ सेज्जाए^३, एए तिसि विसोहए ॥११॥

उगमुप्पायण पढमे, बीए सोहेज्ज एसण ।

परिभोयम्मि चउक्क, विसोहेज्जं जयं जई ॥१२॥

(४) ओहोवहो^१ वग्गहिय^२, भंदगं दुविहं मुणी ।

गिण्हंतो निक्खवतो य, पउंजेज्ज इमं विहिं ॥१३॥

चक्खुसा पडिलेहिता, पमज्जेज्ज जय जई ।
 आइए निविखवेज्जा वा, दुहुओऽवि समिए सया ॥१४॥
 (५) उच्चार पासवणं, खेलं सिघाण-जल्लियं ।
 आहारं उवहि देहं, अन्नं वा वि तहाविहं ॥१५॥
 अणावायमसंलोए^१, अणावाए चेव होइ संलोए^२ ।
 आवायमसंलोए^३, आवाए चेव संलोए^४ ॥१६॥
 अणावायमसलोए , प र र स ऽ णु व चा इ ए ।
 समे अज्झुसिरे यावि, अचिरकालकयम्मि य ॥१७॥
 वित्थिण्णे दूरमोगाढे, नासन्ने बिलवज्जिए ।
 तसपाणबीयरहिए, उच्चाराईणि वोसिरे ॥१८॥
 एयाओ पंच समिईओ, समासेण वियाहिया ।
 इत्तो य तओ गुत्तीओ, वुच्छामि अणुपुच्चसो ॥१९॥
 (६) सच्चा^१ तहेव मोसा^२ य, सच्चामोसा^३ तहेव य ।
 चउत्थी असच्चमोसा^४ य, मणगुत्ती चउच्चिहा ॥२०॥
 संरंभ-समारभे, आरंभे य तहेव य ।
 मणं पवत्तमाणं तु नियत्तिज्ज जयं जई ॥२१॥
 (७) सच्चा^१ तहेव मोसा^२ य, सच्चामोसा^३ तहेव य ।
 चउत्थी असच्चमोसा^४ य, वइगुत्ती चउच्चिहा ॥२२॥
 संरंभ-समारभे, आरंभे य तहेव य ।
 वयं पवत्तमाणं तु, नियत्तिज्ज जयं जई ॥२३॥

(८) ठाणे निसीयणे चेव, तहेव य तुयट्टणे ।
 उल्लंघण-पल्लंघणे, इंदियाण य जुजणे ॥२४॥
 संरंभ-समारंभे, आरंभे य तहेव य ।
 कायं पवत्तमाणं तु, नियत्तिज्ज जयं जई ॥२५॥
 एयाओ णच समिईओ, चरणस्स य पवत्तणे ।
 गुत्ती नियत्तणे वुत्ता, असुमत्थेसु सच्चसो ॥२६॥
 एसा पवयणमाया, जे सम्मं आयरे मुणी ।
 सो खिप्पं सच्चसंसारा, विप्पमुच्चइ पंडिए ॥२७॥
 ॥ त्ति बेमि ॥

अहं जन्मइज्ज-नामं पंचविंसइमं अज्झयणं

माहणकुलसभूओ, आसि विणो महायसो ।
 जायाई जमजज्जमि, "जयघोसि त्ति" नामओ ॥१॥
 इदियग्गामनिगाही, मग्गगामी महामुणी ।
 गामाणुगामं रीयंते, पत्तो वाणारसिं पुंरि ॥२॥-
 'वाणारसीए' बहिया, उज्जाणमि मणोरमे ।
 फासुए सेज्जसथारे, तत्थ वासमुवागए ॥३॥-

अह तेणेव कालेणं, पुरीए तत्थ माहणे ।
 "विजयघोसि त्ति" नामेण, जन्न जयइ वेयवी ॥४॥
 अह से तत्थ अणगादे, मासवखमणपारणे ।
 विजयघोसस्स जन्नमि, भिक्खस्सट्ठा उवट्ठिए ॥५॥

यप्पा विजयघोपः—

समुत्थं तंहि सत्त, जायगो पडिसेहए ।
 न ह्नु दाहामि ते भिक्खं, भिक्खू । जायाहि अन्नओ ॥६॥
 जे य वेयविज्ज विप्पा, जन्नट्ठा य जे दिया ।
 जोइसंगविज्ज जे य, जे य धम्माण पारगा ॥७॥
 जे समत्था समुद्धत्तं, परमप्पाणमेव य ।
 तेसि अन्नमिण देय, ओ भिक्खू । सत्त्वकामिय ॥८॥
 सो तत्थ एव पडिसिद्धो, जायगेण महामुणी ।
 न वि रुद्धो न वि तुद्धो, उत्तमद्वगवेसओ ॥९॥
 नन्नद्धं पाजहेस वा, नवि निच्चाहणाय वा ।
 तेमि विमोक्खणट्ठाण, इम वयणमच्चवी ॥१०॥

जयघोपमुनिः—

नवि जाणसि वेयमुहं^१, नवि जन्नाण ज मुहं^२ ।
 नक्खत्ताण मुहं^३ ज च, ज च धम्माण वा मुहं^४ ॥११॥
 जे समत्था समुद्धत्तं, परमप्पाणमेव^५ य ।
 न ते तुम विद्याणासि, अह जाणासि तो भण ॥१२॥

यष्टा विजयघोषः—

तस्सक्खेवपमुक्खं तु, अचयंतो तहि दिओ ।
 सपरिसो पंजली होउं, पुच्छई तं महामुणि ॥१३॥
 वेयाणं च मुहं बूहि^१, बूहि जन्नाण जं मुहं^२ ।
 नक्खत्ताण मुह बूहि^३, बूहि धम्माण वा मुहं^४ ॥१४॥
 जे समत्था समुद्धत्तं, परमप्पाणमेव^५ य ।
 एयं मे संसयं सव्वं, साहू ! कहय पुच्छिओ ॥१५॥

जयघोषमुनिः—

अग्गिहुत्तमुहा वेया^१, जल्लट्ठी वेयसा मुहं^२ ।
 नक्खत्ताण मुहं चंदो^३, धम्माणं कासवो मुहं^४ ॥१६॥
 जहा चंदं गहाईया, चिट्ठंति पजलीउडा ।
 वंदमाणा नमंसंता, उत्तमं मणहारिणो ॥१७॥
 अजाणगा जल्लवाई, विज्जामाहणसंपया ।
 गूढा सज्झायतवसा, “भासच्छन्ना इवग्गिणो” ॥१८॥
 जो लोए वंमणो वुत्तो, अग्गी वा महिओ जहा ।
 सया कुसलसंदिट्ठं, तं वयं बूम माहणं ॥१९॥
 जो न सज्जइ आगंतुं, पव्वयंतो न सोयइ ।
 रमइ अज्जवयणंमि, तं वयं बूम माहणं ॥२०॥
 जायरुवं जहामट्ठं, निद्धंतमलपावण ।
 राग-दोस-भयाईयं, तं वयं बूम माहणं ॥२१॥

तवस्तिथं कितं दंतं, अवचिय--मंससोणिय ।
 सुध्वय पत्तनिध्वाणं, तं वयं वूम माहणं ॥२२॥
 तसपाणे वियाणेत्ता, सगहेण यथावरे ।
 जो न हिंसइ तिविहेण, तं वयं वूम माहणं ॥२३॥
 कोहा वा जइ वा हासा, लोहा वा जइ वा भया ।
 मुत्तं न वयई जो उ, त वयं वूम माहणं ॥२४॥
 चित्तमतमचित्त वा, अप्प या जइ वा बहुं ।
 न गिण्हइ भदत्त जो, तं वयं वूम माहणं ॥२५॥
 दिव्व-माणस्स-तेरिच्छ, जो न सेवइ मेह्ण ।
 मणसा कायवक्केण, त वयं वूम माहणं ॥२६॥
 जहा पोम जले जाय, नोवलिप्पइ वारिणा ।
 एव भलित्तो कामेहि, त वयं वूम माहणं ॥२७॥
 अलोलुय मुहाजीवि, अणगारं अकिच्चणं ।
 असंसत्तं गिहत्येसु, तं वयं वूम माहणं ॥२८॥
 जहित्ता पुव्वसजोगं, नाइसंगे य वंधवे ।
 जो न सज्जइ भोगेसु, तं वयं वूम माहणं ॥२९॥
 पसुबंधा सच्चवेया, जट्टं च पावकम्मणा ।
 न तं तायति दुस्सील, कम्माणि वलवन्ति ह ॥३०॥
 न वि मुडिण्ण समणो, न ओकारेण वंसणो ।
 न मूणी रणवासेण, कुसचीरेण न तावसो ॥३१॥

समयए समणो होइ, बंभचेरेण बंभणो ।
 नाणेण उ मूणी होइ, तवेण होइ तावसो ॥३२॥
 कम्मूणा बंभणो होइ, कम्मूणा होइ खत्तिमो ।
 बइस्सो कम्मूणा होइ, सुद्धो हवइ कम्मूणा ॥३३॥
 एए पाउकरे बुद्धे, जेहिं होइ सिणायमो ।
 सव्वकम्मविणिम्मक्क, तं वयं बूम माहण ॥३४॥
 एवं गुणसमाउत्ता, जे भवति दिउत्तमा ।
 ते समत्था उ उद्धत्तं, परमप्पाणमेव य ॥३५॥

यष्टा विजयघोषः—

एवं तु संसए छिन्ने, विजयघोसे य माहणे ।
 समुदाय तमो तं तु, जयघोस महामणि ॥३६॥
 तुद्धे य विजयघोसे, इणमुदाहु कयजलो ।
 माहणत्त जहामूय, सुद्धं मे उवदसिय ॥३७॥
 तुब्भे जइया जन्नाणं, तुब्भे वेयविऊ विऊ ।
 जोइसगविऊ तुब्भे, तुब्भे धम्माण पारगा ॥३८॥
 तुब्भे समत्था उद्धत्तं, परमप्पाणमेव य ।
 तमणुग्गह करेहुम्मह, भिक्खेण भिक्खुउत्तमा । ॥३९॥

जयघोषमुनि —

न कज्ज मज्झ भिक्खेणं, छिप्पं निक्खमसू दिया ।
 मा भमिहिंसि मयावट्ठे, घोरे संसारसागरे ॥४०॥

उबलेवो होइ भोगेसु, अभोगी नोवलिप्पई ।

भोगी भमइ संसारे, अभोगी विप्पमुच्चई ॥४१॥

“उल्लो सुवको य दो छूढा, गोलया महियामया ।

दो वि आवडिया कुइडे, जो उल्लो सोऽत्थ लगइ ॥४२॥

एव लग्गंति दुम्मेहा, जे नरा कामलालसा ।

विरत्ता उ न लग्गंति, जहा से सुवकगोसए ॥४३॥

एव से विजयघोसे, जयघोसस्स अंतिए ।

अणगारस्म निवपतो, धम्मं सोच्चा अणुत्तर ॥४४॥

खविता पुच्चकम्माइ, संजमेण तवेण य ।

जयघोस-विजयघोसा, सिद्धिं पत्ता अणुत्तर ॥४५॥

॥ति वेमि ॥

अह सामायारी नामं छव्वीसइमं अज्झयणं

सामायारि पवक्खामि, सत्त्ववुक्खविमोक्खणि ।

जं चरित्ताण निग्गया, तिग्गा ससारसागरं ॥१॥

पढमा आवस्सिया नाम, विइया य निसीहिया ।

आपुच्छणा य तइया, चउत्थी पडिपुच्छणा ॥२॥

पंचमी छंदणा नामं, इच्छाकारो य छट्ठिआ ।

सत्तमा मिच्छाकारो य, तहक्कारो य अट्ठमा ॥३॥

अब्भुट्ठाणं च नवमा, दसमा उवसंपया ।
एसा दसंगा साहूणं, सामायारी पवेइया ॥४॥

समाचारीस्वरूपम्:-

गमणे आवस्सियं^१ कुज्जा, ठाणे कुज्जा निसीहियं^२ ।
आपुच्छणं^३ सयंकरणे, परकरणे पडिपुच्छणं^४ ॥५॥
छंदणा^५ दव्वजाएणं, इच्छाकारो^६ य सारणे ।
मिच्छाकारो^७ य निदाए, तहक्कारो^८ पडिस्सुए ॥६॥
अब्भुट्ठाणं^९ गुरुपूया, अच्छणे^{१०} उवसंपदा ।
एवं दुपंचसंजुत्ता, सामायारी पवेइया ॥७॥

आमण्ये स्थितानां संक्षिप्ता दिनचर्या -

पुव्विल्लमि चउत्तमाए, आइच्चमि समुट्ठिए ।
भंडयं पडिलेहित्ता, वंदित्ता य तओ गुरुं ॥८॥
पुच्छिज्जा पजलीउडो, किं कायण्व मए इह ।
इच्छं निओइउं भते । वेयावच्चे व सज्झाए ॥९॥
वेयावच्चे निउत्तेणं, कायण्वं अगिलायओ ।
सज्झाए वा निउत्तेण, सज्जदुक्खविमुक्खणे ॥१०॥
दिवसस्स चउरो भागे, कुज्जा भिक्खू वियक्खणो ।
तओ उत्तरगुणे कुज्जा, दिणभागेसु चउसु वि ॥११॥
पढमे पोरिंसि सज्झायं, वीये ज्ञाणं क्षियायई ।
तइयाए भिक्खायरियं, पुणो चउत्थोइ सज्झायं ॥१२॥

पौरुषी-प्रमाणम् -

आसाढे मासे वुपया, पोसे मासे चउप्पया ।
चित्तासोएसु मासेसु, तिप्पया हवइ पोरिसी ॥१३॥
अंगुल सत्तरत्तेणं, पक्खेणं च दु अंगुलं ।
वड्ढए हायए वावी, मासेणं चउरंगुलं ॥१४॥

क्षयतिथीनां मासा -

आसाढ^१ बहुलपक्खे, मद्दवए^२ कत्तिय^३ य पोसे^४ य ।
फग्गुण^५ वइसाहेसु^६ य, बोद्धव्वा ओमरत्ताओ ॥१५॥

पादोनपौरुषी-प्रमाणम् -

जेट्टामूले आसाढ-सावणे, छहिं अंगुलेहिं पडिलेहा ।
अट्ठहिं विइय-तियमि, तइए दस अट्ठहिं चउत्थे ॥१६॥

आमण्ये स्थितानां संक्षिप्ता रात्रिचर्या -

रत्ति पि चउरो भागे, भिवखू कुज्जा वियक्खणो ।
तओ उत्तरगुणे कुज्जा, राइभाएसु चउसु वि ॥१७॥
पढमे पेरित्ति सज्जायं, बीये ज्ञाण क्षियायइं ।
तइयाए निदामोक्खं तु, चउत्थी मुज्जो वि सज्जायं ॥१८॥

रात्रौ स्वाध्यायसमयनिरीक्षणम् -

अं नेई जया रत्ति, नक्खत्तं तमि नहचउव्वाए ।
संपत्ते विरमेज्जा, सज्जायं पओसकालंमि ॥१९॥

तस्मेव य नषखते, गयणचउब्भागसावसेसमि ।

वेरत्तिर्यपि कालं, पडिलेहिक्ता मुणी कुब्जा ॥२०॥

शामण्ये स्थिताना विशदा दिनचर्याः—

पुज्विल्लमि चउब्भाए, पडिलेहिक्ताण भंडयं ।

गुरु वदित्तु सज्झाय, कुब्जा दुक्खविमोक्खाणि ॥२१॥

पोरिसीए चउब्भाए, वदित्ताण तओ गुरु ।

अपडिक्कमित्ता कालस्स, भायण पडिलेहए ॥२२॥

प्रतिलेखनाविधि —

मुहपोत्तिं पडिलेहिक्ता, पडिलेहिज्ज गोच्छग ।

गोच्छगलइयंगुलिओ, वत्थाइं पडिलेहए ॥२३॥

उड्ढ थिर अत्तुरिय, पुप्प ता वत्थमेव पडिलेहे^१ ।

तो बिइयं पप्फोडे^२, तइयं च पुणो पमज्जिज्जा^३ ॥२४॥

अणच्चाविय अवलिय, अणाणुबधिममोसलिं चेव ।

छप्पुरिमा नव खोड़ा, पाणी-पाणिविसोहणं ॥२५॥

प्रतिलेखना-दूषणानि —

आरभडा^१ सम्मद्दा,^२ वज्जेयज्वा य मोसली^३ तइया ।

पप्फोडणा^४ चउत्थी, विक्खित्ता^५ वेइया छट्ठी^६ ॥२६॥

पसिडिल-पलब-लोला, एगा मोसा अणेगरूवधुणा ।

कुणइ पमाणपमाय, संकिय गणणोवगं कुब्जा ॥२७॥

अणूणा^१ इरित्त^२ पडिलेहा, अविचच्चासा^३ तहेव य ।

पढमं पयं पसत्थं, सेसाणि य अप्पसत्थाइं ॥२८॥

प्रतिलेखना समये नैतत्करणीयम् —

पडिलेहणं कुणंतो, सिहो कह कुणइ जणवयकहं वा ।

देइ ब पच्चक्खणं, दाएइ सय पडिच्छइ वा ॥२९॥

पुढवी आजक्काए, तेउ-वाऊ-वणस्सइ-तसाणं ।

पडिलेहणापमत्तो, छहं पि विराहओ होइ ॥३०॥

पुढवी आजक्काए, तेऊ-वाऊ-वणस्सइ-तसाणं ।

पडिलेहणाआजत्तो, छहं संरक्खओ होइ ॥३१॥

तइयाए पोरिसीए, भत्तं पाणं गवेसए ।

छहं अन्नयरारंमि, कारणंमि समुट्ठिए ॥३२॥

वेयण^१ वेयावच्चे^२, इरियट्ठाए^३ य संजमट्ठाए^४ ।

तह पाणवत्तियाए^५, छट्ठ पुण धम्मचित्ताए^६ ॥३३॥

निगंथो धिइमतो, निगंथी वि न करेज्ज छाह चेव ।

ठाणोहि उ इमेहि, अणइक्कमणाइ से होइ ॥३४॥

आयंके^१ उवसग्गे^२, तित्तिक्खया वंभचेरगुत्तीसु^३ ।

पाणिदया^४ तवहेउ^५, सरीरवुक्खेयणट्ठाए^६ ॥३५॥

अवसेसं भंडग गिज्जा, चक्खुसा पडिलेहए ।

परमद्वजोयणाओ, विहार विहारए भुणी ॥३६॥

चउत्थीए पोरिसीए, निबिखवित्ताण भायणं ।

सज्झायं तओ कुज्जा, सब्बभावविभावणं ॥३७॥

पोरसीए चउन्माए, वंदित्ताण तओ गुरुं ।

पडिक्कमित्ता कालस्स, सेज्जं तु पडिलेहए ॥३८॥

पासवणुच्चारभूमिं च, पडिलेहिज्ज जयं जई ।

आमण्ये स्थितानां विशदा रात्रिचर्या-

काउसगं तओ कुज्जा, सब्बदुक्खविमोक्खणं ॥३९॥

देवसियं च अईयारं, चित्तिज्ज अणुपुब्बसो ।

नाणे य वंसणे चेव, चरित्तंमि तहेव य ॥४०॥

पारियकाउसगो, वदित्ता ण तओ गुरुं ।

देवसियं तु अईयारं, आलोएज्ज जहक्कम्मं ॥४१॥

पडिक्कमित्तु निस्सल्लो, वंदित्ता ण तओ गुरुं ।

काउसगं तओ कुज्जा, सब्बदुक्खविमोक्खणं ॥४२॥

पारियकाउस्सगो, वंदित्ता ण तओ गुरुं ।

थुइमंगलं च काळण, कालं संपडिलेहए ॥४३॥

पढमे पोरसिं सज्झायं, बिये ज्ञाणं मियायई ।

तइयाए निदमोक्खं तु, सज्झायं तु चउत्थिए ॥४४॥

पोरिसीए चउत्थीए, कालं तु पडिलेहिए ।

सज्झायं तु तओ कुज्जा, अबोहंतो असंजए ॥४५॥

पोरिसीए चउन्माए, वदिऊण तओ गुरु ।
 पडिक्कमित्तु कालस्स, काल तु पडिलेहेए ॥४६॥
 आगए कायवोसगो, सव्वदुक्खविमुक्खणे ।
 काउसगं तओ कुज्जा, सव्वदुक्खविमुक्खण ॥४७॥
 राइयं च अईयार, चित्तिज्ज अणुपुब्बसो ।
 नाणमि दंसणमि य, चरित्तमि तवंमि य ॥४८॥
 पारियकाउस्सगो, वदित्ताण तओ गुरुं ।
 राइय तू अईयारं, आ लोएज्ज जहयकमं ॥४९॥
 पडिक्कमित्तु निस्सल्लो, वदित्ताण तओ गुरुं ।
 काउस्सगं तओ कुज्जा, सव्वदुक्खविमुक्खणं ॥५०॥
 किं तव पडिवज्जामि, एव तत्थ विचित्तए ।
 काउस्सग तु पारित्ता, करिज्जा जिणसथव ॥५१॥
 पारियकाउस्सगो, वंदित्ताण तओ गुरु ।
 तवं संपडिवज्जित्ता, कुज्जा सिद्धाण-संयव ॥५२॥
 एसा सामायारो, समासेण विपाहिया ।
 जं चरित्ता बहू जीवा, तिण्णा ससारसागरं ॥५३॥
 ॥ त्ति वेमि ॥

अहं खलुं किञ्ज-नामं सत्तावीसइमं अज्जयणं

थेरे गणहरे गग्गे, मुणी आसि विसारए ।
आइण्णे गणिभावंमि, समाहिं पडिसंघए ॥१॥
वहणे वहमाणस्स, कंतारं अइवत्तई ।
जोगे वहमाणस्स, ससारो अइवत्तई ॥२॥
खलुके जो उ जोएइ, विहंमाणो किलिस्सई ।
असमाहिं य वेएइ, तोत्तई से य भज्जई ॥३॥
एगं डसइ पुच्छमि, एगं विघइअभिक्खण ।
एगो भंजइ समिलं, एगो उप्पह-पट्ठिओ ॥४॥
एगो पडइ पासेणं, निवेसइ निविज्जइ ।
उक्कुहइ उप्फिडई,, सट्ठे बालगवी वए ॥५॥
माई मुद्धेण पडई, कुद्धे गच्छइ पडिप्पहं ।
मयलक्खेण चिट्ठई, वेगेण य पहावई ॥६॥
छिन्नाले छिदइ सेल्लि दुद्धंतो भंजए जुगं ।
से वि य सुस्सुयाइत्ता, उज्जुहित्ता पत्तायइ ॥७॥
खलुंका जारिसा जोज्जा, दुस्सीसा वि हु तारिसा ।
जोइया धम्मजाणमि, भज्जति धिइदुब्बला ॥८॥
इड्ढीगारविए एगे, एगेअत्थ रसगारवे ।
सायागारविए एगे, एगे सुचिरकोहणे ॥९॥

भिक्खालसिए एगे, एगे ओमाणभीरुए थद्धे ।
 एगं च अणुसासमि, हेऊहिं कारणेहि य ॥१०॥
 सो वि अंतरभासिल्लो दोसमेव पकुव्वई ।
 आयरियाणं तु वयणं, पडिक्कूलेइऽभिक्खणं ॥११॥
 न सा ममं वियाणाइ, न य सा मज्झ दाहिइ ।
 निग्गया होहिई मन्ने, साहू अन्नोऽज्ज्य वच्चउ ॥१२॥
 पेसिया पलिउंचति, ते परियति समंतओ ।
 रायवेहिं च मन्नता, करेति मिउंढिं मुहे ॥१३॥
 वाइया सगहिया चेव, भत्तपाणेहि पोसिया ।
 'जायपक्खा जहा हसा, पक्कमति दिसो दिंसि' ॥१४॥
 अह सारही विंचितेइ, खलु केहिं समागओ ।
 किं मज्झ बुद्धसीसेहि, अप्पा ने अवसीयइ ॥१५॥
 जारिसा मम सीसाओ, तारिसा गलिगद्धहा ।
 गलिगद्धहे जहित्ताण, दढं पणिण्हइ तव ॥१६॥
 मिउमद्धवसपन्ने, गभीरे सुसमाहिए ।
 विहरइ मंहिं महप्पा, सीलभूएण अप्पणा ॥१७॥
 ॥ त्ति वेमि ॥

अहं मोक्खमग्गइ नामं अट्ठावीसइमं अज्झयणं

मोक्खमग्गइं तच्चं, सुणेहं जिणमासियं ।

चउकारणसंजुत्तं, ना ण दं स ण ल क्ख णं ॥१॥

नाणं^१ च दंसणं^२ चेव, चरित्तं^३ च तवो^४ तहा ।

एसं मग्गुत्ति पन्नत्तो,, जिणेहिं वरदंसिहिं ॥२॥

नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा ।

एयं मग्गमणुप्पत्ता, जीवा गच्छंति सोग्गइं ॥३॥

ज्ञानस्वरूपम्—

तत्थ पंचविहं नाणं, सुयं^१ आभिनिबोहियं^२ ।

ओहिनाणं^३ तु तइयं, मणनाणं^४ च केवलं^५ ॥४॥

एयं पंचविहं नाणं दच्चाण य गुणाण य ।

पज्जवाण य सच्चैसि, नाणं नाणीहिं देसियं ॥५॥

द्रव्य-गुण पर्याय लक्षणानि—

गुणाणमासओ दच्चं, एगदच्चस्सिया गुणा ।

लक्खणं पज्जवाणं तु, उन्नओ अस्सिया भवे ॥६॥

षट्द्रव्याणि—

धम्मो अहम्मो^१ आगासं^२, कालो^३ पुण्णल^४ जंतवो^५ ।

एसं लोगो ति पन्नत्तो, जिणेहिं वरदंसिहिं ॥७॥

धम्मो अहम्मो आगासं, दब्बं इयिक्कयकमाहिय ।
अणंताणि य दब्बाणि, कालो पुगलजंतवो ॥८॥

षड्द्रव्यलक्षणानि—

गइलक्खणो उ धम्मो^१, अहम्मो ठाणलक्खणो^२ ।
भायणं सव्वदब्बाणं, नहं ओगाहलक्खणं^३ ॥९॥
वत्तणालक्खणो कालो^४, जीवो उवओगलक्खणो^५ ।
नाणेणं दंसणेणं चेव, सुहेण य दुहेण य ॥१०॥
नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तथा ।
वीरियं उवओगो य, एयं जीवस्स लक्खण ॥११॥
सद्दंधयार—उज्जोओ, पहा छायाऽऽतव त्ति वा ।
वण्ण-रस-गंध-फासा, पुगलाणं तु लक्खणं ॥१२॥
एगत्तं च पुहत्तं च, संखा सठाणमेव य ।
सजोगा य विभागा य, पज्जयाण तु लक्खण ॥१३॥

दर्शन-स्वरूपम्—

जीवा^१ जीवा^२ य बंधो^३ य, पुण्णं पावा^४ सवो^५ तथा ।
सवरो^६ निज्जरा^७ ओक्खो^८, सत्तेए तहिया नव ॥१४॥

सम्यक्त्व-लक्षणम्—

तहियाणं तु भावाणं, सन्मावे उवएसणं ।
भावेण सद्दुत्तस्स, समत्तं त धियाहिय ॥१५॥

દશવિધા-રુચય-

નિસ્સગુ^૧ વણસરુઈ^૨, આણારુઈ^૩ સુત્ત^૪ બીયરુઈમેવ^૫ ।

અભિગમ^૬ વિત્થારુઈ^૭, કિરિયા^૮ સંખેવ^૯ ઘમ્મરુઈ^{૧૦} ॥૧૬॥

(૧) ભૂયત્થેનાહિગયા, જીવાજીવા ય પુણ્ણપાવં ચ ।

સહસમ્મુદ્ધયાસવ, સંવરો ય રોણ્ણ ઉ નિસ્સગ્ગો ॥૧૭॥

જો જિણવિદ્ધે ભાવે, ચણ્ણવિહે સદ્દહાઈ સયમેવ ।

એમેવ નણ્ણહ ત્તિ ય, સ નિસગ્ગરુઈ ત્તિ નાયવ્વો ॥૧૮॥

(૨) એણે ચેવ ઉ ભાવે, ઉવણ્ણવિદ્ધે જો પરેણ સદ્દહાઈ ।

છણ્ણમત્થેણ જિણેણ વ, ઉવણ્ણસરુઈ ત્તિ નાયવ્વો ॥૧૯॥

(૩) રાગો દોસો મોહો, અન્નાણ જસ્સ અવગય હોઈ ।

આણાણ રીયંતો, સો ચલ્લુ આણારુઈ નાસં ॥૨૦॥

(૪) જો સુત્તમહિજ્જતો, સુણ્ણ ઓગારુઈ ઉ સમ્મત્તં ।

અંગેણ બાહિરેણ વા, સો સુત્તરુઈ ત્તિ નાયવ્વો ॥૨૧॥

(૫) એણે અણેગાઈ, પયાઈ જો પસરુઈ ઉ સમ્મત્તં ।

ઉવણ્ણવ્વ તેલ્લાવિદ્ધ, સો બીયરુઈ ત્તિ નાયવ્વો ॥૨૨॥

(૬) સો હોઈ અભિગમરુઈ, સુયનાણં જેણ અત્થઓ વિદ્ધં ।

એવકારસ અગાઈ, પણ્ણગ વિદ્ધિવાઓ ય ॥૨૩॥

(૭) દબ્બાણ સબ્બભાવા, સબ્બપમાણેહિ જસ્સ ઉવલલ્લાં ।

સબ્બાહિ નયવિહીહિ ય, વિત્થારુઈ ત્તિ નાયવ્વો ॥૨૪॥

(८) दसणनाणचरित्ते, तवविणए सज्जसमिइगुत्तीसु ।
 जो किरियाभावरुई, सो खलु किरियारुई नाम ॥२५॥
 (९) अणभिग्गहिक्खुविट्ठो, सखेवरुइ त्ति होइ नायव्वो ।
 अविसारओ पवयणे, अणभिग्गहिओ य सेत्तेसु ॥२६॥
 (१०) जो अत्थिकायघम्म, सुयघम्म खलु चरित्तघम्मं च ।
 सइहइ जिणाभिहिंयं, सो घम्मरुइ त्ति नायव्वो ॥२७॥
 परमत्थ-सयवो^१ वा, सुदिट्ठ-परमत्थसेवणा^२ वा वि ।
 वावन्न-कुदसणवज्जणा^३, य सम्मत्तसइहणा ॥२८॥
 नत्थि चरित्त सम्मत्तविहूण, दसणे उ भइयव्व ।
 सम्मत्तचरित्ताइ जुगवं, पुव्वं च सम्मत्तं ॥२९॥

ना द स णि स्स ना ण,
 नाणेण विणा न हुंति चरणगुणा ।
 अगुणिस्स नत्थि मोक्खो,
 नत्थि अमोक्खस्स निज्वाणं ॥३०॥

अट्टप्रभावना—

निस्सकिय^१-निक्कखिय^२, निव्वित्तिगिच्छ^३ अमूढदिट्ठो^४ य ।
 उव्ववूह^५-थिरीकरणे^६, वच्छत्त^७-पभावणे^८ अट्ठ ॥३१॥

चारित्रस्वरूपम्—

समाइयत्थ^१ पदम, छेओघट्ठावणं^२ भवे विइय ।
 परिहारविसुद्धीय^३ सुहुमं तह सपराय^४ च ॥३२॥

अकसायमहक्खायं^६, छउमत्थस्स जिणस्स वा ।

एयं चयरित्तकर, चारित्तं होइ आहियं ॥३३॥

तपःस्वरूपम्—तबो य बुविहो वुत्तो, बाहिरव्भंतरो तथा ।

बाहिरो छव्विहो वुत्तो, एवमव्भंतरो तबो ॥३४॥

नाणेण जाणइ भावे, इंसणेण य सहहे ।

चरित्तेण निगिण्हाइ, तवेण परिसुज्झइ ॥३५॥

खवित्ता पुव्वकम्माइं, संजमेण तवेण य ।

सव्वदुक्खपहीणट्ठा, पक्कमंति महेसिणो ॥३६॥

॥ ति बेमिं ॥

अह सम्मतपरक्कम नामं एगूणतीसइमं अज्झयणं

सुयं मे आजसं ।

तेणं भगवया एवमक्खायं—

इह खलु समत्त-परक्कमे नाम अज्झयणे—

समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइए—

अं सम्मं सहइत्ता पत्तइत्ता रोयइत्ता फासित्ता पालइत्ता—

तीरित्ता कित्तइत्ता सोहइत्ता आराहित्ता आणाए अणुपालइत्ता—

बहवे जीवा सिज्झन्ति बुज्झन्ति मुच्चन्ति-

परिनिव्वायन्ति सच्चद्वुक्खाणमन्तं करोन्ति ।

तस्स ण अयमट्ठे एवमाहिज्झइ ।

तं जहा-

संवेगे १ निव्वेए २ धम्मसद्धा ३ गुरु-साहम्मियसुत्तसणया ४

आलोयणया ५ निंदणया ६ गरिहणया ७

सामाइए ८ चउळ्वीसत्थए ९ ववणया १०

पडिक्कमणे ११ काउत्तगो १२ पञ्चवक्खाणे १३

थवथुईमंगलै १४

कालपडिलेहणया १५ पायच्छित्तकरणे १६ खमावणया १७

सज्जाए १८ वायणया १९ पुच्छणया २० परियट्ठणया २१

अणुप्पेहा २२ धम्मकहा २३ ।

सुयस्स आराहणया २४ एगग-भणसंनिवेसणयां २५

संजमे २६ तवे २७ बोदाणे २८ सुहसाए २९

अपडिबद्धया ३० विवित्त-सयणासणसेवणया ३१ विणियट्ठणया ३२

संभोगपञ्चवक्खाणे ३३ उदहि-पञ्चवक्खाणे ३४

आहार-पञ्चवक्खाणे ३५

कसाय-पञ्चवक्खाणे ३६ जोग-पञ्चवक्खाणे ३७

सरीर-पञ्चवक्खाणे ३८

सहाय-पञ्चवक्खाणे ३९ भत्त-पञ्चवक्खाणे ४० सत्ताव

पञ्चवक्खाणे ४१

पडिरूवणया ४२ वेयावच्चे ४३ सब्वगुणसंपन्नया ४४
वीथरागया ४५

खंती ४६ मुत्ती ४७ मह्वे ४८ अज्जवे ४९

भावसच्चे ५० करणसच्चे ५१ जोगसच्चे ५२

मणगुत्तया ५३ वयगुत्तया ५४ कायगुत्तया ५५

मन-समाधारणया ५६ वय-समाधारणया ५७

काय-समाधारणया ५८

नाणसपन्नया ५९ दंसणसपन्नया ६० चरित्तसंपन्नया ६१

सोइदियनिग्गहे ६२ चक्खिदियानिग्गहे ६३ घाणिदियनिग्गहे ६४

जिब्भिदियानिग्गहे ६५ फासिदियनिग्गहे ६६

कोह्विजए ६७ माणविजए ६८ मायाविजए ६९ लोभविजए ७०

पेज्ज-दोस-मिच्छादंसणविजए ७१ सेलेसि ७२ अकम्मया ७३॥

संवेगेणं भते ! जीवे किं जणयइ ?

संवेगेणं अणुत्तरं धम्मसद्धं जणयइ ।

अणुत्तराए धम्मसद्धाए संवेगं हव्वमागच्छइ ।

अणंताणुदंघि कोह-माण-माया-लोभे खवेइ ।

नवं च कम्मं न वधइ ।

तप्पच्चइय च णं मिच्छत्त विमोहिं काऊण दंसणाराहए भवइ ।

दंसण-विसोहीए य णं विसुद्धाए अत्थेगइए तेणेव भवग्गहणेणं
सिज्झइ ।

विसोहीए य णं विसुद्धाए तच्चं पुणो भवग्गहणं नाइक्कमइ ॥१॥

निव्वेएणं भते ! जीवे किं जणयइ ?

निव्वेएणं दिव्व-माणस-तेरिच्छएसु कामभोगसु

निव्वेयं हव्व मागच्छइ ।

सव्व विसएसु विरज्जइ ।

सव्व विसएसु विरज्जमाणे आरंभ-परिच्चाय करेइ ।

आरंभ-परिच्चाय करमाणे संसारमग्न वोच्छंदइ ।

सिद्धिमग्न पडिवत्ते य भवइ । ॥२॥

धम्मसद्धाए ण भते ! जीवे किं जणयइ ?

धम्मसद्धाए ण साया-सोखेसु रज्जमाणे विरज्जइ ।

आगार-धम्मं च ण चयइ ।

अणगारिए ण जीवे सारोर-माणसाण दुयखाण-

छेयण-भेयण संजोगाइण वोच्छेयं करेइ ।

अच्चावाह च णं सुहं निव्वत्तेइ । ॥३॥

गुरु-साहम्मिय-सुत्सुसणयाए णं भते ! जीवे किं जणयइ ?

गुरु-साहम्मिय-सुत्सुणयाए विणय-पडिवत्ति जणयइ ।

विणय-पडिवत्ते य ण जीवे अणच्चासायणसीले-

नेरइय-तिरिखजोणिय-मणुस्स-देवदुग्गइओ निरुभइ ।

वण्ण-संजलण-भत्ति-बहुयाणयाए मणुस्स-देवसुग्गइओ निबधइ ।

सिद्धि सोगइं च विसोहेइ ।

पसत्थाइं च णं विणयमूलाइ सव्वकज्जाइं साहेइ ।

अन्ने य बह्वे जीवा विणइत्ता भवइ ॥४॥

आलोयणाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

आलोयणाए णं माया-नियाण-मिच्छादंसणसत्ताणं मोक्खमग्ग-
विग्घाण अणंत-संसारबंधणाणं उद्धरणं करेइ ।

उज्जुभावं च जणयइ ।

उज्जुभाव-पडिवस्से य णं जीवे अमाई-

इत्थीवेय-तपुंसग वेयं च न बंधइ ।

पुग्गबद्ध च णं निज्जरेइ ॥५॥

निदणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ।

निदणयाए णं पच्छाणुतांव जणयइ ।

पच्छाणुतावेणं विरज्जमाणे करण-गुणसेढी पडिवज्जइ ।

करणगुणणसेढी पडिवस्से य ण अणगारे-

मोहणिज्जं कम्मं उग्घायइ ॥६॥

गरहणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

गरहणयाए ण अपुरक्कारं जणयइ ।

अपुरक्कारणए णं जीवे अप्पसत्थेहिंतो नियत्तेइ-

पसत्थे य पडिवज्जइ ।

पसत्थ-जोगपडिवस्से य णं अणगारे अणत-घाइ-पज्जवे खवेइ ॥७॥

सामाइए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

सामाइए णं सावज्ज-जोग-विरई जणयइ ॥८॥

चउब्बीसत्थए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

चउब्बीसत्थए णं दंसण-विसोहिं जणयइ ॥९॥

वंदणएणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

वंदणएणं नीयागोयं कम्मं खवेइ ।

उच्चागोयं कम्मं निबंघइ ।

सोहमां च णं अप्पडिहयं आणाफलं निव्वत्तेइ ।

दाहिणभावं च णं जणयइ ॥१०॥

पडिक्कमणेण भंते ? जीवे किं जणयइ ?

पडिक्कमणेणं वय-छिद्दाणि पिहेइ ।

पिहिय-वय-छिद्दे पुण जीवे निरुद्धासवे असवल-वरित्ते-

अट्टसु पवयण-भायासु उवउत्ते अपुहत्ते सुप्पणिहिदिए-

विहरइ ॥११॥

काउस्सग्गेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

काउस्सग्गेणं तीय-पडुप्पन्न पायच्छित्तं विसोहेइ ।

विसुद्ध-पायच्छित्ते य जीवे निव्वुय-हियए 'ओहरिय-भरुव्व

भारवहे' पसत्थ-क्षाणोवगए सुहं सुहेणं विहरइ ॥१२॥

पच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

पच्चक्खाणेणं आसवदाराइं निरुंभइ ।

पच्चक्खाणेणं इच्छानिरोहं जणयइ ।

इच्छानिरोहं गए य णं जीवे सम्बदब्बेसु विणीय-त्तण्हे

सीइभूए विहरइ ॥१३॥

थव-थुइ भंगलेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

थव-थुइ भंगलेणं नाणं-दंसण-वरित्त-वोहिलाभं जणयइ ।

नाण-दंसण-चरित्त-बोहिलाभसंपन्ने य ण जीवे अंतकिरिय
कप्पविमाणोववत्तियं आराहण आराहेइ ॥१४॥

काल-पडिलेहणयाए ण भते ! जीवे किं जणयइ ?
काल-पडिलेहणयाए णं नाणावरणीज्जं कम्म खवेइ ॥१५॥

पायच्छित्त करणेणं भते ! जी वे किं जणयइ ?
पायच्छित्तकरणेण पावकम्मविसोहिं जणयइ,
निरइयारे यावि भवइ ।

सम्म च ण पायच्छित्तं पडिवज्जमाणे मगं च मगफलं च
विसोहेइ, आया र च आया रफलं च आराहेइ ॥१६॥

खभावणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
खभावणयाए ण या वि पल्हायणभाव जणयइ ।
पल्हायणभावमुवगए य सव्वपाण-भूय-जीव-सत्तेसु
मेत्तिभावमुप्पाएइ ?
मेत्तीभावमुवगए या वि जीवे भावविसोहिं काळण
निव्वभए भवइ ॥१७॥

सज्झाएणं भते ! जीवे किं जणयइ ?
सज्झाएणं नाणावरणीज्जं कम्म खवेइ ॥१८॥

वायणाए ण भते ! जीवे किं जणयइ ?
वायणाए ण निज्जर जणयइ ।
सुयस्स य (अणुसज्जणाए) अणासायणाए वट्टए ।

सुयस्स (अणुसज्जणाए) अणासायणाए वट्टमाणे तित्थघम्म अवलंबइ
 तित्थघम्म अवलंबमाणे महानिज्जरे
 महापज्जवसाणे भवइ ॥१९॥

पडि-पुच्छणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
 पडि-पुच्छणयाए ण सुत्त-त्थ-सदुभयाई विसोहेइ ।
 कखामोह्णिज्जं कम्मं द्धोच्छिदइ ॥२०॥
 परियट्ठणयाए ण भते ! जीवे किं जणयइ ?
 परियट्ठणयाए णं बंजणाइ जणयइ, बंजणलद्धिं च उप्पाएइ ॥२१॥

अणुप्पेहाए ण भते ! जीवे किं जणयइ ?
 अणुप्पेहाए ण आउय-वज्जाओ सत्त-कम्मपगडीओ-
 धणिय-बंधणबद्धाओ सिद्धिल-बंधणबद्धाओ पकरेइ ।
 बीहकालठिइयाओ हस्सकालठिइयाओ पकरेइ ।
 तिब्बाणुभावाओ मंदाणुभावाओ पकरेइ ।
 बहुप्पएसग्गाओ अप्प-पएसग्गाओ पकरेइ ।
 आउय च णं कम्मं सिय बधइ, सिय नो बंधइ ।
 असाया-वेयणिज्जं च णं कम्म नो भुज्जो भुज्जो उवचिणाइ ।
 अणाइय च ण अणवदग्ग दीहमद्ध चाउरंत-ससारकंतारं-
 खिप्पामेव बीइवयइ ॥२२॥

धम्मकहाए ण भंते ! जीवे किं जणयइ ?
 धम्मकहाए णं कम्म-निज्जरं जणयइ ।

धम्मकहाए णं पवयणं पभावेइ ।

पवयण-पभावेणं जीवे आगमेसस्स भद्दत्ताए कम्मं निबंघइ ॥२३॥

सुयस्स आराहणयाए ण भंतु ! जीवे किं जणयइ ?

सुयस्स आराहणयाए णं अज्ञाण खवेइ

न य संकिलिस्सइ ॥२४॥

एगग-मण-संनिवेसणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

एगग-मण-संनिवेसणयाए णं चित्तनिरोहं करेइ ॥२५॥

संजमए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

संजमए णं अण्हयत्तं जणयइ ॥२६॥

तवेण भंते ! जीवे किं जणयइ ?

तवेणं वोदाणं जणयइ ॥२७॥

वोदाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

वोदाणेणं अकिरियं जणयइ ।

अकिरियाइ भवित्ता तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ—

परिनिन्वायइ सन्वदुक्खाणमंतं करेइ ॥२८॥

सुह-साएणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

सुह-साएणं अणुस्सुयत्तं जणयइ ।

अणुस्सुयाए णं जीवे अणुकंपए अणुभड्डे विगयसोगे—

चरित्त-सोहणिज्जं कम्मं खवेइ ॥२९॥

अप्पडिबद्धयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

अप्पडिबद्धयाए ण जीवे निस्संगत्तं जणयइ ।

निस्संगत्तेणं जीवे एगगच्चित्ते दिया य रामो य-

असज्जमाणे अप्पडिबद्धे यावि विहरइ ३०॥

विवित्त-सयणासणयाए भंते ! जीवे किं जणयइ ?

विवित्त-सयणासणयाए जीवे चरित्तगुत्ति जणयइ ।

चरित्तगुत्ते य ण जीवे विवित्ताहारे दढचरित्ते एगतरए

भोवखभावपडिबद्धे अट्ठविह-फम्मगठि निज्जरेइ ॥३१॥

विनियट्ठणयाए णं भते ! जीवे किं जणयइ ?

विनियट्ठणयाए णं जीवे पावकम्ममाणं अकरणयाए अब्भुट्ठेइ ।

पुण्वबद्धाण य निज्जरणयाए पावं नियत्तेइ ।

तओ पच्छा चाउरत-संसारकतारं बीडवयइ ॥३२॥

संभोग-पच्चवखाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

संभोग-पच्चवखाणेण जीवे आलवणाइं खवेइ ।

निरालंबणस्स य आययट्ठिया योगा भवन्ति ।

सएण लाभेण सतुस्सइ,

परलामं नो आसादेइ नो तक्केइ नो पीहेइ नो पत्थेइ

नो अभिलसइ ।

परलाम अणस्साएमाणे अतक्केमाणे अपीहेमाणे अपत्थेमाणे

अणभिलसमाणे बुच्चं सुहसेज्जं उवसंपजित्ताणं विहरइ ॥३३॥

उवहि-पच्चवखाणेणं भते ! जीवे किं जणयइ ?

उवहि-पच्चवखाणेण जीवे अपलिमंय जणयइ ।

निरुवहिए ण जीवे निक्कंखी उवहिमंतरेण य न
सकिलिस्सइ ॥३४॥

आहार-पच्चक्खाणेण भंते ! जीवे किं जणयइ ?
आहार-पच्चक्खाणेणं जीवे जीवियासंसप्पओगं वोच्छिदइ ।
जीवियासंसप्पओगं वोच्छिदित्ता जीवे आहारमतरेण न
संकलिस्सइ ॥३५॥

कसाए-पच्चक्खाणे णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
कसाए-पच्चक्खाणे ण जीवे वीयरगभावं जणयइ ।
वीयरगभावपडिवत्ते य ण जीवे तम सुह-दुक्खे भवइ ॥३६॥

जोग-पच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
जोग-पच्चक्खाणेण जीवे अजोगत्तं जणयइ ।
अजोगी णं जीवे नवं कम्मं न बधइ, पुव्ववद्धं निज्जरेइ ॥३७॥

सरीर-पच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
सरीर-पच्चक्खाणेणं जीवे सिद्धाइसय-गुण-कित्तणं निव्वत्तेइ ।
सिद्धाइसय-गुण संपत्ते य णं जीवे लोगगमुवगाए परमसुही
भवइ ॥३८॥

सहाय-पच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
सहाय-पच्चक्खाणेणं जीवे एगीभावं जणयइ ।
एगीभावभूए य णं जीवे एगग भावेमाणे—
अप्पसद्दे अप्पझंसे अप्प-कलहे अप्प-कसाए अप्प-त्तुमंतुमे—
संजम-बहुले-संवर-बहुले समाहिए यावि भवइ ॥३९॥

भत्त-पच्चक्खाणेणं भत्ते ! जीवे किं जणयइ ?

भत्त-पच्चक्खाणेण जीवे अणोगाईं भवसयाइ निरुंभइ ॥४०॥

सम्भाव-पच्चक्खाणेणं भत्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सम्भाव-पच्चक्खाणेणं जीवे अनियट्ठिं जणयइ ।

अनियट्ठिपडिवन्ने य अणगारे चत्तारि केवलिकम्मसे खवेइ ।

तज्जहा-वेयणिज्ज आचर्यं नाम गोय-

तओ पच्छा सिज्जइ वुज्जइ मुच्चइ परिनिब्बायइ

सत्त्व दुक्खाणमंतं करेइ ॥४१॥

पडिरुवयाए णं भत्ते ! जीवे किं जणयइ ?

पडिरुवयाए ण जीवे लाघव जणयइ ।

लघुभूए णं जीवे अप्पमत्ते पागडल्लिगे पसत्थाल्लिगे-

विसुद्धसमत्ते सत्तसमिद्धसमत्ते सत्त्वपाण-भूय-जीव-सत्तेसु

विससणिज्जरूवे अप्पडिल्लेहे जिइंदिए

विउल-तव-समइ-समन्नागए यावि भवइ ॥४२॥

वेयावच्चेणं भत्ते ! जीवे किं जणयइ ?

वेयावच्चेणं जीवे तित्थयरनामगोत्तं कम्म निवधइ ॥४३॥

सत्त्वगुणसंपन्नयाए ण भत्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सत्त्वगुणसंपन्नयाए णं जीवे अपुणरावत्तिं जणयइ ।

अपुणरावत्तिं पत्तए य ण जीवे

सारीर-माणसाणं दुक्खाणं नो भागी भवइ ॥४४॥

वीयरगयाए ण भते । जीवे किं जणयइ ?

वीयरगयाए ण जीवे नेहाणुवधणाणि तण्हाणुवधणाणि य
वोच्छिदइ,

मणुन्नामणुत्तेसु सद्-फरिस-रुव-रस-गधेसु चेव विरज्जइ ॥४५॥

खतीए ण भते ! जीवे किं जणयइ ?

खतीए ण जीवे परीसहे जिणइ ॥४६॥

मुत्तीए ण भते ! जीवे किं जणयइ ?

मुत्तीए णं जीवे अकिचण जणयइ ।

अकिचणे य जीवे अत्यलोलान पुरिसाणं अपत्यणिज्जो-
भवइ ॥४७॥

अज्जवयाए ण भते ! जीवे किं जणयइ ?

अज्जवयाए ण जीवे काउज्जुययं भावुज्जुयय भासुज्जुयय-
अविसवायण जणयइ ।

अविसवायणसपन्नायाएण जीवे धम्मस्स आराहए भवइ ॥४८॥

मद्दवयाए ण भते ! जीवे किं जेणयइ ?

मद्दवयाए ण जीवे अणुस्सियत्तं जणयइ ।

अणुस्सियत्तेण जीवे मिउमद्दवसपन्ने अट्ठ मयट्ठानाहं निट्ठावेड ॥४९॥

भावसच्चेण भते ! जीवे किं जणयइ ?

भावसच्चेण जीवे भावे विसोहि जणयइ ।

भावविसोहिए वट्ठमाणे जीवे अरहत-पन्नत्तस्स-धम्मस्स-

आराहणयाए अब्भुट्ठेइ ।

अरहत-पद्मत्तस्म-धम्मस्म आराहणयाए अब्भुट्ठिता-

परलोग धम्मस्स आराहए भवइ ॥५०॥

करणसच्चे णं भते ! जीवे किं जणयइ ?

करणसच्चे ण जीवे करणमात्त जणयइ ।

करणसच्चे ण घट्टमाणे जीवे जहावाई तहाकारो यावि

भवइ ॥५१॥

जोगसच्चेण भते ! जीवे किं जणयइ ?

जोगसच्चेण जीवे जोग विसोहेइ ॥५२॥

मणगुत्तयाए ण भते ! जीवे किं जणयइ ?

मणगुत्तयाण ण जीवे एगग जणयइ ।

एगगचित्ते ण जीवे मणगुत्ते सजमाराहए भवई ॥५३॥

वयगुत्तयाए ण भते ! जीवे किं जणयइ ?

वयगुत्तयाए ण जीवे निव्वियारत्त जणयइ ।

निव्वियारेण जीवे वदगुत्ते अज्झप्पजोगमाहणजुत्ते यावि

भवई ॥५४॥

कायगुत्तयाए ण भते ! जीवे किं जणयइ ?

कायगुत्तयाए ण जीवे सवर जणयइ ।

संवरेण कायगुत्ते पुणो पाखासवनिरोह करेइ ॥५५॥

मण-समाहारणयाए ण भंते । जीवे किं जणयइ ?
 मण-समाहारणयाए ण जीवे एगग्ग जणयइ ।
 एगग्ग जणइत्ता नाणपज्जवे जणयइ ।
 नाणपज्जवे जणइत्ता सम्मत्त विसोहेइ भिच्छत्त च
 निज्जरेइ ॥५६॥

वय-समाहारणयाए ण भंते । जीवे किं जणयइ ?
 वय-समाहारणयाए ण जीवे वय-साहारण-वसणपज्जवे विसोहेइ ।
 वय-साहारण-वसणपज्जवे विसोहिता सुलहबोहियत्त निव्वत्तेइ
 दुल्लहबोहियत्त निज्जरेइ ॥५७॥

काय-समाहारणयाए ण भंते । जीवे किं जणयइ ?
 काय-समाहारणयाए ण जीवे चरित्तपज्जवे विसोहेइ ।
 चरित्तपज्जवे विसोहिता अहक्खायचरित्त विसोहेइ ।
 अहक्खायचरित्त विसोहिता चत्तारि केवलिकम्मसे खवेइ ।
 तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वायइ-
 सब्बदुक्खाणमत करेइ ॥५८॥

नाण-संपन्नयाए ण भंते । जीवे किं जणयइ ?
 नाण-संपन्नयाए ण जीवे सब्बभावाहिगम जणयइ ।
 नाण-सपन्ने जीवे चाउरते ससारकतारे न विणस्सइ ।

गाहा-जहा सुई ससुत्ता, पडिया न विणस्सइ ।

तस्मा जीवे ससत्ते, न्ह्यसारे न विणस्सन् ॥१॥

नाण-विणय-तव-चरित्तजोगे सपाउणइ ।

ससमय-परसमयविसारए य असंघायणिज्जे भवइ ॥५९॥

दसण-संपन्नयाए णं भते ! जीवे किं जणयइ ?

दसण-सपन्नयाए णं जीवे भवमिच्छत्तछेयण करेइ,

परं न विज्झायइ—

पर भविज्झाएमाणे अणुत्तरेण नाण-दसणेण—

अप्पाणं संजोएमाणे सम्म भावेमाणे विहरइ ॥६०॥

चरित्त-संपन्नयाए ण भते ! जीवे किं जणयइ ?

चरित्त-संपन्नयाए णं जीवे सेलेसिभाव जणयइ ।

सेलेसिपडिबन्ने य अणगारे चत्तारि केवलिकम्मंते खवइ ।

तओ पच्छा सिज्झइ वुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वायइ—

सव्वदुक्खाणमंतं करेइ ॥६१॥

सोइंदिय-निग्गहेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

सोइंदिय-निग्गहेण जीवे मणुस्सामणुस्सेसु सहेसु—

राग-दोसनिग्गहं जणयइ ।

तप्पच्चइयं च णं कम्म न बधइ पुव्ववद्ध च निज्जरेइ ॥६२॥

चकिंखदिय-निग्गहेणं भते ! जीवे किं जणयइ ?

चकिंखदिय-निग्गहेण जीवे मणुत्तामणुस्सेसु रुवेसु—

राग-दोसनिग्गहं जणयइ ।

तप्पच्चइयं च णं कम्मं न बंधइ पुव्ववद्ध च निज्जरेइ ॥६३॥

घाणिदिय-निग्गहेणं भते ! जीवे किं जणयइ ?

घाणिदिय-निग्गहेणं जीवे मणुत्तामणुत्तेसु गंधेसु-

राग-दोस-निग्गहं जणयइ ।

तप्पच्चइयं च ण कम्मं न वंधइ पुच्चवद्धं च निज्जरेइ ॥६४॥

जिर्विभदिय-निग्गहेणं भते ! जीवे किं जणयइ ?

जिर्विभदिय-निग्गहेणं जीवे मणुत्तामणुत्तेसु रसेसु-

राग-दोस-निग्गहं जणयइ ।

तप्पच्चइयं च ण कम्मं न वंधइ पुच्चवद्धं च निज्जरेइ ॥६५॥

फासिदिय-निग्गहेण भते ! जीवे किं जणयइ ?

फासिदिय-निग्गहेण जीवे मणुत्तामणुत्तेसु फासेसु-

राग-दोस-निग्गहं जणयइ ।

तप्पच्चइयं च ण कम्मं न वंधइ पुच्चवद्धं च निज्जरेइ ॥६६॥

कोह-विजएणं भते ! जीवे किं जणयइ ?

कोह-विजएण जीवे खतिं जणयइ ।

कोह-वेयणिज्जं कम्मं न वंधइ, पुच्चवद्धं च निज्जरेइ ॥६७॥

माण-विजएण भते ! जीवे किं जणयइ ?

माण-विजएणं जीवे मद्दवं जणयइ ।

माण-वेयणिज्जं कम्मं न वंधइ, पुच्चवद्धं च निज्जरेइ ॥६८॥

माया-विजएणं भते जीवे किं जणयइ ?

माया-विजएणं जीवे अज्जवं जणयइ ।

पाया-वेयणिज्जं कम्मं न वंधइ, पुच्चवद्धं च निज्जरेइ ॥६९॥

लोभ-विजएणं भते ! जीवे किं जणयइ ?

लोभ-विजएण जीवे संतोस जणयइ ।

लोभ-वेयणिज्जं कम्मं न वधइ, पुप्पवद्धं च निज्जरेइ ॥७०॥

पिज्ज-दोम-मिच्छादसण-विजएण भते ! जीवे किं जणयइ ?

पिज्ज-दोस-मिच्छादसण-विजएण जीवे-

नाण-दंसण-चरित्तराहुणयाए अट्ठुइ ।

अट्ठविहस्सं कम्मस्सं कम्मगठि-विमोषणयाए-

तप्पदमयाए जहाणुप्पवीए-

अट्ठावीमइविहं मोहणिज्जं कम्मं उग्घाएइ ।

पंचविहं णाणावरणिज्जं कम्मं उग्घाएइ ।

नवविहं दंसणावरणिज्जं कम्मं उग्घाएइ ।

पच्चविहं अत्तरादियं कम्मं उग्घाएइ ।

एए त्तिभिचि कम्मसे जुगवं खवेइ-

तमो पच्छा अणुत्तरं कसिणं पडिपुण्णं-

निरावरणं वित्तिभिरं विसुद्धं-

त्तोणालोप्यभासणं केवलवरणाण-दंसणं समुप्पादेइ-

जाव सज्जोगी भवइ, ताव इरियावहियं कम्मं निबंघइ-

सुहफरिसं दुममयठिइय-

तं पढम-समएवद्धं विइय-समएवेइयं तइय-समए निजिण्णं-

तं बद्धं पुट्टं उदीरियं वेइयं निजिण्णं-

सेयाले य अकम्मं यावि भवइ ॥७१॥

अहाउयं पालयित्ता-

अंतोमुहुत्तद्वावसेसाए जोग-निरोहं करेमाणे

सुहुमकिरियं अप्पडिवाइं सुक्कज्झाणं ज्ञायमाणे

तप्पढमयाए-

मणजोगं निरुंभइ, धयजोग निरुंभइ, कायजोग निरुंभइ,

आण-पाणनिरोहं करेइ-

इसि पंच-हस्सक्खरुच्चारणद्धाए य ण अणगारे-

समुच्छिन्न किरियं अनियट्ठि सुक्कज्झाणं ज्ञायमाणे-

वेयणिज्जं आउय नाम गोत्त च

एए चत्तारि कम्मसे जुगवं खवेइ ॥७२॥

तओ ओरालिय-तेयकम्माइ

सव्वार्हि विप्पजहणार्हि विप्पजहित्ता

उज्जुसेट्ठिपत्ते अफुसमाणगइ

उद्धं एगसमएणं अविग्गहेणं तत्थ गता ।

सागारोवउत्ते सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वायइ

सव्वदुक्खाणमंत करेइ ॥७३॥

एस खलु सम्मत्तपरक्कमस्स अज्झयणस्स अट्ठे-

समणेणं भगवया महावीरेण-

आघविए परुविए बसिए निवंसिए उवदंसिए ।

॥ त्ति वेमि ॥

अह तवमग्ग नाम तीसइमं अज्झयणं

जहा उ पावग कम्मं, रागदोससमज्जियं ।
खवेइ तवसा भिक्खू, तमेगग्गमणो सुण ॥ १ ॥
पाणिवह^१ मुसावाया,^२ अवत्त^३ मेहुण^४ परिग्गहा^५ विरओ ।
राइभोयणविरओ,^६ जीवो भवइ अणासवो ॥ २ ॥
पंचसमिओ तिगुत्तो, अकसाओ जिइंदियो ।
अगारवो य निस्सल्लो, जीवो होइ अणासवो ॥ ३ ॥
एएसि तु विवज्जासे, रागदोससमज्जियं ।
खवेइ उ जहा भिक्खू, तमेगग्गमणे सुण ॥ ४ ॥
'जहा महातलायस्स, संनिरुद्धे जलागमे ।
उस्सिचणाए तवणाए, कमेणं सोसणा भवे' ॥ ५ ॥
एवं तु संजयस्सावि, पावकम्मनिरासवे ।
भव-कोडी-सच्चियं कम्मं, तवसा निज्जरिज्जइ ॥ ६ ॥
सो तवो दुविहो वुत्तो, बहिरब्भंतरो तहा ।
बाहिरो छण्विहो वुत्तो, एवम्भंतरो तवो ॥ ७ ॥
अणसण^१ मूणोयरिया,^२ भिक्खायरिया^३ य रसपरिज्जाओ^४ ।
कायकिलेसो^५ सलीणया,^६ य वज्झो तवो होइ ॥ ८ ॥
(१) इत्तरिय^१ मरणकाला^२ य, अणसणा दुविहा भवे ।
इत्तरिया सावकंखा, निरवकंखा उ विइज्जिया ॥ ९ ॥

जो सो इत्तरियत्तवो, सो समासेण छव्विहो ।

सेद्धितवो^१ पयरत्तवो,^२ घणो^३ य तह होइ वगो^४ य ॥१०॥

तत्तो य वगवगो,^५ पचमो छट्ठओ पइणत्तवो^६ ।

मणइच्छियच्चित्तत्थो, नायव्वो होइ इत्तरिओ ॥११॥

जा सा अणसणा मरणे, दुविहा सा विद्याहिया ।

सविधार^१ मविधारा,^२ कायचिट्ठं पई भवे ॥१२॥

अहवा सपरिकम्मा,^१ अपरिकम्मा^२ य आहिया ।

नीहारि^१ मनीहारी,^२ आहारच्छेओ दोसु वि ॥१३॥

(२) ओमोयरण पचहा, समासेण विद्याहियं ।

दव्वओ^१ खेत्त^२ कालेण,^३ भावेण^४ पज्जवेहि^५ य ॥१४॥

जो जस्स उ आहारो, तत्तो ओम तु करे ।

अह्वेणेगसित्थाई, एव दव्वेण ऊ भवे ॥१५॥

गामे नगरे तह, रायहाणि निगमे य आगरे पल्ली ।

खेडे-कव्वड-दोणमुह, पट्टण-मडव-संबाहे ॥१६॥

आसमपए विहारे, सन्निवेसे समाय-घोसे य ।

थलि-सेणा-खंधारे. सत्थे सबट्ट-कोट्टे य ॥१७॥

घाडेसु य रत्थासु य, घरेसु वा एयमित्थिय खेत्तं ।

कप्पइ उ एवमाई, एव खेत्तेण ऊ भवे ॥१८॥

पेडा^१ य अट्ठपेडा,^२ गोमुत्ति^३ पयंगवीहिया^४ जेव ।

संबुक्कावट्टा^५ ययगतु, पच्चागया^६ छट्ठा ॥१९॥

दिवसस्स पोरुसीणं, चउण्हपि उ जत्तिओ भवे कालो ।
 एव चरमाणो छलु, कालोमाण मुणेयच्च ॥२०॥
 अहवा तइयाए पोरिसीए, ऊणाइ घासमेसंतो ।
 चउभागूणाए वा, एव कालेण ऊ भवे ॥२१॥
 इत्थो वा पुरिसो वा, अलकिओ वा नलकिओ वावि ।
 अन्नयरवयत्थो वा, अन्नयरेण व वत्थेण ॥२२॥

अन्नेण विसेसेण, वण्णेण भावमणुमुयते उ ।
 एव चरमाणो छलु, भावोमोण मुणेयच्च ॥२३॥
 दच्चे पेत्ते काले, भावमि य आहिया उ जे भावा ।
 एएहि ओमचरओ, पज्जवचरओ भवे भिक्खू ॥२४॥

(३) अट्ठविहगोयरग्ग तु, तहा सत्तेव एसणा ।
 अभिग्गहा य जे अन्ने, भिक्खायरियमाहिया ॥२५॥

(४) छोर-दहि-सप्पिमाई, पणीय पाणभोयण ।
 परिवज्जण रसाण तु, भणिय रसविवज्जणं ॥२६॥

(५) ठाणा दोरासणाईया, जीवस्स उ सुहावहा ।
 उग्गा जहा धरिज्जति, कायकिलेस तमाहिय ॥२७॥

(६) एगंतमणावाए, इत्थो-यसु-विवज्जिए ।
 सयणासणसेवणया, वि वि त्त स य णा स ण ॥२८॥

एसो बाहिरगतओ, समासेण वियाहिओ ।
 अविभतरं तवं एत्तो, वुच्छामि अणुपुज्जसो ॥२९॥

પાયચ્છિત્તં^૧ વિળઓ,^૨ વેયાવન્નં^૩ તહેવ સજ્ઞાઓ^૪ ।

જ્ઞાણં^૫ ચ વિચસગ્ગો,^૬ एसो અભિતરો તવો ॥૩૦॥

(૧) આલોયનારિહાઈય, પાયચ્છિત્તં તુ દસવિહ ।

જે મિલ્લૂ વહઈ સમ્મં, પાયચ્છિત્ત તમાહિયં ॥૩૧॥

(૨) અભુટ્ઠાણં અજલિકરણં, તહેવાસણદાયણં ।

ગુરુભત્તિ-ભાવ-સુસ્સુસા, વિળઓ एस વિયાહિઓ ॥૩૨॥

(૩) આયરિયમાઈએ, વેયાવન્નંમિ દસવિહે ।

આસેવણં જહાથામ, વેયાવન્ન તમાહિય ॥૩૩॥

(૪) વાયણા^૧ પુચ્છણા^૨ જેવ, તહેવ પરિયટ્ટણા^૩ ।

અણુપ્પેહા^૪ ધમ્મકહા,^૫ સજ્ઞાઓ પંચહા ભવે ॥૩૪॥

(૫) અટ્ટ^૧ રટ્ટાણિ^૨ વજ્જિત્તા, જ્ઞાણજ્ઞા સુસમાહિએ ।

ધમ્મ^૩ સુલ્લકાઈ^૪ જ્ઞાણાઈ, જ્ઞાણં ત તુ બુહા વએ ॥૩૫॥

(૬) સયણાસણઠાણે વા, જે ડ મિલ્લૂ ન વાવરે ।

કાયસ્સ વિચસગ્ગો, છટ્ઠો સો પરિકિત્તિઓ ॥૩૬॥

એવં તવં તુ વુવિહ, જે સમ્મં આયરે મુણી ।

સો લિપ્પં સન્નવસંસારા, વિપ્પમુચ્છઈ પંડિઓ ॥૩૭॥

॥ ત્તિ વેમિ ॥

अह चरणविहि-नामं एगतीसइमं अज्झयणं

चरणविहिं पवक्खामि, जीवस्स उ सुहावह ।
जं चरित्ता बहू जीवा, तिण्णा ससारसागर ॥ १ ॥
एगओ विरइं कुज्जा, एगओ य पवत्तण ।
असजमे निर्यात्ति च, सजमे य पवत्तण ॥ २ ॥
राग-दोसे य दो पावे, पावक्कम्मपवत्तणे ।
जे भिक्खू हमई निच्च, से न अच्छइ मडले ॥ ३ ॥
दडाण गारवाण च, सत्ताण च तिय तियं ।
जे भिक्खू चयइ निच्च, से न अच्छइ मडले ॥ ४ ॥
दित्त्वे य जे उवसणो, तहा तेरिच्छ-माणुसे ।
जे भिक्खू सहई निच्च, से न अच्छइ मडले ॥ ५ ॥
विगहा-कसाय-सन्नाण, क्षाणाण च दुय तहा ।
जे भिक्खू वज्जई निच्च, से न अच्छइ मडले ॥ ६ ॥
वएसु इदियत्येसु, समिईसु किरियासु य ।
जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मडले ॥ ७ ॥
लेसासु छसु काएसु, छक्के आहारकारणे ।
जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मडले ॥ ८ ॥
पिडोगहपडिमासु, मयट्ठाणेषु सत्तसु ।
जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मडले ॥ ९ ॥

મદેસુ બભગુતીસુ, મિવલુધ્મમ્મિ દસવિહે ।
જે મિવલૂ જયઈ નિચ્ચં, સે ન અચ્છઈ મંડલે ॥૧૦॥

ઉવાસગાણ પઢિમાસુ, મિવલૂણ પઢિમાસુ ય ।
જે મિવલૂ જયઈ નિચ્ચં, સે ન અચ્છઈ મંડલે ॥૧૧॥

કિરિયાસુ ભૂયગામેસુ, પરમાહમિએસુ ય ।
જે મિવલૂ જયઈ નિચ્ચં, સે ન અચ્છઈ મંડલે ॥૧૨॥
ગાહાસોલસર્ણહ, તહા અસજમમિ ય ।
જે મિવલૂ જયઈ નિચ્ચં, સે ન અચ્છઈ મંડલે ॥૧૩॥

બમમિ નાયજ્ઞાયણેસુ, ઠાણેસુ ય ડસમાહિએ ।
જે મિવલૂ જયઈ નિચ્ચં, સે ન અચ્છઈ મંડલે ॥૧૪॥

એગવીસાએ સવલે, વાવીસાએ પરીસહે ।
જે મિવલૂ જયઈ નિચ્ચં, સે ન અચ્છઈ મંડલે ॥૧૫॥

તેવીસાહ સૂયગહે, હ્વાહિએસુ સુરેસુ અ ।
જે મિવલૂ જયઈ નિચ્ચં સે ન અચ્છઈ મંડલે ॥૧૬॥

પળવીસભાવણાસુ, ઉદ્દેસેસુ દસાહણં ।
જે મિવલૂ જયઈ નિચ્ચં, સે ન અચ્છઈ મંડલે ॥૧૭॥

અળગારગુર્ણેહિં ચ, પગપ્પમિ તહેવ ય ।
જે મિવલૂ જયઈ નિચ્ચં, સે ન અચ્છઈ મંડલે ॥૧૮॥

પાવસુયપસંગેસુ, મોહઠાણેસુ ચેવ ય ।
જે મિવલૂ જયઈ નિચ્ચં, સે ન અચ્છઈ મંડલે ॥૧૯॥

सिद्धाङ्गुणजोगेसु, तेत्तीमासायणासु य ।
 जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मडल ॥२०॥
 इइ एएसु ठाणेषु, जे भिक्खू जयई सया ।
 खिप्प सो सब्बसमारा, बिप्पमुच्चइ पडिओ ॥२१॥
 ॥ ति बेमि ॥

अह पमायट्ठाण-नामं बत्तीसइमं अञ्जयणं

अ च्चं त का ल स्स समूलगस्म,
 सब्बस्म दुक्खस्स उ जो पमोक्खो ।
 त भासओ मे पडिपुण्णचित्ता,
 सुहेण एगतहिय हियत्थ ॥ १ ॥
 नाणस्म सज्जस्स पगासणाए,
 अन्नाणमोहस्म विवज्जणाए ।
 रागस्स दोसस्स य सखएण,
 एगतसोक्खं समुवेइ मोक्ख ॥ २ ॥
 तस्सेस मग्गो गुरुविट्ठसेवा,
 विवज्जणा वालजणस्स दूरा ।
 सज्जाय एगतनिस्सेवणा य,
 सुत्तत्थसँचितणया धिई य ॥ ३ ॥

आहारमिच्छे मियमेसणिज्ज,
 सहायमिच्छे निउणत्थबुद्धि ।
 निकेयमिच्छेज्ज विवेगजोगं,
 समाहिकामे समणे तवस्वी ॥ ४ ॥

न धा लभेज्जा निउण सहाय,
 गुणाहिय वा गुणओ सम धा ।
 एगो वि पावाड विवज्जयतो,
 विहरेज्ज कामेसु असज्जमाणो ॥ ५ ॥

जहा य अडप्पभवा बलागा,
 अड बलागप्पभवं जहा य ।
 एमेव मोहाययण खु तण्हा,
 मोह च तण्हाययण वयंति ॥ ६ ॥
 रागो य दोसो वि य कम्मबीय,
 कम्म च मोहप्पभव वयंति ।
 कम्म च जाइमरणस्स मूल,
 दुक्ख च जाइमरण वयंति ॥ ७ ॥

दुक्ख हय जस्स न होइ मोहो,
 मोहो हओ जस्स न होइ तण्हा ।
 तण्हा हया जस्स न होइ लोहो,
 लोहो हओ जस्स न किंचणाइं ॥ ८ ॥

रागं च दोषं च तद्देव मोहं,
उद्धतुकामेण स मूलं जालं ।
जे जे उवाया पडिबज्जियव्वा,
ते कित्तइस्सामि अहाणुपुण्वि ॥ ९ ॥

रसा पगाम न निसेवियव्वा,
पायं रसा दित्तिकरा नराण ।
दित्तं च कामा समभिद्ववति,
“हुम जहा साउफल व पक्खी” ॥ १० ॥

“जहा दवग्गी पउरिधणे वणे,
समारुओ नोवसम उवेइ ।”
एविंदियग्गी वि पगामभोइणो,
न बंभयारिस्स हियाय कस्सई ॥ ११ ॥

विवित्तसेज्जासण जतियाणं,
ओमासणाणं दमिइंदियाण ।
न रागसत्तू धरिसेइ चित्तं,
“पराइओ बाहिरिवोसहेहि” ॥ १२ ॥

“जहा विरालावसहस्स मूले,
न मूसगाण वसही पसत्था ।”
एमेव इत्थीनिलयस्स मज्जे,
न बंभयारिस्स छमो निवासो ॥ १३ ॥

न रूवं-लावण-विलास-हास,
 न जपिय इगिय-पेहिय वा ।
 इत्थीण चित्तसि निवेसइत्ता,
 दट्ठं धवस्से समणे तवस्सी ॥१४॥

अदंसणं चेव अपत्थण च,
 अचित्तण चेव अकित्तण च ।
 इत्थीजणस्सारियज्ज्ञाणजुग,
 हिय सया बंभवए रयाण ॥१५॥

काम तु देवीहि विभूसियार्हि,
 न चाइया खोभइउ तिगुत्ता ।
 तहा वि एगतहिय ति नच्चा,
 विवित्तवासो मुणिण पसत्थो ॥१६॥

मोक्खामिकंखिस्स उ माणवस्स,
 संसारमीरुस्स ठियस्स घम्मे ।
 नेयारिस्स दुत्तरमत्थि लोए,
 जहित्थिओ बालमणोहरामो ॥१७॥

एए य संगे समइक्कमित्ता,
 सुदुत्तरा चेव भवति सेसा ।
 जहा म हा सा ग र भुत्त रि त्ता,
 नई भवे अवि. गगासमाणा ॥१८॥

कामाणुगिद्विष्यभवं खु दुक्खं,
 सव्वस्स लोगस्स सदेवगस्स ।
 जं काइयं माणसियं च किच्चि,
 तस्संतगं गच्छइ वीयरगो ॥१९॥

‘जहा य किपागफला मणोरमा,
 रसेण वण्णेण य भुज्जमाणा ।
 त खुहुए जीविए पच्चमाणा,
 एओवमा कामगुणा विवागे ॥२०॥

जे इंदियाण विसया मणुभा,
 न तेसु भाव निसिरे कयाइ ।
 न धामणुत्तेसु मणं पि कुज्जा,
 समाहिकामे समणे तवस्सी ॥२१॥

(१) चक्खुस्स रुव गहण वयति,
 तं रागहेउं तु मणुत्तमाहु ।
 त दोसहेउं अमणुत्तमाहु,
 समो य जो तेसु स वीयरगो ॥२२॥

रुवस्स चक्खु गहणं वयति,
 चक्खुस्स रुव गहणं वयति ।
 रागस्स हेउं समणुत्तमाहु,
 दोसस्स हेउं अमणुत्तमाहु ॥२३॥

रुदेसु जो गिद्धिमुवेइ तिप्प,
अकालिय पावइ से विणास ।
रागाउरे से 'जह वा पयगे',
आलोयलोले समुवेइ मच्चु ॥२४॥

जे यावि दोस समुवेइ तिप्प,
तसि क्खणे से उवेइ दुक्ख ।
दुद्धतदोसेण सएण जत्त,
न किचि रुव अवरज्ज्ञइ से ॥२५॥

ए ग त र त्ते रुइरसि रुवे,
अतालसे से कुणई पओस ।
दुक्खस्स सपीलमुवेइ बाले,
न लिप्पई तेण मुणी चिरागो ॥२६॥

रुवाणुगासाणुगए य जीवे,
चराचरे हिंसइ ऽणेगरुवे ।
चि ते हि ते परिस्तावेइ बाले,
पीलेइ अत्तट्ठगु किलिट्ठे ॥२७॥

रुवाणुवाएण परिग्गहमि,
उप्पायणे रक्खण-सन्निओगे ।
वए विओगे य कह सुह से,
सभोगकाले य अतित्तलाभे ॥२८॥

रूवे अतित्ते य परिग्गहमि,
 सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठि ।
 अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स,
 लेभाविले आययई अदत्तं ॥२९॥

तण्हामिभूयस्स अदत्तहारिणो,
 रूवे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
 मायामुस वड्ढइ लोभदोसा,
 तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥३०॥

भोसस्स पच्छा य पुरत्थमो य,
 पभोगकाले य दुही दुरत्ते ।
 एव अदत्ताणि समाययत्तो,
 रूवे अतित्तो दुहिमो अणिस्सो ॥३१॥

रूवाणुरत्तस्स नरस्स एव,
 कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किचि ?
 तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं,
 निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥३२॥

एमेव रूवमि गमो पभोस,
 उवेइ दु क्खो ह प रं प रा ओ ।
 पदुट्ठच्चित्तो य चिणाइ कम्म,
 जं से पुणो होइ दुह विवागे ॥३३॥

રૂઢે વિરત્તો મણુઓ વિસોગો,
 એણ દુઃખો હ પર પ રેણ ।
 ન લિપ્પે ભવમજ્જો વિ સતો,
 જલેણ વા પોક્કરિણીપત્તાસ ॥૩૪॥

(૨) સોયસ્સ સદ્ ગહણં વયંતિ,
 તં રાગહેઝ તુ મણુન્નમાહુ ।
 ત દોસહેઝં અમણુન્નમાહુ,
 સમો ય જો તેસુ સ વીયરાગો ॥૩૫॥

સદ્ધસ્સ સોય ગહણ વયંતિ,
 સોયસ્સ સદ્ ગહણં વયંતિ ।
 રાગસ્સ હેઝ સમણુન્નમાહુ,
 દોસસ્સ હેઝ અમણુન્નમાહુ ॥૩૬॥

સદ્દેસુ જો ગિદ્ધિમુવેદ્ધ તિષ્ઠ્ઠ,
 અકાલિય પાવદ્ધ સે વિણાસ ।
 “રાગાઝરે હરિણમિગે વ મુદ્ધે,
 સદ્દે અતિત્તે સમુવેદ્ધ મજ્જું” ॥૩૭॥

જે યાવિ દોસ સમુવેદ્ધ તિષ્ઠ્ઠ,
 તસિ કલ્લણે સે ઝ ઝવેદ્ધ દુઃખ ।
 દુદ્ધંતદોસેણ સણ્ણ જત્તુ,
 ન કિંચિ સદ્ અવરજ્જદ્ધ સે ॥૩૮॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य,
 पओगकाले य दुही दुरते ।
 एव अदत्ताणि समाययतो,
 सद्दे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥४४॥

सद्दाणुरत्तस्स नरस्स एव,
 कत्तो सुह होज्ज कयाइ किंचि ?
 तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्ख,
 निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥४५॥

एमेव सद्दमि गओ पओस,
 जवेइ दुक्खो ह प र प रा ओ ।
 पट्ठुठचित्तो य चिणाइ कम्मं,
 ज से पुणो होइ दुह विवागे ॥४६॥

सद्दे विरत्तो मणुओ विसोगो,
 एएण दुक्खो ह प र प रे ण ।
 न लिप्पए भवमज्जे वि सतो,
 जलेण वा पोक्खरिणीपलास ॥४७॥

(३) घाणस्स गंध गहणं वयति,
 त रागहेउ तु मणुस्रमाहु ।
 त दोसहेउ अमणुस्रमाहु,
 समो य जो तेसु स वीयरानो ॥४८॥

गधस्स घाणं गहणं वयति,
 घाणस्स गधं गहणं वयति ।
 रागस्स हेउ समणुन्नमाहु,
 दोसस्स हेउ अमणुन्नमाहु ॥४९॥

गधेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्व,
 अकालिय पावइ से विणास ।
 “रागाउरे ओसहगघगिद्धे,
 सप्पे विलाओ विव निक्खमते” ॥५०॥

जे यावि दोस समुवेइ तिव्व,
 तसि क्खणे से उ उवेइ दुक्ख ।
 दुहंतदोसेण सएण जत्तु,
 न किच्चि गधं अवरज्झई से ॥५१॥

एगंतरत्ते रुइरसि गंधे,
 अतालसे से कुणई पओस ।
 दुक्खस्स सपीलमुवेइ बाले,
 न लिप्पई तेण भुणी विरागो ॥५२॥

गघाणुगासाणुगए य जीवे,
 चराचरे हिं स इ ऽणे गरु वे ।
 चित्तेहिं ते परित्तावेइ बाले,
 पीलेइ अत्तदृग्गुरु किलिदृठे ॥५३॥

गं घा णु वा ए ण परि मा हे ण,
 उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
 वए विओगे य क्हं सुहं से ?
 सभोगकाले य अतित्तलाभे ॥५४॥

गधे अतित्ते य परिग्गहमि,
 सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठि ।
 अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स,
 लोभाविले आययई अदत्तं ॥५५॥

तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो,
 गधे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
 मायामुस वड्ढइ लोभदोसा,
 तत्या वि दुक्खा न विमुच्चई से ॥५६॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य,
 पओगकाले य दुही दुरते ।
 एव अदत्ताणि समाययत्तो,
 गधे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥५७॥

गघाणुरत्तस्स नरस्स एवं,
 कत्तो सुहं होज्ज कयाड किच्चि ?
 तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्ख,
 निव्वत्तई अस्स कएण दुक्खं ॥५८॥

एमेव गंधमि गओ पओसं,
 उवेइ दुक्खो ह प र प रा ओ ।
 पबुद्धचित्तो य चिणाइ कम्म,
 ज से पुणो होइ दुहं विघागे ॥५९॥

गधे विरत्तो मणुओ विसोगो,
 एएण दुक्खो ह प र प रे ण ।
 न लिप्पई भवमज्जे वि सतो,
 जलेण वा पोक्खरिणीपत्तास ॥६०॥

(४) जिग्भाए रसं गहण वयति,
 तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
 तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु,
 समो य जो तेसु स बीयरगो ॥६१॥

रसस्स जिग्भ गहण वयंति,
 जिग्भाए रसं गहण वयति ।
 रागस्स हेउ समणुन्नमाहु,
 दोसस्स हेउ अमणुन्नमाहु ॥६२॥

रसेसु जो गिद्धिमुवेइ तिच्चं,
 अकालियं पावइ से विणास ।
 “रागाउरे षड्सविभिन्नकाए,
 मच्छे जहा आमिसभोगगिद्धे” ॥६३॥

जे यावि दोस समुवेइ तिच्च,
 तसि क्खणे से उ उवेइ दुक्ख ।
 दुद्धतदोसेण सएण जंतु,
 न किचि रसं अवरज्झई से ॥६४॥

ए गंत रत्ते रुइ रसि रसे,
 अतालसे से कुणई पओसं ।
 दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले,
 न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥६५॥

रसाणुगासाणुगए य जीवे,
 चराचरे हिंसइ ऽणेगरुवे ।
 चित्तेहि ते परितावेइ बाले,
 पीलेइ अत्तट्ठगुरु किलिट्ठे ॥६६॥

र सा णु वा ए ण पं रि म्म हं मि,
 उप्पायणे रक्खणसन्निभोगे ।
 वए विभोगे य कहं सुह से ?
 संभोगकाले य अतित्तलाभे ॥६७॥

रसे अतित्ते य परिग्गहमि,
 सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठि ।
 अतुट्ठिदोसेण दुहो परस्स,
 लोभाविले आययई अवत्त ॥६८॥

तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो,
 रसे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
 मायामुस बड्ढड लोभदोसा,
 तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥६९॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य,
 पभोगकाले य दुही दुरते ।
 एवं अदत्ताणि समाययतो,
 रसे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥७०॥

रसानुरत्तस्स नरस्स एव,
 कत्तो सुह होज्ज कयाइ किञ्चि ?
 तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं,
 निट्ठत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥७१॥

एमेव रसम्मि गओ पओस,
 उ वे ड्ढ दुक्खो ह प र प रा ओ ।
 पट्ठुत्तचित्तो य चिणाइ कम्म,
 जं से पुणो होइ दुह विवागे ॥७२॥

रसे विरत्तो मणुओ विसोगो,
 एएण दुक्खो ह प रं प रे ण ।
 न लिप्पई भवमज्जे वि सतो,
 जलेण वा पोक्खरिणीपत्तासं ॥७३॥

(૫) કાયસ્સ ફાસ ગહણ વયતિ,
 ત રાગહેઝ તુ મણુભમાહું ।
 ત દોસહેઝ અમણુભમાહું,
 સમો ય જો તેસુ સ વીયરાગો ॥૭૪॥

ફાસસ્સ કાયં ગહણ વયતિ,
 કાયસ્સ ફાસં ગહણ વયંતિ ।
 રાગસ્સ હેઝ સમણુભમાહું,
 દોસસ્સ હેઝ અમણુભમાહું ॥૭૫॥

ફાસેસુ જો ગિદ્ધિમુવેદ્ધ તિવ્વં,
 અકાલિયં પાવદ્ધ સે વિણાસ ।
 'રા ગા ડ રે સી ય જ લા ષ સ સ્ને,
 ગાહગ્ગહીએ મહીસે વિવસ્સે' ॥૭૬॥

જે યાવિ દોસ સમુવેદ્ધ તિપ્પ,
 તસિ વ્ઘણે સે ડ ડવેદ્ધ દુક્કલ ।
 દુદ્ધત્તદોસેણ સણ્ણ જંતૂ,
 ન કિચિ ફાસ અવરજ્ઞદ્ધિ સે ॥૭૭॥

એગંતરત્તે રુડરસિ ફાસે,
 અતાલિસે સે કુણદ્ધિ પખોસં ।
 દુક્કલસ્સ સપીલમુવેદ્ધ બાલે,
 ન લિપ્પદ્ધિ તેણ મુળી વિરાગો ॥૭૮॥

फासाणुगासाणुगए य जीवे,
 चराचरे हिंसइ ऽ नेगदवे ।
 चित्तेहि ते परितावेइ बाले,
 पीलेइ अत्तट्ठगुरु किलिट्ठे ॥७९॥

फासाणुवाएण परिगहेण,
 उप्पायणे रक्खणसन्निभोगे ।
 वए विभोगे य कह सुह से ?
 समोगकाले य अतित्तलामे ॥८०॥

फासे अतित्ते य परिगहमि,
 सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठ ।
 अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स,
 लोभाविले आययई अदत्तं ॥८१॥

तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो,
 फासे अतित्तस्स परिगहे य ।
 मायामुस वड्ढइ लोमदोसा,
 तत्था दि दुक्खा न विमुच्चई से ॥८२॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्यओ य,
 पओगकाले य दुही दुरते ।
 एव अदत्ताणि समाययतो,
 फासे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥८३॥

फासाणुरत्तस्स नरस्स एव,
 कत्तो सुह होज्ज कयाइ किचि ?
 तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्ख,
 निव्वत्तई जस्स कएण दुक्ख ॥८४॥

एमेव फासमि गओ पओस,
 उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
 पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्म,
 ज से पुणो होइ दुह विवागे ॥८५॥

फासे बिरत्तो मणुओ विसोगे,
 एएण दुक्खोहपरपरेण ।
 न लिप्पई भवमज्जे वि संतो,
 जलेण वा पोक्खरिणीपलास ॥८६॥

(६) मणस्स भाव गहणं वयति,
 त रागहेउ तु मणुन्नमाहु ।
 त दोसहेउं अमणुन्नमाहु,
 समो य जो तेसु स वीयरानो ॥८७॥

भावस्स मण गहण वयति,
 मणस्स भाव गहण वयति ।
 रागस्स हेउ समणुन्नमाहु,
 दोसस्स हेउ अमणुन्नमाहु ॥८८॥

भावेसु जो गिद्धिमुवेइ तिच्च,
अकालिय पावइ से विणास ।

"रागाउरे कामगुणसु गिद्धे,
करेणुमगावहिए गजे वा" ॥८९॥

जे यावि दोसं समुवेइ तिच्च,
तसि बखणे से उ उवेइ दुक्ख ।

दुद्धतदोसेण सएण जतू,
न किच्चि मावं अवरज्जई से ॥९०॥

एगतरत्ते रुद्धरसि भावे,
अतालिसे से कुणई पओस ।

दुक्खस्स सपीलमुवेइ वाले,
न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥९१॥

भावाणुगासाणुगए य जीवे,
चराचरे हिसइ ऽ णेगरुवे ।

चित्तेहि ते परितावेइ वाले,
पोलेइ अत्तद्वगुरू किलिद्धे ॥९२॥

भावाणुवाएण परिगहेण,
उप्पायणे रक्खणसन्निभोगे ।

वाए विभोगे य कह सुह से ?
संभोगकाले य अत्तिसत्ताभे ॥९३॥

भावे अतित्तो य परिग्गहमि,
 सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठि ।
 अतुट्ठिदोसेण दुहो परस्स,
 लोभाविले आययई अदत्त ॥९४॥

तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो,
 भावे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
 मायामुस बड्ढइ लोभदोसा,
 तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥९५॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य,
 पओगकाले य दुहो डुरते ।
 एव अदत्ताणि समाययतो,
 भावे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥९६॥

भावाणुरत्तस्स नरस्स एव,
 कत्तो सुह होज्ज कयाइ किचि ?
 तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्ख,
 निव्वत्तई जस्स काएण दुक्खं ॥९७॥

एमेव भावमि गओ पओस,
 उवेइ दुक्खोहपरपराओ ।
 पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं,
 ज से पुणो होइ दुह विवाणे ॥९८॥

भावे विरत्तो मणुओ विसोणो,
 एएण दुक्खोहपरपरेण ।
 न लिप्पई भवमज्जे वि सतो,
 जलेण वा पोक्खरिणीपलास ॥९९॥

एविदियत्या य मणरस अत्या,
 दुक्खस्स हेउ मणुयस्स रागिणो ।
 ते चेव थोव पि कपाड दुक्ख,
 न वीयरगस्स करेति किञ्चि ॥१००॥

न कामभोगा समयं उर्वेति,
 न यावि भोगा विगइं उर्वेति ।
 जे तप्पओसी य परिगही य,
 सो तेसु मोहा विगइ उव्वेइ ॥१०१॥

कोह च माणं च तहेव मायं,
 लोहं दुगुच्छ अरइ रड च ।
 हास भयं सोगपुमिस्त्थिवेयं,
 नपुमवेयं विविहे य भावे ॥१०२॥

आवज्जई एवमणेगएवे,
 एवविहे कामगुणेषु सन्नो ।
 अन्ने य एयप्पभवे विसेसे,
 कारुणदीणे हिरिमे वडस्से ॥१०३॥

कप्प न इच्छिञ्ज सहायलिच्छू,
 पच्छाणुतावे न तवप्पभाव ।
 एव वियारे अमियप्पयारे,
 आवज्जइ इंदियचोरवस्से ॥१०४॥

तओ से जायति पओयणाइ,
 निमज्जिउं मोहमहणवमि ।
 सुहेसिणो दुक्खविणोयणद्धा,
 तप्पच्चय उज्जमए य रागी ॥१०५॥

विरज्जमाणस्स य इदियत्था,
 सट्ठाइया तावइयप्पगारा ।
 न तस्स सत्त्वे वि मणुस्सयं वा,
 निव्वत्तयंती अमणुस्सय वा ॥१०६॥

एवं ससकप्प-विकप्पणासु,
 सजायई समयमुवट्ठियस्स ।
 अत्थे य संकप्पयओ तओ से,
 पहीयए कामगुणेषु तण्हा ॥१०७॥

स वीयरगो कयसव्वकिच्चो,
 खवेइ नाणावरण खणेणं ।
 तहेव ज दंसणमावरेइ,
 जं चउतराय पकरेइ कम्म ॥१०८॥

सच्चं तओ जाणइ पासए य,
अमोहणे होइ निरंतराए ।

अणासवे क्षाण-समाहिजुत्ते,
आउक्खए मोक्खमुवेइ सुद्धे ॥१०९॥

सो तस्स सच्चस्स दुहस्स मुक्को,
जं चाहई सययं जंतुमेयं ।
दीहामयं विप्पमुक्को पसत्थो,
तो होइ अच्चंतसुही कयत्थो ॥११०॥

अणाइकालप्पभवस्स एसो,
सच्चस्स दुक्खस्स पमोक्खमग्गो ।

विद्याहि यो जं समुविच्चसत्ता,
कमेण अच्चतसुही भवति ॥१११॥
॥ ति वेमि ॥

अहं कम्मपयडी-नामं तेत्तीसइमं अज्झयण

अट्ट-कम्माइ वोच्छामि, आणुप्पुण्व जहक्कम ।
जोहं बद्धो अयं जीवो, ससारे परियट्ठई ॥१॥

मूलप्रकृतयः—

नाणस्सावरणिज्ज^१, दंसणावरण^२ तथा ।
वेयणिज्ज^३ तथा मोहं^४, आउकम्म^५ तहेव य ॥२॥
नामकम्मं^६ च गोय^७ च, अतरायं^८ तहेव य ।
एवमेयाइ कम्माइ अट्टेव उ समासओ ॥३॥

उत्तरप्रकृतयः—

(१) नाणावरणं पंचविहं, सुयं^१ आभिणिबोहियं^२ ।
ओहिनाणं^३ च तइयं, मणनाणं^४ च केवलं^५ ॥४॥
(२) निहा^१ तहेव पयला^२ निहानिहा^३ पयलपयला^४ य ।
तत्तो यथीणगिद्धी^५ उ, पंचमा होइ नायव्वा ॥५॥
चक्खु^१ मचक्खू^२ ओहिस्स^३, दंसणे केवले^४ य आवरणे ।
एवं तु नवविगप्प, नायव्व दंसणावरणं ॥६॥
(३) वेयणीयंपि यं बुविहं, साय^१मसाय^२ च आहियं ।
सायस्स उ बहू मेया, एमेव असायस्स वि ॥७॥

- (४) मोहणिज्जपि दुविह, दसणे^१ चरणे^२ तथा ।
 दसण तिविह वृत्त, चरणे दुविहं भवे ॥८॥
 सम्मत्त^१ चेव मिच्छत्त^२, सम्मामिच्छत्तमेव^३ य ।
 एयाओ तिल्लि पयडीओ, मोहणिज्जस्स दसणे ॥९॥
 चरित्तमोहण कम्म, दुविह तु वियाहिय ।
 कसायमोहणिज्जं^१ तु, नोकसाय^२ तहेव य ॥१०॥
 सोलसविहभेएण, कम्म तु कसायजं ।
 सत्तविहं नवविह वा, कम्म च नोकसायजं ॥११॥
 (५) नेरइय^१तिरिक्खाउ^२ मणुस्साउ^३ तहेव य ।
 देवाउयं^४ चउत्थं तु, आउकम्मं चउच्चिहं ॥१२॥
 (६) नामकम्म तु दुविह, सुह^१मसुहं^२ च आहियं ।
 सुहस्स उ बहू भेया, एमेव असुहस्स वि ॥१३॥
 (७) गोयं कम्मं दुविह, उच्च^१नीयं^२ च आहियं ।
 उच्चं अदुविह होइ, एव नीय पि आहिय ॥१४॥
 (८) दाणे^१तामे^२य भोगे^३ ए, उवभोगे^४वीरिए^५तहा ।
 पंचविहमंतरायं, समासेण वियाहियं ॥१५॥
 एयाओ मूलपयडीओ, उत्तराओ य आहिया ।
 पएसगं खेतकाले य, भाव च उत्तर सुण ॥१६॥
 सच्चोसं चेव कम्माण, पएसगमणतणं ।
 गंठियसत्ताईयं, अतो सिद्धाण आहिय ॥१७॥

सब्बजीवाण कम्म तु, संगहे छद्दिसागयं ।
सब्बेसु वि पएसेसु, सब्ब सच्चेण बद्धगं ॥१८॥

कर्मणा जघत्थोत्कृष्टा च स्थितिः—

उदहीसरिसनामाणं, तीसई कोडिकोडिओ ।
उक्कोसिया ठिई होइ, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥१९॥
आवरणिज्जाण दुण्ह पि, वेयणिज्जे तहेव य ।
अंतराए य कम्मंमि, ठिई एसा वियाहिया ॥२०॥
उदहीसरिसनामाण सत्तरि कोडिकोडिओ ।
मोहणिज्जस्स उक्कोसा, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥२१॥
तेत्तीस सागरोदमा, उक्कोसेण वियाहिया ।
ठिई उ आउकम्मस्स, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥२२॥
उदहीसरिसनामाण, वीसई कोडिकोडिओ ।
नामगोत्ताणं उक्कोसा, अट्टमुहुत्ता जहन्निया ॥२३॥

कर्मणामनुभागप्रदेशौः—

सिद्धाणण्णंतभागो य, अणुभागा हवति उ ।
सब्बेसु वि पएसग्ग, सब्बजीवेसु इच्छियं ॥२४॥
तम्हा एएसि कम्माणं, अणुभागा वियाणिया ।
एएसि संवरे चेव, खवणे य जए बुहे ॥२५॥
॥ त्ति बेमि ॥

अह लेसज्झयण-नामं चोत्तीसइमं अज्झयणं

लेसज्झयणं पक्खामि, आणुपुत्वि जहक्कमं ।
 छण्हं पि कम्मलेसाणं, अणुभावे सुणेह मे ॥१॥
 नामाहं वण्ण-रस-गंधं, फासपरिणामलक्खणं ।
 ठाणं ठिइं गइं चाउं, लेसाणं तु सुणेह मे ॥२॥

लेश्यानां नामानि:-

किण्हा^१ नीला^२ य काळ^३ य, तेऊ^४ पम्हा^५ तहेव य ।
 सुक्कलेसा^६ य छट्ठा य, नामाहं तु जहक्कमं ॥३॥

लेश्यानां वर्णाः-

- (१) जीमूयनिद्वसंकासा, गवलरिद्वगसन्निभा ।
 खंजंजणनयणनिभा, किण्हेलेसा उ वण्णओ ॥४॥
- (२) नीलासोगसंकासा, चासपिच्छसमप्पमा ।
 वेरुलियनिद्वसंकासा, नीललेसा उ वण्णओ ॥५॥
- (३) अयसीपुप्फसंकासा, कोइलच्छदसन्निभा ।
 पारेवयगीवनिभा, काळलेसा उ वण्णओ ॥६॥
- (४) हिंगुलुयघाउसंकासा, तरुणाइच्चसन्निभा ।
 सुयत्तुंडपईवनिभा, तेउलेसा उ वण्णओ ॥७॥

(५) हरियालभेयसंकासा, हलिद्दाभेयसमप्यभा ।

सणासणकुसुमनिभा, पम्हलेसा उ वण्णओ ॥८॥

(६) संखंककुंदसंकासा, खीरपूरसमप्यभा ।

रयय-हारसंकासा सुक्कलेसा उ वण्णओ ॥९॥

लेय्यांना रसा.-

(१) जह क डु य तुं व ग र सो,

निंवरसो कडुयरोहिणिरसो वा ।

एत्तो वि अणंतगुणो,

रसो य किण्हाए नायव्वो ॥१०॥

(२) जह तिकडुयस्स य रसो,

तिक्खो जह हत्थिपिप्पलीए वा ।

एत्तो वि अणंतगुणो,

रसो उ नीलाए नायव्वो ॥११॥

(३) जह तरुणं व ग र सो,

तुवरकविट्ठस्स वा वि जारिसओ ।

एत्तो वि अणंतगुणो,

रसो उ काऊण नायव्वो ॥१२॥

(४) जह प रि ण यं व ग र सो,

पक्ककविट्ठस्स वावि जारिसओ ।

एत्तो वि अणंतगुणो,

रसो उ तेऊण नायव्वो ॥१३॥

(५) व र वा रुणी ए व रसो,
विविहाण व आसवाण जारिसओ ।

म हु मे र य स्स व रसो,
एत्तो पम्हाए परएणं ॥१४॥

(६) खज्जूर-मु द्वि य र सो,
खीररसो खंड-सक्कररसो वा ।

एत्तो वि अणंतगुणो,
रसो उ सुक्काए नायव्वो ॥१५॥

लेश्याना गन्धाः—

जह गो म ड स्स गंधो,
सुणगमडस्स व 'जहा महिमडस्स' ।
एत्तो वि अणंतगुणो,
लेसाणं अप्पसत्थाणं ॥१६॥

जह सुरहिकुसुमगंधो, गंधवासाण पिस्समाणाणं ।
एत्तो वि अणंतगुणो, पसत्थलेसाणं तिण्हं पि ॥१७॥

लेश्याना स्पर्शाः—

जह करगयस्स फासो, गोजिम्माए य सागपत्ताणं ।
एत्तो वि अणंतगुणो, लेसाणं अप्पसत्थाणं ॥१८॥
जह बूरस्स व फासो,
नवणीयस्स व सिरीसकुसुमाणं ।

एत्तो वि अणंतगुणो,
पसत्थलेसाण तिण्हं पि ॥१९॥

लेख्यानां परिणामा -

तिविहो व नवविहो वा, सत्तावीसद्विविहेवकसीओ वा ।
दुसओ तेयालो वा, लेसाणं होइ परिणामो ॥२०॥

लेख्याना लक्षणानि-

(१) पंचासवप्पवत्तो, तीहिं अगुत्तो छसुं अविरओ य ।
तिव्वारंभपरिणओ, खुट्ठो साहसिओ नरो ॥२१॥
निद्वघसपरिणामो, निस्संसो अजिइंदिओ ।
एयजोगसमाउत्तो, किण्हलेसं तु परिणमे ॥२२॥

(२) इस्सा अ म रि स अ त वो,
अविज्जमाया अहीरिया य ।

गिद्धी पओसे य सढे पमत्ते,
रसलोलुए साय गवेसए य ॥२३॥

आरंभाओ अविरओ, खुट्ठो साहसिओ नरो ।
एयजोगसमाउत्तो, नीललेसं तु परिणमे ॥२४॥

(३) वंके वंकसमायरे, नियडिल्ले अणुज्जुए ।
पलिउंचगओवहिए, मिच्छविट्ठी अणारिए ॥२५॥
उप्फालगदुट्ठवाई य, तेणे आवि य मच्छरी ।
एयजोगसमाउत्तो, काळलेसं तु परिणमे ॥२६॥

नीयावित्ती अचवले, अमाई अकुऊहले ।
 विणीयविणए दत्ते, जोगव उवहाणवं ॥२७॥
 पियघम्मे दहघम्मे ऽवज्जभीह हिएसए ।
 एयजोगसमाउत्तो, तेउलेसं तु परिणमे ॥२८॥
 (५) पयणुकोहमाणे य, मायालोभे य पयणुए ।
 पसंतचित्ते दंतप्पा, जोगव उवहाणव ॥२९॥
 तहा पयणुवाई य, उवसते जिइदिए ।
 एयजोगसमाउत्तो, पम्हलेस तु परिणमे ॥३०॥
 (६) अट्टरुद्दाणि वड्जित्ता, घम्मसुक्काणि ज्ञायए ।
 पसंतचित्ते दत्तप्पा, समिए गुत्ते य गुत्तिहि ॥३१॥
 सरागे वीयरगे वा, उवसते जिइदिए ।
 एयजोगसमाउत्तो, सुक्कलेस तु परिणमे ॥३२॥

लेशयानां स्थानानि.—

असखिज्जाणोसप्पिणीण,उस्सप्पिणीण जे समय ।
 संखाईया लोणा, लेसाण हवति ठाणाइं ॥३३॥

लेशयानां स्थिति.—

भुहुत्तद्धं तु जहन्ना, तेत्तीसा सागरा भुहुत्तहिया ।
 उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा किण्हलेसाए ॥३४॥
 भुहुत्तद्धं तु जहन्ना, दस उदही पलियमसंखभागमन्नहिया ।
 उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा नीललेसाए ॥३५॥

मुहुत्तद्वं तु जहन्ना, तिण्णुदही पलियमसंखभागमव्वहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा काउलेसाए ॥३६॥

मुहुत्तद्वं तु जहन्ना, दोण्णुदही पलियमसंखभागमव्वहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा तेउलेसाए ॥३७॥

मुहुत्तद्वं तु जहन्ना, दस होति य सागरा मुहुत्तहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा पम्हलेसाए ॥३८॥

मुहुत्तद्वं तु जहन्ना, तेत्तीस सागरा मुहुत्तहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा सुक्कलेसाए ॥३९॥

एसा खलु लेसाणं, ओहेण ठिई उ वणिण्या होइ ।
चउसु वि गईसु एतो, लेसाण ठिइं उ वोच्छामि ॥४०॥

दस वाससहस्साइ, काउए ठिई जहन्निया होइ ।
तिण्णुदही पलिओवम, असंखभागं च उक्कोसा ॥४१॥

तिण्णुदही पलिओवम, मसंखभागो जहन्नेण नीलठिई ।
दम उदही पलिओवम, मसंखभागं च उक्कोसा ॥४२॥

दसउदही पलिओवम, मसंखभागं जहन्निया होइ ।
तेत्तीससागराइं उक्कोसा, होइ किण्हाए लेसाए ॥४३॥

एसा नेरइयाणं, लेमाण ठिई उ वणिण्या होइ ।
तेण परं वोच्छामि, तिरियमणुस्ताण देवाणं ॥४४॥

अतोमुहत्तमद्ध, लेसाण ठिई जहिं जहिं जाउ ।

तिरियाण नराण वा, वन्जिता केवल लेस ॥४५॥

मुहुत्तमद्ध तु जहन्ना, उक्कोसा होइ पुव्वकोडीओ ।

नवहिं वरिसेहि ऊणा, नायव्वा सुक्कलेसाए ॥४६॥

एसा तिरियनराण, लेसाण ठिई उ वणिण्या होइ ।

तेण पर वोच्छामि, लेसाण ठिई उ देवाणं ॥४७॥

दस वाससहस्साइं, किण्हाए ठिई जहन्निया होइ ।

पलियमसखिज्जइमो, उक्कोसा होइ किण्हाए ॥४८॥

जा किण्हाए ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया ।

जहन्नेण नीलाए, पलियमसख च उक्कोसा ॥४९॥

जा नीलाए ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया ।

जहन्नेण काउए, पलियमसखं च उक्कोसा ॥५०॥

तेण पर वोच्छामि, तेऊलेसा जहा सुरगणाण ।

भवणवइ-वाणमतर-जोइस-वेमाणियाणं च ॥५१॥

पलिओवमं जहन्ना, उक्कोसा सागरा उ दुन्नइहिया ।

पलियमसखेज्जेण, होइ भागेण तेऊए ॥५२॥

दसवाससहस्साइ, तेऊए ठिई जहन्निया होइ ।

दुन्नुदही पलिओवम, असखभागं च उक्कोसा ॥५३॥

जा तेऊए ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समयमग्गहिआ ।
 जह्मेण पम्हाए, दस उ मुहुत्ताऽहियाइ उक्कोसा ॥५४॥
 जा पम्हाए ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समयमग्गहिआ ।
 जह्मेणं सुक्काए, तेत्तीसमुहुत्तमग्गहिआ ॥५५॥

तिसृभिरधर्मलेश्याभिदुर्गति-

किण्हा नीला काऊ, तिन्नि वि एयाओ अहम्मलंसाओ ।
 एयाहिं तिहिं वि जीवो, दुग्गइ उववज्जइ ॥५६॥

तिसृभिःधर्मलेश्याभिःसुगति-

तेऊ पम्हा सुक्का, तिन्नि वि एयाओ धम्मलंसाओ ।
 एयाहिं तिहिं वि जीवो, दुग्गइ उववज्जइ ॥५७॥
 लेसाहिं सज्जाहिं, पढमे समयमि परिणयाहिं तु ।
 न ह्नु कस्सइ उववाओ, परे भवे अत्थि जीवस्स ॥५८॥
 लेसाहिं सज्जाहिं, चरिमे समयमि परिणयाहिं तु ।
 न ह्नु कस्सइ उववाओ, परे भवे होइ जीवस्स ॥५९॥
 अतमुहुत्तंमि गए, अंतमुहुत्तमि सेसए चेव ।
 लेसाहिं परिणयाहिं, जीवा गच्छति परलोयं ॥६०॥
 तम्हा एयासि लेसाण, अणुभावं वियाणिआ ।
 अप्पसत्थाओ वज्जित्ता, पसत्थाओऽहिट्ठिए मुणी ॥६१॥
 ॥ त्ति वेमि ॥

अहं अणगारिज्ज-नामं पणतीसइमं अज्झयण

सुणेह मे एगगमणा, मग्ग वुद्धेहि देसियं ।
जमायरतो भिक्खू, दुक्खाणतकरे भवे ॥१॥
गिहवास परिचज्ज, पवज्जामस्सिए मुणी ।
इमे सगे वियाणिज्जा, जेहिं सज्जति माणवा ॥२॥
तहेव हिंस^१ अलिय^२, चोज्ज^३ अवभसेवण^४ ।
इच्छाकाम च लोभ^५ च, सजओ परिवज्जए ॥३॥
मणोहर चित्तघर, मत्सघृवेण वासिय ।
सकवाड पडुल्लोय मणसावि न पत्थए ॥४॥
इदियाणि उ भिक्खुत्स, तारिसमि उवत्सए ।
दुक्कराइ निवारेउ, कामरागविचड्ढणे ॥५॥
सुसाणे सुन्नगारे वा, रुक्खमूले व इक्कओ ।
पइरिक्के परफडे वा, वास तत्थाभिरोयए ॥६॥
फासुयमि अणावाहे, इत्थीहिं अणमिदुए ।
तत्थ सकप्पए वास, भिक्खू परमसंजए ॥७॥
न सय गिहाइ कुज्जा, णेव असोहिं कारए ।
गिहकम्मसमारभे, मूयाण दिस्सए बहो ॥८॥
तसाणं थावराण च, सुहुमाण बादराण य ।
तम्हा गिहसमारंभे, सजओ परिवज्जए ॥९॥

तहेव भत्तपाणेषु, पयणे पयावणेषु य ।
 पाण-भूय-दयट्ठाए, न पए न पयावए ॥१०॥
 जल-धत्त-निस्सिया जीवा, पुट्ठवी-कट्ठ-निस्सिया ।
 हम्मन्ति भत्तपाणेषु, तम्हा भिक्खू न पायए ॥११॥
 विसप्पे सव्वओ धारे, बहुपाणि-विणामणे ।
 नत्थि जोइसमे सत्थे तम्हा जोइं न दीवए ॥१२॥
 हिरण्ण जायरूव च, मणया वि न पत्थए ।
 समलेट्ठुकवणे भिक्खू, विरए कयविकए ॥१३॥
 किणंतो कइओ होइ, विक्किणतो य वाणिओ ।
 कय-विककयमि वट्ठंतो, भिक्खू न भवइ तारिसो ॥१४॥
 भिक्खियव्व न केयव्व, भिक्खुणा भिक्खवित्तिणा ।
 कय-विककओ महात्तोसो, भिक्खावित्ती सुहावहा ॥१५॥
 समुयाण उंछमेसिज्जा, जहासुत्तर्माणदिय ।
 लाभालाभमि संतुट्ठे, पिडवाय चरे मुणी ॥१६॥
 अलोले न रसे गिद्धे, जिब्भादते अमुच्छिण ।
 न रसट्ठाए भुंजिज्जा, जवणट्ठाए महामुणी ॥१७॥
 अच्चणं रयणं चेव, वदणं पूयणं तथा ।
 इड्ढी-सक्कार-सम्माणं, मणसा वि न पत्थए ॥१८॥
 सुक्कज्झाणं, क्षियाएज्जा, अणियाणे अकिचणे ।
 वोसट्ठकाए विहरेज्जा, जाव कालस्स पज्जओ ॥१९॥

निज्जुहिऊण आहारं, कालधम्मे उवट्ठिए ।
 जहिऊण माणुस बोदिं, पहु दुक्खा विमुच्चई ॥२०॥
 निम्ममो निरहंकारो, वीयरगो अणासवो ।
 संपत्तो केवलं नाणं, सासयं परिणिव्वुए ॥२१॥
 ॥ त्ति वेमि ॥

अह जीवाजीविभत्ति-नामं छत्तीसइमं अज्ज्ञयणं

जीवाजीविभत्ति सुणेहेगमणा इओ ।
 ज जाणिऊण भिक्खू, सम्मे जयइ संजमे ॥१॥

लोकात्तोक-स्वरूपम्—

जीवा चेव अजीवा य, एस लोए विद्याहिए ।
 अजीवदेसमागासे, अलोणे से विद्याहिए ॥२॥

द्रव्यादिभिर्जीवाजीवयो. प्ररूपणम्—

दब्बओ^१ खेत्तओ^२ चेव कालओ^३ भावओ^४ तथा ।
 परूवणा तेसि भवे जीवाणमजीवाण य ॥३॥

अजीवभेदा—

(१) रुविणो चेव रुवी य, अजीवा दुविहा भवे ।
 अरुवी दसहा वुत्ता, रुविणो य चउत्तिहा ॥४॥

धम्मत्थिकाए^१ तद्देसे^२, तप्पएसे^३ य आहिए ।
 अहम्मै^४ तस्स देसे^५ य, तप्पएसे^६ य आहिए ॥५॥
 आगासे^७ तस्स देसे^८ य, तप्पएसे^९ य आहिए ।
 अद्वासमए^{१०} चेव, अरूवी दसहा भवे ॥६॥
 (२) धम्माधम्मै य दो चेव, लोगमित्ता वियाहिया ।
 लोगालोगे य आगासे, समए समयखेत्तिए ॥७॥
 (३) धम्माधम्मागासा, तिन्निवि एए अणाइया ।
 अपज्जवसिया चेव, सव्वद्ध तु वियाहिया ॥८॥
 समएवि संतइ पप्प, एवमेव वियाहिया ।
 आएसं पप्प साईए, सपज्जवसिएवि य ॥९॥
 (१) खंधा^१ य खंधदेसा^२ य, तप्पएसा^३ तद्देव य ।
 परमाणुणो^४ य बोधव्वा, रूविणो य चउज्जिहा ॥१०॥
 (२) एगत्तेण पुहत्तेण, खंधा य परमाणुणो ।
 लोएगदेसे लोए य, भइयव्वा ते उ खेत्तओ ॥११॥
 सुहुमा सव्वलोगमि लोगदेसे य बायरा ।
 (३) इत्तो कालविभाग तु, तेसि वुच्छ चउज्जिहं ॥१२॥
 सतहं पप्प तेऽणाई, अप्पज्जवसिया^१ वि य ।
 ठिईं पडुच्च साईया, सप्पज्जवसिया^२ वि य ॥१३॥
 असखकालमुक्कोस^३, एक्को समओ जहत्तयं ।
 अजीवाण य रूवीण, ठिईं एसा वियाहिया ॥१४॥

अणंतकालमुक्कोस^१, एक्को समओ जहन्नय ।

अजीवाण य रूवीण, अंतरेयं वियाहियं ॥१५॥

(४) वण्णओ^१ गंधओ^२ चेव, रसओ^३ फासओ^४ तहा ।

संठाणओ^५ य विन्नोओ, परिणामो तेसि पंचहा ॥१६॥

(१) वण्णओ परिणया जे उ, पंचहा ते पकित्तिया ।

किण्हा^१ नीला^२ य लोहिया^३, हलिदा^४ सुक्किला^५ तहा ॥१७॥

(२) गंधओ परिणया जे उ, दुविहा ते वियाहिया ।

सुब्बिगंधपरिणामा^१, दुब्बिगंधा^२ तहेव य ॥१८॥

(३) रसओ परिणया जे उ, पंचहा ते पकित्तिया ।

तित्त^१-कडुय^२-कसाया^३, अंबिला^४ महुरा^५ तहा ॥१९॥

(४) फासओ परिणया जे उ, अट्टहा ते पकित्तिया ।

कक्खडा^१ मडमा^२ चेव, गल्या^३ लहुमा^४ तहा ॥२०॥

सीया^५ उण्हा^६ य निद्धा^७ य, तहा लुक्खा^८ य आहिया ।

इइ फासपरिणया एए, पुगला समुदाहिया ॥२१॥

(५) संठाण परिणया जे उ, पंचहा ते पकित्तिया ।

परिमंडला^१ य वट्ठा^२ य, तंसा^३ चउरंस^४ मायया^५ ॥२२॥

वण्णओ जे भवे किण्हे, भइए से उ गंधओ ।

रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥२३॥

वण्णओ जे भवे नीले, भइए से उ गंधओ ।

रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य ॥२४॥

વણ્ણઓ લોહિંએ જે ઉ, મદ્દએ સે ઉ ગંધઓ ।
 રસઓ ફાસઓ ચેવ, મદ્દએ સંઠાણઓ વિ ય ॥૨૫॥
 વણ્ણઓ પીયએ જે ઉ, મદ્દએ સે ઉ ગંધઓ ।
 રસઓ ફાસઓ ચેવ, મદ્દએ સંઠાણઓ વિ ય ॥૨૬॥
 વણ્ણઓ સુવિકલે જે ઉ, મદ્દએ સે ઉ ગંધઓ ।
 રસઓ ફાસઓ ચેવ, મદ્દએ સંઠાણઓ વિ ય ॥૨૭॥
 ગંધઓ જે ભવે સુન્નમી, મદ્દએ સે ઉ વણ્ણઓ ।
 રસઓ ફાસઓ ચેવ, મદ્દએ સંઠાણઓ વિ ય ॥૨૮॥
 ગંધઓ જે ભવે દુન્નમી, મદ્દએ સે ઉ વણ્ણઓ ।
 રસઓ ફાસઓ ચેવ, મદ્દએ સંઠાણઓ વિ ય ॥૨૯॥
 રસઓ તિત્તએ જે ઉ, મદ્દએ સે ઉ વણ્ણઓ ।
 ગંધઓ ફાસઓ ચેવ, મદ્દએ સંઠાણઓ વિ ય ॥૩૦॥
 રસઓ કહુએ જે ઉ, મદ્દએ સે ઉ વણ્ણઓ ।
 ગંધઓ ફાસઓ ચેવ, મદ્દએ સંઠાણઓ વિ ય ॥૩૧॥
 રસઓ કસાએ જે ઉ, મદ્દએ સે ઉ વણ્ણઓ ।
 ગંધઓ ફાસઓ ચેવ, મદ્દએ સંઠાણઓ વિ ય ॥૩૨॥
 રસઓ અંબિલે જે ઉ, મદ્દએ સે ઉ વણ્ણઓ ।
 ગંધઓ ફાસઓ ચેવ, મદ્દએ સંઠાણઓ વિ ય ॥૩૩॥
 રસઓ મહુરએ જે ઉ, મદ્દએ સે ઉ વણ્ણઓ ।
 ગંધઓ ફાસઓ ચેવ, મદ્દએ સંઠાણઓ વિ ય ॥૩૪॥

ફાસઓ કવહડે જે ડ, મહા એ સે ડ વણઓ ।
 ગંધઓ રસઓ જેવ, મહા સંઠાણઓ વિ ય ॥૩૫॥
 ફાસઓ મહા જે ડ, મહા એ સે ડ વણઓ ।
 ગંધઓ રસઓ જેવ, મહા સંઠાણઓ વિ ય ॥૩૬॥
 ફાસઓ ગુરુ જે ડ, મહા એ સે ડ વણઓ ।
 ગંધઓ રસઓ જેવ, મહા સંઠાણઓ વિ ય ॥૩૭॥
 ફાસઓ લઘુ જે ડ, મહા એ સે ડ વણઓ ।
 ગંધઓ રસઓ જેવ, મહા સંઠાણઓ વિ ય ॥૩૮॥
 ફાસ એ સીય એ જે ડ, મહા એ સે ડ વણઓ ।
 ગંધઓ રસઓ જેવ, મહા સંઠાણઓ વિ ય ॥૩૯॥
 ફાસઓ ઝણ જે ડ, મહા એ સે ડ વણઓ ।
 ગંધઓ રસઓ જેવ, મહા સંઠાણઓ વિ ય ॥૪૦॥
 ફાસઓ નિહા જે ડ, મહા એ સે ડ વણઓ ।
 ગંધઓ રસઓ જેવ, મહા સંઠાણઓ વિ ય ॥૪૧॥
 ફાસઓ લુક્ક જે ડ, મહા એ સે ડ વણઓ ।
 ગંધઓ રસઓ જેવ, મહા સંઠાણઓ વિ ય ॥૪૨॥
 પરિમંડલસંઠાણે, મહા એ સે ડ વણઓ ।
 ગંધઓ રસઓ જેવ, મહા ફાસઓ વિ ય ॥૪૩॥
 સંઠાણઓ મવે વટે, મહા એ સે ડ વણઓ ।
 ગંધઓ રસઓ જેવ, મહા ફાસઓ વિ ય ॥૪૪॥

संठाणओ भवे तंसे, भइए से, उ वण्णओ ।
 गघओ रसओ चेव, भइए फासओ वि य ॥४५॥
 संठाणओ य चउरसे, भइए से उ वण्णओ ।
 गंधओ रसओ चेव, भइए फासओ वि य ॥४६॥
 जे आययसंठाणे, भइए से उ वण्णओ ।
 गघओ रसओ चेव, भइए फासओ वि य ॥४७॥
 एसा अजीवविमत्ती, समासेण वियाहिया ।

जीवभेदाः—

इत्तो जीवविमत्ति, वुच्छामि अणुपुब्बसो ॥४८॥
 संसारत्था य सिद्धा य, दुविहा जीवा वियाहिया ।

सिद्धानां वर्णनम्—

(१) सिद्धा णेगविहा वुत्ता, तं मे कित्तयओ सुण ॥४९॥
 इत्थीपुरिससिद्धा य तहेव य नपुंसगा ।
 सल्लिगे अल्लिगे य, गिहिल्लिगे तहेव य ॥५०॥
 उक्कोसोगाहणाए य, जहल्लमज्झिमाड य ।
 उड्ढं अहे य तिरियं च, समुद्धमि जलमि य ॥५१॥
 दस य नपुंसएसु, वीस इत्थियासु य ।
 पुरिसेसु य अट्ठसयं, समएणेगेण सिज्झइ ॥५२॥
 चत्तारि य गिहिल्लिगे, अल्लिगे दसेव य ।
 सल्लिगेणं अट्ठसयं, समएणेगेण सिज्झइ ॥५३॥

उक्कोसोगाहणाए य, सिज्जते जुगवं दुवे ।
चत्तारि जहन्नाए, मज्झो अट्ठत्तरं सयं ॥५४॥

चउरुड्डलोए य दुवे समुद्दे,
तमो जले बीसमहे तहेव य ।
सयं च अट्ठत्तर तिरियलोए,
समएणेगेण सिज्झई धुवं ॥५५॥

कहिं पडिहया सिद्धा ? कहिं सिद्धा पइट्ठिया ?
कहिं बोदि, चइत्ताणं ? कत्थ गंतूणं सिज्झई ? ॥५६॥

अलोए पडिहया सिद्धा, लोयग्गे य पइट्ठिया ।
इहं बोदि चइत्ताणं, तत्थ गतूणं सिज्झइ ॥५७॥

सिद्धशिलायावर्णनम्—

(२) बारसहिं जोयणेहिं, सव्वट्ठस्सुवर्णि भवे ।
ईसिपव्वभारनामा उ, पुडवी छत्तसंठिया ॥५८॥

पणयालसयसहस्सा, जोयणाणं तु आयया ।
तावइय चैव वित्थिण्णा, तिगुणो साहिय परिमो ॥५९॥

अट्ठजोयणवाहल्ला, सा मज्झांमि वियाहिया ।
परिहायंती चरिमते, मच्छिपत्ताउ तणुययरी ॥६०॥

अज्जुणसुवण्णगमई, सा पुडवी निम्मला सहावेण ।
उत्ताणगच्छत्तगसंठिया य, भणिया जिणवरेहि ॥६१॥

सखककुवसकासा, पडुरा निम्मला सुहा ।
सीयाए जोयणे तत्तो, लोयतो उ वियाहिओ ॥६२॥

सिद्धानामवस्थिति-क्षेत्रम्—

जोयणस्स उ जो तत्थ, कोसो उवरिमो भवे ।
तस्स कोसस्स छव्भाए, सिद्धानोगाहणा भवे ॥६३॥
तत्थ सिद्धा महाभागा, लोगग्गंमि पइट्ठिया ।
भवप्पवच्च उम्मुक्का, सिद्धि वरगइ गया ॥६४॥

सिद्धानामवगाहना—

उस्सेहो जस्स जो होइ, भवमि चरिममि उ ।
तिभागहीणा तत्तो य, सिद्धानोगाहणा भवे ॥६५॥

(३) एगत्तेण साईया, अपज्जवसियावि य ।
पुहत्तेण अणाइया, अपज्जवसियावि य ॥६६॥

(४) अरुविणो जीवघणा, नाणदंसणसन्निया ।
अउलं सुहं संपत्ता, उवसा जस्स नत्थि उ ॥६७॥
लोगेगवेसे ते सव्वे, नाणदंसणसन्निया ।
संसारपारनित्थिण्णा, सिद्धि वरगइ गया ॥६८॥

संसारिणां जीवानां वर्णनम्—

संसारत्था उ जे जीवा, दुविहा ते वियाहिया ।
तसा^१ य थावरा^२ घेव, थावरा तिविहा तहिं ॥६९॥

(१) पुढवी^१ आउजीवा^२ य, तहेव य वणस्सई^३ ।
 इच्चेय थावरा तिविहा, तेसि भेए सुणेह मे ॥७०॥
 दुविहा पुढवीजीवाउ, सुहुमा^४ बायरा तहा^५ ।
 पज्जत्ता^६ मपज्जत्ता^७, एवमेए दुहा पुणो ॥७१॥
 बायरा जे उ पज्जत्ता, दुविहा ते वियाहिया ।
 सण्हा^८ खरा^९ य बोधच्चा, सण्हा सत्तविहा तहि ॥७२॥
 किण्हा^{१०} नीला^{११} य रहिरा^{१२} य, हालिद्दा^{१३} सुक्किला^{१४} तहा ।
 पंडु^{१५}-पणग^{१६} मट्टिया, खरा छत्तीसई विहा ॥७३॥

पुढवी^१ य सक्करा^२ बालुया^३ य,
 उवले^४ सिला^५ य लोणू^६से^७ ।
 अ य^८-त व^९ त उ य^{१०}-सी सग^{११},
 रुप्प^{१२}-सुवण्णे^{१३} य वड्ढरे^{१४} य ॥७४॥

हरि या ले^{१५} हि गु लु ए^{१६},
 मणोसिला^{१७} सास^{१८} गजण^{१९}-पवाले^{२०} ।
 अ ङ म प ङ ल^{२१} ङ म वा लु य^{२२},
 बायरकाए मणिविहाणे ॥७५॥
 गोमेज्जए^{२३} य रुयगे^{२४}, अक्के^{२५} फलिहे य लोहियक्खे य^{२६} ।
 मरगय-मसारगल्ले^{२७}, भुयमोयग-इदनीले^{२८} य ॥७६॥
 चंदण गेरुय हसगढ्ढे^{२९}, पुलए^{३०} सोगघिए^{३१} य बोधच्चे ।
 चदप्पह^{३२}-वेरुलिए^{३३}, जलकते^{३४} सूरकते^{३५} य ॥७७॥

एए खरपुढवीए, भेया छत्तीसमाहिया ।
 एगविहमणाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया ॥७८॥
 सुहुमा य सव्वलोगमि, लोगदेसे थ बायरा ।
 इत्तो कालविभागं तु, वृच्छं तेसिं चउव्विहं ॥७९॥
 संतइं पप्पणाईया, अपज्जवसिया वि^१ य ।
 ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि^२ य ॥८०॥
 बावीससहस्साइं, वासाणुक्कोसिया भवे ।
 भाउठिई पुढवीणं, अंतोमुहुत्त जहसिया ॥८१॥
 असंखकालमुक्कोस^३, अतोमुहुत्तं जहस्यं ।
 कायठिई पुढवीण, तं कायं तु अमुंचओ ॥८२॥
 अणतकालमुक्कोस^४, अतोमुहुत्तं जहस्यं ।
 विजडंमि सए काए, पुढविजीवाण अंतरं ॥८३॥
 एएसिं वण्णओ चेंव, गघओ रसफासओ ।
 सठाणादेसओ वावि, विहाणाइ सहस्सओ ॥८४॥
 (२) दुविहा भाउजीवा उ, सुहुमा बायरा तथा ।
 पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेव दुहा पुणो ॥८५॥
 बायरा जे उ पज्जत्ता, पंचहा ते पकित्तिया ।
 सुद्धोदए^१ य उस्से^२ य, हरतणू^३ महिया^४ हिमे ॥८६॥
 एगविहमणाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया ।
 सुहुमा सव्वलोगमि, लोगदेसे थ बायरा ॥८७॥

सतई पप्पणाईया, अपज्जवसियावि य ।
 ठिइ पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥८८॥
 सत्तेव सहस्साइ, वासाणुवकोसिया भवे ।
 आउठिई आऊण, अंतोमुहुत्त जहन्निया ॥८९॥
 असखकालमुवकोसं, अतोमुहुत्त जहन्नयं ।
 कायठिई आऊणं, तं काय तु अमुंचओ ॥९०॥
 अणतकालमुवकोसं, अंतोमुहुत्त जहन्नयं ।
 विजडमि सए काए, आऊजीवाण अतरं ॥९१॥
 एएसि वण्णओ चेव, गंधओ रसकासओ ।
 संठाणावेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥९२॥
 (३) दुविहा वणस्सईजीवा, सुहुमा बायरा तथा ।
 पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेव दुहा पुणो ॥९३॥
 बायरा जे उ पज्जत्ता, दुविहा ते वियाहिया ।
 साहारणसरीरा^१ य, पत्तेगा^२ य तहेव य ॥९४॥
 पत्तेगसरीराओ, ऽण्णेगहा ते पकित्तिया ।
 रुक्खा गुच्छा य गुम्मा य, लया वल्ली तणा तथा ॥९५॥
 वलया पव्वगा कुट्टणा, जलरुहा ओसही तिणा ।
 हरियकाया उ बोधव्वा, पत्तेगा इह आहिया ॥९६॥
 साहारणसरीराओ, ऽण्णेगहा ते पकित्तिया ।
 आलुए मूलए चेव, सिगबेरे तहेव य ॥९७॥

हिरिली सिरिली सस्सरिली, जावई केयकंदली ।
 पलंडुलसणकदे य कंदली य कुह्वए ॥९८॥
 लोहिणी हूयथी हूय,, कुहगा य तहेव य ।
 कण्हे य वज्जकदे य, कदे सूरणए तहा ॥९९॥
 अस्सकण्णी य बोघव्वा, सीहकण्णी तहेव य ।
 मुसुंडी य हलिहा य, ऽण्णेगहा एवमायओ ॥१००॥
 एगविहमणाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया ।
 सुहुमा सव्वलोगमि, लोणदेसे य बायरा ॥१०१॥
 सतइं पप्पऽणार्इया, अपज्जवसियावि य ।
 ठिइं पडुच्च सार्इया, सपज्जवसियावि य ॥१०२॥
 वस चैव सहस्साइ, वासाणुक्कोसिया भवे ।
 वणप्फईण भावं तु, अतोमुहुत्तं जहसिया ॥१०३॥
 अणतकालमुक्कोसा, अतोमुहुत्तं जहसिया ।
 कायठिई पणगाण, त कायं तु अमुच्चओ ॥१०४॥
 असखकालमुक्कोसं, अतोमुहुत्तं जहसयं ।
 विजढमि सए काए, पणगजीवाण अंतर ॥१०५॥
 एएसि वण्णओ चैव, गघओ रसफासओ ।
 संठाणादेसओ वावि, विहाणाइ सहस्ससो ॥१०६॥
 इच्चैए थावरा तिविहा, समासेण वियाहिया ।
 इत्तो उ तसे तिविहे, वुब्बाहिमि अणुपुव्वसो ॥१०७॥

तेऊ^१ वाऊ^२ य बोधव्वा, उराला य तसा^३ तहा ।
 इच्चेए तसा तिबिहा, तेसि भेए सुणेह मे ॥१०८॥
 (१) दुविहा तेऊजीवा उ, सुहुमा बायरा तहा ।
 पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ॥१०९॥
 बायरा जे उ पज्जत्ता, ऽणेगहा ते वियाहिया ।
 इगाले मु मुरे भगणी, अच्चि जाला तहेव य ॥११०॥
 उक्का विज्जू य बोधव्वा, ऽणेगहा एवमायओ ।
 एगविहमणाणत्ता, सुहुमा ते वियाहिया ॥१११॥
 सुहुमा सव्वलोगमि, लोगदेसे य बायरा ।
 इत्तो कालविभाग तु, तेसि वुच्छ चउव्विह ॥११२॥
 सतइ पप्पऽणाईया, अपज्जवसियावि^१ य ।
 ठिइ पडुच्च साइया, सपज्जवसियावि^२ य ॥११३॥
 तिण्णेव अहोरत्ता, उक्कोसेण वियाहिया ।
 माउठिई तेऊण, अंतोमुहुत्त जहन्निया ॥११४॥
 असखकालमुक्कोसा^३, अतोमुहुत्त जहन्निया ।
 कायठिई तेऊण, त काय तु अमुच्चओ ॥११५॥
 अणंतकालमुक्कोस^४, अंतोमुहुत्त जहन्नय ।
 विजडमि सए काए, तेऊजीवाण अतर ॥११६॥
 एएसि वण्णओ चेव^५ गघओ रसफासओ ।
 सठाणादेमओ बावि, बिहाणाइं सहस्ससो ॥११७॥

(૨) બુદ્ધિહા વાઝજીવા ઉ, સુહુમા બાયરા તહા ।
 પજ્જત્તમપજ્જત્તા, એવમેએ કુહા પુણો ॥૧૧૮॥
 બાયરા જે ઉ પજ્જત્તા, પંચહા તે પકિત્તિયા ।
 ઉક્કલિયા^૧ મઢલિયા^૨, ઘણુગુંજા^૩ સુદ્ધવાયા^૪ થ ॥૧૧૯॥
 સંવટ્ટગવાયે^૫ ય, ડ્ગેગહા એવમાયઓ ।
 એગવિહમણાણત્તા, સુહુમા તત્થ વિયાહિયા ॥૧૨૦॥
 સુહુમા સવ્વલોગંમિ, લોગદેસે ય બાયરા ।
 હુત્તો કાલવિભાગ તુ, તેસિં વુચ્છ ચડવ્વિહં ॥૧૨૧॥
 સંતંદ પપ્પડ્ગાઈયા, અપજ્જવસિયાવિ^૧ ય ।
 ઠિંઈં પઢુચ્ચ સાઈયા, સપજ્જવસિયાવિ^૨ ય ॥૧૨૨॥
 તિણ્ણેવ સહસ્સાઈ, વાસાણુવકોસિયા મહે ।
 આઝઠિંઈ વાઝ્ઞણં, અંતોમુહુત્ત જહન્નિયા ॥૧૨૩॥
 અસંખકાલમુવકોસા^૩, અંતોમુહુત્ત જહન્નિયા ।
 કાયઠિંઈ વાઝ્ઞણ, ત કાય તુ અમુચ્ચઓ ॥૧૨૪॥
 અણતકાલમુવકોસ^૪, અંતોમુહુત્તં જહન્નય ।
 વિજઢમિ સએ કાએ, વાઝ્ઞજીવાણ અંતરં ॥૧૨૫॥
 એર્ણસ વણ્ણઓ જેવ, ગધઓ રસફાસઓ ।
 સંઠાણાદેસણો વાવિ, વિહાણાઈં સહસ્સસો ॥૧૨૬॥
 (૩) ડરાલા તસા જે ઉ, ચડહા તે પકિત્તિયા ।
 જેઈંદિયા^૧ તેઈંદિયા^૨, ચડરો^૩ પંચિંદિયા^૪ તહા ॥૧૨૭॥

(१) वेइदिया उ जे जीवा, दुविहा ते पकित्तिया ।
 पज्जत्त^१मपज्जत्ता^२, तेसिं भेए सुणेह मे ॥१२८॥
 किमिणो सोमगला चेव, अलसा माइवाहया ।
 दासीमूहा य सिप्पिया, सखा सखणगा तहा ॥१२९॥
 पल्लोयाणुल्लया चेव, तहेव य बराडगा ।
 जलुगा जालगा चेव, चदणा य तहेव य ॥१३०॥
 इइ वेइदिया एए, ऽणेगहा एवमायओ ।
 लोणेगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया ॥१३१॥
 सतइ पप्प ऽणार्इया, अप्पज्जवसिया^३ वि य ।
 ठिइ पढुच्च सार्इया, सपज्जवसिया^२ वि य ॥१३२॥
 वासाइ बारसा चेव, उक्कोसेण वियाहिया ।
 वेइदिय आउठिई अतोमुहुत्त जहन्निया ॥१३३॥
 सखिज्जकालमुक्कोसा^३, अतोमुहुत्त जहन्निया ।
 वेइदियकायठिई, त कायं तु अमुंचओ ॥१३४॥
 अणतकालमुक्कोस^३, अतोमुहुत्त जहन्नय ।
 वेइदियजीवाणं, अंतर च वियाहिय ॥१३५॥
 एएसि वण्णओ चेव, गघओ रसफासओ ।
 संठाणादेसओ वावि, विहाणाइ सहस्ससो ॥१३६॥
 (२) तेइदिया उ जे जीवा, दुविहा ते पकित्तिया ।
 पज्जत्तमपज्जत्ता, तेसिं भेए सुणेह मे ॥१३७॥

कुशु-पिचीलि-उड्डसा, उक्कलुद्देहिया तथा ।
 तणहार-कट्टहारा य, मालुगा पत्तहारगा ॥१३८॥
 कप्पासऽट्टिमिजा य, तिडुगा तउसमिजगा ।
 सदावरी य गुमी य, बोधच्चा इंदगाइया ॥१३९॥
 इंदगोवगमाईया, ऽणेगहा एवमायओ ।
 लोगेगेदेसे ते सच्चे, न सच्चत्थ वियाहिया ॥१४०॥
 संतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसिया^१ वि य ।
 ठिइ पडुच्च साईया, सपज्जवसिया^२ वि य ॥१४१॥
 एगूणपण्णहोरत्ता, उक्कोसेण वियाहिया ।
 तेइदियभाउठिई, अतोमुहुत्त जहन्निया ॥१४२॥
 सखिज्जकालमुक्कोसा^३, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ।
 तेइदियकायठिई, त कायं तु अमुंचओ ॥१४३॥
 अणत्तकालमुक्कोस^४, अतोमुहुत्त जहन्नयं ।
 तेइंदियजीवाणं, अंतरं तु वियाहियं ॥१४४॥
 एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ ।
 सठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१४५॥
 (३) चउरिंदिया उ जे जीवा, डुविहा ते पकित्तिया ।
 पज्जत्तमपज्जत्ता, तेसिं मेए सुणेह मे ॥१४६॥
 अधिया पोत्तिया चेव, मच्चिछया मसगा तथा ।
 भमरे कीडपयंगे य, डिक्कुणे कंकणे तथा ॥१४७॥

कुक्कुडे सिगिरीढी य, नवावत्ते य विच्छुए ।
 डोले भिगीरीढी य, विरली अच्छिवेहए ॥१४८॥
 अच्छिले माहए अच्छि, विचित्ते चित्तपत्तए ।
 उहिंजलिया जसफारी य, नीया ततवयाइया ॥१४९॥
 इइ चउरिदिया एए, ण्णेगहा एवमायओ ।
 लोगेगदेसे ते सव्वे, न सम्मत्थ विद्याहिया ॥१५०॥
 सतइ पप्पणाईया, अपज्जवसिया वि य^१ ।
 ठिइ पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य^२ ॥१५१॥
 छच्चेव उ मासाळ, उक्कोसेण विद्याहिया ।
 चउरिदियआउठिई, अतोमुहुत्त जहन्निमा ॥१५२॥
 सखिज्जकालमुक्कोसा^३, अतोमुहुत्त जहन्निमा ।
 चउरिदियकायठिई, तं काय तु अमुच्चओ ॥१५३॥
 अणतकालमुक्कोसा^४, अतोमुहुत्त जहन्निमा ।
 चउरिदियजीवाण, अतर च विद्याहियं ॥१५४॥
 एएत्ति वण्णओ चेव, गंधओ रसकासओ ।
 सठाणादेसओ बावि, विहाणाइ सहस्ससो ॥१५५॥
 (४) पचिदिया उ जे जीवा, चउग्गिहा ते विद्याहिया ।
 नेरइय^१तिरिक्खा^२ य, मणूया^३ देवा^४ य आहिया ॥१५६॥
 नरक वर्णनम् -

नेरइया सत्तविहा, पुट्ठीसु सत्तसु भवे ।

रयणाभ^१ सक्काराभा^२ बालुयाभा^३ य आहिया ॥१५७॥

पक्काभा^४ धूमाभा^५, तमा^६ तमतमा^७ तहा ।
 इइ नेरइया एए, सत्तहा परिकित्तिया ॥१५८॥
 लोगस्स एगदेसमि,, ते सव्वे उ वियाहिया ।
 एत्तो कालविभागं तु, वुच्च तेसि चउच्चिहं ॥१५९॥
 सत्तइ पप्पण्णाईया, अपज्जवत्तिया^१ वि य ।
 ठिइ पडुच्च साइया, सपज्जवत्तिया^२ वि य ॥१६०॥
 सागरोवममेग तु, उक्कोसेण वियाहिया ।
 पढमाए जहन्नेण, दसवाससहस्सिया ॥१६१॥
 तिण्णेव सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
 दोच्चाए जहन्नेण, एगं तु सागरोवमं ॥१६२॥
 सत्तेव सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
 तइयाए जहन्नेणं, तिण्णेव सागरोवमा ॥१६३॥
 दस सागरोवमा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
 चउत्थीए जहन्नेण, सत्तेव सागरोवमा ॥१६४॥
 सत्तरस सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
 पचमाए जहन्नेण, दस चेव सागरोवमा ॥१६५॥
 बावीस सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
 छट्ठीए जहन्नेण, सत्तरस सागरोवमा ॥१६६॥
 तेत्तीस सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
 सत्तमाए जहन्नेण बावीसं सागरोवमा ॥१६७॥

जा चेव य आउठिई, नेरइयाणं वियाहिया ।
 सा तेसि कायठिई, जहन्नुक्कोसिया भवे ॥१६८॥
 अणंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ।
 विजडंमि सए काए, नेरइयाणं तु अंतरं ॥१६९॥
 एएसि वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ ।
 सठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१७०॥

पंचेन्द्रिय-तिरश्चां-वर्णनम् -

पंचदियतिरिक्खाओ, डुविहा ते वियाहिया ।
 समुच्छिमतिरिक्खाओ^१, गम्भवक्कंतिया^२ तथा ॥१७१॥
 डुविहा ते भवे तिविहा, जलयरा^१ थलयरा^२ तथा ।
 नह्यरा य^३ बोधच्चा, तेसि मेए सुणेह मे ॥१७२॥
 मच्छा^१ य कच्छमा^२ य, गाहा^३ य मगरा^४ तथा ।
 सुसुमारा य बोधच्चा, पंचहा जलयराहिया ॥१७३॥
 लोएगदेसे ते सन्वे, न सन्वत्थ वियाहिया ।
 इत्तो कालविभाग तु, तेसि वुच्छ चउग्विह ॥१७४॥
 संतइं पप्पणाईया, अपज्जवसिया वि य^१ ।
 ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य^२ ॥१७५॥
 एगा य पुव्वकोडि, उक्कोसेण वियाहिया ।
 आउठिई जलयराणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥१७६॥
 पुव्वकोडिपुहत्तं तु^३, उक्कोसेण वियाहिया ।
 कायठिई जलयराणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥१७७॥

अणंतकालमुक्कोसं^१, अंतोमुहुत्तं जहन्मयं ।
 विजडंमि सए काए, जलयराणं तु अंतरं ॥१७८॥
 एएसि वण्णओ चेव, गंधओ रसकासओ ।
 संठाणादेसओ वावि, विहाणाइ सहस्ससो ॥१७९॥
 चउप्पया^१ य परिसप्पा^२, दुविहा थलयरा भवे ।
 चउप्पया चउविहा उ, ते मे कित्तयओ सुण ॥१८०॥
 एगखुरा^१ दुखुरा^२ चेव, गडीपय^३-सणप्फया^४ ।
 हयमाइ-गोणमाइ, - गयमाइ - सीहमाइणो ॥१८१॥
 मुओरगपरिसप्पा य, परिसप्पा दुविहा भवे ।
 गोहाई^१ अहिमाई^२ य, एक्केक्काणेगहा भवे ॥१८२॥
 सोएगदेसे ते सन्वे, न सन्वत्य वियाहिया ।
 एत्तो कालविभागं तु, बोच्छं तैसि चउन्विहं ॥१८३॥
 संतई पप्पणाईया, अपज्जवसिया^१ वि य ।
 ठिई पडुच्च साइया, सपज्जवसिया^२ वि य ॥१८४॥
 पलिओवमाइं तिण्णि उ^३, उक्कोसेण वियाहिया ।
 आउठिई थलयराणं, अंतोमुहुत्तं जहन्मिया ॥१८५॥
 पुब्बकोडिपुहुत्तं, उक्कोसेण वियाहिया ।
 कायठिई थलयराणं, अंतोमुहुत्तं जहन्मिया ॥१८६॥
 कालमणंतमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्मयं ।
 विजडंमि सए काए, थलयराणं तु अंतरं ॥१८७॥

एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ ।
 संठाणादेसणो वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१८८॥
 चम्मे^३उ लोमपक्खी^४थ, तइया समुग्गपक्खिया^५ ।
 विययपक्खी^६ य वोधव्वा, पक्खिणो य चउत्विहा ॥१८९॥
 लोएगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया ।
 इत्तो कालविभाग तु, घोच्छं तोसिं चउत्विहं ॥१९०॥
 संतइं पप्पणाईया, अपज्जवसिया वि य^१ ।
 ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य^२ ॥१९१॥
 पलिओवमस्स भागो, असखेज्ज इमो भवे ।
 आउठिई खह्यराण, अंतोमुहुत्त जहसिया ॥१९२॥
 पुव्वकोडीपुहत्तेण, उभकोसेण वियाहिया ।
 कायठिई खह्यराण, अतोमुहुत्त जहसिया ॥१९३॥
 अणतकालभुवकोस, अंतोमुहुत्त जहस्यं ।
 विजडंमि सए काए, खह्यराणं तु अंतरं ॥१९४॥
 एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ ।
 संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१९५॥

जाना वर्णनम् -

मणुया डुविहमेया उ, ते मे कित्तयओ सुण ।
 संमुच्छिमा^१ य मणुया, गम्भववकत्तिया तहा ॥१९६॥
 गम्भववकतिया जे उ, तिचिहा ते वियाहिया ।
 अकम्म^२ कम्मभूमा^३ य, अतरदीवया^४ तहा ॥१९७॥

पन्नरस तीसवी हा, भैया अट्टवी सयं ।
 संखा उ कमसो तेसि, इइ एसा वियाहिया ॥१९८॥
 संमुच्छिमाण एमेव, भेओ होई वियाहियो ।
 लोगस्स एगदेसंमि, ते सच्चे वि वियाहिया ॥१९९॥
 संतइं पप्पउणाईया, अपज्जवसिया^१ वि य ।
 ठिइं पट्टच्च साईया, सपज्जवसिया^२ वि य ॥२००॥
 पत्तिओवमाइं तिणिण वि^३, उक्कोसेण वियाहिया ।
 आउठिई मणुयाणं, अतोमुहुत्तं जहन्निया ॥२०१॥
 पुच्छकोडिपुहुत्तेणं, उक्कोसेण वियाहिया ।
 कायठिई मणुयाणं, अतोमुहुत्तं जहन्निया ॥२०२॥
 अणंतकालमुक्कोसं^४, अतोमुहुत्तं जहन्नयं ।
 विजडंमि सए काए, मणुयाणं तु अंतरं ॥२०३॥
 एएंसि वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ ।
 संठाणादेसओ वावि, विहाणाइ सहस्ससो ॥२०४॥

देवानां वर्णनम्—

देवा चउम्बिहा वृत्ता, ते मे कित्तयओ सुण ।
 भोमिज्ज^१ वाणमंतरं^२, जोइसं^३ वेमाणिया^४ तहा ॥२०५॥
 वसहा उ भवणवासी, अट्टहा वणचारिणो ।
 पंचविहा जोइसिया, दुविहा वेमाणिया तहा ॥२०६॥
 (१) असुरा^१ नाग^२ सुवण्णा^३, विज्जू^४ अगो^५ वियाहिया ।
 दीवो^६ बहि^७ दिसा^८ वाया^९, यणिया^{१०} भवणवासिणो ॥२०७॥

(२) पिताय^१ भूय^२ नवखा^३ य, रवखासा^४ किन्नरा^५ किपुत्तिरा^६।

महोरगा^७ य गंधव्वा^८, अट्टविहा वाणमंतरा ॥२०८॥

(३) चंदा^१ सूर^२ य नवखत्ता^३, गहा^४ तारागणा^५ तथा ।

दिसा विचारिणो चेव, पंचहा जोइसालया ॥२०९॥

(४) वेमाणिया उ जे देवा, दुविहा ते वियाहिया ।

कप्पोवगा^१ य बोधव्वा, कप्पाईया^२ तहेव य ॥२१०॥

कप्पोवगा बारसहा, सोहम्म^१ साणगा^२ तथा ।

सणकुमार^३ माहिदा^४ बंमलोगा^५ य संतगा^६ ॥२११॥

महासुवका^७ सहस्सारा^८, आणया^९ पाणया^{१०} तथा ।

आरणा^{११} अच्चुया^{१२} चेव, इइ कप्पोवगा सुरा ॥२१२॥

कप्पाईया उ जे देवा, दुविहा ते वियाहिया ।

गेविज्जगाणुत्तरा चेव, गेविज्जा नवविहा ताहि ॥२१३॥

हेट्ठिमाहेट्ठिमा^१ चेव हेट्ठिमामज्झिमा^२ तथा ।

हेट्ठिमाउवरिमा^३ चेव मज्झिमाहेट्ठिमा^४ तथा ॥२१४॥

मज्झिमामज्झिमा^५ चेव, मज्झिमाउवरिमा^६ तथा ।

उवरिमाहेट्ठिमा^७ चेव, उवरिमामज्झिमा^८ तथा ॥२१५॥

उवरिमाउवरिमा^९ चेव, इय गेविज्जगा सुरा ।

विजया वेजयंता य, जयंता अपराजिया ॥२१६॥

सखत्थसिद्धगा चेव, पंचहाणुत्तरा सुरा ।

इइ वेमाणिया एए, ऽणगेहा एघमायमो ॥२१७॥

लोगस्स एगदेसंमि, ते सच्चै वि वियाहिया ।
 इत्तो कालविभागं तु, वुच्चं तेसि चउव्विहं ॥२१८॥
 संतइं पप्पड्ढाईया, अपज्जवसियावि^१ य ।
 ठिईं पडुच्च साइया, सपज्जवसियावि^२ य ॥२१९॥
 साहियं सागरं एक्कं^३, उक्कोसेण ठिईं भवे ।
 भोमेज्जाणं जहन्नेणं, दसवाससहस्सिया ॥२२०॥
 पलिओवम हो ऊणा, उक्कोसेण वियाहिया ।
 असुरिदवज्जेताण जहन्ना दससहस्सगा ॥२२१॥
 पलिओवममेगं तु, उक्कोसेण ठिईं भवे ।
 वंतराणं जहन्नेणं, दसवाससहस्सिया ॥२२२॥
 पलिओवममेगं तु, वासलक्खेण साहियं ।
 पलिओवमऽड्ढाणो, जोइसेसु जहन्निया ॥२२३॥
 हो चेव सागराईं, उक्कोसेण वियाहिया ।
 सोहंमंमि जहन्नेणं, एगं च पलिओवमं ॥२२४॥
 सागरा साहिया दुप्पि, उक्कोसेण वियाहिया ।
 ईसाणंमि जहन्नेणं, साहियं पलिओवमं ॥२२५॥
 सागराणि य सत्तेव, उक्कोसेण ठिईं भवे ।
 सणकुमारे जहन्नेणं, दुप्पि उ सागरोवमा ॥२२६॥
 साहिया सागरा सत्त, उक्कोसेणं ठिईं भवे ।
 माहिंदंमि जहन्नेणं, साहिया दुप्पि सागरा ॥२२७॥

दस चेव सागराईं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
 बंभलोए जहन्नेण, सत्त ऊ सागरोवमा ॥२२८॥
 चउद्दससागराईं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
 संतंगमि जहन्नेण, दस ऊ सागरोवमा ॥२२९॥
 सत्तरससागराईं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
 महासुक्के जहन्नेण, चोद्दस सागरोवमा ॥२३०॥
 अट्टारस सागराईं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
 सहस्सारे जहन्नेण, सत्तरस सागरोवमा ॥२३१॥

सागरा अउणवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे ।
 आणयमि जहन्नेण, अट्टारस सागरोवमा ॥२३२॥
 बीस तु सागराईं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
 पाणयमि जहन्नेण, सागरा अउणवीसई ॥२३३॥
 सागरा इक्कवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे ।
 आरणमि जहन्नेण, बीसई सागरोवमा ॥२३४॥
 बावीसं सागराईं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
 अच्चुयमि जहन्नेण, सागरा इक्कवीसई ॥२३५॥
 तेवीससागराईं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
 पढममि जहन्नेण, बावीसं सागरोवमा ॥२३६॥
 चउवीसं सागराईं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
 बीइयमि जहन्नेण, तेवीसं सागरोवमा ॥२३७॥

पणवीसं सागराई, उक्कोसेण ठिई भवे ।
 तइयमि जहन्नेणं, चउवीसं सागरोवमा ॥२३८॥
 छवीस सागराई, उक्कोसेण ठिई भवे ।
 चउत्थमि जहन्नेणं, सागरा पणवीसई ॥२३९॥
 सागरा सत्तवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे ।
 पंचममि जहन्नेणं, सागरा उ छवीसई ॥२४०॥
 सागरा अट्टवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे ।
 छट्ठमि जहन्नेणं, सागरा सत्तवीसई ॥२४१॥
 सागरा अउणत्तीसं तु उक्कोसेण ठिई भवे ।
 सत्तममि जहन्नेणं सागरा अट्टवीसई ॥२४२॥
 तीसं तु सागराई, उक्कोसेण ठिई भवे ।
 अट्ठममि जहन्नेणं सागरा अउणत्तीसई ॥२४३॥
 सागरा इक्कतीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे ।
 नवममि जहन्नेणं, तीसई सागरोवमा ॥२४४॥
 तेत्तीसा सागराई, उक्कोसेण ठिई भवे ।
 चउत्तुं पि विजयाईसुं, जहन्नेणेक्कतीसई ॥२४५॥
 अजहन्नमणुक्कोसं, तेत्तीसं सागरोवमा ।
 महाविमाणे सव्वट्ठे, ठिई एसा वियाहिया ॥२४६॥
 जा चेव उ आउठिई, देवाणं तु वियाहिया ।
 सा तैसिं कायठिई, जहन्नमणुक्कोसिया भवे ॥२४७॥

अणतकालमुक्कोस, अंतोमुहुत्त जहन्नय ।
 विजढमि सए काए, देवाण हुज्ज अंतरं ॥२४८॥
 अणतकालमुक्कोस, वासपुहुत्त जहन्नगं ।
 आणयाईण कप्पाण, गेविज्जाण तु अंतरं ॥२४९॥
 सखिज्जसागरुक्कोस, वासपुहुत्त जहन्नगं ।
 अणुत्तराण य देवाण, अतर तु वियाहियं ॥२५०॥
 एएंसि वण्णओ चेव, गघओ रसफासओ ।
 सठाणादेसओ वावि, विहाणाइ सहस्ससो ॥२५१॥
 ससारत्था य सिद्धा य, इय जीवा वियाहिया ।
 रुबिणो चेवऽरूवी य, अजीवा दुविहा वि य ॥२५२॥
 इय जीवमजीवे य, सोच्चा सइहिऊण य ।
 सत्त्वनयाणमणुमए, रमेज्ज सजमे मुणी ॥२५३॥

सलेखना विधि.-

तओ बहूणी वासाणि, सामण्णमणुपालिया ।
 इमेण कमजोगेण, अप्पाण सलिहे मुणी ॥२५४॥
 वारसेव उ वासाइ संलेहुक्कोसिया भवे ।
 संवच्छर मज्झिमिया, छम्मासा य जहन्निया ॥२५५॥
 पढमे वासचउक्कमि, विगई-निज्जूहण करे ।
 बिइए वासचउक्कमि, विवित्त तु तव चरे ॥२५६॥

एगतरमायाम, कट्ठु सवच्छरे दुवे ।
 तओ संवच्छरद्धं तु, नाइविगिट्ठं तव चरे ॥२५७॥
 तओ सवच्छरद्धं तु, विगिट्ठं तु तवं चरे ।
 परिमिय चेव आयाम, तमि संवच्छरे करे ॥२५८॥
 कोढी सहियमायाम, कट्ठु सवच्छरे मुणी ।
 मासद्धमासिएण तु आहारेण तव चरे ॥२५९॥

सयमस्य विराधनाया-आराधनायाश्चफलम्-

कंदप्पमाभिओगं च, किन्विसियं मोहमासुरत्त च ।
 एयाउ दुगईओ, मरणमि विराहिया होति ॥२६०॥
 मिच्छादसणरत्ता, सनियाणा उ हिसगा ।
 इय जे मरंति जीवा, तेसि पुण 'दुल्लहा बोही' ॥२६१॥
 सम्महंसणरत्ता, अनियाणा सुक्कलेसमोगाढा ।
 इय जे मरति जीवा, तेसि 'सुलहा भवे बोही' ॥२६२॥
 मिच्छादसणरत्ता, सनियाणा कण्हलेसमोगाढा ।
 इय जे मरति जीवा, तेसि पुण 'दुल्लहा बोही' ॥२६३॥
 जिणवयणे अणुरत्ता, जिणवयणं जे करेति भावेण ।
 अमला असंकलिट्ठा, ते होति परित्तसंसारी ॥२६४॥
 बालमरणाणि बहुसो, अकाममरणाणि चेव य बहूणि ।
 मरिहंति ते वराया, जिणवयण जे न जाणंति ॥२६५॥

बहुभागमविभ्राणा, समाहिउप्पायगा य गुणगाही ।
 एएणं कारणेणं, अरिहा आलोयणं सोउ ॥२६६॥
 कदप्पकुवकुयाइ, तह सीलसहावहासविगहाइं ।
 विम्हावेत्तोय परं, कदप्प भावणं कुणइ ॥२६७॥
 मंताजोग काउं, भूइकम्मं च जे पउंजंति ।
 साय-रम-इइइहेउं, आभिओगं भावण कुणइ ॥२६८॥
 नाणत्स केवलीणं, धम्मायरियस्स संघसाहूणं ।
 माई अवण्णवाई, किळ्विसियं भावणं कुणइ ॥२६९॥
 अणुवद्धरोसपसरो, तह य निमित्तंमि होइ पडिसेवी ।
 एएहि कारणेहि, आसुरिय भावणं कुणइ ॥२७०॥
 सत्थगहणं विसभवखणं च, जलण च जलप्पवेसो य ।
 अणायारभंडसेवी, जम्मणमरणाणि वंघति ॥२७१॥
 इइ पाउकरे बुद्धे, नायए परिनिब्बुए ।
 छत्तीत्त उत्तरज्ज्ञाए, भवमिद्वियसंबुडे ॥२७२॥
 ॥ त्ति वेमि ॥

॥ मूल सुत्ताणि ॥

(३)

नंदि-सुत्तं

(उक्कालियं)

॥ वियाले वि पढिज्जति ॥

नामकरण—

नदंति जेण तव-सजमेसु नेव य दरत्ति खिज्जति ।

जायति न दीणा व, नंदी अ तत्तो समयसन्ना ॥१॥

अ० रा० कोश—

उद्धरण—

पचमनाण-पुब्बाओ, तह अंगा उवगाओ ।

आयरिय देवडिढणा, नंदी-सुत्तं सुयोजिय ॥२॥

विसयणिद्देशो

वीरत्युई संघयुई य पुब्ब,

पच्छा य तित्थंगर-नामयाणि ।

नामाणि तत्तो गणहराण,

तओ थवो णं जिणसासणस्स ॥१॥

थेरावली चउद्दस, विट्ठताणि य सोऊणं ।

तिण्णि परिसयाणं च, भैया पच्छा उ वणिया ॥२॥

पच्चहं खलु नाणाणं, णाम-निद्देशणं कयं ।

तओ पच्छा य पच्चक्खं, ओहिनाणं तु वणियं ॥३॥

तओ पच्चक्ख-नाणस्स, मणस्स केवलस्स य ।

संगोवग सुवण्णन्न, वित्थरेण पकित्तिय ॥४॥

परोक्ख-मइनाणस्स, दिट्ठिभेएण कित्तणं ।
 पच्छा चउण्ह बुद्धीणं, सोदाहरण-वण्णनं ॥५॥
 परोक्ख-सुयनाणस्स, भेया वुत्ता चउइसा ।
 एक्कारसंगयस्सावि, तओ पच्छा उ वण्णना ॥६॥
 तओ पच्छा उ सखित्त, अणुओगो य चूलिया ।
 विट्ठिवाओ य सपुब्बो, वण्णिथा य जहक्कमं ॥७॥
 वुवालस्स य अंगस्स, आराहणाअ ज फल ।
 वण्णिऊण उ त सव्व, वुत्ता अंगाण निच्चया ॥८॥

णाण-सहिमा :-

उक्कोसियं णं भते ! णाणाराहणं आराहेत्ता कतिहिं भवग्गहणेहिं—
सिज्झन्ति मुच्चति परिनिब्बायति सव्व-दुक्खाणमंतं करेति ?
गोयमा !

अत्थेगइए तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झन्ति जाव
सव्वदुक्खाणमंतं करेति । अत्थेगइए दोच्चेण भवग्गहणेणं
सिज्झन्ति . जाव . सव्वदुक्खाणमतं करेति ।

अत्थेगइए कप्पोवएसु वा कप्पातीएसु वा उववज्जन्ति ।
मज्झिमियं ण भते ! णाणाराहणं आराहेत्ता कतिहिं
भवग्गहणेहिं—ज्झन्ति बुज्झन्ति मुच्चति परिनिब्बायति
सव्वदुक्खाणमंतं करेति ?

गोयमा !
अत्थेगइए दोच्चेण भवग्गहणेणं सिज्झन्ति . जाव . .
सव्वदुक्खाणमंतं करेति । तच्चं पुणं भवग्गहणं नाइक्कमइ ।
जहन्नियं णं भते ! णाणाराहणं आराहेत्ता कतिहिं
भवग्गहणेहिं—सिज्झन्ति . . जाव . . सव्व-
दुक्खाणमंतं करेति ?

गोयमा !
अत्थेगइए तच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झइ जाव .
सव्वदुक्खाणमंतं करेइ—सत्तदुभवग्गहणाइं पुणं नाइक्कमइ ।

* णमोऽत्थु ण तस्स सभणस्स भगवओ महावीरस्स *

नंदि-सुत्तं

वीरस्तुतिं -

जयइ जग-जीव-जोणी, वियाणओ जगगुरू जगाणवो ।

ज ग णा हो जगबंधू, जयइ जगप्पियामहो भयवं ॥१॥

जयइ सुआणं पभवो, तित्थयरारणं अपच्छिमो जयइ ।

जयइ गुरू लोगाणं, जयइ महप्पा महावीरो ॥२॥

भइ सत्त्वजगुज्जोयगस्स, भइं जिणस्स वीरस्स ।

भइं सुरासुरनमंसियस्स, भइं धु य र य स्स ॥३॥

संघस्तुति -

गुण-भवण-गहण, सुय-रयण-भरिय-वंसण-विसुद्ध-रत्थागा ।

संघ-नगर ! भइं ते, अखंड-चरित्त-पागारा ॥४॥

संजम-तव-तुं बारयस्स, नमो सम्मत्तपारियल्लस्स ।

अप्पडिचक्कस्स जओ, होउ सया संघ-चक्कस्स ॥५॥

भइं सीलपडागूसियस्स, तव-नियम-तुरय-जुत्तस्स ।

संघ-रहस्स भगवओ, सज्झायसुनंदिघोसस्स ॥६॥

कम्मरय-जलोह्विणिग्गयस्स, सुयरयण-दीहनालस्स ।

पचमहच्चय-थिरकणियस्स, गुणकेसरालस्स ॥७॥

सावग-जण-महुअरिपरिवुडस्स, जिण-सूर-तेयबुद्धस्स ।

सघ-पउमस्स भद्दं, समण-गण-सहस्सपत्तस्स ॥८॥

तव-संजम मय-सछण ! अकिरिय राहुमुह-दुद्धरिस्स ! निच्चं ।

जय संघचव ! निम्मल, सम्मत्तविसुद्ध जोण्हागा ! ॥९॥

परतित्थिय-गह-पह-नासगस्स, तवतेयदित्त लेसस्स ।

मा णु ज्जो य स्स ज ए, भद्द व म सं घ-सूर स्स ॥१०॥

भद्दं धिइवेला परिगयस्स, सज्झाय जोग मगरस्स ।

अक्खोहस्स भगवओ, संघसमुदस्स वंदस्स ॥११॥

सम्म दं स ण-वर वद्धर, दढरुडगाढावगाढ-पेढस्स ।

धम्मवर-रयण-मडिय-चामीयर-मे हला गस्स ॥१२॥

नियमूसिय कणय, सिलायलुज्जल जलंत-चित्त-कूडस्स ।

नंदणवण मणहर सुरभि, सीलगंधुद्धुमायस्स ॥१३॥

जीवदया-सुंदर-कंदरुद्धरिय-मुणिवर मइंदइभस्स ।

हेउ-सयधाउपगलत रयणदित्तोसहि गुहस्स ॥१४॥

संवरवर जल पगलिय, उज्झरपविरायमाणहारस्स ।

सावग-जण पउर-रवंत, मोर नच्चंत कुहरस्स ॥१५॥

विणय-नय-पवर मुणिवर, फुरत विज्जुज्जलंत सिहरस्स ।

विविहगुण कप्पखखग, फलभरकुसुमाउलवणस्स ॥१६॥

नाणवर-रथण-दिप्पंत, कंतवेरुलियविमलचूलस्स ।
 वंदामि विणयपणओ, संघ-महामंदरगिरिस्स ॥१७॥
 गुण-रयणुज्जलकडय सीलसुगधि-तवमडिउद्देसं ।
 सुय-वारसग-सिहरं, सघ-महामंदर वंदे ॥१८॥
 नगर^१रह^२चक्क^३यउमे^४, वदे^५सूरे^६समुद्द^७मेरुमि^८ ।
 जो उवमिज्जइ सयय, तं सघ-गुणायरं वदे ॥१९॥

तीर्थकरनामानि :-

वंदे उत्तमं^१मज्झिमं^२संभव^३, मभिनंदण^४सुमइ^५सुप्पम^६सुपासं^७ ।
 ससि^८पुप्फदत्त^९सीयल^{१०}, सिज्जंसं^{११}वासुपुज्ज^{१२}च ॥२०॥
 विमल^{१३}मणत्त^{१४}य धम्म^{१५}, सत्ति^{१६}कुंथु^{१७}अरं^{१८}च मल्लि^{१९}च ।
 मुणिसुद्धय^{२०}-नमि^{२१}-नेमि^{२२}, पास^{२३}तह बद्धमाणं^{२४}च ॥२१॥

गणधरनामानि :-

पढमित्थ इंदमूई^१, बीए पुण होइ अग्निमूई^२त्ति ।
 तइए य वाउमूई^३, तओ वियत्ते^४सुहम्मै^५य ॥२२॥
 भडिअ^६-भोरियपुत्ते,^७अकपिए^८चेव अयलभाया^९य ।
 मेयज्जे^{१०}य पहासे^{११}, गणहरा हुंति वीरस्स ॥२३॥

जिनशासनस्तुति :-

निव्वुइ-पह-सासणय, जयइ सया सच्चभाव-देसणय ।
 कुसमय-मयनासणयं, जिणिदवर वीरसासणयं ॥२४॥

स्थविरावली -

सुहृम्म^१ अग्निवेसाणं, जवूनाम^२ च कासव ।
 पभव^३ कच्चायण वदे, वच्छं सिज्जंभव^४ तथा ॥२५॥
 जसमद्^५ तुगिय वदे, सभूय^६ चेव भाढर ।
 भद्वाहुं^७ च पाइल्ल, थूलभंद^८ च गोयम ॥२६॥
 एलावच्चसगोत्त, वंदामि महागिरि^९ सुहात्थ^{१०} च ।
 तत्तो कोसियगोत्तं, बहुलस्स^{११} सरिक्खय वदे ॥२७॥
 हरियगुत्त साई^{१२} च, वदिमो हारिय च सामज्ज^{१३} ।
 वदे कोसियगोत्तं, सडिल्ल^{१४} अज्जजीयधर ॥२८॥
 ति-समुद्-खायकित्ति, दीवसमुद्देसु गहिय-पेयालं ।
 वंदे अज्जसमुद्दं^{१५}, अक्खुभिय-समुद्-गभीर ॥२९॥
 भणग करग, झरगं, पभावगं णाण-दंसणगुणाण ।
 वदामि अज्जमगु^{१६}, सुयसागरपारगं धीर ॥३०॥
 * वदामि अज्जघम्मं,^{१७} तत्तो वदे य भद्दगुत्त^{१८} च ।
 तत्तो य अज्जवइरं^{१९}, तव-नियम-गुणोहं वइरसम ॥३१॥
 * वदामि अज्जरक्खिय^{२०}, खमणे रक्खिय-चारित्त सच्चस्से ।
 रयणकरडगभूमो अणुओगो रक्खिओ जेहि ॥३२॥
 नार्णमि दसणमि य, तव-विणए णिच्चकालमुज्जुत्तं ।
 अज्ज नदिल-खवण^{२१}, सिरसा वदे पसन्नमण ॥३३॥

* गाथाद्वयं वृत्ती नोक्तम्

वड्ढउ वायगवशो, जसवंशो अज्जनागहत्थोण^{२३} ।

वागरण-करण-भगिय, कम्मपयढीपहाणाणं ॥३४॥

जच्चंजणघाउसमप्पहाणं, मुद्दिय-कुवलयनिहाणं ।

वड्ढउ वायगवसो, रेवइ-नक्खत्तनामाणं^{२४} ॥३५॥

“अयलपुरा” निक्खते, कालियसुअ-अणुओगिए धीरे ।

“बभद्दीवग”-सीहे,^{२५} वायगपयमुत्तम पत्ते ॥३६॥

जेसि इमो अणुओगो, पयरइ अज्जावि अड्ढभरहंमि ।

बहुनयरनिगयजसे, ते वदे खदिलायरिए^{२६} ॥३७॥

तत्तो हिमवत-सहंत-वक्कमे, धिइपरवक्कममणते ।

सज्जायमणंतघरे, हिमवते^{२७} वदिमो सिरसा ॥३८॥

कालिय-सुय-अणुओगस्स-धारए, धारए य पुब्बाणं ।

हिमवंतखमासमणे, वदे णागज्जुणायरिए^{२८} ॥३९॥

मिउमहवसंपत्ते अणुपुत्तिवं वायगत्तणं पत्ते ।

ओहसुयसमायारे, नागज्जुणवायए वंदे ॥४०॥

गोविंदाण^{२९} पि नमो, अणुओगे विउलधारिणंदाणं ।

णिच्चं खंतिवयाणं, परुवणे दुल्लभिदाणं ॥४१॥

तत्तो य भूयदिस्सं^{३०}, निच्च तव-संजमे अनिच्चिणं ।

पंडियेजणसामन्नं, वंदामी संजमविह्वू ॥४२॥

વર-કળગ-તવિય-ચપગ,-વિમડલ-વર-કમલગન્ધસરિવન્ને ।
 મવિયજળહિયવદ્દે, દયાગુણવિસારે ધીરે ॥૪૩॥
 અદ્દમરહપ્પહાણે, વહુવિહ-સજ્ઞાય-સુમુણિયપહાણે ।
 અણુઓગિયવરવસમે નાહલકુલવંસનદિકરે ॥૪૪॥
 મૂયહિયપ્પગન્ને, વદે ઝહ મૂયદિન્નમાયરિણે ।
 મવમયવોચ્છેયકરે, સીસે નાગુજ્જુણરિસીણં ॥૪૫॥
 સુમુણિય નિચ્ચાનિચ્ચ, સુમુણિય સુત્તત્થધારય વદે ।
 સન્માવુન્માવળયા, તત્થ તોહિચ્ચ^{૩૦} જામાણ ॥૪૬॥
 અત્યમહત્થખાણિં, સુસમળવવખાણકહણ નિચ્ચાણિં ।
 પયઈએ મહુરવાણિં, પયમો પળમામિ *દસગણિં^{૩૧} ॥૪૭॥
 તવ-નિયમ-સચ્ચ-સજમ,-વિળયજ્જવ-હતિ-મદ્વરયાણં ।
 સીલગુણગદ્ધિયાણ, અણુઓગજુગપ્પહાણાણં ॥૪૮॥
 સુકુમાલકોમલતલે, તેસિં પળમામિ લવહણપસત્થે ।
 પાણે પાવયણીણં, પહિચ્છયસયઈહ પળિવદ્દે ॥૪૯॥
 જે અન્ને મગવતે, કાલિયસુય-આણુઓગિણે ધીરે ।
 તે પળમિઠ્ઠણ સિરસા, નાળસ્સ પરુવળ વોચ્છં ॥૫૦॥

મેસ્તુગસ્યવિરાવલી :-

* સૂરિ વલિસ્સહ સાઈ, સમજ્જો સંઢિલો ય જીયધરો ।
 અજ્જસમુદ્ધો મગ્ગ, નદિલ્લો નાગહત્થો ય ॥
 રેવઈ સિહો હદિલ, હિમવ નાગજ્જુણા ય ગોવિંદા ।
 સિરિમ્મદ્દિન્ન-તોહિચ્ચ, દૂસગણિણો ય દેવદ્દહી ॥
 *સુત્તત્થ-રયણમરિણે, હમ-દમ-મદ્વગુણેહિ સંપન્ને ।
 દેવદ્દિહમાસમણે, કાસવગુત્તે પળિવયામિ ॥

ओतुश्चतुर्दशदृष्टान्तानि :-

सेल-घण^१ कुडग^२-चालणि^३,
परिपुण्णग^४-हंस^५-महिस^६-मेसे^७ य ।
मसग^८-जलूग^९ विराली^{१०},
जाहग^{११}-गो^{१२}-भेरि^{१३} आभीरी^{१४} ॥१॥

त्रिविधा परिषदा :-

सा समासओ तिविहा पणत्ता,
तं जहा-
जाणिया, अजाणिया, दुव्वियड्ढा ।
जाणिया जहा-

खीरमिव जहा हसा, जे घुट्ठति इह गुरुगुणसमिद्धा ।
वोसे अ विचज्जंती, त जाणसु जाणिय परिस ॥२॥

अजाणिया जहा-

जा होइ पगइ-महुरा, मियछावय-सीह-कुक्कुडयभूआ ।
रयणमिव असंठविआ, अजाणिया सा भवे परिसा ॥३॥

दुव्वियड्ढा जहा-

न य कत्थइ निम्माओ, न य पुच्छइ परिभवस्सवोसेण ।
वत्थिव्व वायपुण्णो, फुट्ठइ गामित्तय विअड्ढो ॥४॥

पंचविधज्ञानम्—

सुत्त १ नाणं पंचविहं पणवत्तं,

त जहा—

१ आभिणिबोहियनाण,

२ सुयनाणं,

३ ओहिनाणं,

४ मणपज्जवनाणं,

५ केवलनाणं ।

सुत्त २ तं समासओ दुविहं पणवत्तं,

त जहा—

१ पच्चवख च, २ परोवख च ।

सुत्त ३ से किं तं पच्चवखं ?

पच्चवख दुविह पणवत्तं,

तं जहा—

१ इदिय-पच्चवखं, २ नोइदिय-पच्चवख ।

सुत्त ४ से किं त इदिय-पच्चवखं ?

इदिय-पच्चवखं पंचविहं पणवत्तं,

त जहा—

१ सोइदिय-पच्चवखं,

- २ चाक्खदिय-पच्चक्खं,
 ३ घाण्हदिय-पच्चक्खं,
 ४ जिब्भदिय-पच्चक्खं,
 ५ फासिदिय पच्चक्खं,
 से त इदिय-पच्चक्खं ।

- सुत्तं ५ से किं तं नोइदिय-पच्चक्खं ?
 नो इंदिय-पच्चक्खं तिविह पणत्तं,
 त जहा—
 १ ओहिनाण-पच्चक्खं,
 २ मणपज्जवनाण-पच्चक्खं,
 ३ केवलनाण-पच्चक्खं ।

अवधिज्ञानम्—

- सुत्त ६ से किं तं ओहिनाण-पच्चक्खं ?
 ओहिनाण-पच्चक्खं बुद्धिह पणत्तं
 त जहा—
 १ भव-पच्चइयं, २ खओवसमियं च .
 सुत्त ७ से किं तं भव-पच्चइयं ?
 भव-पच्चइयं दुण्हं,
 तं जहा—
 १ देवाणं य, २ तेरइयाणं य ।

मुत्त ८ से कि त खओवसमिय ?

खओवसमिय दुण्ह,

त जहा—

१ मणुस्साण य,

२ पचिदियतिरिक्खजोणियाण य ।

को हेऊ खाओवसमिय ?

खाओवसमिय-तयावरणिज्जाण कम्माण-

उदिण्णाण खएण, अणुदिण्णाण उवसमेणं-

ओहिनाणं समुप्पज्जइ ।

मुत्त ९ अहवा गुणपडिवन्नस्स अणगारस्स—

ओहि-नाणं समुप्पज्जइ,

त समासओ छविहं पणत्तं,

त जहा—

१ आणुगामियं, २ अणाणुगामियं,

३ वड्ढमाणयं, ४ हीयमाणयं,

५ पडिवाइय ६ अप्पडिवाइय ।

मुत्त १० से कि त आणुगामियं ओहिनाण ?

आणुगामियं ओहिनाण दुविहं पणत्तं,

त जहा—

१ अंतगय च २ मज्झगयं च ।

से किं तं अंतगयं ?

अंतगयं तिविह पणत्तं,

तं जहा—

१ पुरओ अंतगयं,

२ मग्गओ अंतगयं,

३ पासओ अंतगयं ।

(१) से किं तं पुरओ अंतगय ?

पुरओ अंतगयं—

से जहानामए केइ पुरिसे,

उक्कं वा, चडुलियं वा, अलायं वा,

मणिं वा, जोइं वा, पईवं वा,

पुरओ काउं पणुल्लेमाणे पणुल्लेमाणे गच्छेज्जा ।

से तं पुरओ अंतगयं ।

(२) से किं तं मग्गओ अंतगय ?

मग्गओ अंतगय—

से जहानामए केइ पुरिसे,

उक्कं वा, चडुलियं वा, अलायं वा,

मणिं वा, जोइं वा, पईवं वा,

मग्गओ काउं अणुकड्ढेमाणे अणुकड्ढेमाणे गच्छेज्जा,

से तं मग्गओ अंतगयं ।

(३) से कि त पासओ अतगय ?

पासओ अंतगय—

से जहा नामए केइ पुरिसे,

उक्क वा, चडुलिय वा, अलाय वा,

माण वा, जोइ वा, पईवं वा,

पुरओ काडं परिकइदेमाणे परिकइदेमाणे गच्छिज्जा ।

से तं पासओ अतगय ।

से त अंतगय ।

से कि तं मज्झगय ?

मज्झगयं—

से जहा नामए केइ पुरिसे,

उक्क वा, चडुलिय वा, अलाय वा,

माण वा, जोइ वा, पईवं वा,

मत्थए काड समुत्तहमाणे समुत्तहमाणे गच्छिज्जा,

से तं मज्झगय ।

अतगयस्स मज्झगयस्स य को पइविसेसो ?

पुरओ अंतगएण ओहिनाणेणं पुरओ चेव

सखिज्जाणि वा असखिज्जाणि वा जोयणाइ जाणइ, पासइ ।

मगगओ अतगएण ओहिनाणेण मगगओ चेव

सखिज्जाणि वा असखिज्जाणि वा जोयणाइ जाणइ, पासइ ।
 पासओ अतगएण ओहिनाणेण पासओ चेंव
 सखिज्जाणि वा असखिज्जाणि वा जोयणाइ जाणइ, पासइ ।
 मज्झगएण ओहिनाणेण सच्चओ समता—
 सखिज्जाणि वा असखिज्जाणि वा जोयणाइ जाणइ, पासइ ।
 से त्त अणुगामिय ओहिनाण ॥१०॥

सुत्त ११ से कि त्त अणुगामिय ओहिनाण ?

अणुगामिय ओहिनाण से जहा नामए केइ पुरिसे एग
 महत्त जोइट्ठाण काउ तस्सेव जोइट्ठाणस्स परिपेरत्तेहिं, परिपेरत्तेहिं
 परिघोलेमाणे परिघोलेमाणे तसेव जोइट्ठाण पासइ ।

अन्नत्थगए न जाणइ, न पासइ ।

एवामेव अणुगामिय ओहिनाण जत्थेव समुप्यज्जइ

तत्थेव सखेज्जाणि वा, असखेज्जाणि वा,

सबद्धाणि वा, असबद्धाणि वा,

जोयणाइ जाणइ पासइ ।

अन्नत्थगए (न जाणइ) न पासइ ।

से त्तं अणुगामियं ओहिनाण ।

सुत्त १२ से कि त्त बड्ढमाणय ओहिनाण ?

बड्ढमाणयं ओहिनाणं—

पसत्थेसु अज्झवसायट्ठाणेषु बट्ठमाणस्स बड्ढमाणचरित्तस्स

विसुज्जमाणस्स विसुज्जमाण-चरित्तस्स

सव्वओ समंता ओही वड्ढइ ।

गाहाओ-

जावइया तिसमया-हारगस्स, सुहुमस्स पणगजीवस्स ।

ओगाहणा जहन्ना, ओहिखित्त जहन्न तु ॥१॥

सव्व-वहु-अगणिजीवा, निरतरं जत्तियं भरिज्जसु ।

खित्तं सव्वदिसाग, परमोही खित्त निहिट्ठो ॥२॥

अंगुलमावलियाणं, भागमसखिज्ज दोसु सखिज्जा ।

अंगुलमावलिअंतो, आवलिया अंगुलपुहुत्तं ॥३॥

हत्थंमि मुहुत्ततो, दिवसतो गाउअमि दोट्ठव्वो ।

जोयण दिवसपुहुत्त, पक्खंतो पन्नवीसाओ ॥४॥

भरहंमि अड्ढमासो, जंबुद्विमि साहिओ मासो ।

वास च मणुयलोए, वासपुहुत्त च रुपगमि ॥५॥

सखिज्जमि उ काले, दीवसमुद्दा वि होति संपिज्जा ।

कालंमि असखिज्जे, दीवसमुद्दा उ भइयव्वा ॥६॥

काले चउण्ह वुड्ढो, कालो भइअच्चु पित्तवुड्ढोए ।

वुड्ढोए दव्वपज्जव, भइयव्वा पित्तकाला उ ॥७॥

सुहुमो य होइ कालो, ततो सुहुमयर हवइ पित्तं ।

अगुलसेढीमित्ते, ओमप्पिणिओ असखिज्जा ॥८॥

से त्त वड्ढमाणय ओहिनाणं ।

सुत्तं १३ से किं तं हीयमाणय ओहिनाण ?

हीयमाणय ओहिनाण—अप्पसत्थेहि अज्झवसायद्वाणेहि

वट्टमाणस्स वट्टमाण चरित्तस्स

संकिलिस्समाणस्स, संकिलिस्समाण—चरित्तस्स

सव्वओ समंता ओही परिहायइ,

से तं हीयमाणयं ओहिनाणं ।

सुत्तं १४ से किं तं पडिवाइ ओहिनाणं ?

पडिवाइ-ओहिनाणं जहन्नेणं अंगुलस्स—

असंखिज्जइ भागं वा, संखिज्जइ भागं वा,

बालगं वा, बालगपुहुत्तं वा,

लिकखं वा, लिक्खपुहुत्तं वा,

जूयं वा, जूयपुहुत्तं वा,

जव वा, जवपुहुत्तं वा,

अंगुलं वा, अंगुलपुहुत्तं वा,

पायं वा, पायपुहुत्तं वा,

विहत्थि वा, विहत्थिपुहुत्तं वा,

रयणि वा, रयणिपुहुत्तं वा,

कुच्छि वा, कुच्छिपुहुत्तं वा,

घणुं वा, घणुपुहुत्तं वा,

गाडयं वा, गाडयपुहुत्तं वा,

जोयण वा, जोयणपुहुत्तं वा,
 जोयणसय वा, जोयणसयपुहुत्त वा,
 जोयणसहस्स वा, जोयणसहस्सपुहुत्तं वा,
 जोयणलक्ख वा, जोयणलक्खपुहुत्त वा,
 जोयण-कोडि वा, जोयण-कोडिपुहुत्तं वा,
 जोयण-कोडाकोडि वा, जोयण-कोडाकोडिपुहुत्त वा,
 जोयण-संखेज्ज वा, जोयण-संखेज्जपुहुत्त वा,
 जोयण-असंखेज्जं वा, जोयण-असंखेज्जपुहुत्त वा,
 उक्कोसेण लोगं वा पासित्ताण पडिवइज्जा ।
 से त्त पडिवाइ ओहिनाण ।

सुत्त १५ से किं त अपडिवाइ-ओहिनाण ?

अपडिवाइ-ओहिनाण-

जेण अलोगस्स एगमवि आगास-एएस जाणइ, पासइ ।

तेण पर अपडिवाइओहिनाणं ।

से त्त अपडिवाइ-ओहिनाण ।

सुत्त १६ त समासओ चउव्विह पणत्त,

त जहा-

दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ ।

तत्थ दब्बओ णं ओहिनाणी-

जहन्नेणं अणंताइं रुविदब्बाइं जाणइ, पासइ ।

उक्कोसेणं सव्वाइं रुविदब्बाइं जाणइ, पासइ ।

खित्तओ णं ओहिनाणी-

जहन्नेणं अंगुलस्स असंखिज्जइभागं जाणइ, पासइ ।

उक्कोसेणं असंखिज्जाइं-

अलोगे लोमप्पमाणमित्ताइं खंडाइं जाणइ, पासइ ।

कालओ णं ओहिनाणी-

जहन्नेणं आवलियाए असंखिज्जइभागं जाणइ, पासइ ।

उक्कोसेणं असंखिज्जाओ उस्सप्पिणीओ अवसप्पिणीओ-

अईयमणागयं च कालं जाणइ, पासइ ।

भावओ णं ओहिनाणी-

जहन्नेणं अणंते भावे जाणइ, पासइ,

उक्कोसेण वि अणंते भावे जाणइ, पासइ ।

सव्वभावाणमणंतभागं जाणइ, पासइ ।

गाहाओ-

ओही भवपच्चइओ, गुणपच्चइओ य वणिओ दुविहो ।

तस्स य बहू विगप्पा, दब्बे खित्ते अ काले य ॥९॥

नेरइय-देव-तित्थंकरा य, ओहिस्स ज्वाहिरा वुंति ।

पासंति सव्वओ खलु, सेसा देसेण पासंति ॥१०॥

से तं ओहिनाण-पच्चवखं ।

मनः पर्यवज्ञानम्—

सु. १७ से किं तं मणपज्जवनाणं ?

मणपज्जवनाणे षं भंते । किं मणुस्साणं उप्पज्जइ, अमणुस्साणं ?
गोयमा ! मणुस्साणं, नो अमणुस्साणं ।

जइ मणुस्साणं—

किं सम्मुच्छिम-मणुस्साण, गढमवक्कतिय-मणुस्साणं ?
गोयमा ! णो सम्मुच्छिम-मणुस्साणं, गढमवक्कतिय-मणुस्साणं ।

जइ गढमवक्कतिय-मणुस्साणं—

किं कम्मभूमिम-गढमवक्कतिय-मणुस्साणं,
अकम्मभूमिय-गढमवक्कतिय-मणुस्साण,
अंतरदीवग-गढमवक्कतिय-मणुस्साणं ?

गोयमा ! कम्मभूमिम-गढमवक्कतिय-मणुस्साणं,

णो अकम्मभूमिम-गढमवक्कतिय-मणुस्साणं,

णो अंतरदीवग-गढमवक्कतिय-मणुस्साण ।

जइ कम्मभूमिम-गढमवक्कतिय-मणुस्साणं—

किं सखेज्जवासाउय-कम्मभूमिम-गढमवक्कतिय-मणुस्साण,
असखेज्जवासाउय-कम्मभूमिम-गढमवक्कतिय-मणुस्साणं ?

गोयमा ! सखेज्जवासाउय-कम्मभूमिम-गढमवक्कतिय-मणुस्साणं,

णो असखेज्जवासाउय-कम्मभूमिम-गढमवक्कतिय-मणुस्साणं ।

जइ सखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ-गढभवक्कतिय मणुस्साण-
 कि पज्जत्तग सखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ-गढभवक्कतिय-मणुस्साण,
 अपज्जत्तग-सखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ-गढभवक्कतिय-मणुस्साण ?
 गोयमा । पज्जत्तग - सखेज्जवासाउय - कम्मभूमिअ - गढभवक्कतिय-
 मणुस्साण,

णो अपज्जत्तग-सखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ-गढभवक्कतिय-मणुस्साण ।

जइ पज्जत्तग-सखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ-गढभवक्कतिय-मणुस्साण-
 कि सम्मदिट्ठि-पज्जत्तग-सखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ-गढभवक्कतिय-
 मणुस्साणं,

मिच्छदिट्ठि-पज्जत्तग-सखेज्जवासाउय- कम्मभूमिअ - गढभवक्कतिय-
 मणुस्साणं,

सम्माभिच्छदिट्ठि - पज्जत्तग - सखेज्जवासाउय - कम्मभूमिअ -
 गढभवक्कतिय-मणुस्साण ?

गोयमा ! सम्मदिट्ठि - पज्जत्तग - सखेज्जवासाउय - कम्मभूमिअ-
 गढभवक्कतिय-मणुस्साण,

णो मिच्छदिट्ठि पज्जत्तग-सखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ-गढभवक्कतिय-
 मणुस्साण,

णो सम्माभिच्छदिट्ठि - पज्जत्तग - सखेज्जवासाउय - कम्मभूमिअ -
 गढभवक्कतिय-मणुस्साण,

जइ सम्मदिट्ठि-पज्जत्तग-सखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ-गढभवक्कतिय-
 मणुस्साणं-

किं सजय - सम्मदिट्ठि - पज्जत्तग - सखेज्जवासाउय - कम्मभूमिअ-
गढभवक्कतिय-मणुस्साण,

असंजय- सम्मदिट्ठिपज्जत्तग-सखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ - गढभवक्कं
तिय-मणुस्साण,

सजयासंजय - सम्मदिट्ठि-पज्जत्तग - सखेज्जवासाउय - कम्मभूमिअ-
गढभवक्कतिय मणुस्साण ?

गोयमा ! सजय-सम्मदिट्ठि - पज्जत्तग-सखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ-
गढभवक्कतिय-मणुस्साण,

णो असंजय - सम्मदिट्ठि-पज्जत्तग - सखेज्जवासाउय - कम्मभूमिअ-
गढभवक्कतिय-मणुस्साणं,

णो सजयासजय-सम्मदिट्ठि-पज्जत्तग-सखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ-
गढभवक्कतिय-मणुस्साण ।

जइ संजय-सम्मदिट्ठि - पज्जत्तग - सखेज्जवासाउय - कम्मभूमिअ-
गढभवक्कतिय-मणुस्साण-

किं पमत्त-संजय-सम्मदिट्ठि-पज्जत्तग- सखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ-
गढभवक्कतिय-मणुस्साण,

अपमत्त-सजय-सम्मदिट्ठि- पज्जत्तग - सखेज्जवासाउय - कम्मभूमिअ-
गढभवक्कतिय-मणुस्साण ?

गोयमा । अपमत्त-सजय-सम्मदिट्ठि - पज्जत्तग - सखेज्जवासाउय-
कम्मभूमिअ-गढभवक्कतिय-मणुस्साण,

णो पमत्त-संजय-सम्मदिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ-
गव्ववक्कंतिय-मणुस्साणं—

जइ अपमत्त-संजय-सम्मदिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ-
गव्ववक्कंतिय-मणुस्साणं—

किं इड्ढिपत्त-अपमत्त-संजय-सम्मदिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्जवासाउय-
कम्मभूमिय-गव्ववक्कंतिय-मणुस्साणं,

अणिअड्ढिपत्त-अपमत्त-संजय-सम्मदिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्जवासाउय-
कम्मभूमिय-गव्ववक्कंतिय-मणुस्साणं ?

गोयमा ! इड्ढिपत्त-अपमत्त-संजय-सम्मदिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्जवा-
साउय-कम्मभूमिय-गव्ववक्कंतिय-मणुस्साणं,

णो अणिअड्ढिपत्त-अपमत्त-संजय-सम्मदिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्जवासाउय-
कम्मभूमिय-गव्ववक्कंतिय-मणुस्साणं मणपज्जवनानं समुप्पज्जइ ।

सुत्तं १८ तं च दुविहं उप्पज्जइ,

तं जहा—

१ उज्जुमई य, २ विउलमई य ।

तं सभासओ चउव्विहं पणत्तं,

तं जहा—दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ ।

तत्थ दव्वओ णं उज्जुमई अणते अणंतपएसिए खधे जाणइ, पासइ ।

तं चेव विउलमई अब्भहियतराए, विउलतराए—

विसुद्धतराए, वित्तिमिरतराए जाणइ, पासइ ।

खित्तओ ण उज्जुमई य जहन्नेणं अगुलस्स असखेज्जइभागं
 उक्कोसेणं अहेजाव इमीसेरयणप्पभाए पुढवीए—
 उवरिमहेद्विल्ले खुड्डगपयरे,
 उड्ड-जाव-जोइसस्स उवरिमतते,
 तिरियं-जाव-अंतोमणुस्सखित्ते
 अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु
 पन्नरससु कम्मभूमिसु, तिसाए अकम्मभूमिसु
 छप्पन्नाए अंतरदीवगेसु
 सन्निपिच्चिदियाण पज्जत्तयाण मणोगए भावे जाणइ, पासइ,
 तं चेव विउलमई अड्ढाइज्जेहि अंगुलेहि अब्भहियतरं विउलतरं,
 विमुद्धतर वित्तिमिरतराणं खेतं जाणइ, पासइ ।

कालओ णं उज्जुमई—

जहन्नेणं पलिओवमस्स असखिज्जयभागं
 उक्कोसेणं पि पलिओवमस्स असंखिज्जयभागं
 अतीयमणागयं वा कालं जाणइ, पासइ,

तं चेव विउलमई अब्भहियतराण, विउलतराण
 विमुद्धतराणं वित्तिमिरतराणं जाणइ, पासइ ।

भावओ णं उज्जुमई अणंतं भावे जाणइ, पासइ,
 सव्वभावाणं अणंतभागं जाणइ, पासइ ।

तं चेव विउलमई अब्भहियतराणं विउलतराणं
 विमुद्धतराणं वित्तिमिरतराणं जाणइ, पासइ ।

गाहा—मणयज्जवणाण पुण, जणमणपरिचिअत्थपागडण ।

माणुसखित्तनिबद्ध, गुणपच्चइअ चरित्तवओ ॥१॥

से त्त मणयज्जवणाण ।

केवलजानम्—

सुत्त १९ से कि त केवलनाण ?

केवलनाण दुविह पणत्त,

त जहा—

(१) भवत्थकेवलनाण च ।

(२) सिद्धकेवलनाण च ।

से कि तं भवत्थकेवलनाण ?

भवत्थकेवलनाण दुविह पणत्त,

त जहा—

(१) सजोगिभवत्थकेवलनाणं च,

(२) असजोगिभवत्थकेवलनाणं च ।

से कि तं सजोगिभवत्थकेवलनाणं ?

सजोगिभवत्थकेवलनाणं दुविहं पणत्त,

तं जहा—

(१) पढमसमय—सजोगि—भवत्थकेवलनाणं च

(२) अपढमसमय—सजोगि—भवत्थकेवलनाणं च ।

अहवा-

(१) चरमसमय-सजोगी-भवत्यकेवलनाण च ।

(२) अचरमसमय-सजोगी-भवत्यकेवलनाण च ।

से तं सजोगिभवत्यकेवलनाण ।

से कि त अजोगिभवत्यकेवलनाण ?

अजोगिभवत्यकेवलनाण दुविहं पणत्त,

त जहा-

(१) पढमसमय-अजोगि-भवत्यकेवलनाण च

(२) अपढमसमय-अजोगि-भवत्यकेवलनाण च ।

अहवा-

(१) चरमसमय-अजोगि-भवत्यकेवलनाण च

(२) अचरमसमय-अजोगि-भवत्यकेवलनाण च ।

से त अजोगिभवत्यकेवलनाण ।

से त भवत्यकेवलनाण ।

त २० से कि तं सिद्धकेवलनाण ?

सिद्धकेवलनाण दुविहं पणत्त,

तं जहा-

(१) अणतरसिद्धकेवलनाणं च

(२) परपरसिद्धकेवलनाण च ।

सुत्तं २१ से किं तं अणंतरसिद्धकेवलनाणं ?

अणतरसिद्ध केवलनाणं पण्णरसविह पण्णत्त,

तं जहा—

१ तित्थसिद्धा २ अतित्थसिद्धा

३ तित्थयरसिद्धा ४ अतित्थयरसिद्धा

५ सयं बुद्धसिद्धा ६ पत्तेयबुद्धसिद्धा

७ बुद्धबोहियसिद्धा

८ इत्थिल्लिगसिद्धा ९ पुरिसल्लिगसिद्धा

१० नपुंसकल्लिगसिद्धा

११ सल्लिगसिद्धा १२ अल्लिगसिद्धा

१३ गिहिल्लिगसिद्धा

१४ एगसिद्धा १५ अणेगसिद्धा

से त्त अणतरसिद्ध—केवलनाणं ।

सुत्तं २२ से किं तं परंपरसिद्ध केवलनाणं ?

परंपरसिद्ध केवलनाणं अणेगविह पण्णत्तं,

तं जहा—

अपढमसमयसिद्धा, दुसमयसिद्धा,

तिसमयसिद्धा, चउसमयसिद्धा, जाव . . . दससमयसिद्धा

संखिज्ज समयसिद्धा, असंखिज्ज समयसिद्धा,

अणंत समयसिद्धा,

से त परंपरसिद्ध-केवलनाण ।

से त सिद्धकेवलनाण ।

त समासओ चउव्विह पणत्त,

तं जहा-

दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ ।

तत्थ दव्वओ णं केवलनाणी सब्बदव्वाइ जाणइ पासइ ।

खित्तओ ण केवलनाणी सब्ब खित्त जाणइ पासइ ।

कालओ ण केवलनाणी सब्ब कालं जाणइ पासइ ।

भावओ ण केवलनाणी सब्बे भावे जाणइ पासइ ।

गाहा-अह सब्ब दव्व परिणाम-भावविण्णत्ति कारणमणंतं ।

सा स य म प्प डि वा ई, एग वि हं केवलनाणं ॥१॥

सुत्त २३ गाहा-केवलनाणेणऽत्थे, नाउं जे तत्थ पण्णवणजोगे ।

ते भासइ तित्थयरो, वइजोगसुअ हवइ सेसं ॥२॥

से त केवलनाण ।

से त नोइदियपच्चक्ख ।

से त पच्चक्खनाणं ।

परोक्षज्ञानम्

सुत्त २४ से किं तं परक्खनाण ?

परक्खनाण दुविहं पणत्त,

त जहा-

(१) आभिणिबोहियनाणपरोक्ख च

(२) सुयनाणपरोक्ख च ।

जत्थ आभिणिबोहियनाण तत्थ सुयनाण,
जत्थ सुयनाणं तत्थ आभिनिबोहियनाणं ।
दो वि एयाइं अण्णमण्णमणुगायाइं,

तहवि पुण इत्थ आयरिआ नाणत्तं पण्णावति-
अभिणिबुज्झइ त्ति आभिणिबोहियनाण,
सुणेइ त्ति सुय,
मइपुव्वं जेण सुअ, न मई सुयपुग्विया ।

सुत्त २५ अविसेसिया मई-मइनाण च मइअण्णाण च ।

विसेसिया-

सम्मदिट्ठिस्स मई मइनाण,

मिच्छादिट्ठिस्स मई मइ-अन्नाण ।

अविसेसियं सुयं-सुयनाण च सुयअन्नाणं च

विसेसिअ सुअ-

सम्मदिट्ठिस्स सुअ सुयनाण,

मिच्छदिट्ठिस्स सुअ सुय-अन्नाण ।

मत्तिज्ञानम्-

सुत्तं २६ से किं तं आभिणिबोहियनाण ?

आभिणिबोहियनाण दुविहं पण्णत्तं,

त जहा-

१ सुयनिस्सिय च, २ असुयनिस्सियं च ।

से किं तं असुयनिस्सिय ?

असुयनिस्सिय चउव्विहं पण्णत्तं,

तं जहा-

गाहाओ-

उप्पत्तिया^१ वेणइआ^२, कम्मया^३ परिणामिया^४ ।

बुद्धी चउव्विहा वुत्ता, पचमा नोवलब्भइ ॥१॥

पुव्वमदिट्ठमस्सुय, मवेइय तवखणविसुद्धगहियत्था ।

अध्वाहयफलजोगा, बुद्धी उप्पत्तिया नाम ॥१॥

भरहसिल^१ मिह^२ कुक्कुड^३ तिल^४ बालुय^५ हत्थि^६ भगड^७ वणसडे^८ ।

पायस^९ अइआ^{१०} पत्ते^{११}, छाडहिला^{१२} पंचपियरो^{१३} य ॥२॥

भरहसिल^१ पणिय^२ रुक्खे^३, खुड्डग^४ पड^५ सरड^६ काय^७ उच्चारे^८ ।

गय^९ घयण^{१०} गोल^{११} खमे^{१२}, खुड्डग^{१३} मग्गि^{१४} त्थि^{१५} पइ^{१६} पुत्ते^{१७} ॥३॥

महुसित्थ^{१८} मुद्दि^{१९} अंके^{२०}, नाणए^{२१} भिक्खु^{२२} चेडगनिहाणे^{२३} ।

सिक्खा^{२४} य अत्थसत्थे^{२५}, इच्छा य मह^{२६} सयसहस्से^{२७} ॥४॥

भरनित्थरणसभत्था, तिव्वग्ग-सुत्तत्थ-गहिय-पेयाला ।

उभओ लोग फलवई, विणयसमुत्था हवइ बुद्धी ॥१॥

निमित्तं^१ अत्थसत्थे^२ अ लेहे^३ गणिए^४ अ कूव^५ अस्से^६ य ।
 गद्दम^७ लक्खण^८ गंठी^९ अगए^{१०} रहिए^{११} य गणिया^{१२} य ॥२॥
 सीआ साढी दीहं च, तण अवसब्बय च कुचस्स^{१३} ।
 निब्बोदए^{१४} य गोणे, घोडग-पडण च रुक्खाओ^{१५} ॥३॥
 उवओग - दिट्ठसारा, कम्म - पसग-परिघोलण-विसाला ।
 साहुक्कार फलवई, कम्मसमुत्था हवइ बुद्धी ॥४॥
 हेरणिणए^१ करिसए^२, कोलिअ^३ डोवे^४ य मुत्ति^५ घय^६ पवए^७ ।
 तुन्नाए^८ वड्ढई^९, पूयइ^{१०} य वड^{११} चित्तकारे^{१२} य ॥२॥
 अणुमाण हेउ दिट्ठंत साहिया, वय विवाग परिणामा ।
 हि य निस्सेयस फलवई, बुद्धी परिणामिया नाम ॥१॥
 अभए^१ सिट्ठि^२ कुमारे^३, देवी^४ उदिओदए हवइ राया^५ ।
 साहू य नदिसेणे^६, घणदत्ते^७ सावग^८ अमच्चे^९ ॥२॥
 खमए^{१०} अमच्चपुत्ते^{११}, चाणक्के^{१२} चेव थूलभदे^{१३} य ।
 ना सिक्क सुंदरि नं दे^{१४}, वइरे^{१५} परिणामिआ बुद्धी ॥३॥
 चलणाहण^{१६} आमंडे^{१७}, मणी^{१८} य सप्पे^{१९} य खग्गी^{२०} थूमिदे^{२१} ।
 पारिणामिय-बुद्धीए, एवमाई उदाहरणा ॥४॥

से त्त अस्सुयनिस्सियं ।

से कि तं सुयनिस्सियं ?

सुयनिस्सियं चउच्चिहं पणत्त,

तं जहा-

उग्गहे, ईहा, अवाओ, धारणा ।

सुत्तं २७ से किं तं उगगहे ?

उगगहे दुविहे पणत्ते,
तं जहा—

अत्युगगहे य वजणुगगहे य ।

सुत्तं २८ से किं तं वजणुगगहे ?

वजणुगगहे चसव्विहे पणत्ते
तं जहा—

(१) सोइदिय वंजणुगगहे, (२) घाणिंदिय वंजणुगगहे,
(३) जिन्मिंदिय वंजणुगगहे (४) फासिंदिय वंजणुगगहे ।
से तं वंजणुगगहे ।

सुत्तं २९ से किं त अत्युगगहे ?

अत्युगगहे छव्विहे पणत्ते,
तं जहा—

१ सोइदिय—अत्युगगहे
२ चक्खिंदिय—अत्युगगहे
३ घाणिंदिय—अत्युगगहे
४ जिन्मिंदिय—अत्युगगहे
५ फासिंदिय—अत्युगगहे
६ नोइंदिय—अत्युगगहे ।

सुत्तं ३० तस्स ण इमे एगद्विया नाणाघोसा नाणावजणा

पंच नामधिज्जा भवति,
तं जहा—

- १ ओगेण्हया
- २ अबघारणया
- ३ सबणया
- ४ अबलंघणया
- ५ मेहा ।
- से तं उगहे ।

सुत्तं ३१ से किं तं ईहा ?

तं जहा—

- (१) सोइंदिय-ईहा (२) चक्खिंदिय-ईहा
- (३) घाणिंदिय-ईहा (४) जिह्मिंदिय-ईहा
- (५) फासिंदिय-ईहा (६) नो इंदिय-ईहा ।

तीसे ण इमे एगट्ठिया, नाणाघोसा, नाणावज्जणा
पंच नामघिज्जा भवन्ति,

तं जहा—

- १ आभोगणया २ मगणया
- ३ गवेसणया ४ चित्ता ५ विमंसा ।
- से तं ईहा ।

सुत्तं ३२ से किं तं अवाए ?

अवाए छव्विहे पणत्ते,

तं जहा—

(१) सोइदिय-अवाए (२) चविखदिय-अवाए

(३) घाणिदिय-अवाए (४) जिनिमदिय-अवाए

(५) फासिदिय-अवाए (६) णो-इदिय-अवाए,

तस्त ण इमे एगट्टिया नाणाघोसा नाणावज्जणा

पच्च नामधिज्जा भवति,

१ आउट्टणया २ पच्चाउट्टणया

३ अवाए ४ वुट्ठी ५ विण्णाणे ।

से त्त अवाए ।

मुत्त ३३ से किं त धारणा ?

धारणा छव्विहा पणत्ता,

तं जहा—

(१) सोइदिय-धारणा (२) चविखदिय-धारणा

(३) घाणिदिय-धारणा (४) जिनिमदिय-धारणा

(५) फासिदिय-धारणा (६) नो-इदिय-धारणा ।

तीसे ण इमे एगट्टिया, नाणाघोसा, नाणावज्जणा

पच्च नामधिज्जा भवति,

त जहा—

१ धरणा २ धारणा ३ ठवणा ४ पइट्ठा ५ कोट्ठे ।

से त्त धारणा ।

सुत्तं ३४ उग्गहे इक्कसमइए,
 अंतोमुहुत्तिया ईहा,
 अतोमुहुत्तिए अवाए,
 धारणा संखेज्जं वा कालं, असंखेज्जं वा कालं ।

सुत्तं ३५ एवं अट्ठावीसइविहस्स आभिणिबोहियताणस्स
 वंजणुग्गहस्स परूवणं करिस्सामि
 पडिबोहग्गदिट्ठंतेणं मल्लग्गदिट्ठंतेणं य ।
 से किं तं पडिबोहग्गदिट्ठंतेणं ?
 पडिबोहग्गदिट्ठंतेणं—
 से जहा नामए केइ पुरिसे
 कंचि पुरिसं सुत्तं पडिबोहेज्जा “अमुगा अमुगत्ति” ?
 तत्थ चोयगे पन्नवगं एवं वयासी—
 किं एगसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति
 दुसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति

।।व—दससमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति
 संखिज्जसमय पविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति
 असंखिज्जसमय पविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति ?
 एवं वयंतं चोयगं पण्णवए एवं वयासी—
 “नो एगसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति,
 नो दुसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति,

जाव-नो दससमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति,

नो सखिज्जसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति

असखिज्जसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छति ।

से त्त पडिबोह्गदिट्ठ तेण ।

से किं त मल्लगदिट्ठ तेण ?

मल्लगदिट्ठंतेण-

से जहानामए केइ पुरिसे

आवागसीसामो मल्लगं गहाय

तत्थेगं उदगविट्ठ पक्खेविज्जा से नट्ठे,

अण्णेवि पक्खित्ते सेऽवि नट्ठे,

एव पक्खिप्पमाणेसु पक्खिप्पमाणेसु-

होही से उदगविट्ठ, जे ण तं मल्लग रावेहिइ त्ति,

होही से उदगविट्ठ, जे ण त सि मल्लगंसि ठाहित्ति,

होही से उदगविट्ठ, जे णं तं मल्लग भरिहित्ति,

होही से उदगविट्ठ, जे ण त मल्लगं पवाहेहित्ति ।

एवामेव पक्खिप्पमाणेहिं पक्खिप्पमाणेहिं-

अणत्तेहिं पुग्गलेहिं जाहे तं वंजणं पूरियं होइ-

ताहे 'हं' ति करेइ, नो चेव णं जाणइ "के एस सट्ठाइ" ?

तमो ईहं पविसइ, तमो जाणइ "अमूगे एस सट्ठाइ" ।

तमो अवायं पविसइ, तमो से उवगयं हवइ ।

तमो धारणं पविसइ,

तओ ण धारेइ सखिज्ज वा काल, असखिज्ज वा काल ।

से जहा नामए केइ पुरिसे

अव्वत्तं सद् सुणिज्जा, तेण सद्दो त्ति उग्गहिए

नो चेव ण जाणइ, 'के वेस सद्दाइ ?' .

तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ 'अमुगे एस सद्दे ।'

तओ अवाय पविसइ, तओ से उवगय हवइ ।

तओ धारणं पविसइ,

तओ णं धारेइ संखिज्जं वा काल, असखेज्ज वा काल ।

से जहानामए केइ पुरिसे—

अव्वत्तं रुवं पासिज्जा, तेण रुवे त्ति उग्गहिए.

नो चेव ण जाणइ 'के वेस रुव त्ति' ?

तओ ईह पविसइ, तओ जाणइ 'अमुगे एस रुवे' ।

तओ अवाय पविमइ, तओ से उवगय हवइ ।

तओ धारण पविसइ,

तओ णं धारेइ सखेज्ज वा काल, असखेज्ज वा काल ।

से जहा नामए केइ पुरिसे—

अवत्त गधं अग्घाइज्जा, तेण गध त्ति उग्गहिए

नो चेव ण जाणइ 'के वेस गधे त्ति' ?

तओ ईह पविसइ, तओ जाणइ 'अमुगे एस गधे ।'

तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ ।

तओ धारण पविसइ,
 तओ ण धारेइ सखेज्ज वा काल, असखेज्ज वा काल ।
 से जहा नामए केइ पुरिसे—
 अच्चत्त रस आसाइज्जा, तेण रसो त्ति उगगहिए,
 नो चेव ण जाणइ “के वेन रसो त्ति” ?
 तओ ईह पविमइ, तओ जाणइ “अमुगे एस रसे” ।
 तओ अवाय पविमइ, तओ से उवगय हवइ ।
 तओ धारण पविसइ,
 तओ ण धारेइ सखेज्ज वा कालं, असखेज्जं वा काल ।
 से जहा नामए केइ पुरिसे—
 अच्चत्त फास पडिसवेइज्जा, तेण फासेत्ति उगगहिए
 नो चेव ण जाणइ “के वेस फासो त्ति ?”
 तओ ईह पविसइ, तओ जाणइ “अमुगे एस फासे” ।
 तओ अवाय पविमइ, तओ से उवगय हवइ,
 तओ धारण पविमइ,
 तओ ण धारेइ सखेज्ज वा कालं, असखेज्जं वा कालं ।
 से जहा नामए केइ पुरिसे—
 अच्चत्त सुमिण पासिज्जा, तेण सुमिणो त्ति उगगहिए,
 नो चेव ण जाणइ “के वेस सुमिणो त्ति ?”
 तओ ईह पविसइ, तओ जाणइ “अमुगे एस सुमिणे ।”

तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगय हवइ ।

तओ धारण पविसइ,

तओ णं धारेइ संखेज्जं वा काल, असंखेज्जं वा कालं ।

से तं मल्लगदिट्ठं ते णं ।

सुत्तं ३६ त समासओ चउव्विह पणत्त,

तं जहा—

१ दव्वओ, २ खित्तओ, ३ कालओ, ४ भावओ ।

तत्थ दव्वओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं

सव्वाइं दव्वाइं जाणइ न पासइ ।

खेत्तओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं

सव्वं खेत्तं जाणइ, न पासइ ।

कालओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं

सव्व कालं जाणइ, न पासइ ।

भावओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं

सव्वे भावे जाणइ, न पासइ ।

गाहाओ—

उग्गह ईहाऽवाओ य, धारणा एव हुति चत्तारि ।

आभिणिबोहियनाणस्स, भेयवत्थू समासेणं ॥१॥

अत्याणं उग्गहणमि, उग्गहो तह वियालणे ईहा ।
 ववसायम्मि अवाओ, धरणं पुण धारण विति ॥२॥
 उग्गहं इक्कं समयं, ईहावाया मूहुत्तमद्ध तु ।
 कालमसख सखं च, धारणा होइ नायव्वा ॥३॥
 पुट्ठं सुणेइ सद्द, रुव पुण पासइ अपुट्ठ तु ।
 गंधं रस च फासं च, वद्धपुट्ठ वियागरे ॥४॥
 भासा समसेढीओ, सद्द जं सुणइ मीसिय सुणइ ।
 बीसेढी पुण सद्दं, सुणेइ नियमा पराघाए ॥५॥
 ईहा अपोह बीमसा, मग्गणा य गवसेणा ।
 सन्ना सई मई पन्ना, सव्व आभिणिवोहिय ॥६॥
 से त्तं आभिणिवोहियनाण-परोक्ख ।
 से त्तं मइनाण ।

श्रुतज्ञानम्:-

सुत्तं ३७ से किं तं सुयनाणपरोक्ख ?

सुयनाणपरोक्खं चोदत्तविहं पणत्त,

तं जहा-

१ अक्खरसुयं, २ अणक्खरसुयं,

३ सण्णिसुयं, ४ असण्णिसुयं,

५ सम्मसुयं, ६ मिच्छासुयं,

७ साइयं, ८ अणाइयं,

९ सपज्जवसिय १० अपज्जवसिय,
 ११ गमियं, १२ अगमिय,
 १३ अगपविट्ठं, १४ अणगपविट्ठं ।

सुत्तं ३८ (१) से किं तं अक्खरसुयं ?

अक्खरसुयं तिविहं पणत्तं,

तं जहा—

१ सन्नक्खरं, २ वंजणक्खरं, ३ लद्धिअक्खरं ।

(१) से किं तं सन्नक्खरं ?

सन्नक्खरं- अक्खरस्स संठाणागिई ।

से तं सन्नक्खरं ?

(२) से किं तं वंजणक्खरं ?

वंजणक्खरं-अक्खरस्स वंजणाभिलावो ।

से तं वंजणक्खरं ।

(३) से किं तं लद्धि-अक्खरं ?

लद्धिअक्खरं-अक्खर-लद्धियस्स लद्धि-अक्खरं समुप्पज्जइ,

तं जहा—

१ सोइदिय-लद्धि-अक्खरं,

२ चाक्खदिय-लद्धि-अक्खरं,

३ घाणिंदिय-लद्धि-अक्खरं,

४ रसाणिंदिय-लद्धि-अक्खरं,

५ फासिंदिय-लद्धि-अक्खरं,

६ नोइंदिय-लद्धि-अक्खरं,

से त्त लद्धि-अक्खरं ।

से त्त अक्खरसुय ।

(२) से किं तं अणक्खरसुयं ?

अणक्खरसुयं अणेगविहं पण्णत्तं,

तं जहा—

आहा—अससिय नीसमियं, निच्छूढं खासिय च छीय च ।

निस्सिघियमणुसारं, अणक्खर छेलियाईय ॥१॥

से त्तं अणक्खरसुय ।

सुत्त ३९ (३) से किं तं सण्णिसुयं ?

सण्णिसुयं त्तिविहं पण्णत्तं,

तं जहा—

१ कालिओवएसेण, २ हेऊवएसेणं, ३ दिट्ठिवाओवएसेण ।

(१) से किं तं कालिओवएसेणं ?

कालिओवएसेण—जस्स णं अत्थि-ईहा, अवोहो, मग्गणा,

गवेसणा, चिंता, वीमंसा,
 से णं सण्णी त्ति लब्भइ,
 जस्स णं नत्थि ईहा, अवोहो, मग्गणा, गवेसणा,
 चिंता, वीमंसा, से ण असण्णी त्ति लब्भइ ।
 से त्तं कालिओवएसेणं ।

(२) से किं तं हेऊवएसेण ?

हेऊवएसेणं—जस्स णं अत्थि अभिसंधारणपुब्बिया करणसत्ती
 से णं सण्णी त्ति लब्भइ,
 जस्स णं णत्थि अभिसंधारणपुब्बिया करणसत्ती
 से णं असण्णी त्ति लब्भइ,
 से त्तं हेऊवएसेणं ।

(३-४) से किं त्तं दिट्ठिवाओवएसेणं ?

दिट्ठिवाओवएसेणं—सण्णिसुयस्स खओवसमेणं—
 सण्णी लब्भइ,
 असण्णिसुयस्स खओवसमेणं—
 असण्णी लब्भइ ।

से त्त दिट्ठिवाओवएसेणं ।

से त्तं सण्णिसुयं, से त्त असण्णिसुयं ।

सुत्तं ४० (५) से कि त सम्मसुय ?

सम्मसुयं—जं इम अरिहतेहि भगवतेहि

उप्पण्णनाणदंसणघरेहि

तेलुक्कनिरिक्खमहिपूइएहि

तीय-पडुप्पण्ण-मणागय जाणएहि

सच्चण्णूहि सच्चदरिसीहि

पणीयं दुवालसंगं गणिपिडग.—

तं जहा—

१ आयारो २ सुप्पगडो ३ ठाण

४ समवाओ ५ विवाहपण्णत्ती ६ नायाघम्मकहाओ

७ उवासगदसाओ ८ अंतगडदसाओ ९ अणुत्तरोववाइयदसाओ

१० पण्हावागरणं ११ विवागसुयं १२ दिट्ठिवाओ ।

इच्चेयं दुवालसंगं गणिपिडगं—

चोइत्त पुट्ठित्थ सम्मसुय,

अभिण्णदसपुट्ठित्थ सम्मसुयं,

तेण पर मिप्पेसु भयणा ।

से तं सम्मसुयं ।

सुत्त ४१ (६) से कि तं मिच्छासुय ?

मिच्छासुयं—जं इम अण्णाणिएहि मिच्छादिट्ठिएहि—

सच्छंदबुद्धि-मइविगप्पियं.

तं जहा—

भारहं, रामायणं, भीमासुखख,
कोडिल्लयं, सगडभद्वियाओ, खोडमुहं
कप्पासिय, नागसुहुमं, कणगसत्तारी,
वडसेसियं, बुद्धवयणं, तेरासियं,
काविलियं, लोगाययं, सट्ठित्तं,
माढरं, पुराणं, वागरणं,
भागवयं, पायंजलि, पुत्सदेवयं,
लेह, गणियं, सउणखय, नाडयाइ,

अहवा बावत्तारि कलाओ,

चत्तारि य वेया संगोवंगा,

एयाइं मिच्छादिट्ठिस्स मिच्छत्तापरिगगहियाइं मिच्छासुय ।

एयाइं चेव सम्मदिट्ठिस्स सम्मत्तपरिगगहियाइं सम्मसुय ।

अहवा मिच्छादिट्ठिस्स वि एयाइं चेव सम्मसुय ।

कम्हा ?

सम्मत्तहेउत्तणओ ।

जम्हा ते मिच्छदिट्ठिओ

तेहिं चेव समएहि चोडया समाणा

केइ सपक्खदिट्ठिओ चयंति ।

से त्तं मिच्छासुयं ।

सुत्तं ४२ (७-८) से किं तं साइय सपज्जवसियं

(९-१०) अणाइयं अपज्जवसियं च ?

इच्चेयं दुवालसंगं गणिपिडगं

बुच्छित्तिनयद्वयाए साइय सपज्जवसियं,

अब्बुच्छित्तिनयद्वयाए अणाइयं अपज्जवसियं ।

तं समासओ चडव्विहं पणत्तं,

तं जहा-

दब्बओ खेत्ताओ कालओ भावओ

तस्य दब्बओ ण सम्मसुय एगं पुरिसं पडुच्च-

साइयं सपज्जवसियं,

ब्रह्मे पुरिसे यं पडुच्चं अणाइयं अपज्जवसियं ।

खेत्ताओ ण पचं भरहाइ, पचं एरवयाइं पडुच्च-

साइयं सपज्जवसियं,

पचं महाविदेहाइं पडुच्चं-अणाइयं अपज्जवसियं ।

कालओ ण उस्सप्पिणि ओसप्पिणिं च पडुच्च-

साइयं सपज्जवसियं,

नो उस्सप्पिणिं नो ओसप्पिणिं पडुच्च-

अणाइयं अपज्जवसियं ।

भावओ णं जे जया जिणपणत्ता भावा

आघविज्जति, पण्णविज्जति, परुविज्जति
दसिज्जति, निदसिज्जति, उवदंसिज्जति

तथा ते भावे पडुच्च साइय सपज्जवसिय,
खाओवसमिय पुण भावं पडुच्च अणाइय अपज्जवसियं ।

अहवा भवसिद्धिस्स सुय साइय सपज्जवसिय, च,
अभवसिद्धियस्स सुय अणाइयं अपज्जवसिय च ।
सब्बागासपएसगं सब्बागासपएसोहि
अणत्तगुणिय पज्जवक्खर निप्फज्जइ,
सब्बजीवाण पि य णं—
अक्खरस्स अणत्तभागो निच्चुग्घाडिओ चिट्ठइ ।
जइ पुण सो वि आवरिज्जा तेण जीवो अजीवत्तं पावेज्जा
'सुट्ठवि मेहसमुदए, होइ पभा चवसूराणं'—
से तं साइयं सपज्जवसिय ।
से तं अणाइय अपज्जवसिय ।

सुत्तं ४३ (११) से कि त गमिय ?
गमियं दिट्ठिवाओ ।

(१२) से कि तं अगमियं ?
अगमियं कालियं सुयं ।

से तं गमिय, से ता अगमियं ।

अहवा तं समासओ दुविह पणत्त,

तं जहा—

(१३-१४) १ अगपविट्ठ २ अगबाहिर च ।

से किं त अगबाहिरं ?

अगबाहिरं दुविहं पणत्त,

त जहा—

१ आवसय च २ आवस्सयवइरित्तं, च ।

(१) से किं ता आवस्सय ?

आवस्सय छविह पणत्तं,

तं जहा—

१ सामाइय २ चउवीसत्थओ ३ ववणयं

४ पडिक्कमणं ५ काउस्सगो ६ पच्चवक्खाणं ।

से तं आवस्सय ।

(२) से किं तं आवस्सयवइरित्तं ?

आवस्सयवइरित्तं दुविह पणत्त,

तं जहा—

१ कालियं च, २ उक्कालियं च ।

से किं तं उक्कालियं ?

उक्कालियं अणेगविहं पण्णत्तं,

त जहा—

दसवेआलियं^१, कप्पियाकप्पियं^२,

चुल्लकप्पसुयं^३ महाकप्पसुयं^४

उववाइयं^५ रायपसेणियं^६ जीवामिगमो,^७

पण्णवणा^८, महापण्णवणा^९, पमायप्पयायं^{१०},

नदी^{११}, अणुमोगदाराइं^{१२}, देविदत्थओ^{१३},

तंदुलवेयालियं^{१४}, चंदाविज्जय^{१५}, सूरपण्णत्ती^{१६},

पोरिसिमंडलं^{१७}, मंडलपवेसो^{१८}, विज्जाचरणविणिच्छओ^{१९},

गणिविज्जा^{२०}, झाणविमत्ती^{२१}, मरणविमत्ती^{२२},

आयविसोही^{२३}, वीयरगसुयं^{२४}, संलेहणासुयं^{२५},

विहारकप्पो^{२६}, चरणविही^{२७}, आउरपच्चवखाणं^{२८},

महापच्चवखाणं^{२९} एवमाइ ।

से तं उक्कालिय ।

से कि तं कालियं ?

कालियं अणेगविहं पण्णत्तं,

तं जहा—

उत्तरज्झयणाइं^१, दसाओ^२, कप्पो^३, वणहारो^४,

निसीह^५, महानिसीह^६, इसिमासियाइ^७,
 जंबूदीवपणत्ती^८, दीवसागरपणत्ती^९, चवपणत्ती^{१०},
 खुडिडयाविमाणविभत्ती^{११}, महल्लियाविमाणविभत्ती^{१२},
 अंगचूलिया^{१३} वग्गचूलिया^{१४}, विवाहचूलिया^{१५},
 अरुणोववाए^{१६}, वरुणोववाए^{१७}, गरुलोववाए^{१८},
 धरणोववाए^{१९}, वेसमणोववाए^{२०},
 बेलधरोववाए^{२१}, देवोववाए^{२२},
 उट्ठाणसुयं^{२३} समुट्ठाणसुयं^{२४},
 नागपरियावणियाओ^{२५}, निरयावलियाओ^{२६},
 कप्पियाओ^{२७}, कप्पवडंसियाओ^{२८},
 पुप्फियाओ^{२९}, पुप्फिचूलियाओ^{३०}, वण्हीदसाओ^{३१},
 आसीविस-भावणाणं^३, दिट्ठिविस-भाविणाणं^३,
 सुमिण-भावणाणं^३, महासुमिण-भावणाणं^३
 तेयग्गी निसग्गाणं^५

एवमाइयाइं चउरासीइ पदभगसहस्साइं—

भगवओ अरहओ उसहसामिस्स आइतित्थयरस्स ।

तहा सखिज्जाइं पडिन्नगसहस्साइं—भज्जिमगाणं जिणवराणं ।

चोदसपन्नगसहस्साइं भगवओ बद्धमाणसामिस्स,

अहवा जस्स जत्तिया सीसा

उप्पत्तिआए, वेणइयाइ, कम्मयाए, पारिणामियाए

अउव्विहाए बुद्धीए उववेघा,

तस्स तत्तियाइं पइण्णगसहस्साइं ।

पत्तेअबुद्धा वि तत्तिया चेव ।

से तं कालिय । से तं आवस्सयवइरितं ।

से तं अणंगपविट्ठं ।

सुत्तं ४४ से किं तं अंगपविट्ठं ?

अंगपविट्ठं दुवालविहं पण्णत्तं

तं अहा—

१ आयारो २ सूयगडो ३ ठाण

४ समवाओ ५ विवाहपन्नती ६ जायाधम्मकहाओ

७ उवासगदसाओ ८ अंतगडदसाओ ९ अणुत्तरोववाइयदसाओ

१० पण्हावागरणाइं ११ विवागसुयं १२ दिट्ठवाओ ।

सुत्तं ४५ से किं तं आयारे ?

आयारे णं समणाणं निगंथाणं

आयार-नोयर-विणय-वेणइय-सिक्खा—

भासा-अभासा-चरण-करण-जाया-माया—

वित्तिओ आघविज्जति ।

से समासओ पंचविहे पणत्ते,

तं जहा—

१ नाणायारे, २ दसणायारे, ३ चरित्तायारे,

४ तवायारे, ५ वीरियायारे ।

आयारे णं परित्ता वायणा,

संखेज्जा सिलोगा, सखिज्जा वेढा,

संखेज्जा अणुभोगदारा, सखिज्जाओ निज्जुत्तीओ

संखिज्जाओ पडिवत्तीओ,

से णं अंगट्ठयाए पढमे अंगे,

दो सुयक्खखधा, पणवीसं अज्झयणा,

पंचासीई उद्देसणकाला, पचासीई समुद्देसणकाला,

अट्ठारसपयसहस्साईं पयग्गेण,

संखिज्जा अक्खरा, अणत्तागमा, अणंता पज्जवा,

परित्ता तसा, अणता थावरा,

सासय-कड-निबद्ध-निकाइया, जिणपणत्ता भावा

आघविज्जति, पसविज्जंति, परुविज्जंति

दसिज्जंति, निदंसिज्जति, उवदंसिज्जति ।

से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया

एवं चरण-करण-परुवणा आघविज्जइ ।

से सं आयारे ।

सुत्तं ४६ से किं तं सूयगडे ?

सूयगडे ण लोए सूइज्जइ, अलोए सूइज्जइ,

लोयालोए सूइज्जइ,

जीवा सूइज्जंति, अजीवा सूइज्जंति, जीवाजीवा सूइज्जंति

ससमए सूइज्जइ, परसमइ सूइज्जइ, ससमय-परसमए सूइज्जइ

सूयगडे ण असीयस्स किरियावाइसयस्स,

चउरासीइए अकिरियावाईणं

सत्तट्ठीए अण्णाणिआवाईणं—

बत्तीसाए वेणइज्ज—वाइण—

तिण्हं तेसट्ठाण पासडियसयाण

बूहं किच्चा ससमए ठाविज्जइ ।

सूयगडेण परिस्ता वायणा,

सखिज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा,

सखेज्जा सिलोगा, सखिज्जाओ-निजुत्तीओ,

(संखिज्जाओ संगहणीओ) संखिज्जाओ पडिबत्तीओ ।

से णं अंगट्ठयाए बिइए अंगे,

दो सुयक्खंधा, तेवीसं अज्झयणा,

तेत्तीसं उद्देसणकाला, तेत्तीसं समुद्देसणकाला,

छत्तीसं पयसहस्साणि पयग्गेणं,

संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ,
संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ ।

से णं अंगट्ठयाए तईए अंगे,
एगे सुयक्खंधे, वस अज्झयणा,
एगवीसं उद्देसणकाला, एगवीसं समुद्देसणकाला,
बावत्तरि पयसहस्साइं पयग्गेणं,
संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा,
परित्ता तसा, अणंता थावरा,
सासय-कड-निबद्ध-निकाइया जिणपण्णत्ता भावा
आधविज्जंति, पण्णविज्जंति, परुविज्जंति
दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति ।
से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया
एवं चरण-करण-परुवणा आधविज्जइ ।
से त्तं ठाणे ।

सुत्तं ४८ से किं तं समवाए ?

समवाए णं जीवा समासिज्जंति, अजीवा समासिज्जंति,
जीवाजीवा समासिज्जंति ।

ससमए समासिज्जइ, परसमए समासिज्जइ, ससमय-
परसमए समासिज्जइ ।

लोए समासिज्जइ, अलोए समासिज्जइ, लोयालोए
समासिज्जइ ।

समवाए णं एगाइयाण एगुत्तरियाणं—

ठाणसय-विबड्ढयाण भावाण परुवणा आघविज्जइ ।

दुवालसविहस्स य गणिपिडगस्स पल्लवग्गे समासिज्जइ ।

समवायस्सणं परित्ता वायणा,

संखिज्जा अणुभोगदारा, संखिज्जा वेढा

संखिज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ,

सखिज्जाओ संगहणीओ, सखिज्जाओ पडिवत्तीओ ।

से णं अंगट्टयाए चउत्ये अंगे—

एगे सुयक्खंधे, एगे अज्झयणे,

एगे उद्देसणकाले, एगे समुद्देसणकाले,

एगे चोयाले पय-सयसहस्से पयग्गेणं,

संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा,

परित्ता तसा, अणंता थावरा

सासय-कड-निवद्ध-निकाइया जिणपणत्ता भावा

आघविज्जंति, पणविज्जंति, परुविज्जंति

दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति ।

से एवं आया, एव नाया, एवं विण्णाया,

एवं चरण-करण-परुवणा आघविज्जइ ।

से तं समवाए ।

सुत्तं ४९ से किं तं विवाहे ?

विवाहे णं जीवा विआहिज्जंति, अजीवा विआहिज्जति,
जीवाजीवा विआहिज्जंति,

ससमए विआहिज्जइ, परसमए विआहिज्जइ, ससमय-
परसमए विआहिज्जइ,

लोए विआहिज्जइ, अलोए विआहिज्जइ, लोयालोए
विआहिज्जइ,

विवाहस्स णं परिस्ता वायणा,
संखिज्जा अणुभोगदारा, संखिज्जा वेढा ।

संखिज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ,
संखिज्जाओ संगहणीओ संखिज्जाओ पडिबस्तीओ ।

ते णं अंगट्ठयाए पंचमे अंगे- -

एगे सुयक्खंधे, एगे साइरेगे अज्झयणसए,
वस उद्देसगसहस्साइं, वससमुद्देसगसहस्साइं,
छत्तीसं वागरण-सहस्साइं,

दो लक्खा अट्ठासीइं पयसहस्साइं पयग्गेणं,
संखिज्जा अक्खरा, अणता गमा, अणता पज्जवा,
परिस्ता तसा, अणता थावरा,

सासय-कड-निबद्ध-निकाइया जिणपणत्ता भाधा
व्याघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परुविज्जति,

दमिज्जनि, निदंमिज्जति, उयदमिज्जनि ।
 मे एव आया, एव नाया एव विष्णाया,
 एव चरण-वरण-यत्तजा आयधिज्जत्त ।
 मे सं विवाहे ।

सुत्त ५० मे किं त नायाधम्मकहाओ ?

नायाधम्मकहासु ण-

नायाण नगराद्, उज्जानाद्, चेद्वयाद्, यणमडाद्, ममोमग्गाद्,
 रायाणो, अम्मापियरो,
 धम्मारिया, धम्मकहाओ इहोदयपरतोदया इहिद्विमेगा,
 भोगपरिच्छाया, पटग्गजाओ, परिआया,
 सुयपरिग्गहा तथोयहाणाद्, मनेहणाओ,
 भत्तपच्चवग्गणाद् पाओवगमणाद्, देवरोमगमणाद्,
 मुकुलपत्त्वाद्याओ, पुणवोहिनाभा, अन्नविद्याओ
 य आयधिज्जति ।

इमं धम्मकहाणं यणा,
 तस्य णं एगमेगाए धम्मकहाए पत्तं पत्तं अक्खयादियमयाद्,
 एगमेगाए अक्खयादियाए पत्तं पत्तं उयवग्गद्वयानयाद्
 एगमेगाए उयवग्गद्वयाए पत्तं पत्तं अक्खयाद्वयवक्खयाद्वयानयाद्,
 एवमेव तपुस्सायरेण अट्टट्ठाओ वत्ताणवोहोओ-
 हएनिं ति तमवगायं ।
 नायाधम्मकहाणं परिणा वयणा

संखिज्जा अणुओगदारा, संखिज्जा वेढा,
 संखिज्जा सिलोगा संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ,
 संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ ।
 से णं अगट्ठयाए छट्ठे अंगे—

दो सुयत्तखगघा
 एगूणवीसं अज्झयणा,
 एगूणवीसं उद्देसणकाला,
 एगूणवीसं समुद्देसणकाला,
 संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयसोण,
 संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा,
 परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासय-कड-निबद्ध-निकाइया
 . जिणपणत्ता भावा—

आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परुविज्जंति,
 दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति ।
 से एव नाया, एवं नाया एवं विण्णाया,
 एव चरण-करण-परुवणा आघविज्जइ ।
 से त नायाधम्मकहाओ ।

सुत्तं ५१ से किं तं उवासगदसाओ ?

उवासगदसासु णं समणोवासयाणं—
 नगराइं, उज्जाणाइं, चेइयाइं, वणसंडाइं, समोसरणाइं,

आधविज्जंति, पन्नविज्जंति, परुविज्जंति
 दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति ।
 से एवं आया, एव नाया, एवं विण्णाया
 एवं चरण-करण-परुवणा आधविज्जइ ।
 से तं उवासगदसाओ ।

सुत्तं ५२ से किं तं अंतगडदसाओ ?

अंतगडदसासु णं अंतगडाणं-

नगराई, उज्जाणाई, चेइयाई, वणसंडाई, समोसरणाई
 रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ,
 इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा,
 भोगपरिच्चाया, पच्चज्जाओ, परिआया,
 सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाई, संलेहणाओ,
 भत्तपच्चक्खाणाई, पाओवगमणाई,
 अतकिरियाओ य आधविज्जति ।

अंतगडदसासु णं परिस्ता वायणा,

संखिज्जा अणुभोगदारा, संखेज्जा वेढा,

संखिज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निजुत्तीओ,

सखिज्जाओ संगहणीओ संखिज्जाओ पडिवसीओ ।

से णं अंगट्टयाए अट्टमे अंगे-

एगे सुयक्खंघे, अट्ठ वग्गा,
 अट्ठ उट्ठेसणकाला, अट्ठ समुट्ठेसणकाला,
 संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेण,
 सखिज्जा अक्खरा, अणता गमा, अणंता पज्जवा,
 परित्ता तसा, अणता थावरा,
 सासय-कड-निवद्ध-निकाइया जिणपणत्ता भावा
 आघविज्जति, पणविज्जति, परुविज्जति,
 वसिज्जति, निदसिज्जति, उवदसिज्जति ।
 से एव आया, एवं नाया, एवं विण्णया,
 एव चरण-करण-परुवणा आघविज्जइ ।
 से तं अतगडदसाओ ।

सुत्तं ५३ से किं त अणुत्तरोववाइगदसाओ ?

अणुत्तरोववाइयदसासु णं अणुत्तरोववाइयाण-
 नगराइ, उज्जाणाइ, चेइयाइ, वणसंडाइं, समोसरणाइं,
 रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ,
 इह लोइयपरलोइया इड्ढियिसेसा,
 भोगपरिच्चागा, पच्चज्जाओ, परिआया,
 सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइ, पडिमाओ,
 उवसग्गा, सल्लेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइं, पाओवगमणाइं,
 अणुत्तरोववाइयस्से उववत्ती सुकुलपच्चायाइओ,

पुणबोहिलाभा, अंतकिरियाओ य आघविज्जंति ।

अणुत्तरोववाइयदसासु णं परित्ता वायणा,
संखेज्जा अणुभोगदारा, संखेज्जा वेढा,
संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ,
संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ ।

से णं अंगट्ठयाए नवमे अंगे,
एगे सुयक्खंधे, तिसि वग्गा,
तिसि उद्देसणकाला, तिसि समुद्देसणकाला,
संखेज्जाइं पयसहस्साइ पयग्गेणं,
संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा,
परित्ता तसा, अणंता थावरा,

सासय-कड-निबद्ध-निकाइया जिणपण्णत्ता भावा
आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति
दंसिज्जंति, निदसिज्जंति, उवदसिज्जंति ।

से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णया
एवं चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ ।
से तं अणुत्तरोववाइयदसाओ ।

सुत्तं ५४ से किं तं पण्हावागरणाइं ?

पण्हावागरणेसु ण अट्ठुत्तरं पसिणसयं,
अट्ठुत्तरं अपसिणसयं

अदृगुत्तार पसिणापसिणसय,
तं जहा—

अगुदुपसिणाइ, बाहुपसिणाइ, अद्वागपसिणाइ
अत्ते वि विचिरा विज्जाइसया,
नागसुवण्णेहिं सद्धि दिन्वा संवाया आघविज्जति ।
पण्हावागरणाणं परित्ता घायणा,
सखिज्जा अणुओगदारा, सखिज्जा वेढा,
सखिज्जा सिलोगा, सखिज्जाओ निज्जुत्तीओ,
सखिज्जाओ सगहणीओ, सखिज्जाओ पडिबत्तीओ ।
से णं अंगद्वयाए वसमे अंगे,
एगे सुयक्खंघे, पणयालीसं अज्जयणा,
पणयालीसं उद्देसणकाला, पणयालीसं समुद्देसणकाला,
संखेज्जाइं पयसहुस्ताइ पयग्गेण,
संखेज्जा अक्खथा, अणंता गमा, अणता पज्जवा,
परित्ता तसा, अणंता थावरा
सासय-कड-निबद्ध-निकाइया जिणपण्णत्ता भावा
आघविज्जति, पण्णविज्जंति, परुविज्जंति
दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदसिज्जंति ।
से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया,
एवं चरण-करण-परुवणा आघविज्जइ ।
से सं पण्हावागरणाइं ।

सुत्तं ५५ से किं तं विवागसुयं ?

विवागसुए णं सुकड्ढक्कडाण कम्माण-

फलविवागे आघविज्जइ ।

तत्थ णं दसं बुह-विवागा, दस सुह-विवागा ।

से किं तं बुह-विवागा ?

बुह-विवागेषु णं बुहविवागाण-

नगराइं, उज्जाणाइं, वणसंडाइं, चेइयाइं, समोसरणाइं

रायाणो, अस्मापियरो, धस्मायरिया, धम्मकहाओ,

इहलोइय-परलोइया इड्ढिविसेसा,

निरयगमणाइं, संसारभव-पवचा, दुहपरपराओ,

दुक्कुलपच्चायाइओ, दुल्लहवोहियत्तं आघविज्जइ ।

से तं बुहविवागा ।

से किं तं सुहविवागा ?

सुहविवागेषु णं सुह-विवागाण

नगराइं, उज्जाणाइं वणसंडाइं चेइयाइं, समोसरणाइं,

रायाणो, अस्मापियरो, धस्मायरिया, धम्मकहाओ,

इहलोइय-परलोइया इड्ढिविसेसा,

भोगपरिच्चाया, पव्वज्जाओ, परिआया, सुयपरिग्गहा,

तवोवहाणाइं, सलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइं, पाओवगमणाइं

देवलोगमणाइं, सुहपरंपराओ, सुकुलपच्चायाइओ,

पुणवोहिलाभा, अंतकिरियाओ य आघविज्जंति ।

सेत्तं सुहविवागा ।

विवागसुयस्स णं परित्ता वायणा,
 सखिज्जा अणुभोगदारा, सखिज्जा वेढा,
 सखिज्जा सिलोगा, सखिज्जाओ निज्जुत्तीओ,
 सखिज्जाओ सगहणीओ, सखिज्जाओ पडिवत्तीओ ।
 से ण अंगट्ठयाए इक्कारसमे अगे,
 दो सुयक्खधा बीस अज्झयणा,
 बीसं उद्देसणकाला, बीस समुद्देसणकाला,
 सखेज्जाइ पयसहस्ताइ पयग्गेण,
 सखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा,
 परित्ता तसा, अणता थावरा,
 सासय-कड-निबद्ध-निकाइया जिणपण्णत्ता भावा
 आघविज्जति, पण्णविज्जंति, परुविज्जंति,
 दसिज्जति, निदंसिज्जति, उवदंसिज्जंति ।
 से एव आया, एव नाया, एवं विण्णाया,
 एवं चरण-करण-परुवणा आघविज्जइ ।
 से तं विवागसुयं ।

सुत्त ५६ से किं त दिट्ठिवाए ?

दिट्ठिवाए ण सज्जभावपरुवणा आघविज्जइ ।
 से समासओ पच्चविहे पणत्ते,
 तं जहा—

१ परिकम्मे २ सुत्ताइ ३ पुज्जवाए ४ अणुभोगे, ५-चूलिया ।

से किं तं परिकम्मे ?

परिकम्मे सत्तविहे पणत्ते,

तं जहा—

- १ सिद्धसेणिया-परिकम्मे
- २ मणुस्ससेणिया-परिकम्मे
- ३ पुट्ठसेणिया-परिकम्मे
- ४ ओगाढसेणिया-परिकम्मे
- ५ उवसंपज्जणसेणिया परिकम्मे
- ६ विप्पजहणसेणिया-परिकम्मे
- ७ च्चुयाच्चुयसेणिया-परिकम्मे ।

से किं तं सिद्धसेणिया परिकम्मे ?

सिद्धसेणियापरिकम्मे चउट्ठसविहे पणत्ते,

तं जहा—

- १ माउगापयाइं २ एगाट्ठियपयाइं
- ३ अट्ठापयाइं ४ पाढो आगासपयाइं
- ५ केउमूयं ६ रासिबद्धं
- ७ एगगुणं ८ दुगुणं
- ९ तिगुणं १० केउमूयं
- ११ पडिग्गहो १२ संसार पडिग्गहो

१३ नंदावत्त १४ सिद्धावत्त ।

से त्तं सिद्ध-सेणिया-परिकम्मे । (१)

से किं तं मणुस्ससेणिया-परिकम्मे ?

मणुस्स-सेणिया-परिकम्मे चउद्दसविहे पणत्ते,

तं जहा—

१ माउगापयाइ २ एगद्वियपयाइं

३ अट्टापयाइं ४ पाढो आगासपयाइ

५ केउभूयं ६ रासिबद्धं

७ एगगुणं ८ दुगुणं

९ तिगुणं १० केउभूय

११ पडिग्गहो १२ संसार पडिग्गहो

१३ नंदावत्तं १४ मणुस्सावत्तं ।

से त्तं मणुस्ससेणिया-परिकम्मे । (२)

से किं तं पुट्टसेणियापरिकम्मे ?

पुट्टसेणिया-परिकम्मे इक्कारसविहे पणत्ते,

तं जहा—

१ पाढो आगासपयाइं २ केउभूयं

३ रासिबद्धं ४ एगगुणं

५ दुगुणं ६ तिगुणं

७ केउभूयं ८ पडिग्गहो

९ संसारपडिगहो १० नदावत्तं

११ पुद्दावत्तं ।

से त्तं पुद्दसेणियापरिकम्मे । (३)

से किं त्तं ओगाढसेणिया परिकम्मे ?

ओगाढसेणिया परिकम्मे इक्कारसविहे पणत्ते ।

त्तं जहा—

१ पाढोआगासपयाइं २ केउभूय

३ रासिबद्ध ४ एगगुण

५ वुगुणं ६ तिगुणं

७ केउभूयं ८ पडिगहो

९ संसारपडिगहो १० नंदावत्त

११ ओगाढावत्त ।

से त्तं ओगाढसेणिया-परिकम्मे ? (४)

से किं त्तं उवसपज्जणसेणिया-परिकम्मे ?

उवसपज्जणसेणिया-परिकम्मे इक्कारसविहे पणत्ते,

त्तं जहा—

१ पाढोआगासपयाइं २ केउभूयं

३ रासिबद्धं ४ एगगुणं

५ वुगुणं ६ तिगुणं

७ केउभूयं ८ पडिगहो

१ ससारपडिग्गहो १० नंदावत्तं

११ उवसपज्जणावत्तं ।

से त्त उवसपज्जणसेणिया-परिकम्मे । (५)

से किं त विप्पजहणसेणिया-परिकम्मे ?

विप्पजहणसेणिया-परिकम्मे इक्कारसविहे पण्णत्ते,

त्तं जहा—

१ पाढोभागासपयाइ २ केउभूय

३ रासिबद्धं ४ एगगुण

५ दुगुणं ६ तिगुणं

७ केउभूय ८ पडिग्गहो

९ ससारपडिग्गहो १० नंदावत्तं .

११ विप्पजहणावत्तं ।

से त्त विप्पजहणसेणिया परिकम्मे । (६)

से किं त चुयाचुयसेणिया परिकम्मे ?

चुयाचुयसेणिया-परिकम्मे इक्कारसविहे पण्णत्ते,

त्तं जहा—

१ पाढोभागासपयाइ २ केउभूयं

३ रासिबद्धं ४ एगगुणं

५ दुगुणं ६ तिगुणं

७ केउभूयं ८ पडिग्गहो

९ संसारपडिग्गहो १० नंदावत्त

११ द्रुयाचुयवत्तं ।

से त्तं द्रुयाचुयसेणिया-परिकम्मे । (७)

छ-चउक्क नइयाइं, सत्ता तेशसियाइं,
से त्तं परिकम्मे ।

से किं त्तं सुत्ताइं ?

सुत्ताइं बावीसं पण्णत्ताइ,
त्तं जहा-

१ उज्जुसुयं २ परिणयापरिणय ३ बहुभंगियं

४ विजयचरियं ५ अणंतरं ६ परंपरं

७ मासाणं ८ संजूहं ९ संभिण्णं

१० आहुव्वायं ११ सोवत्थियावत्तं १२ नंदावत्तं

१३ बहुलं १४ पुट्ठापुट्ठं १५ वियावत्तं

१६ एवंभूय १७ द्रुयावत्तं १८ वत्तमाणपय

१९ समभिरुद्धं २० सव्वओमहं २१ पण्णासं

२२ दुप्पडिग्गहं ।

इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं छिन्न-छेयनइयाणि-

ससमयसुत्तपरिवाडीए ।

इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं अछिन्नछेयनइयाणि-

आजीवियसुत्तापरिवाडीए ।

इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं तिगणइयाणि-

तेरासियसुत्तापरिवाडीए ।

इच्चेइयाइ बावीसं सुत्ताइ चउक्कनइयाणि-

ससमयसुत्तापरिवाडीए ।

एवामेव सपुब्बावरेण अट्ठासीइ सुत्ताइ भवति त्ति मक्खायं ।

से सं सुत्ताइं ।

से किं तं पुब्बगए ?

पुब्बगए चउद्दसविहे पण्णत्ते,

तं जहा-

१ उप्पायपुब्बं २ अग्गाणीयं

३ वीरियं

४ अत्थिनत्थि-प्पवायं

५ नाण-प्पवायं

६ सच्चप्पवायं

७ आय-प्पवायं

८ कम्म-प्पवायं

९ पच्चक्खण-प्पवाय १० विज्जाणु-प्पवायं

११ अवज्ञं

१२ पाणाऊ

१३ किरियाविसाल १४ लोकाविदुसारं ।

१ उप्पायपुब्बस्स णं दसवत्थू, चत्तारि चूलियावत्थू पण्णत्ता,

२ अग्गाणीयपुब्बस्स णं चोद्दसवत्थू, दुवालसचूलियावत्थू पण्णत्ता,

- ३ वीरियपुब्बस्स णं अट्ठवत्थू, अट्ठ चूलियावत्थू पण्णत्ता,
 ४ अत्थि-नत्थिप्पवायपुब्बस्स णं अट्ठारस वत्थू,
 दसचूलियावत्थू पण्णत्ता,
 ५ नाणप्पवायपुब्बस्स णं बारस वत्थू पण्णत्ता,
 ६ सच्चप्पवायपुब्बस्स णं दोण्णि वत्थू पण्णत्ता,
 ७ आर्यप्पवायपुब्बस्स णं सोलस वत्थू पण्णत्ता,
 ८ कम्मप्पवायपुब्बस्स ण तीसं वत्थू पण्णत्ता,
 ९ पच्चक्खणपुब्बस्स णं वीस वत्थू पण्णत्ता,
 १० विज्जाणुप्पवायपुब्बस्स णं पन्नरस वत्थू पण्णत्ता,
 ११ अवंग्गपुब्बस्स ण बारस वत्थू पण्णत्ता,
 १२ पाणाळपुब्बस्स ण तेरस वत्थू पण्णत्ता,
 १३ किरियाविसालपुब्बस्स ण तीसं वत्थू पण्णत्ता,
 १४ लोकविंदुसारपुब्बस्स णं पणवीसं वत्थू पण्णत्ता,

गाहाओ-

दस^१-चोद्दस^२-अट्ठ^३-अट्ठारसेव^४-बारस^५-दुवे^६ य वत्थूणि ।
 सोलस^७-तीसा^८-वीसा^९-पन्नरस^{१०} अणुप्पवायंमि ॥१॥
 बारस-इक्कारसमे,^{११} बारसमे^{१२} तेरसेव वत्थूणि ।
 तीसा पुण तेरसमे^{१३}, चोद्दसमे^{१४} पण्णवीसाओ ॥२॥

चत्तारि-दुवालस-अट्ठ चेव, दस चेव चुल्लवत्थूणि ।
आइल्लाण-चउण्ह, सेसाणं चूलिया नत्थि ॥३॥
से तं पुव्वगए ।

से किं तं अणुओगे ?
अणुओगे दुविहे पणत्ते,
तं जहा—

१ मूलपढमाणुओगे, २ गंडियाणुओगे य ।

से किं तं मूलपढमाणुओगे ?

मूलपढमाणुओगे णं अरहंताणं भगवंताणं—

पुव्वभवा, देवलोगगमणाई, आउं, चवणाई,

जम्मणाणि, अभिसेया, रायवरसिरीओ,

पव्वज्जाओ, तवा य उत्ता,

केवलनाणुप्पयाओ, तित्थ पवत्तणाणि य,

सीसा, गणा, गणहरा, अज्जा, पवत्तिणीओ,

संघस्स चउव्विहस्स जं च परिमाणं,

जिण-मणपज्जव-ओहिनाणी,

सम्मत्तसुयनाणिणो य, वाई,

अणुत्तरगई य, उत्तरवेउव्विणो य मुणिणो,

जत्तिया सिद्धा, सिद्धिपहो जहा देसिओ,

जच्चिरं च कालं, पाओवगया—

जोहि जत्तियाइं मत्ताइं अणसणाए छेइत्ता अंतगडे,
 मुणिवरुत्तामे तिमिरओघविप्पमुक्के, मुखसुहमणुत्तरं च पत्ते,
 एवमन्ने य एवमाइभावा मूलपढमाणुओगे कहिया ।
 से तं मूलपढमाणुओगे ।

से किं तं गंडियाणुओगे ?

गंडियाणुओगे-कुलगरगंडियाओ, तित्थयरगंडियाओ,
 चक्कवट्टिगंडियाओ, वासुदेवगंडियाओ,
 गणघरगंडियाओ, मह्वाहुगंडियाओ,
 तवोकम्मगंडियाओ, हरिवंसगंडियाओ,
 उस्सप्पिणीगंडियाओ जित्तंतरगंडियाओ,
 ओसप्पिणीगंडियाओ,

अमर-नर-तिरिय-निरय गइ-गमण-विबिह-
 परियट्टणाणुओगेसु एवमाइयाओ गंडियाओ
 आघविज्जंति, ।

से तं गंडियाणुओगे ।

से तं अणुओगे ।

से किं तं चूलियाओ ?

चूलियाओ-आइल्लाणं चउण्हं पुष्वाणं चूलिआ,
 सेसाइं पुष्वाइं अचूलियाइं ।
 से तं चूलियाओ ।

दिट्ठिपवायस्स ण परित्ता द्वायणा,
 संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा,
 संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ,
 संखेज्जाओ सगहणीओ, संखेज्जाओ पडिबत्तीओ ।
 से ण अंगट्ठयाए चारसमे अंगे,
 एगे सुयक्खंधे चोद्दसपुब्बाइ,
 संखेज्जा वत्थू, संखेज्जा चूलवत्थू,
 संखेज्जा पाहुडा, संखेज्जा पाहुडपाहुडा,
 संखेज्जाओ पाहुडियाओ, संखेज्जाओ पाहुडपाहुडियाओ,
 संखेज्जाइं पयसहस्साइ पयग्गेणं,
 संखिज्जा अक्खरा, अणता गमा, अणता पज्जधा,
 परित्ता तसा, अणता थावरा,
 सासय-कड-निबद्ध-निकाइया, जिणपण्णत्ता भावा
 आघविज्जति, पण्णविज्जति, परुविज्जति,
 वंसिज्जति, निवसिज्जति, उववंसिज्जति ।
 से एव आया, एव नाया, एवं विण्णाया,
 एवं चरण-करण-परुवणा आघविज्जइ ।
 से तं दिट्ठिवाए ।

सुत्तं ५७ इच्चेइयस्मि दुवालसंगे गणिपिड्ढे

अणंता भावा, अणंता अभावा,

अणंता हेऊ, अणंता अहेऊ,
 अणंता कारणा, अणंता अकारणा,
 अणंता जीवा, अणंता अजीवा,
 अणंता भवसिद्धिआ, अणंता अभवसिद्धिआ,
 अणंता सिद्धा, अणंता असिद्धा पणत्ता ।

गाहा- भावमभावा हेऊमहेऊ, कारणमकारणे चेव ।
 जीवाजीवामविय-मभविया सिद्धा असिद्धा य ॥१॥

इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं-

तीए काले अणंता जीवा अणाए विराहिता-
 चाउरंतं संसार कंतारं अणुपरियट्टिसु ।

इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं-

पडुप्पणकाले परित्ता जीवा आणाए विराहिता-
 चाउरंतं संसार कंतारं अणुपरियट्टंति ।

इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं-

अणागए काले अणंता जीवा आणाए विराहिता-
 चाउरंतं संसार-कंतारं अणुपरियट्टिस्संति ।

इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं-

तीए काले अणंता जीवा आणाए आराहिता .
 चाउरंतं संसार-कंतारं वीईवइंसु ।

इच्छेद्दयं दुवालसंगं गणिपिडगं—

पटुप्पण्णकाले परिता जीवा आणाए आराहिता—
चाउरंतं संसार-कतारं बीईवर्यति—

इच्छेद्दयं दुवालसंगं गणिपिडगं—

अणागए काले अणता जीवा आणाए आराहिता—
चाउरंतं संसार-कतारं बीईवइत्सति ।

इच्छेद्दयं दुवालसंगं गणिपिडगं—

न कयाइ नासी,
न कयाइ न भवइ,
न कयाइ न भविस्सइ,

भुवि च, भवइ य, भविस्सइ य,
धुवे, नियए, सासए,
अक्खए, अन्वए, अवट्ठिए, निच्चे ।
से जहा नामए पच्च अत्थिकाया—

न कयाइ नासी,
न कयाइ नरिय,
न कयाइ न भविस्सइ,

भुवि च, भवइ य, भविस्सइ य,
धुवा, नियया, सासया,

अक्खया, अव्वया, अवट्ठिया, निच्चा,
एवामेव दुवालसग गणिपिडगं—

न कयाइ नासी,
न कयाइ नत्थि,
न कयाइ न भविस्सइ,

भुवि च, भवइ य भविस्सइ य,
धुवे, नियए, सासए,
अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, निच्चे ।
से समासओ चउव्विहे पणत्ते,
तं जहा—

दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ ।
तत्थ दव्वओ ण सुयणाणी उवउत्ते—
सत्त्वदव्वाइं जाणइ पासइ ।

खित्तओ णं सुयणाणी उवउत्ते—
सत्त्व खेत्तं जाणइ पासई

कालओ णं सुयणाणी उवउत्ते—
सत्त्वं कालं जाणइ पासइ ।

भावओ ण सुयणाणी उवउत्ते—
सत्त्वे भावे जाणइ पासइ ।

गाहाओ— अक्खर सन्नी सम्मं, साइय खलु सपज्जवसियं च ।
 गमियं अंगपविट्ठं, सत्तं वि एए सपडिक्खत्ता ॥१॥
 आगमसत्थगगहणं, ज बुद्धिगुणेहि अट्ठहिं विट्ठं ।
 ब्रित्तिं सुयनाणत्तं, तं पुब्बविसारया धीरा ॥२॥
 सुत्सुसइ पडिपुच्छइ, सुणेइ गिण्हइ य ईहए यावि ।
 तत्तो अपोहए वा, धारेइ करेइ न सम्म ॥३॥
 मूअं ठुकार वा, वाढक्कार पडिपुच्छ वीमसा ।
 तत्तो पसगपारायण, च परिणिट्ठ सत्तमए ॥४॥
 सुत्तत्थो खलु पढमो, वीओ निज्जुत्तिमीसिओ मणिओ ।
 तइओ य निरवसेसो, एस विही होइ अणुओगे ॥५॥
 सेत्तं अंगपविट्ठं । सेत्तं सुयनाणं ।
 सेत्तं परोक्खनाण । सेत्तं नाणं ।

॥ सेत्तं नंदी ॥

तत्त्वार्थसूत्र

तथा

स्तोत्रादि

मंगलाचरण

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिता, सिद्धाश्च सिद्धिस्तथाः ।
आचार्याः जिनशासनोन्नतिकरा पूज्या उपाध्यायकाः ॥
श्री सिद्धान्त सुपाठका मुनिवराः, रत्नत्रयाराधकाः ।
पंचंते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं, कुर्वन्तु नो मंगलम् ॥
वीरः सर्वं सुरा सुरेन्द्र महिता, वीरं बुधाः संश्रिताः ।
वीरेणाभिहत स्वकर्मनिचयो, वीराय नित्यं नमः ॥
वीरात्तीर्थ मिदं प्रवृत्तमतुलं, वीरस्य घोरंतपोः ।
वीरे श्री धृति कीर्ति कान्तिनिचयो, हे वीर भद्रं दिशः ॥
नाभेयादि जिनेश्वरा स्त्रिभुवने, ख्याता चतुर्विंशतिः ।
श्रीमन्तो भरतेश्वरप्रभृतयो, ये चक्रिणोद्वादशः ॥
ये विष्णु प्रतिविष्णु लांगलधरा सप्ताधिकविंशतिः ।
स्त्रोलोक्या भयदा त्रिषष्टिपुरुषा, कुर्वन्तु नो मंगलम् ॥
इन्द्राग्न्याशुगभूतयः समकुलाः व्यक्तः सुधर्मास्तथा ।
षष्ठोमंडितपुत्रको गणधरो, मौर्यात्मज सत्तम ॥
श्रेयो दृष्टिरकंपितो गुणमणिर्घोरोऽचलभ्रातृको ।
मैतार्यो दशम प्रभासगणभृत् कुर्वन्तु नो मंगलं ॥
ब्राह्मी चन्दन बालिका भगवती, राजीमतीव्रीपदी ।
कौशल्या च मृगावती च सुलसा, सीता सुभद्रा शिवाः
कुन्ती शीलवती नलस्य दयिता, चूला प्रभावत्यपि ।
पद्मादत्यपि सुन्दरी प्रतिदिनं, कुर्वन्तु नो मंगलम् ॥

तत्त्वार्थसूत्र

प्रथमोऽध्यायः

१. सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः ।
२. तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ।
३. तत्त्वसर्गादिधिगमाद्वा ।
४. जीवाजीवाश्ववन्धसवरनिर्जराभोक्षास्तत्त्वम् ।
५. नामस्थापनाद्व्यवभावतस्तन्यासः ।
६. प्रमाणनयैरधिगम ।
७. निर्देशस्वामित्वसाधनाऽधिकरणस्थितिविधानतः ।
८. सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालाऽन्तरभावाऽल्पबहुत्वैश्च ।
९. भक्तिश्रुताऽवधिगमनपर्यायकेवलानि ज्ञानम् ।
१०. तत् प्रमाणे ।
११. आद्ये परोक्षम् ।
१२. प्रत्यक्षमन्यत् ।
१३. भक्तिः स्मृतिः संज्ञा चिन्ताऽभिनिबोध इत्यनर्थान्तरम् ।
१४. तदिन्द्रियाऽनिन्द्रियनिमित्तम् ।
१५. अवग्रहेहावायधारणाः ।
१६. बहुबहुविधक्षिप्रानिश्चितासन्दिग्धप्रुवाणां सेतराणाम् ।
१७. अर्थस्य ।

१८. व्यञ्जनस्याऽवग्रहः ।
 १९. न चक्षुरनिन्द्रियाभ्याम् ।
 २०. श्रुतं मतिपूर्वं द्व्यनेकद्वादशभेदम् ।
 २१. द्विविधोऽवधिः ।
 २२. तत्र भवप्रत्ययो नारकदेवानाम् ।
 २३. यथोक्तनिमित्तः षड्विकल्पः शेषाणाम् ।
 २४. ऋजुविपुलमती मनःपर्यायः ।
 २५. विशुद्धचप्रतिपाताभ्यां तद्विशेषः ।
 २६. विशुद्धिक्षेत्रस्वामिविषयेभ्योऽवधिमनःपर्याययोः ।
 २७. मतिश्रुतयोनिबन्धः सर्वद्रव्येष्वसर्वपथिषु ।
 २८. रूपिष्ववधेः ।
 २९. तदनन्तभागे मनःपर्यायस्य ।
 ३०. सर्वद्रव्यपथिषु केवलस्य ।
 ३१. एकादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाक्षतुर्भ्यः ।
 ३२. मतिश्रुताऽवधयो विपर्ययश्च ।
 ३३. सदसतोरविशेषाद् यदृच्छोपलब्धेरन्मसवत् ।
 ३४. नैगमसंग्रहव्यवहारजु सूत्रशब्दा नयाः ।
 ३५. आद्यशब्दौ द्वित्रिभेदौ ।

द्वितीयोऽध्यायः

१. औपशमिकक्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्वतत्त्वमौदयिक-
पारिणामिकौ च ।
२. द्विनवाष्टादशैर्कावशतित्रिभेदा यथाक्रमम् ।
३. सम्यक्त्वचारित्रे ।
४. ज्ञानदर्शनदानलाभभोगोपभोगवीर्याणि च ।
५. ज्ञानाज्ञानदर्शनदानादिलब्धयश्चतुस्त्रिपञ्चभेदाः यथाक्रमं
सम्यक्त्वचारित्रसंयमासयमाश्च ।
६. गतिकषायलिंगमिथ्यादर्शनाऽज्ञानाऽसंयताऽसिद्धत्वलेश्याश्च-
तुश्चतुस्त्र्येकैकैकषड्भेदाः ।
७. जीवमव्याभव्यत्वादीनि च ।
८. उपयोगो लक्षणम् ।
९. स द्विविधोऽष्टचतुर्भेदः ।
१०. संसारिणो मुक्ताश्च ।
११. समनस्काऽमनस्काः ।
१२. संसारिणस्त्रसस्यावराः ।
१३. पृथिव्यम्बुवनस्पतयः स्थावराः ।
१४. तेजोवायू द्वीन्द्रियादयश्च असाः ।

-
१५. पञ्चेन्द्रियाणि ।
 १६. द्विविधानि ।
 १७. निर्वृत्युपकरणे द्रव्येन्द्रियम् ।
 १८. लब्ध्युपयोगौ भावेन्द्रियम् ।
 १९. उपयोगः स्पर्शादिषु ।
 २०. स्पर्शनरसनघ्राणचक्षुःश्रोत्राणि ।
 २१. स्पर्शरसगन्धवर्णशब्दास्तेषामर्थ्याः ।
 २२. श्रुतमनिन्द्रियस्य ।
 २३. वाय्वन्तानामेकम् ।
 २४. कृमिपिपीलिकाभ्रमरमनुष्यादीनामेकैकवृद्धानि ।
 २५. संज्ञिनः समनस्काः ।
 २६. विग्रहगतौ कर्मयोगः ।
 २७. अनुश्रेणि गतिः ।
 २८. अविग्रहा जीवस्य ।
 २९. विग्रहवती च संसारिणः प्राक् चतुर्भ्यः ।
 ३०. एकसमयोऽविग्रहः ।
 ३१. एकं द्वौ वाऽनाहारकः ।
 ३२. सम्मूर्च्छनगर्भोपपाता जन्म ।
 ३३. सचित्तशीतसंवृताः सेतरा मिश्राश्चैकशस्तद्योनयः ।

३४. जराव्यवृण्डपोतजानां गर्भः ।
 ३५. नारकदेवानामुपपातः ।
 ३६. शोषाणां सम्मूर्च्छनम् ।
 ३७. औदारिकवैक्रियाऽऽहारकतैजसकर्मणानि शरीराणि ।
 ३८. परं परं सूक्ष्मम् ।
 ३९. प्रदेशतोऽसंख्येयगुणं प्राक् तैजसात् ।
 ४०. अनन्तगुणे परे ।
 ४१. अप्रतिघाते ।
 ४२. अनादिसम्बन्धे च ।
 ४३. सर्वस्य ।
 ४४. तदादीनि भाज्यानि युगपदेकस्याचतुर्भ्यः ।
 ४५. निरुपभोगमन्त्यम् ।
 ४६. गर्भसम्मूर्च्छनजमाद्यम् ।
 ४७. वैक्रियमौपपातिकम् ।
 ४८. लब्धिप्रत्ययं च ।
 ४९. शुभं विशुद्धमव्याधाति चाहारक चतुर्दशपूर्वधरस्यैव ।
 ५०. नारकसम्मूर्च्छिनो नपुंसकानि ।
 ५१. न देवाः ।
 ५२. औपपातिकचरमदेहोत्तमपुरुषाऽसंख्येयवर्षायुषोऽनपवर्त्यायुषः ।

तृतीयोऽध्यायः

१. रत्नशर्करावाल्कापङ्ककधूमतमोमहातमःप्रभा भूमयो घना-
म्बुवाताकाशप्रतिष्ठाः सप्ताधोऽधः पृथुतराः ।
२. तासु नरकाः ।
३. नित्याशुभतरलेस्यापरिणामदेहवेदनाविज्ञियाः ।
४. परस्परोदीरितदुःखाः ।
५. संक्लिष्टासुरोदीरितदुःखाश्च प्राक् चतुर्थ्याः ।
६. तेष्वेकत्रिसप्तदशसप्तदशद्वाविंशतित्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाः
सत्त्वानां परा स्थितिः ।
७. जम्बूद्वीपलवणादयः शुभनामानो दीपसमुद्राः ।
८. द्विद्विविष्कम्भाः पूर्वपूर्वपरिक्षेपिणो बलयाकृतयः ।
९. तन्मध्ये मेरुनाभिर्वृत्तो योजनशतसहस्रविष्कम्भो जम्बूद्वीपः ।
१०. तत्र भरतहैमवतहरिविदेहरम्यकहैरण्यवतैरावतवर्षाः क्षेत्राणि ।
११. तद्विभाजिनः पूर्वापरायता हिमवन्महाहिमवन्निषधनीलरुक्मि-
शिखरिणो वर्षधरपर्वताः ।
१२. द्विर्घातकीखण्डे ।
१३. पुष्करार्धे च ।
१४. प्राङ्मानुषोत्तरान् मनुष्याः ।
१५. आर्या म्लेच्छाश्च ।
१६. भरतैरावतविदेहाः कर्मभूमयोऽन्यत्र देवकुरुत्तरकुरुम्यः ।
१७. नृस्थिती परापरे त्रिपत्योपमान्तर्मुहूर्ते ।
१८. तिर्यग्योनीनां च ।

चतुर्थोऽध्यायः

१. देवाश्चतुर्निकायाः ।
२. तृतीयः पीतलेश्यः ।
३. दशाष्टपंचद्वादशविकल्पाः कल्पोपपन्नपर्यन्ताः ।
४. इन्द्रसामानिकत्रायारित्रशपारिषद्यात्मरक्षलोकपालानीकप्रकीर्ण-
काभियोग्यकित्वविकाशचैकशः ।
५. त्रायस्त्रिशलोकपालवर्ज्या व्यन्तरज्योतिष्काः ।
६. पूर्वयोर्द्वौन्त्राः ।
७. पीतान्तलेश्याः ।
८. कायप्रवीचारा आ-ऐशानात् ।
९. शेषाः स्पर्शरूपशब्दमन प्रवीचारा द्वयोर्द्वयोः ।
१०. परेऽप्रवीचाराः ।
११. भवनवासिनोऽसुरनागविद्युत्सुपर्णाग्निवातस्तनितोदधिद्वीप-
दिक्कुमाराः ।
१२. व्यन्तराः किन्नरकिंपुरुषमहोरगगान्धर्वयक्षराक्षसभूतपिशाचाः ।
१३. ज्योतिष्काः सूर्याश्चन्द्रमसो ग्रहनक्षत्रप्रकीर्णतारकाश्च ।
१४. मेरुप्रदक्षिणा नित्यगतयो नृलोके ।
१५. तत्कृतः कालविभागः ।

१६. बहिरवस्थिताः ।
 १७. वैमानिकाः ।
 १८. कल्पोपपन्नाः कल्पातीताश्च ।
 १९. उपर्युपरि ।
 २०. सौधमैशानसानत्कुमारमाहेन्द्रब्रह्मलोकलान्तकमहाशुक्रसहस्रा-
 रेष्वाततप्राणतयोरारणाच्युतयोर्नवसु ग्रैवेयकेषु विजयवैज-
 यन्तजयन्ताऽपराजितेषु सर्वार्थसिद्धे च ।
 २१. स्थितिप्रभावसुखदुःखतिलेश्याविशुद्धीन्द्रियावधिविषयतोऽधिकाः ।
 २२. गतिशरीरपरिग्रहाभिमानतो हीनाः ।
 २३. पीतपद्मशुक्ललेश्या द्वित्रिशेषेषु ।
 २४. प्राग्ग्रैवेयकेभ्यः कल्पाः ।
 २५. ब्रह्मलोकालया लोकान्तिकाः ।
 २६. सारस्वतादित्यवह्मघरुणगर्दतोयतुषिताव्याबाधमरुतोऽरिष्टावपि ।
 २७. विजयादिषु द्विचरमाः ।
 २८. औपपातिकमनुष्येभ्यः शेषारितर्यग्योनयः ।
 २९. स्थितिः ।
 ३०. भवनेषु दक्षिणार्धाधिपतीनां पत्योपममध्यर्धम् ।
 ३१. शेषाणां पादोने ।
 ३२. असुरेन्द्रयोः सागरोपममधिकं च ।
 ३३. सौधर्मादिषु यथाक्रमम् ।
 ३४. सागरोपमे ।

३५. अधिके च ।
 ३६. सप्त सानत्कुमारे ।
 ३७. विशेषत्रिसप्तदशकादशत्रयोदशपञ्चदशभिरधिकानि च ।
 ३८. आरणाच्युताद्ब्रह्मेकैकेन नवसु ग्रंथेषु विजयादिषु
 सर्वार्थसिद्धे च ।
 ३९. अपरा पत्न्योपममधिकं च ।
 ४०. सागरोपमे ।
 ४१. अधिके च ।
 ४२. परतः परतः पूर्वा पूर्वाजनन्तरा ।
 ४३. नारकाणां च द्वितीयादिषु ।
 ४४. दशवर्षसहस्राणि प्रथमायाम् ।
 ४५. भवनेषु च ।
 ४६. व्यन्तराणां च ।
 ४७. परा पत्न्योपमम् ।
 ४८. ज्योतिष्काणामधिकम् ।
 ४९. ग्रहाणामेकम् ।
 ५०. नक्षत्राणामर्धम् ।
 ५१. तारकाणां चतुर्भागः ।
 ५२. जघन्या त्वष्टभागः ।
 ५३. चतुर्भागाः शेषाणाम् ।

पञ्चमोऽध्यायः

१. अजीवकाया धर्माधर्माकाशपुद्गलाः ।
२. द्रव्याणि जीवाश्च ।
३. नित्यावस्थितान्यरूपाणि ।
४. रूपिणः पुद्गलाः ।
५. आऽऽकाशादेकद्रव्याणि ।
६. निष्क्रियाणि च ।
७. असङ्ख्येयाः प्रदेशा धर्माधर्मयोः ।
८. जीवस्य ।
९. आकाशस्यानन्ताः ।
१०. सङ्ख्येयाऽसङ्ख्येयाश्च पुद्गलानाम् ।
११. नाणोः ।
१२. लोकाकाशोऽवगाहः ।
१३. धर्माधर्मयोः कृत्स्ने ।
१४. एकप्रदेशादिषु भाल्यः पुद्गलानाम् ।
१५. असङ्ख्येयभागादिषु जीवानाम् ।
१६. प्रदेशसहारविसर्गाभ्यां प्रदीपवत् ।
१७. गतिस्थित्युपग्रहो धर्माधर्मयोरुपकारः ।
१८. आकाशस्यावगाहः ।
१९. शरीरवाङ्मनःप्राणापानाः पुद्गलानाम् ।
२०. सुखदुःखजीवितभरणोपग्रहाश्च ।
२१. परस्परोपग्रहो जीवानाम् ।
२२. वर्तना परिणामः क्रिया परत्वापरत्वे च क

२३. स्पर्शरसगन्धवर्णवन्तः पुद्गलाः ।
 २४. शब्दबन्धसौक्ष्म्यस्थौल्यसस्थानभेदतमश्रयाऽऽत्तपोद्द्योतवन्तश्च ।
 २५. अणवः स्कन्धाश्च ।
 २६. संघातभेदेभ्य उत्पद्यन्ते ।
 २७. भेदादणुः ।
 २८. भेदसघाताभ्या चाक्षुषाः ।
 २९. उत्पादव्ययघ्नोव्ययुक्त सत् ।
 ३०. तद्भावाव्यय नित्यम् ।
 ३१. अपितानपितसिद्धेः ।
 ३२. स्निग्धरूक्षत्वाद्वन्धः ।
 ३३. न जघन्यगुणानाम् ।
 ३४. गुणसाम्ये सदृशानाम् ।
 ३५. द्वयधिकादिगुणाना तु ।
 ३६. बन्धे समाधिकी पारिणामिकी ।
 ३७. गुणपर्यायवद् ब्रव्यम् ।
 ३८. कालश्चेत्येके ।
 ३९. सोऽजन्तसमयः ।
 ४०. ब्रव्याश्रया निर्गुणा गुणाः ।
 ४१. तद्भावः परिणामः ।
 ४२. अनादिरादिमांश्च ।
 ४३. रूपिष्वादिमान् ।
 ४४. योगोपयोगौ जीवेषु ।

षष्ठोऽध्यायः

१. कायवाङ्मनःकर्म योगः ।
२. स आत्मवः ।
३. शुभः पुण्यस्य ।
४. अशुभः पापस्य ।
५. सकषायाकषाययोः साम्परायिकेयापथयोः ।
६. अन्नतकषायेन्द्रियक्रियाः पञ्चचतुःपञ्चपञ्चाविंशतिसङ्ख्याः
पूर्वस्य भेदाः ।
७. तीव्रमन्दजाताजातभाववीर्याऽधिकरणविशेषेभ्यस्तद्विशेषः ।
८. अधिकरणं जीवाजीवाः ।
९. आद्यं संरम्भसमारम्भारम्भयोगकृतकारितानुमतकषायविशेष-
स्त्रिस्त्रिस्त्रिचतुश्चैकशः ।
१०. निर्वर्तनानिक्षेपसंयोगनिसर्गा द्विचतुर्द्वित्रिभेदाः परम् ।
११. तत्प्रदोषनिह्वयमात्सर्यान्तरायासादनोपधाता ज्ञानदर्शना-
वरणयोः ।
१२. दुःखशोकापाक्रन्दनवधपरिदेवनान्यात्मपरोमयस्थान्यसद्वेद्यस्य ।
१३. भूतव्रत्यनुकम्पादानं सरागसंयमादियोगः क्षान्तिः शौचमिति
सद्वेद्यस्य ।

१४. केवलिश्रुतसंघर्षमदेवावर्णवादो दर्शनमोहस्य ।
 १५. कषायोदयास्तीव्रात्मपरिणामश्चारित्रमोहस्य ।
 १६. बह्वारम्भपरिग्रहत्वं च नारकस्यायुषः ।
 १७. माया तैर्यग्योनस्य ।
 १८. अल्पारम्भपरिग्रहत्वं स्वभावमार्दवाज्जवं च मानुषस्य ।
 १९. निःशीलव्रतत्वं च सर्वेषाम् ।
 २०. सरागसयमसंयमासंयमाकामनिर्जराबालतर्पासि देवस्य ।
 २१. योगवक्ता विसंवादनं चाशुभस्य नाम्नः ।
 २२. विपरीतं शुभस्य ।
 २३. दर्शनविशुद्धिर्विनयसम्पन्नता शीलव्रतेष्वनतिचारोऽभीक्ष्णं
 ज्ञानोपयोगसंवेगौ शक्तितस्त्यागतपत्नी सघसाधुसमाधि-
 बंध्यावृत्त्यकरणमर्हवाचार्यबहुश्रुतप्रवचनभक्तिरावश्यकपरि-
 हाणिमार्गप्रभावना प्रवचनवत्सलत्वमिति तीर्थकृत्त्वस्य ।
 २४. परात्मनिन्वाप्रशसे सदसद्गुणाच्छादनोद्भावने च नीचैर्गोत्रस्य ।
 २५. तद्विपर्ययो नीचैर्बुध्यन्तुत्सेको चोत्तरस्य ।
 २६. विघ्नकरणमन्तरायस्य ।

सप्तमोऽध्यायः

१. हिंसाऽनृतस्तेयाऽन्नह्यपरिग्रहेभ्यो विरतिर्व्रतम् ।
२. देशसर्वतोऽणुमहती ।
३. तत्स्थैर्यार्थं भावनाः पञ्च पञ्च ।
४. हिंसादिष्विहामुत्र चापायावद्यदर्शनम् ।
५. दुःखमेव वा ।
६. मैत्रीप्रमोदकारुण्यमाध्यस्थ्यानि सत्त्वगुणाधिकवित्तश्रयमांता-
विनेयेषु ।
७. जगत्कायस्वभावौ च संवेगवैराग्यार्थम् ।
८. प्रमत्तयोगात् प्राणव्यपरोपणं हिंसा ।
९. असदभिधानमनृतम् ।
१०. अदत्तादानं स्तेयम् ।
११. मैथुनमन्नह्य ।
१२. मूर्च्छा-परिग्रहः ।
१३. निःशल्यो व्रती ।
१४. अगार्य-नगारश्च ।
१५. अणुव्रतोऽगारी ।
१६. दिग्देशाऽनर्थदण्डविरतिसामायिकपौषधोपवासोपभोगपरि-
भोगपरिमाणाऽतिथिसंविभागव्रतसम्पन्नश्च ।
१७. मारणान्तिकीं संलेखनां जोषिता ।

१८. शंकाकांक्षाविचिकित्साऽन्यदृष्टिप्रशंसासस्तवाः सम्यग्दृष्टे-
रतिचाराः ।
१९. व्रतशीलेषु पञ्च पञ्च यथाक्रमम् ।
२०. बन्धवधछविच्छेदाऽतिमारारोपणाऽन्नपाननिरोधाः ।
२१. मिथ्योपदेश-रहस्याभ्याख्यान-कूटलेखत्रियान्यासापहार-
साकारमंत्रभेदाः ।
२२. स्तेनप्रयोग-तदाहृतादान-विरुद्धराज्यातिक्रम-हीनाधिकमानो-
न्मान-प्रतिरूपकव्यवहाराः ।
२३. परविवाहकरणेत्वरपरिगृहीताऽपरिगृहीतागमनाऽनङ्गक्रीडा-
तीव्रकामाभिनिवेशाः ।
२४. क्षेत्रवास्तुहिरण्यसुवर्णधनधान्यदासीदासकुप्यप्रमाणातिक्रमाः ।
२५. ऊर्ध्वाधस्तिर्यग्व्यतिक्रम-क्षेत्रवृद्धिस्मृत्यन्तर्धानानि ।
२६. आनयनप्रेष्यप्रयोगशब्दरूपानुपातपुद्गलप्रक्षेपाः ।
२७. कन्दर्पकोत्कुच्यमौख्यसिमौक्ष्याधिकरणोपभोगाधिकत्वानि ।
२८. योगदुष्प्रणिधानानादरस्मृत्यनुपस्थापनानि ।
२९. अप्रत्यवेक्षिताप्रमार्जितोत्सर्गादाननिक्षेपसंस्तारोपक्रमणानादर-
स्मृत्यनुपस्थापनानि ।
३०. सचित्तसम्बद्धसम्मिश्राऽभिषवदुष्पक्वाहाराः ।
३१. सचित्तनिक्षेपपिधानपरव्यपदेशमात्सर्यकालातिक्रमाः ।
३२. जीवितमरणाशंसाभिन्नानुरागमुद्वानुबन्धनिदानकरणानि ।
३३. अनुग्रहार्थं स्वस्यातिसर्गो दानम् ।
३४. विधिद्रव्यदातृपात्रविशेषात्तद्विशेषः ।

अष्टमोऽध्यायः

१. मिथ्यादर्शनाऽविरति-प्रमाद-कषाय-योगा बन्धहेतवः ।
२. सकषायत्वाज्जीवः कर्मणो योग्यान्पुद्गलानादत्ते ।
३. स बन्धः ।
४. प्रकृति-स्थित्यनुभाव-प्रदेशास्तद्विधयः ।
५. आद्यो ज्ञान-दर्शना-वरण-वेदनीय-मोहनीयाऽयुष्क-नाम-गोत्राऽ-
न्तरायाः ।
६. पञ्चनवद्व्यष्टाविंशति चतुर्द्विचत्वारिंशद्-द्वि-पञ्चभेदा यथा-
क्रमम् ।
७. मत्पादीनां ।
८. चक्षुरचक्षुरवधिकेवलानां निद्रा निद्रा-निद्रा प्रचला प्रचला-
प्रचला-स्त्यानगृह्णिवेदनीयानि च ।
९. सवसद्वेद्ये ।
१०. दर्शनचारित्रमोहनीयकषायनोकषायवेदनीयाख्यास्त्रिद्विषोऽश-
नवभेदाः सम्यक्त्वमिथ्यात्वतदुभयानि कषायनोकषायावनन्ता-
नुबध्यप्रत्याख्यान - प्रत्याख्यानवरणसंज्वलनविकल्पाश्चैकशः
क्रोधमानमायालोभाः हास्यरत्यरतिशोकभयजुगुप्सास्त्रीपुन-
पुंसकवेदाः ।
११. नारकतर्कग्योनमानुषदेवानि ।

१२. गतिजातिशरीराङ्गोपाङ्गनिर्माणबन्धनसङ्घातसंस्थानसंहनन-
स्पर्शरसगन्धवर्णानुपूर्व्यगुरुलघूपघातपराघातातपोद्योतोच्छ्वास-
विह्वयोगतयः प्रत्येकशरीरत्रसमुभगसुस्वरशुभसूक्ष्मपर्याप्त-
स्थिरादेययशासि सेतराणि तीर्थकृत्स्व च ।
१३. उच्चैर्नोचैश्च ।
१४. दानादीनाम् ।
१५. आदितस्तिसृणामंतरायस्य च त्रिशत्सागरोपमकोटीकोट्यः
परा स्थितिः ।
१६. सप्ततिमोहनीयस्य ।
१७. नामगोत्रयोर्विंशतिः ।
१८. त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाण्यायुष्कस्य
१९. अपराद्वादशमुहूर्त्ता वेदनीयस्य ।
२०. नामगोत्रयोरष्टौ ।
२१. शेषाणामन्तर्मुहूर्त्तम् ।
२२. विपाकोऽनुभावः ।
२३. स यथानाम ।
२४. ततश्च निर्जरा ।
२५. नामप्रत्ययाः सर्वतो योगविशेषात्सूक्ष्मैकक्षेत्रावगाढस्थिताः
सर्वात्मप्रदेशेज्वनन्तानन्तप्रदेशाः ।
२६. सद्ब्रह्मसम्यक्त्वहास्यरतिपुरुषवेदशुभायुर्नामगोत्राणि पुण्यम् ।

नवमोऽध्यायः

१. आलवनिरोधः संवरः ।
२. स गुप्तिसमितिवर्मानुप्रेक्षापरिषहजयचारित्रैः ।
३. तपसा निर्जरा च ।
४. सम्यग्योगनिग्रहो गुप्तिः ।
५. ईर्याभाषणदाननिक्षेपोत्सर्गाः समितयः ।
६. उत्तमः क्षमासाद्वान्वशौचमत्यसंयमतपस्त्यागाऽऽकिञ्चन्यग्रह्य
चर्याणि धर्मः ।
७. अनित्याशरणससारैकत्वान्यत्वाशुचित्वाऽऽन्नवसवरनिर्जरा लोक-
बोधिदुर्लभधर्मस्वाद्यत्तरवतत्त्वानुचिन्तनमनुप्रेक्षाः ।
८. मार्गाऽज्यवननिर्जरार्थं परिषोढव्याः परीषहाः ।
९. क्षुत्पिपासाशीतोष्णदंशमशकनागन्यारतिस्त्रीचर्यानिषद्याशम्या-
क्रोशवध-याचनाऽलामरोगतृणस्पर्शमलसत्कारपुरस्कारप्रज्ञाऽ-
ज्ञानाऽदर्शनानि ।
१०. सूक्ष्मसम्परायच्छन्नस्थवीतरागयोश्चतुर्दश ।
११. एकादश जिने ।
१२. वादरसम्पराये सर्वे ।
१३. ज्ञानावरणे प्रज्ञाऽज्ञाने ।

१४. दर्शनमोहान्तराययोरदर्शनालाभी ।
१५. चारित्रमोहे नागन्यारतिस्त्रीनिषद्याक्रोशयाचनासत्कारपुरस्कारा
१६. वेदनीये शेषाः ।
१७. एकादयो भान्या युगपदेकोनविंशतिः ।
१८. सामायिक-छेदोपस्थाप्य-परिहारविशुद्धि-सूक्ष्मसम्पराये-यथा-
ख्यातानि चारित्रम् ।
१९. अनशनावमौदर्यवृत्तिपरित्तङ्गध्यान रसपरित्यागविविक्तशय्या-
सनकायक्लेशा बाह्य तपः ।
२०. प्रायश्चित्त-विनयव्यावृत्त्यस्वाध्यायव्युत्सर्गध्यानान्युत्तरम् ।
२१. तत्र-चतुर्दशपञ्च द्विभेदे यथाक्रम प्राग्ध्यानात् ।
२२. आलोचनप्रतिक्रमणतदुभयवियेकव्युत्सर्गतपश्छेदपरिहारोपस्था-
पनानि ।
२३. ज्ञानदर्शनचारित्र्योपचाराः ।
२४. आचार्योपाध्यायतपस्विशिक्षकगलानगणकुलसङ्घसाधुसमनोज्ञा-
नाम् ।
२५. वाचनाप्रच्छनाऽनुप्रेक्षाऽऽम्नायधर्मोपदेशाः ।
२६. बाह्याभ्यन्तरोपध्योः ।
२७. उत्तमसंहननस्यैकाग्रचिन्तानिरोधो ध्यानम् ।
२८. आमुहूर्तात् ।

२९. आर्त्तरौघर्धर्मशुक्लानि ।
 ३०. परे मोक्षहेतू ।
 ३१. आर्त्तममनोज्ञानां सम्प्रयोगे तद्विप्रयोगाय स्मृतिसमन्वाहारः ।
 ३२. वेदनायाश्च ।
 ३३. विपरीतं मनोज्ञानाम् ।
 ३४. निदानं च ।
 ३५. तदविरतदेशविरतप्रमत्तसंयतानाम् ।
 ३६. हिंसाऽनुतस्तेयविषयसंरक्षणेभ्योरौघमविरतदेशविरतयोः ।
 ३७. आज्ञाऽपायविपाकसंस्थानविचयाय धर्ममप्रमत्तसंयतस्य ।
 ३८. उपशान्तक्षीणकषाययोश्च ।
 ३९. शुक्ले चाद्ये पूर्वविदः ।
 ४०. परे केवलिनः ।
 ४१. पृथक्त्वं कत्ववितर्कसूक्ष्मक्रियाप्रतिपातिव्युपरतक्रियाऽनिवृत्तीनि ।
 ४२. तत् त्र्येककाययोगाऽयोगानाम् ।
 ४३. एकाश्रये सवितर्के पूर्व ।
 ४४. अविचारं द्वितीयम् ।
 ४५. वितर्कः श्रुतम् ।
 ४६. विचारोऽर्थव्यञ्जनयोग संक्रांतिः ।

४७. सम्यग्दृष्टिभावकविरतानन्तवियोजकदर्शनमोहक्षपकोपशमको
पशान्तमोहक्षपकक्षीण-मोहजिना.क्रमशोऽसद्व्येयगुणनिर्जराः ।
४८. पुलाकबकुशकुशीलनिर्ग्रन्थस्नातका निर्ग्रन्थाः ।
४९. संयमश्रुतप्रतिसेवनातीर्थलिङ्गलेश्योपपातस्थानविकल्पतः
साध्याः ।

दशमोऽध्यायः

१. मोहक्षयाज्ज्ञानदर्शनावरणान्तरायक्षयाच्च केवलम् ।
२. बन्धहेत्वभावनिर्जराभ्याम् ।
३. कृत्स्नकर्मक्षयो मोक्षः ।
४. औपशमिकादिभग्नत्वाभावाच्चान्यत्र केवलसम्यक्त्वज्ञानदर्शन-
सिद्धत्वेभ्यः ।
५. तदनन्तरमूर्ध्वं गच्छत्यालोकान्तात् ।
६. पूर्वप्रयोगादसंगत्वाद्बन्धच्छेदात्तथागतिपरिणामाच्चतद्गतिः
७. क्षेत्रकालगतिलिङ्गतीर्थचारित्रप्रत्येकबुद्धबोधितज्ञानावगाह-
नान्तरसंख्याल्पबहुत्वतः साध्याः ।

॥ इति तत्त्वार्थ सूत्र सम्पूर्णम् ॥

भक्तामर-स्तोत्रम्

भक्तामर-प्रणत-मौलि-मणिप्रभाणा-

मुद्योतक दलितपापतमोवितानम् ।

सम्यक् प्रणय जितपादयुगं युगादा-
वालम्बन भवजले पततां जनानाम् ॥ १ ॥

यः सस्तुतः सकलबाढमयतत्त्वबोधा-
दुद्भूतबुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः ।

स्तोत्रैर्जगत्त्रियचित्त-हरैस्त्वारैः;
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥ २ ॥

बुध्या विनाऽपि विबुधाचितपादपीठ,
स्तोतुं समुद्यतमतिविगतत्रयोऽहम् ।

बालं विहाय जलसंस्थितमिन्दुविम्ब-
मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ॥ ३ ॥

वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र ! शशाङ्ककान्तान्,
कस्ते क्षमः सुरगुरोःप्रतिमोऽपि बुद्ध्या ।

कल्पांतकाल-पवनोद्धत-नक्रचक्रं,
को वा तरीतुमलमम्बुनिधि भुजाभ्याम् ॥ ४ ॥

सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश,
कर्तुं स्तव विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः ।
प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य मृगो मृगेन्द्रं,
नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम् ॥ ५ ॥

अल्पभुतं श्रुतवतां परिहासधाम्,
त्वद्भक्तिरेव मुखरो कुरुते बलान्नाम् ।
यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरोति,
तन्वाक्चाग्रकलिका-निकरैकहेतुः ॥ ६ ॥

त्वत्सस्तवेन भवसन्ततिसन्निबद्धं,
पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम् ।
आक्रान्तलोकमलिनीलमशेषमाशु,
सूर्याशुभिन्नमिव शार्वरमन्धकारम् ॥ ७ ॥

मत्वेति नाथ ! तव संस्तवनं मयेद-
मारभ्यते तनुधियाऽपि तव प्रभावात् ।
चेतो हरिष्यति सता नलिनीदलेषु,
भुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदविन्दुः ॥ ८ ॥

आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्तदोष,
त्वत्संकयाऽपि जगतां दुरितानि हन्ति ।
दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव,
पद्माकरेषु जलजानि विकाशभाञ्जि ॥ ९ ॥

नात्यद्भुतं भुवनभूषण ! भूतनाथ !
भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः ।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा,
भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥१०॥

दृष्ट्वा भवन्तमनिमेषविलोकनीयं,
नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः ।
पीत्वा पयः शशिकरद्युतिदुग्धसिन्धोः,
क्षारं जलं जलनिधेरशितुं क इच्छेत् ॥११॥

यैः शान्तरागरश्चिभिः परमाणुभिस्त्वं,
निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूत !

तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां,
यत्ते समानमपरं न हि रूपमस्ति ॥१२॥

क्वत्रं क्व ते सुरनरोरगनेत्रहारि,
निःशेषनिर्जित-जगत्त्रितयोपमानम् ।

बिम्बं कलङ्कमलिनं क्व निशाकरस्य,
यद्वासरे भवति पाण्डुपलाशकल्पम् ॥१३॥

सम्पूर्णमण्डलशशाङ्ककला-कलाप !

शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लङ्घयन्ति ।

ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वर ! नाथमेकं,

कस्ताभिदारयति सञ्चरतो यथेष्टम् ॥१४॥

चित्र किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्गनाभि-
नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम् ।
कल्पान्तकालमरुता चलिताचलेन,
किं मन्दराद्विशिखरं चलितं कदाचित् ॥१५॥

निर्धूमवर्तिरपवर्जित-तैलपूरः,
कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटी-करोषि ।
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां,
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ ! जगत्प्रकाशः ॥१६॥

नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः,
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति ।
नाम्भोधरोदर-निखट्ट-महाप्रभावः,
सूर्यातिशायिमहिमाऽसि मुनीन्द्र ! लोके ॥१७॥

नित्योदयं दलितमोहमहान्धकारं,
गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम् ।
विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकान्ति-
विद्योतयज्जगदपूर्व-शशाङ्कविम्बम् ॥१८॥

किं शर्वरीषु शशिनाऽङ्गि विवस्वता वा,
युष्मन्मुखेन्दुदलितेषु तमस्तु नाथ ! ।
निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके,
कार्यं कियज्जलधरं जलभारनघ्नं ॥१९॥

ज्ञानं तथा त्वयि विभाति कृतावकाशं,
 नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु ।
 तेजःस्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं,
 नैवं तु काचशकले किरणाकृलेऽपि ॥२०॥

मन्ये वर हरिहरादय एव दृष्टाः
 दृष्टेषु येषु हृदय त्वयि तोषमेति ।
 किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः,
 कश्चिन्मनो हरति नाथ भवान्तरेऽपि ॥२१॥

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्,
 नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता ।
 सर्वा दिशो दधति भानि-सहस्ररश्मिं,
 प्राच्येव दिग् जनयति स्फुरदंशुजालम् ॥२२॥

त्वाभामनन्ति मुनयः परमं पुमांस-
 मादित्यवर्णममल तमसःपुरस्तात् ।

त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं,
 नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र ! पन्थाः ॥२३॥

त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसङ्ख्यमाद्यम्,
 ब्रह्माण - भीश्वर - मनन्त - मनङ्गकेतुम् ।
 योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं,
 ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः ॥२४॥

बुद्धस्त्वमेव विबुधाचितबुद्धिबोधात्,
 त्व शङ्करोऽसिभुवनत्रयशङ्करत्वात् ।
 धाताऽसि धीर ! शिवमार्गविधेर्विधानात्,
 व्यक्त त्वमेव भगवन् ! पुरुषोत्तमोऽसि ॥२५॥

तुभ्य नमस्त्रिभुवनात्तिहराय नाथ !
 तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय ।
 तुभ्य नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय,
 तुभ्यं नमो जिन ! भवोदघिशोषणाय ॥२६॥

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणरशोर्ब-
 स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश ! ।
 बोधै-रूपास्त-विविधाभयजातगर्वैः,
 स्वप्नांतरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥२७॥

उच्चैरशोक-तरुसंश्रित-मुन्मयूख-
 माम्भाति रूपममलं भवतो नितान्तम् ।
 स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमो-वितान,
 बिम्बं रवेरिव पयोधरपार्ष्ववर्ति ॥२८॥

सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे,
 विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम् ।
 बिम्बं वियद्विलसदशुलतावितान,
 तुङ्गोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मेः ॥२९॥

कुन्दावदातचल-चामर-चारुशोभं,
विभ्राजते तव वपुः कलघौतकान्तम् ।
उद्यच्छशाङ्क-शुचिनिर्झर-वारि-धार-
मुच्चैस्तट सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ॥३०॥

छत्रत्रय तव विभाति शशाङ्ककान्त-
मुच्चैः स्थित स्थगितभानुकरप्रतापम् ।
मुक्ताफल-प्रकरजाल-विवृद्धशोभ-
प्रख्यापयत्त्रिजगत. परमेश्वरत्वम् ॥३१॥

गम्भीरतार-रवपूरित-दिग्विभाग-
स्त्रैलोक्य-लोकशुभसङ्गम-भूतिदक्षः ।
सद्धर्मराजजयघोषणघोषकः सन्,
खे दुन्दुभिध्वनति ते यशसः प्रवादी ॥३२॥

मन्दार-सुन्दर-नमेरु-सुपारिजात-
सतानकादि-कुसुमोत्कर-वृष्टिरुद्धा ।
गन्धोदबिन्दुशुभमन्दमरुत्प्रपाताः,
दिव्या दिवः पतति ते वचसां ततिर्वा ॥३३॥

शुभ्रप्रभावलयभूरिविभा विभोस्ते,
लोकत्रयद्युतिमता द्युतिमाक्षिपन्ती ।
प्रोद्यद्दिवाकरनिरन्तरभूरिसध्या,
दीप्त्या जयत्यपि निशामपि सोमसौम्याम् ॥३४॥

स्वर्गपद्वर्गगममार्गविमार्गणेष्टः-

सद्धर्मतत्त्वकथनंकपटुस्त्रिलोक्या ।

दिन्यध्वनिर्भवति ते विशदार्थसर्व-

भाषास्वभावपरिणामगुणं प्रयोज्य ॥३५॥

उन्निद्र - हेमनवपङ्कज - पुञ्जकांति-

पर्युल्लसन्नखमयूख - शिखाऽभिरामौ ।

पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र ! धत्त.,

पद्मानि तत्र विबुधा. परिकल्पयन्ति ॥३६॥

इत्थं यथा तव विभूति-रभूज्जिनेन्द्र ।

धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ।

यादृक् प्रभा दिनकृत प्रहृतान्धकारा,

तादृक् कुतो ग्रहगणस्य विकासिनोऽपि ॥३७॥

श्च्योतन्मदाविल - विलोल - कपोल-मूल-

मत्तश्रमद् - श्रमरनाद - विवृद्धकोपम् ।

ऐरावतामभिम-मुद्धतमापतन्तं,

दृष्ट्वा भय भवति नो भवदाश्रितानाम् ॥३८॥

मिन्नेभकुम्भ - गलदुज्ज्वल - शोणिताक्त-

भुक्ताफल - प्रकरभूषित - भूमिभाग ।

बद्धक्रमः क्रमगत हरिणाघ्रिपोऽपि,

नक्रामति क्रमयुगाचलसञ्चित ते ॥३९॥

कल्पान्तकाल - पवनोद्धत - वह्नि कल्पं,
 दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिङ्गम् ।
 विश्व जिघत्सुमिव सन्मुखमापतन्तं,
 त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥४०॥

रक्तेक्षणं समदकोकिलकण्ठनीलं,
 क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतन्तम् ।
 आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशङ्क-
 त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥४१॥

बलगतुरङ्ग - गजगर्जित - भीमनाद-
 माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम् ।
 उद्यद्दिवाकर - मयूख - शिखापविद्धं,
 त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु मिदामुपैति ॥४२॥

कुन्ताप्रभिन्न - गजशोणित - वारिवाह-
 वेगावतार - तरणातुर - योधभीमे ।
 युद्धे जयं विजित - दुर्जय - जेयपक्षा-
 त्वत्पाद-पङ्कजवनाश्रयिणो लभन्ते ॥४३॥

अम्भोनिधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्र-
 पाठीन-पीठ-भयदोत्वण-बाहवाग्नौ ।
 रङ्गतरंग-शिखर-स्थितयान-पात्रा-
 स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति ॥४४॥

उद्भूत - भीषण - जलोदर - भार - भुगनाः,
 शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशा ।
 त्वत्पाद - पङ्कज - रजोऽमृत - दिग्ध-देहा,
 मर्त्या भवन्ति मकरध्वजतुल्यरूपाः ॥४५॥

आपाद - कण्ठमुखमृङ्खल - वेष्टिताङ्गा,
 गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्टःजंघा ।
 त्वन्नाममंत्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः,
 सद्यः स्वयं विगतबंधभया भवन्ति ॥४६॥

मत्तद्विप्रेन्द्र - भृगराज - दवानलाहि-
 सङ्ग्राम - वारिधिमहोदर - बन्धनोत्थम् ।
 तस्याशुनाशमुपयाति मय मियेव,
 यस्तावकं स्तवमिमं भतिमानधीते ॥४७॥

स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र ! गुणनिबद्धा,
 भक्त्या मया रुचिवर्णविचित्रपुष्पाम् ।
 धत्ते जनो य इह कण्ठगतामजस्रं,
 तं मानतुङ्गमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥४८॥

॥ इति श्री माननुगाचार्यं विरचितं स्तोत्रम् ।

श्रीसिद्धसेनदिवाकरप्रणीतम्

श्री कल्याण-मन्दिर-स्तोत्रम्

कल्याणमन्दिरमुदारमद्वयभेदि,
भीता भयप्रदमनिन्वितमंग्रिपद्यम् ।
संसार-सागर-निमज्जदशेषजंतु-
पोतायमानमभिनस्य जिनेश्वरस्य ॥ १ ॥

यस्य स्वयं सुरगुरुगंगरिमास्वुराशोः,
स्तोत्रं सुविस्तृतमतिनं विभुविधातुम् ।
तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो-
स्तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये ॥ २ ॥
सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप-
मस्मादृशाः कथमघोश ! भवंत्यघोशाः ।
धृष्टोऽपि कौशिकशिशुर्यदि वा द्विचान्धो,
रूपं प्ररूपयति किं किल धर्मरश्मेः ॥ ३ ॥

मोहक्षयादनुभवन्नपि नाथ ! मर्त्यो,
नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत ।
कल्पान्तवान्तपयसः प्रकटोऽपि यस्मान्-
मीयेत केन जलधर्नेन रत्नराशिः ॥ ४ ॥

अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ ! जडाशयोऽपि,
 कर्तुं स्तवं लसदसङ्ख्यगुणाकरस्य ।
 बालोऽपि किं न निजब्राह्मणं वितत्य,
 विस्तोर्णतां कथयति स्वधियाऽम्बुराशेः ? ॥ ५ ॥

ये योगिनामपि न यान्ति गुणास्तवेश !
 वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः ।
 जाता तदेवमसमीक्षितकारितेयं,
 जल्पन्ति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥ ६ ॥

आस्तामचिन्त्यमहिमा जिन ! संस्तवस्ते,
 नामाऽपि पाति भवतो भवतो जगन्ति ।
 तीव्रातपोपहत-पान्यजनाग्निदाघे,
 प्रीणाति पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि ॥ ७ ॥

हृद्वर्तिनि त्वयि विभो ! शिथिलीभवन्ति,
 जन्तोः क्षणेन निविडा अपि कर्मबन्धाः ।
 सद्यो भुजङ्गममया इव मध्यभाग-
 मभ्यागते वनशिखण्डिनि चन्दनस्य ॥ ८ ॥

भुज्यंत एव मनुजा सहसा जिनेन्द्र !
 रौद्रैरुपद्रवशतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि ।
 गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे,
 चोरैरिवाशु पशवः प्रपलायमानैः ॥ ९ ॥

त्वं तारको जिन ! कथं ? भविनां त एव,
 त्वामुद्धहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्तः ।
 यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेष नून-
 मन्तर्गतस्य मरुतः स किलानुभावः ॥१०॥

यस्मिन् हरप्रभृतयोऽपि हृतप्रभावाः,
 सोऽपि त्वया रतिपतिः क्षपितः क्षणेन ।
 विध्यापिता हुतभुजः पयसाऽथ येन,
 पीतं न किं तदपि दुर्धरवाडवेन ? ॥११॥

स्वामिन्ननल्पगरिमाणमपि प्रपन्ना-
 स्त्वां जन्तवः कथमहो हृदये बधनाः ।
 जन्मोर्दधि लघु तरन्त्यतिलाघवेन,
 चिन्त्यो न हन्त ! महता यदि वा प्रभावः ॥१२॥

क्रोधस्त्वया यदि विभो ! प्रथमं निरस्तो,
 ध्वस्तास्तदा घत कथं किल कर्मचौराः ?
 प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिराऽपि लोके,
 नीलद्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी ॥१३॥

त्वां योगिनो जिन ! सदा परमात्मरूप-
 मन्वेषयन्ति हृदयाम्बुजकोशदेशे ।
 पूतस्य निर्मलरुचेर्यदि वा किमन्य-
 दक्षस्य सम्भवि पदं ननु कर्णिकायाः ? ॥१४॥

ध्यानाज्जिनेश ! भवतो भविनः क्षणेन,
 देहं विहाय परमात्मदशां व्रजन्ति ।
 तीव्रानलादुपलभावमपास्थ्य लोके,
 चामीकरत्वमचिरादिव घातुभेदाः ॥१५॥

अन्तः सदैव जिन ! यस्य विभाव्यसे त्वं,
 भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम् ।
 एतत्स्वरूपमथ मध्यविवात्तिनो हि,
 यद्विग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावाः ॥१६॥

आत्मा मनीषिभिरयं त्वदभेदबुद्ध्या,
 ध्यातो जिनेन्द्र ! भवतीह भवत्प्रभावः ।
 पानीयमप्यमृतमित्यनुचिन्त्यमानं,
 किं नाम नो विषविकारमपाकरोति ॥१७॥

त्वामेव वीरतमसं परवादिनोजपि,
 नूनं विभो ! हरिहरादिघिया प्रपन्नाः ।
 किं काचकामलिभिरीश ! सितोजपिशङ्खो,
 नो गृह्यते विविधवर्णविपर्ययेण ॥१८॥

धर्मोपदेशसमये सविधानुभावा-
 दास्तां जनो भवित ते तरुरप्यशोकः ।
 अभ्युद्गते दिनपतौ स महीरुहोजपि,
 किं वा विबोधमुपयाति न जीवलोकः ॥१९॥

चित्रं विभो ! कथमवाहमुखवृन्तमेव,
 विष्वक् पतत्यविरला सुरपुष्पवृष्टिः ?
 त्वद्गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश !,
 गच्छन्ति नूनमथ एव हि बन्धनानि ॥२०॥

स्थाने गभीरहृदयोदघिसंभवायाः,
 पीयूषतां तव गिरः समुदीरयन्ति ।
 पीत्वा यतः परमसम्मदसङ्गभाजो,
 भव्या व्रजन्ति तरसाऽप्यजरामरत्वम् ॥२१॥

स्वामिन् ! सुदूरमवनम्य समुत्पतन्तो,
 मन्ये वदन्ति शुचयः सुरचामरौघाः ।
 येऽस्मै नर्ति विदधते मुनिपुङ्गवाय,
 ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु शुद्धभावाः ॥२२॥

श्यामं गभीरगिरमुज्ज्वलहेमरत्न-
 सिंहासनस्थमिह भव्यशिखण्डिनस्त्वाम् ।
 अलोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्चै-
 श्चामीकराद्रिशिरसीव नवाम्बुवाहम् ॥२३॥

उद्गच्छता तव शितिद्युतिमंडलेन,
 लुप्तच्छदच्छविरशोकतरुर्वभूव ।
 सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग !
 नीरागतां व्रजति को न सचेतनोऽपि ॥२४॥

भो भो ! प्रमादमवधूय भजध्वमेन
 मागत्य निर्वृतिपुरीं प्रति सार्थवाहम् ।
 एतन्निवेदयति देव ! जगत्त्रयाय,
 मन्ये नदन्नभिनभः सुरदुन्दुभिस्ते ॥२५॥

उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ !
 तारान्वितो विधुरय विहृताधिकारः ।
 मुक्ताकलापकलितोच्छ्वसितातपत्र-
 व्याजात्त्रिधा धृततनुर्ध्रुवमम्युपेतः ॥२६॥

स्वेन प्रपूरितजगत्त्रयपिण्डितेन,
 कान्तिप्रतापयशसामिव सञ्चयेन !
 भाणिक्यहेमरजतप्रविनिर्मितेन,
 सालत्रयेण भगवन्नमितो विशासि ॥२७॥

दिव्यस्त्रजो जिन ! नमस्त्रिदशाधिपाना-
 मुत्सृज्य रत्नरचितानपि मौलिवन्धान् !
 पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वा परत्र,
 त्वत्सङ्गमे सुमनसो न रमन्त एव ॥२८॥

त्वं नाथ ! जन्मजलघोविपराड्मुखोऽपि,
 यत्तारयस्यसुमतो निजपृष्ठलग्नान् ।
 युक्तं हि पार्थिवनिपस्य सतस्तवैव,
 चित्रं विभो ! यदसि कर्मविपाकशून्यः ॥२९॥

विश्वेश्वरोऽपि जनपालक ! दुर्गतस्त्वं,
किं वाक्षरप्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश !
अज्ञानवत्यपि सदैव कथञ्चिदेव,
ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्वविकासहेतुः ॥३०॥

प्राग्भारसंभृतनभांसि रजांसि रोषा-
दुत्थापितानि कमठेन शठेन धानि ।
छायापि तंस्तवन नाथ ! हता हताशो,
ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा ॥३१॥

यद् गर्जदुर्जितघनौघमदध्रमीमं-
अश्रयत्तडिन्मुसलमांसलधोरधारम् ।
दैत्येन मुक्तमथ दुस्तरवारि दध्रे,
तेनैव तस्य जिन ! दुस्तरवारिकृत्यम् ॥३२॥

ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृतिमर्त्यमुण्ड-
प्रालम्बभृद्भयदवक्रविनिर्यदग्निः ।
प्रेतव्रजः प्रतिभवन्तमपीरितो यः,
सोऽस्याऽभवत्प्रतिभवं भवदुःखहेतुः ॥३३॥

धन्यास्त एव भुवनाधिप ! ये त्रिसन्ध्य-
माराधयन्ति विधिवद्विधुतान्यकृत्याः ।
भक्त्योल्लसत्पुलक - पद्मल - देहदेशाः,
पादद्वयं तव विभो ! भुवि जन्मभाजः ॥३४॥

अस्मिन्नपारभववारिनिधौ मुनीश !,
 मन्ये न मे श्रवणगोचरता गतोऽसि ।
 आकर्णिते तु तव गोत्रपवित्रमन्त्रे,
 किं वा विपद्विषधरी सविध समेति ? ॥३५॥

जन्मान्तरेऽपि तव पादयुग न देव !,
 मन्ये मया महितमीहितदानदक्षम् ।
 तेनेह जन्मनि मुनीश ! पराभवाना,
 जातो निकेतनमह मथिताशयानाम् ॥३६॥

नूनं न मोहतिभिरावृतलोचनेन-
 पूर्वं विभो ! सकृदपि प्रविलोकितोऽसि ।
 मर्माविधो विधुरयन्ति हि मामनर्था,
 प्रोद्यत्प्रबन्धगतयः कथमन्यथेते ? ॥३७॥

आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि,
 नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या ।
 जातोऽस्मि तेन जनबान्धव ! दुःखपात्र,
 यस्मात्क्रियाः प्रतिफलन्ति न भावशून्याः ॥३८॥

त्वं नाथ ! दुःखिजनवत्सल ! हे शरण्य !,
 कारुण्यपुण्यवसते ! वशिनां वरेण्य ! ।
 भक्त्या न ते मयि महेश ! दया विधाय,
 दुःखाकुरोद्दलनतत्परता विधेहि ॥३९॥

निःसंख्यसारशरण शरण शरण्य-
 मासाद्य सावितरिपु प्रथितावदात्तम् ।
 त्वत्पादपकंजमपि प्रणिधानवन्ध्यो,
 वध्योऽस्मि चेद् भुवनपावन ! हा हतोऽस्मि ॥४०॥

देवेन्द्रवन्द्य ! विदिताखिलवस्तुसार !,
 ससारतारक ! विभो ! भुवनाधिनाथ ! ।
 त्रायस्व देव ! करुणाहृद ! मां पुनीहि,
 सीदन्तमद्य भयदव्यसनाम्बुराशेः ॥४१॥

यद्यस्ति नाथ ! भवदंघ्रिसरोरुहाणां,
 भक्तेः फलं किमपि सन्ततिसञ्चितायाः ।
 तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्य ! भूयाः,
 स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि ॥४२॥

इत्थ समाहितधियो विधिवज्जिनेन्द्र !
 सान्द्रोल्लसत्पुलककञ्चुकिताङ्गभागाः ।
 त्वद्विम्ब - निर्मल - मुखाम्बुज - बद्धलक्ष्या,
 ये संस्तव तव विभो ! रचयन्ति भव्याः ॥४३॥

जननयनकुमुदचंद्र ! प्रभास्वरा स्वर्गसंपदो मुक्त्वा ।
 ते विगलितमलनिचया, अचिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते ॥४४॥

महावीराष्टक स्तोत्रम्

यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावाश्चिदचित् ,
सम भान्ति द्रौव्य व्ययजनि-लसन्तोऽन्तरहिताः ।
जगत् साक्षी मार्ग-प्रकटन परो भानुरिवथो ,
महावीर-स्वामी नयन पथ-गामी भवतु मे ॥१॥

अताम्र यञ्चक्षुः कमल-युगल स्पन्दरहित ,
जनान् कोपापाय प्रकटयति वा भ्यन्तर मपि ।
स्फुटं मूर्तिर्यस्य प्रशमित मयीवातिविमला ,
महावीर-स्वामी नयन पथ-गामी भवतु मे ॥२॥

नमन्नाकेन्द्राली - मुकुट - मणिभाजाल जटिल ,
लसत् पादा भोज द्वयमिह यदीय तनु-भूताम् ।
भवज्वाला शान्त्यं प्रभवति जल वा स्मृतमपि ,
महावीर-स्वामी नयन पथ-गामी भवतु मे ॥३॥

यदर्चा भावेन प्रमुदित मना बद्धुर इह,
क्षणादासीत् स्वर्गागुण-गण समृद्धः सुखनिधिः ।
लभन्ते सद्भक्ताः शिव-सुख समाजं किमु तदा,
महावीर-स्वामी नयन पथ-गामी भवतु मे ॥४॥

कनत्स्वर्णाभासो प्यपगततनुर्ज्ञान - निबहो ,
 विचित्रात्माऽप्येको नृपतिवर सिद्धार्थ-तनयः ।
 अजन्माऽपि श्रीमान् विगत भवरागोद् भूतगतिर ,
 महावीर-स्वामी नयन पथ-गामी भवतु मे ॥५॥
 यदीया वागंगा विविधनय कल्लोल विमला ,
 बृहज्जानास्मोभिर्जगति जनता या स्नपयति ।
 इदानी मप्येषाबुधजनभरातं परिचिता ,
 महावीर-स्वामी नयन पथ-गामी भवतु मे ॥६॥
 अनिर्वारोद्रेक स्त्रिभुवनजयी काम-सुभटः ,
 कुमारावस्थायामपिनिजबलाद्येन विजितः ।
 स्फुरन्नित्यानन्द-प्रशमपद राज्याय स जिनः ,
 महावीर-स्वामी नयन पथ-गामी भवतु मे ॥७॥
 महामोहातक प्रशमनपराऽऽकस्मिक भिषग् ,
 निरापेक्षो बन्धुविदित महिमा मंगलकरः ।
 शरण्यः साधूना भव-भय भूतामुत्तम-गुणो ,
 महावीर-स्वामी नयन पथ-गामी भवतु मे ॥८॥
 महावीराष्टक स्तोत्र, भक्त्या भागेन्दुना कृतम् ।
 यः पठेच्छृणुयाच्चापि, स याति परमां गतिम् ॥९॥

श्री चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-स्तोत्रम्

शार्दूलविक्रीडितवृत्तम्

किं कर्पूरमयं सुधारसमयं किं चन्द्रोचिमयं ।
किं लावण्यमयं महामणिमयं कारुण्यकेलिमयम् ॥
विश्वानन्दमयं महोदयमयं शोभामयं चिन्मयं ।
शुक्लध्यानमयं वपुर्जिनपतेर्मूयाद् भवाल्म्वनम् ॥ १ ॥

पातालं कलयन् धरा घवलयन्नाकाशमापूरयन् ।
दिक्चक्रं क्रमयन् सुरासुरनरश्रेणिं च विस्मापयन् ॥
ब्रह्माण्डं सुखयन् जलानि जलधे फेनच्छलाल्लोलयन् ।
श्रीचिन्तामणिपार्श्वसम्भवयशो हसश्चिरं राजते ॥ २ ॥

पुण्यानां विपणिस्तमो दिनमणि कामेभकुम्भे सृणि-
मोक्षे निस्सरणि सुरेन्द्रकरिणी ज्योतिः प्रकाशारिणिः ॥
दाने देवमणिर्नतोत्तमजनश्रेणिः कृपासारिणी ।
विश्वानन्दसुधाधूणिर्भवमिदे श्रीपार्श्वचिन्तामणिः ॥ ३ ॥

श्रीचिन्तामणिपार्श्वविश्वजनतासञ्जीवनस्त्वं मया ।
दृष्टस्तात ! ततः श्रियः समभवभ्राशक्रमाचक्रिणम् ॥
मुक्तिः श्रीडति हस्तयोर्वहुविधं सिद्धं मनोवाञ्छितं ।
दुर्वैवं दुरितं च दुर्दिनमयं कष्टं प्रणष्टं मम ॥ ४ ॥

यस्य प्रौढतमप्रतापतपनः प्रोद्दामधामा जग-
ज्जड् घालः कलिकालकेलिदलनो मोहान्धविध्वसकः
नित्योद्योतपद समस्तकमलाकेलिगृह् राजते ।
स श्रीपार्श्वजिनो जने हितकरश्चिन्तामणिः पातु माम् ॥ ५ ॥

विश्वव्यापितमो हिनस्ति तरणिर्बालोपि कल्पांकुरो,
दारिद्र्याणि गजावलीं हरिशिशुः काष्ठानि बह्नेः कणः ।
पीयूषस्य लवोऽपि रोगनिबहुयद्वत्तथा ते विभो ।
मूर्तिः स्फूर्तिमती सती त्रिजगतीकष्टानि हर्तुं क्षमा ॥ ६ ॥

श्रीचिन्तामणिमंत्रमोक्तियुतं ह्रींकारसाराश्रितं ।
श्रीमहर्त्तमिऊणपाशकलितं त्रैलोक्यवश्यावहम् ॥
द्वेधाभूतविषापहं विषहरं श्रेयःप्रभावाश्रयं ।
सोल्लासं वसहाङ्गि कतम् जिनकुल्लिगानन्दवं देहिनाम् ॥ ७ ॥

ह्रीं श्रीकारवरं नमोऽक्षरपरं ध्यायति ये योगिनो ।
हृत्पद्मे विनिवेश्य पार्श्वमधिष चितामणीसंज्ञकम् ॥
भाले वामभुजे च नाभिकरयोर्मूयो भुजे दक्षिणे ।
पश्चादष्टदलेषु ते शिवपद द्वित्रैर्भवैर्यान्त्यहो ॥ ८ ॥

नो रोगा नैव शोका न कलहकलना नारिमारिप्रचारा,
नैवाधिर्नासमाधिर्न च दरदुरिते दुष्टदारिव्रता नो ।
नो शाकिन्यो ग्रहा नो न हरिकरिगणा व्यालवैतालजाला,
जायंते पार्श्वचितामणिनतिवशतः प्राणिनां भक्तिभाजाम् ॥ ९ ॥

गीर्वाणद्रुमधेनुकुम्भमणयस्तस्याङ्गणे रंगिणो ।
 देवा दानवमानवा. सविनय तस्मै हितध्यायिनः ॥
 लक्ष्मीस्तस्य वशाऽवशेव गुणिना ब्रह्माण्डसंस्थायिनी ।
 श्रीचिन्तामणिपार्श्वनाथमनिश संस्तौति यो ध्यायति ॥१०॥

इति जिनपतिपार्श्वः पार्श्वपार्श्वार्थयक्षः,
 प्रदलित-दुरितौघः प्रीणित-प्राणीसारथः ।
 त्रिभुवन-जनवाञ्छादान-चिन्तामणीकः,
 शिवपदतलबीज बोधिबीजं ददातु ॥११॥

श्री रत्नाकरपंचविंशतिः

श्रेयः श्रिया मगलकेलिसद्य !, नरेन्द्रदेवेन्द्रनतांघ्रिपद्य ! ।
 सर्वज्ञ ! सर्वातिशयप्रधान !, चिरञ्जयज्ञानकलानिधान ! ॥१॥
 जगत्त्रयाधार ! कृपावतार ! दुर्वारसंसारविकारवन्द्य ! ।
 श्रीवीतराग ! त्वयिमुग्धभावा-द्विज्ञप्रभो विज्ञपयामि किञ्चित् ॥२॥
 किं बाललीलाकलितो न बालः, पित्रो. पुरो जल्पति निर्विकल्पः ।
 तथा यथार्थं कथयामि नाथ !, निजाशयं सानुशयस्तवाग्रे ॥ ३ ॥
 दत्तं न दान परिशीलितं च, न शालि शीलं न तपोऽभितप्तम् ।
 शुभो न भावोऽप्यभवद् भवेऽस्मिन्, विभो ! मया आतमहोमुग्धवः ॥ ४ ॥
 दग्धोऽग्निना क्रोधमयेन दण्डो, दुष्टेन लोभाख्यमहोरगेण ।
 प्रस्तोऽभिमानाजगरेण माया-जालेन बद्धोऽस्मि कथं भजे त्वा ॥ ५ ॥

कृतं मयाऽमुत्र हितं न चेह, लोकेऽपि लोकेऽह ! सुखं न मेऽभूत् ।
 अस्मादृशां केवलमेव जन्म, जिनेश ! जज्ञे भवपूरणाय ॥ ६ ॥
 मन्थे मनो यन्मनोऽज्ञवृत्त !, त्वदास्यपीयूषमयूखलाभात् ।
 द्रुतं महानन्दरसं कठोरमस्मादृशां देव ! तदश्मतोऽपि ॥ ७ ॥
 त्वत्तः सुदुःप्राप्यमिदं मयाऽऽप्तं, रत्नत्रयं भूरिभवध्रमेण ।
 प्रमादनिद्रावशतो गतं तत्, कस्याऽग्रतो नायक ! पूत्करोमि ॥ ८ ॥
 बेंराग्यरङ्गः परबञ्चनाय, धर्मोपदेशो जनरञ्जनाय ।
 वादाय विद्याऽध्ययनं च मेऽभूत्, कियद् ब्रुवे हास्यकर स्वमीश ॥ ९ ॥
 परापवादेन मुखं सदोषं, नेत्रं परस्त्रीजनवीक्षणेन ।
 चेतः परापायविचिन्तनेन, कृतं भविष्यामि कथं विभोऽहं ॥ १० ॥
 विडम्बितं यत्स्मरधस्मरार्ति - दशावशात्स्वं विषयांघ्रलेन ।
 प्रकाशितं तद्भवतो ह्रियैव, सर्वज्ञ ! सर्वं स्वयमेव वेत्ति ॥ ११ ॥
 ध्वस्तोऽन्यमन्त्रः परमेष्ठिमन्त्रः कुशास्त्रवाक्यैर्निहतागमोक्तिः ।
 कर्तुं वृथाकर्मकुदेवसगादवाच्छि हि नाथ ! मतिध्रमो मे ॥ १२ ॥
 विमुच्य दृगलक्ष्यगतं भवन्त, ध्याता मया मूढधिया हृदन्तः ।
 कटाक्षवक्षोजगभीरनाभी, कटीतटीयाः सुदृशां विलासाः ॥ १३ ॥
 लोलेक्षणावक्त्रनिरीक्षणेन यो मानसे रागलवो विलम्बः ।
 न शुद्धसिद्धातपयोधिमध्ये, धौतोप्यगात्तारक ! कारणं किं ॥ १४ ॥
 अंगं न चंगं न गणो गुणानां, न निर्मलः कोऽपि कलाविलासः ।
 स्फुरत्प्रभान प्रभुता च काऽपि, तथाप्यहंकारकदर्थितोऽहं ॥ १५ ॥
 आयुर्गलत्याशु न पापबुद्धिर्नतं वयो नो विषयाभिलाषः ।
 यत्नश्च भ्रष्टज्यविधौ न धर्मे, स्वामिन्महामोहविडम्बना मे ॥ १६ ॥

नात्मा न पुण्य न भवो न पाप, मया विटाना कटुगीरपीय ।
 आधारिकर्णं त्वयि केवलार्कं, परिस्फुटे सत्यपि देव । धिग्माम् ॥१७॥
 न देवपूजा न च पात्रपूजा, न श्राद्धघर्मश्च न साधुघर्म ।
 सन्ध्यापि मानुष्यमिदं समस्तं, कृतं मयाऽरण्यविलापतुल्य ॥१८॥
 चक्रे मयाऽसत्स्वपि कामधेनु - कल्पद्रुचिन्तामणिषु स्पृहाति ।
 न जैनघर्मं स्फुटशर्मदेऽपि, जिनेश ! मे पश्य विमूढभावं ॥१९॥
 सद्भोगलीला न च रोगकीला, घनागमो नो निघनागमश्च ।
 बारा न कारा नरकस्य चित्ते, व्यचिन्ति नित्यं मयकाऽधमेन ॥२०॥
 स्थितं न साधोहृदि साधुवृत्तात्, परोपकारान्न यशोऽर्जितं च ।
 कृतं न तीर्थोद्धरणादिकृत्य, मया मुघा हारितमेव जन्म ॥२१॥
 वैराग्यरगो न गुरुदितेषु, न दुर्जनाना वचनेषु शान्तिः ।
 नाध्यात्मलेशो ममकोऽपि देव, तार्यं कथकारमयम्भवाद्धि ? ॥२२॥
 पूर्वं भवेऽकारि मया न पुण्य-भागानिजन्मन्यपि नो करिष्ये ।
 यदीदृशोऽहं मम ते न नष्टा, भूतोद्भवद्भावविभवत्रयीश ! ॥२३॥
 किंवा मुघाहं बहुधा मुघाभुक्, पूज्य ! त्वदग्रे चरितं स्वकीय ? ।
 जल्पामि यस्मात् त्रिजगत्स्वरूप ! निरूपकस्त्वं कियदेतदत्र ? ॥२४॥
 दीनोद्धारधुरन्धरस्त्वपदपरो नास्ते मदन्यः कृपा ।
 पात्रं नात्र जने जिनेश्वर ! तयाऽप्येता न याचे श्रिय ॥
 किं त्वहं शिदमेव केवलमहो सद्बोधिरत्नं शिव ।
 श्रीरत्नाकरमंगलैकनिलय ! श्रेयस्करं प्रार्थये ॥२५॥

आचार्य अमितगति सूरि-कृत-द्वाविंशिका

सत्त्वेषु मंत्रां गुणेषु प्रमोद,
क्लिष्टेषु जीवेषु कृपापरत्वम् ।
माध्यस्थ्यभावं विपरीत-वृत्तौ,
सदा ममात्मा विदधातु देव ! ॥१॥

शरीरतः कर्तुं मनस्तशक्ति,
विभिन्नमात्मानमपास्तदोषम् ।
जिनेन्द्र ! कोषादिव छद्मगर्भाष्ट,
तव प्रसादेन ममास्तु शक्तिः ॥२॥

दुःखे सुखे वरिणि बन्धु-वर्गे,
योगे वियोगे भवने वने वा ।
निराकृताऽशेषममत्वं बुद्धेः,
समं मनो मेऽस्तु सदापि नाथ ! ॥३॥

मूनीश ! लीनाविव कीलिताविव,
स्थिरौ निषाताविव विम्बिताविव ।
पादौ त्वदीयौ मम तिष्ठता सदा,
तमोघुनानौ हृदि दीपकाविव ॥४॥

एकेन्द्रियाद्या यदि देव ! देहि नः,
प्रमादतः संचरता इतस्ततः ।
क्षता विभिन्ना मिलिता निपीडिता-
स्तदस्तु मिथ्या दुरनुष्ठितं तदा ॥५॥

विमुक्तिमार्गप्रतिकूलवर्त्तिना,
 मया कषायाक्षवशेन दुर्घया ।
 चारित्रशुद्धेर्यदकारि लोपनं,
 तदस्तु मिथ्या मम दुष्कृतं प्रभो । ॥६॥
 विनिन्दनालोचनगर्हणैरहं,
 मनोवचं कायकषायनिर्मितम् ।
 निहन्मि पाप भवदुःखकारण,
 भिषग्विष मंत्रगुणैरिवाखिलम् ॥७॥
 अतिक्रमं यं विमतेर्व्यतिक्रमं,
 जिनातिचारं सुचरित्रकर्मणः ।
 व्यधामनाचारमपि प्रमादतः,
 प्रतिक्रमं तस्य करोमि शुद्धये ॥८॥
 क्षतिं मनःशुद्धिविघ्नेरतिक्रमं,
 व्यतिक्रमं शीलवृत्तेर्विलंघनम् ।
 प्रभोजतिचारं विषयेषु वर्त्तनं,
 वदन्त्यनाचारमिहातिसक्तताम् ॥९॥
 यदर्थमात्रापदवाक्य - हीनं,
 मया प्रमादाद्यदि किञ्चनोक्तम् ।
 तन्मे क्षमित्वा विदधातु देवी,
 सरस्वती केवलबोधलब्धिम् ॥१०॥

बोधिः समाधिः परिणामशुद्धिः,
स्वात्मोपलब्धिः शिवसीख्यसिद्धिः ।

चित्तार्माणं चिन्तितं वस्तुदाने,
त्वा वंछमानस्य ममास्तु देवि ! ॥११॥

यः स्मर्यते सर्वमुनीन्द्रवृन्द-
यः स्तूयते सर्वनरामरेन्द्रैः ।

यो गीयते वेदपुराणशास्त्रैः
स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥१२॥

यो दर्शनज्ञान - सुखस्वभावः,
समस्तसंसार विकार बाह्यः ।

समाधिगम्यः परमात्मसंज्ञः,
स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥१३॥

निषृढते यो भव दुःखजालम्,
निरीक्षते यो जगदन्तरालम् ।

योऽन्तर्गतयोगिनिरीक्षणीयः,
स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥१४॥

विमुक्तिमार्गं प्रतिपादको यो,
यो जन्ममृत्युव्यसनाद्बध्यतीतः ।

त्रिलोकलोकी सिकलोऽकलंकः,
स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥१५॥

क्रोडीकृताशेषशरीरिवर्गः,

रागादयो यस्य न सन्ति दोषाः ।

निरिन्द्रियो ज्ञानमयोऽनपायः,

स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥१६॥

यो व्यापको विश्वजनीनवृत्तेः,

सिद्धो विबुद्धो धृतकर्मबन्धः ।

ध्यातो धुनीते सकल विकारं,

स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥१७॥

न स्पृश्यते कर्मकलंकदोषं,

यो ध्वान्तसर्धैरिव तिग्मरश्मिः ।

निरंजनं नित्यमनेकमेक,

तं देवमाप्त शरण प्रपद्ये ॥१८॥

विभासते यत्र मरीचिमाली,

न विद्यमाने भुवनावभासी ।

स्वात्मस्थितं बोधमय-प्रकाशं,

तं देवमाप्तं शरण प्रपद्ये ॥१९॥

विलोक्यमाने सति यत्र विश्वं,

विलोक्यते स्पष्टमिदं विविक्तम् ।

शुद्धं शिवं शान्तमनाद्यनन्तं,

तं देवमाप्तं शरण प्रपद्ये ॥२०॥

येन क्षता मन्मथमानमूर्छा,
 विषादनिद्राभयशोक चिन्ता ।
 क्षयोऽनलेनेव तरुप्रपच -
 तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये ॥२१॥
 न संस्तरोऽश्मा न तूष्णं न मेदिनी,
 विधानतो नो फलको विनिर्मितः ।
 यतो निरस्ताक्षकषायविद्विषः,
 सुधीभिरात्मैव सुनिर्मलो मतः ॥२२॥
 न संस्तरो भद्र ! समाधिसाधनम्,
 न लोकपूजा न च संघमेलनम् ।
 यतस्ततोऽध्यात्मरतो भवानिशं,
 विमुच्य सर्वमपि बाह्यवासनाम् ॥२३॥
 न सन्ति बाह्या मम केचनार्था,
 भवामि तेषां न कदाचनाऽहम् ।
 इत्थं विनिश्चित्य विमुच्य बाह्यम्,
 स्वस्थः सदा त्वं भव भद्र ! मुक्त्यै ॥२४॥
 आत्मानमात्मन्यवलोक्यमान-
 स्त्वं दर्शनज्ञानमयो विशुद्धः ।
 एकाग्रचित्तः खलु यत्र तत्र-
 स्थितोपि साधुर्लभते समाधिम् ॥२५॥

एकः सदा शाश्वतिको ममात्मा,
 विनिर्मल साधिगमस्वभावः ।
 बहिर्भवाः सत्यपरे समस्ता,
 न शाश्वताः कर्मभवाः स्वकीयाः ॥२६॥
 यस्यास्ति नैक्यं वपुषापि साद्धं,
 तस्यास्ति किं पुत्रकलत्रमित्रैः ।
 पूयकृते चर्मणि रोमकूपाः,
 कुतो हि तिष्ठन्ति शरीरमध्ये ॥२७॥
 संयोगतो दुःखमनेकभेदम्,
 यतोऽश्नुते जन्मवने शरीरी ।
 ततस्त्रिधाऽसौ परिवर्जनीयो,
 यियासुना निवृत्तिमात्मनोनाम् ॥२८॥
 सर्वं निराकृत्य विकल्पजालं,
 ससार - कान्तार - निपात - हेतुम् ।
 विविक्तमात्मानमवेक्ष्यमाणो,
 निलीयसे त्वं परमात्मतत्त्वे ॥२९॥
 स्वयं कृतं कर्म यदात्मना पुरा,
 फलं तदीयं लभते शुभाशुभम् ।
 परेण दत्तं यदि लभ्यते स्फुटं,
 स्वयं कृतं कर्म निरर्थकं तदा ॥३०॥

निजार्जितं कर्म विहाय देहिनो,
 न कोऽपि कस्यापि ददाति किञ्चन ।
 विचारयन्नेवमनन्यमानसः,
 परो ददातीति विमुच्य शेमुषीम् ॥३१॥
 यैः परमात्माऽमितगतिं वन्द्यः,
 सर्वविविक्तो भृशमनवद्यः ।
 शश्वदधीते मनसि लभन्ते,
 मुक्तिनिकेतं विभववरं ते ॥३२॥

सुभाषित

पञ्च-महव्वय-सुव्वय-सूल, समण-मणाइल साह सुच्चिन्नं ।
 वेरविरमणपज्जवसाणं, सब्बसमुद्महोदही तित्थं ॥ १ ॥
 तित्थंकरोहं सुदेसियमग्ग, नरग-तिरिय-विवज्जिय भगं
 सब्बं-पवित्तं सुनिम्मियसार, सिद्धिविमाणं अवंगुय-दारं ॥ २ ॥
 देव - नारिद - नमंसिय-पूड्डयं, सब्बजगुत्तम-मंगल-मग्गं ।
 बुद्धरिसं गुण-नायगमेगं, मोक्खपहस्स-वड्डिसगमूयं ॥ ३ ॥
 धम्मारामे चरे भिक्खू, धोइमं धम्म-सारही ।
 धम्मारामे रया-दत्ते, बंभचेर-समाहए ॥ ४ ॥
 देव-दाणव - गधव्वा, जक्ख-रक्खस्स-किन्नरा ।
 बंभयारि नमंसति दुक्करं जे करन्ति ते ॥ ५ ॥
 एस धम्मे धुवे निच्चवे, सासए जिणइसिए ।
 सिद्धा सिज्झन्ति चाणेगं, सिज्झिस्सन्ति तहावरे ॥ ६ ॥

अरिहंत सिद्ध पवयण गुरु थेर बहुस्सुए तवस्तीसु ।
 वच्छल्लया य तेसि अभिक्खनाणोवओग य ॥ ७ ॥
 दंसण-विणय-आवस्सए य, सीलव्वए निरइयारे ।
 खणलव-त्तव-च्चियाए, वेयावच्चे समाहीए ॥ ८ ॥
 अपुव्वनाणगहणे सुयभत्ती पव्वयणे पभावणया ।
 एएहि कारणेहि तित्थयरत्त लहइ जीवो ॥ ९ ॥
 जिणवयणे-अणुरत्ता जिणवयणं जे करति भावेणं ।
 अमला असंकलिद्धा ते हृति परित्तसंसारि ॥ १० ॥
 एवं खु नाणीणो सार, ज न हिसई किचण ।
 अहिंसा समयं चेव, एतावत्तं वियाणिया ॥ ११ ॥
 जाइं च वुंदिठ च इहेज्ज-पासं, भूतेहि जाणे पडिलेह सायं ।
 तम्हातिविज्जो परमति णच्चा, सम्मत्तदसी न करेई पावं ॥ १२ ॥
 उम्मुच्चपासं इहमच्चिएहि, आरंभजीवी ऊमयाणुपत्ती ।
 कामेसु गिद्धा णिचयं करति, संसिचमाणा पुणरेति गम्भं ॥ १३ ॥
 सवणे नाणे विन्नाणे, पच्चक्खाणे य सजमे ।
 अण्हए तवे चेव, बोदाणे अकिरिया सिद्धि ॥ १४ ॥
 एगोऽह नत्थि मे कोई, नाहमन्नस्स कस्सई ।
 एवं अदीणमणसा, अप्पाणमणुसासई ॥ १५ ॥
 एगो मे सासओ अप्पा, नाणदसणसंजुओ ।
 सेसा मे बाहिरा भावा, सब्ब सजोग-लक्खणा ॥ १६ ॥
 जीवियं नामिकंखेज्जा मरणं नावि पत्थिए ।
 इहुं वि न इछेज्जा, जीविअं मरणं तथा ॥ १७ ॥

सारं दंसण नाणं, सारं तव-नियम-संजम-लंसी ।
 सारं जिणवर धम्मं, सार संलेहणा पडियमरणं ॥१८॥
 कल्लाणकोडिकारिणी, दुग्गइदुहनिदुवणी ।
 संसारजलतारिणी, एगंत होइ जीवदया ॥१९॥
 आरंभे नत्थि दया, महिला सगेण नासइ बंधं ।
 संकाए सम्मत्तं नासइ, पव्वज्जा अत्थ गहणेणं च ॥२०॥
 मज्जं विसय कसाया, निदा विकहा य पंचमा भणिया ।
 एए पंचप्पमाया, जीवा पडंति संसारे ॥२१॥
 लब्भति विमला भोए, लब्भंति सुरसंपया ।
 लब्भंति पुत्तमित्तं च, एगो धम्मो न लब्भई ॥२२॥
 नवि सुही देवता देवलोए, नवि सुही पुढवीपइराया ।
 नवि सुही सेट्ठिसेणावइ य, एगंतसुही मुणी वीयरानी ॥२३॥
 अप्पा नई वेयरणी, अप्पा मे कूडसामली ।
 अप्पा कामदुहा धेणू, अप्पा मे नंदणं वणं ॥२४॥
 अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य ।
 अप्पा मित्तममित्तं च, दुप्पट्ठिय सुपट्ठिओ ॥२५॥
 जो सहस्सं सहस्साणं, संगामे दुज्जए जिए ।
 एगं जिणेज्ज अप्पाण, एस से परमो जओ ॥२६॥
 लामालाभे सुहे दुक्खे, जीवीए मरणे तहा ।
 ममो निदापसंसासु, तहा माणावमाणओ ॥२७॥

तीर्थकरस्तोत्रम्

आदौ नेमिजिनं नोमि, संभवं सुर्विधं नया
 धर्मनाथ महादेवं, शान्ति शान्तिकरं सदा ॥१॥
 अनंतं सुव्रतं भक्त्वा, नमिनाथं जिनोत्तमं
 अजित जितकवर्षं, चद्र चद्रसमप्रभं ॥२॥
 आदिनाथ तया देवं, सुपार्वं विमलं जिनं
 मल्लीनाथ गुणोपेतं, धनुषा पञ्चविंशति ॥३॥
 अरनाथ महावीरं, सुमतिं च जगद्गुरुं
 श्री पद्मप्रभनामानं, वासुपूज्यं सुरैर्नत ॥
 शीतलं शीतलं लोके, श्रेयासं श्रेयसे सदा
 कुण्डुनाथ च वामेयं, विश्वामिनन्दनं विभुम् ॥५॥
 जिनानां नामभिर्बद्धं, पञ्चषष्टिसमुद्भव
 यंत्रोऽयं राजते यत्र, तत्र सौख्यं निरन्तरं ॥६॥
 यस्मिन् गृहे महाभक्त्या, यंत्रोऽयं पूज्यते बुधैः
 भूतप्रेतपिशाचादेः, भयं तत्र न विद्यते ॥७॥
 सकलगुणनिधानं, यन्त्रमेनं विशुद्धं
 हृदयकमलकोशं, धीमता ध्येयरूपं ॥८॥
 जयतिलकगुरोः, श्रीसूरिराजस्य शिष्यो
 वदति सुखनिधानं, मोक्षलक्ष्मीनिवासं ॥९॥

सतीस्तोत्रम्

आदौ सती सुमद्रा च, पातु पश्चात्तु सुन्दरी
 ततश्चन्दनवाला च, सुलसा च मृगावती ॥१॥
 राजीमती ततश्चूला, दमयन्ती ततःपरम्
 पद्मवती शिवा सीता, ग्राह्णी पुनश्च द्रौपदी ॥२॥

कौशल्या च ततः कुन्ती, प्रभावती सतीवरा
 सतीनामेनयन्त्रोऽयम्, चतुस्त्रिंशत् समुद्भवः ॥३॥
 यस्य पार्श्वे सदा यन्त्रो, वर्तते तस्य सांप्रतं
 भूरिनिद्रा न चायाति, न यान्ति भूतप्रेतकाः ॥४॥
 ध्वजायां नृपतेर्यस्य, यन्त्रोऽयं वर्तते सदा
 तस्य शत्रुभयं नास्ति, संप्रामेऽस्य जयः सदा ॥५॥
 गृहद्वारे सदा यस्य, यन्त्रोऽयं ध्रियते वरः
 कर्मणादिकर्तत्रस्य, न स्यात्तस्य परामवः ॥६॥
 स्तोत्रं सतीनां सुगुरुप्रसादात्, कृतं मयोद्योतमृगाधिपेन ।
 यः स्तोत्रमेतत् पठति प्रभाते, स प्राप्नुते शं सततं मनुष्यः ॥७॥

उवसगहर स्तोत्र

उवसगहरं पास, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ।
 विसहर विसनिन्नासं, मंगल-कल्लाण आवासं ॥१॥
 विसहर फुलिग मंते कंठे धारेइ जो सया मणुओ ।
 तस्सगह-रोग भारि बुद्धजरा जति उवसामं ॥२॥
 चिट्ठउ दूरेमंतो, तुज्झपणामोविबहुफलो होई ।
 नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख दोहणं ॥३॥
 तुह सम्मत्ते लद्धे, चित्तामणी कप्पपायवग्गहियं ।
 पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥
 इइ संथुओ महायस, भत्तीभर निग्गरेण हियएण ।
 तादेव विज्ज बोहोँ, भवे भवे पासजिणचंद ॥५॥

